

हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास

इस पुस्तक में लगभग एक सहस्र वर्षों में विकसित होत गयी हिन्दी काव्य की सभी प्रमुख प्रवृत्तियों का इतिहास क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करने का साथ-साथ ही काव्य की अन्तिम युगीन अपभ्रंश तथा वीर काव्य की प्रवृत्तियाँ भक्ति युगीन निगण काव्य मूर्खी काव्य राम काव्य कृष्ण काव्य नीति काव्य तथा लक्षण काव्य की प्रवृत्तियों रीति युगीन शृंगार काव्य वीर काव्य भक्ति एवं नीति काव्य की प्रवृत्तियाँ भारत के अठारहवीं तथा द्वादशवीं युगीन काव्य प्रवृत्तियाँ एवं आधुनिक युगीन राष्ट्रीय काव्य छायावादी काव्य प्रगतिवादी काव्य प्रयोगवादी काव्य तथा वर्तमान कविता की अन्य प्रवृत्तियों का इतिहास पृथक्-पृथक् रूप में करते हुए हिन्दी काव्य की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया गया है।

डा० प्रतापनारायण टण्डन—जम लयाउ शिक्षा धी० ल० (अनिग) तथा लम० ल०
 लखनऊ विश्वविद्यालय म हई। हि दी साहित्य सम्बन्धन प्रयाग लया आयाजित प्रथमा
 म यमा (विशार) तथा उतमा (गार्ग्य) पनी लया उतीग या। सन् १८१८ म
 लखनऊ विश्वविद्यालय म हि दी उपायत म कथा शि र का विकास शीरक प्रय पर
 पी लच० डी० की उपाधि प्राप्त की। लयाउ विश्वविद्यालय म ही १८६३ म समीक्षा
 के मान जीर हि दी समीक्षा की विधि ट प्रवृत्तियां शीरक प्रय म पर ली० लि० की
 उपाधि प्राप्त की। उक्त प्रवृत्त पर लयाउ विश्वविद्यालय लया म १८६३ का
 बोर्डों रिसव प्रयाग भी प्रयाग किया गया। प्रकाशित कृतियों आधुनिक साहित्य
 (निबन्ध मसूदा) सन् १८५६ (प्रकाशक—विद्याभारत लखनऊ) हि दी उपयात म कथा
 भावना प्रमचद युग (राज रचना) म १८५५ (प्रकाशक—विद्या विभाग लखनऊ
 विश्वविद्यालय) कांडड (अनुवाक) म १८५६ (प्रकाशक—गार्ग्य प्रयाग लखनऊ)
 रोता की बात (उपयात) म १८५७ (प्रकाशक—प्रथम प्रयाग लयाउ) हि दी
 साहित्य विद्या दशन (आलोचना) म १८५७ (प्रकाशक—हि दी साहित्य भण्डार
 लखनऊ) हि दी उपयात म कथा शि र का विकास (शास्त्र प्रवृत्त) म १८५८
 (प्रकाशक—हि दी साहित्य भण्डार लखनऊ) अधी दष्टि (उपयात) म १८६०
 (प्रकाशक—राजपात लयाउ लखनऊ) व लो लयादे (कहानी मसूदा) म १८६०
 (प्रकाशक—हि दी साहित्य भण्डार लखनऊ) हि दी उपयात का उदभव और विकास
 (गार्ग्य प्रवृत्त) म १८६० (प्रकाशक—हि दी साहित्य भण्डार लखनऊ) रोता
 (पाकट मस्तरण) म १८६१ (प्रकाशक—हि दी पाकट बुक नर् लिखा) स्वयं यात्रा
 (नाटक) म १८६० (प्रकाशक—भारती साहित्य मस्तर लिखा) दृष्टले पाना की
 बंदे (उपयात) म १८६४ (प्रकाशक—विवक प्रयाग लखनऊ) शूय की प्रति
 (कहानी मसूदा) म १८६४ (प्रकाशक—विवक प्रयाग लखनऊ) नवाब कनकीभा
 (कहानी मसूदा) म १८६४ (प्रकाशक—विवक प्रयाग लखनऊ) हि दी उपयात
 कथा म १८६५ (प्रकाशक—हि दी समिति लया प्र शासन लखनऊ) रोता (अप्रजी
 अनुवाक) म १८६५ (प्रकाशक—ज लया धीर पति लखनऊ कनकता) पथरीने प्रति
 लया (विशेष की लयाग) म १८६५ (प्रकाशक—विवक प्रयाग लखनऊ) वासना
 क अकुर (उपयात) म १८६६ (प्रकाशक—साहित्य लया प्रयाग लखनऊ)
 अभिशप्ता (उपयात) म १८६६ (प्रकाशक—साहित्य लया प्रयाग लखनऊ)
 नायिकार नाम रोता (लयाग अनुवाक) म १८६७ हि दी उपयात का परिचयात्मक
 इतिहास (आलोचना) म १८७७ (प्रकाशक—विवक प्रयाग लखनऊ) तथा हि दी
 साहित्य का प्रवृत्तियन इतिहास लयाउ (आलोचना) म १८६८ (प्रकाशक—विवक
 प्रयाग लखनऊ) जाति। उपयवन म ल हि दी उपयात मे कथा शि र का विकास
 तथा अधी दष्टि नामक रचना उत्तर प्रदेशीय शासन द्वारा पुरस्कृत की गया। समीक्षा
 के मान जीर हि दी समीक्षा की विधि ट प्रवृत्तियां पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा
 ४०००० र का अनुदान तथा २५००० र का विशेष पुरस्कार भी प्रदान किया
 गया। लयाउ लया पर १९०० र का श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार भी प्रदान
 किया गया। संपादन लया लखनऊ से प्रकाशित नई कहानी सक्लन (१८५६)
 का मयुक्त लया म संपादन किया। म १८५७ म १९५८ तक युग चोना
 (लखनऊ) क संपादन क मसूदा म लया। आकाशवाणी स लया दजन स अजिब
 कथानियां वाताई तथा नाटक आदि प्रसारित हा चुक ह। म १८६४ म इटली
 (मारप) की यात्रा की तथा रोम पिस्कोप्या पोसा तथा पलोरेस आदि
 इतिहासिन नगरा का लयाग किया। ध्यापन अक्टूबर १८५८ लखनऊ
 विश्वविद्यालय के हि दी विभाग म प्रायापन क लया म कार्य कर रहे है।

हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास

खण्ड १ पद्य भाग

संयोजक

डा० प्रतापनारायण टट्टे
बी० ए० (आनन) एम० ए० पी एच० डा० पी० ए०

प्राध्यापक हिन्दी विभाग
संस्कृत विश्वविद्यालय लखनऊ



दिव्य प्रकाशन

मूल्य	३० रु० (प्रथम छठ)
संस्करण	प्रथम १९६८
सर्वाधिकार	लखन व अधीन
प्रकाशक	विवेक प्रकाशन अमीनाबाद लखनऊ
मुद्रक	अधिकार प्रस २२ कसरबाग लखनऊ

मूर्धन्य आलोचक डा० नगेन्द्र को सादर समर्पित

प्राक्कथन

इस कृति के प्रथम खण्ड में द्वितीय पद्य तथा तृतीय खण्ड में हिंदा मद्य साहित्य का प्रवर्तित इतिहास प्रस्तुत किया गया है। प्रथम उद्धृत पद्य और दूसरे अध्यायों में आदि युगीन अपभ्रंश काव्य का प्रवर्तित तथा आदि युगीन वीर काव्य की प्रवर्तित का विशाल विस्तार किया गया है। भक्ति युगीन काव्य प्रवर्तित में त्रिगुण काव्य की प्रवर्तित तीसरे अध्याय में सूफा काव्य का प्रवर्तित चौथे अध्याय में राम काव्य का प्रवर्तित पाचवें अध्याय में कृष्णकाव्य की प्रवर्तित छठवें अध्याय में नाटिक काव्य का प्रवर्तित सातवें अध्याय में तथा अठारहवें अध्याय में आठवें अध्याय में विचित्र की गयी है। आठवें अध्याय में जतमत्त में अध्याय में शृंगार काव्य दसवें अध्याय में वीर काव्य तथा ग्यारहवें अध्याय में भक्ति तथा नाटिक काव्य की प्रवर्तित का परिचयामक इतिहास प्रस्तुत किया गया है। बारहवें अध्याय में भारतेंदु युगीन तथा त्रहवें अध्याय में द्वितीय युगीन काव्य प्रवर्तित का इतिहास है। वर्तमान युगीन काव्य प्रवर्तितों में न राष्ट्रीय काव्य प्रवर्तित का चौदहवें अध्याय में, छायावादी काव्य प्रवर्तित का पंद्रहवें अध्याय में प्रगतिवादी काव्य प्रवर्तित का सोलहवें अध्याय में, प्रयागवादी काव्य प्रवर्तित का सत्रहवें अध्याय में तथा अन्त काव्य प्रवर्तित का परिचयामक इतिहास अठारहवें अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

शुक्नोत्तर युगीन निबन्ध सतीसवें अध्याय में स्वान्त्योत्तर युगीन एकीकी अष्टमीगवें अध्याय में स्वातन्त्र्योत्तर युगीन उपयास उन्तानीगवें अध्याय में स्वान्त्योत्तर युगीन वहानी चानीसवें अध्याय में आधुनिक युगीन आलोचना तथा इकतानीगवें अध्याय में गद्य साहित्य की अय प्रवृत्तिया का परिचय है।

इस प्रकार से यह कृति प्रवृत्तिगत आधार पर द्विती के पद्य तथा गद्य साहित्य का परिचयात्मक इतिहास प्रस्तुत करने वाली संप्रथम साहित्यिक एनिहामित रचना है। इसमें लेखक का दृष्टिकोण प्रायः उपन्यास साहित्य का प्रवृत्तिगत विभाजन के आधार पर विकासात्मक परिचय देना रहा है। अनेक स्थानों पर कुछ मतस्य लेखक क अपने हैं। इनसे लेखक के साहित्य संबंधी दृष्टिकोण का भी परिचय मिलता है। अनावश्यक विस्तार के भय से बहुत से नाम तथा अय विवरण इस कृति में नहीं दिये जा सक हैं यद्यपि विविध सिद्धांतों तथा प्रवृत्तिया का निरूपण करते समय विषय की प्रतिनिधि जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयत्न अवश्य किया गया है। आशा है इस रूप में यह कृति पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

बी ४/१ बाबदा निशातगज बालानी
लखनऊ—७

—प्रतापनारायण टंडन

विषय-सूची

अध्याय . १

आदि युगीन अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति

आदि युगीन अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति आरम्भ और विकास—२५ । अपभ्रंश की समृद्धि और साहित्य रचना का आरम्भ—३६ ।

अपभ्रंश के प्रमुख कवि और काव्य—३७ ।

अपभ्रंश का प्रथम कवि योगाद्र का रचना काल यागाद्र का रचना काव्य कृतियाँ के उदाहरण—३७ ।

यागीद्र का परवर्ती अपभ्रंश साहित्य यागाद्र के परवर्ती कवि और काव्य मिद्ध कवियाँ के काव्य के कुछ उदाहरण—३८ ।

शयम्म अथवा श्वयम्भु कवि जीवन परिचय मन्वन्धी विचार कृतियाँ— पाण्डु चरित अथवा पाण्डु चरित या रामायण चरितमिचरित, हरिभक्तुगण पञ्चमा चरित तथा स्वयम्भु के काव्य के कुछ उदाहरण—३८ ।

उज्ज्वल मूरि अथवा उद्योतन मूरि रचना काल तथा कृतियाँ— कुवलयमाता का एक उदाहरण—४० ।

पुष्पक अथवा पुष्पक रचना काल सम्प्रदाय परिचय, प्रमुख कृतियाँ— गिव महिम्नस्तोत्र नानिसाष्टिकाबिहापुरिनगुणानन्दार गामकुमारचरित अथवा नागकुमार चरित तथा जसहरचरित अथवा यशाधरचरित पुष्पक के काव्य के कुछ उदाहरण—४१ ।

कवि धवन प्रमुख रचनाएँ— हर्षिवापुराण धवन के काव्य का उदाहरण—४१ ।

धण्डामर अथवा धनकागर सम्प्रदाय परिचय रचना काल प्रमुख कृतियाँ— करकडुचरित धनकागर के काव्य का उदाहरण—४२ ।

मुनि रामसिंह रचना काल तथा प्रमुख कृतियाँ— पाण्डुप्राज्ञ रचना मन्वन्ती विवाह मुनि रामसिंह के काव्य का उदाहरण—४२ ।

धन्वाज अथवा धनपात्र पद्यकाल अथवा धनपात्र नाम के तीन कवियाँ का उद्भव प्रथम धनपात्र रचना काल एवं कृतियाँ— भविष्य कथा । त्रितीय धनपात्र कृतियाँ— पाण्डुमाता-दीनाममाता । तृतीय धनपात्र रचना काल अथवा भविष्य कथा का उदाहरण—४३ ।

दशमन जन रचना काल प्रमुख कृतियाँ— चयवत् तथा मावय धम्मप्राज्ञ दशमन जन के काव्य का उदाहरण—४३ ।

कवि घाटिन रचना काव्य तथा कृतिया—पद्मनिर्व्विण्डि जयवा पद्मना
चरित कवि घाटिन क काव्य का उदाहरण—११ ।

कवि नयननि माप्रत्यापिकपरिचय कृतिया—आराधना काव्य का उदाहरण—११ ।

कवि बरत रचना काव्य तथा कृतिया—वर्णाभिवर्णिका काव्य का उदाहरण—१२ ।

हमचर रचना काव्य प्रमुख कृतिया—मिदमचर पञ्चानुगत प्राय
काव्यानुगतन उदानुगतन आनामपानाकाव्य काव्य का उदाहरण—१४ ।

कवि सामप्रम रचना काव्य सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कृतिया—कुमारपाव
प्रतिवाद्य काव्य का उदाहरण—११ ।

जिनत्तमूरि रचना काव्य प्रमुख कृतिया—पद्मनायनरास काव्यम्बु
कुतकम तथा चचरा काव्य का उदाहरण—१ ।

हरिमत् मूरि सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कृतिया—ममगाच्चकहा पमिणा
चरित काव्य का उदाहरण—४२ ।

अहृहमान जयवा अहृहमान रचना काव्य प्रमुख कृतिया—मैरा रासक
काव्य का उदाहरण—१६ ।

महृवर मूरि प्रमुख कृतिया—मजममनरा काव्य का उदाहरण—१७ ।

आचत्तमूनि प्रमुख कृतिया—कथाकाव्य काव्य का उदाहरण—४७ ।

पद्मकानि सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कृतिया—पारशपुराण—४७ ।

अथ प्रमुख कवि अथवा काव्य परम्परा क जय प्रमुख कवि मह्यन विद्या
धर बन्धर सारगधर जामभट्ट मातभन्मूरि सामप्रम व मंगण जिनपद्म मूरि
विनयचन्द्र मरि आनि प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण आनि युगीन अपन्न काव्य
परम्परा का महत्व—१ १८ ।

अध्याय . २

जादि युगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति

आरम्भिक काव्यान परिचयितिया प्रमुख कवि और काव्य—५ । दलपति विजय
रचना काव्य तथा प्रमुख कृतिया—उमानरासा विषयवस्तु एव महत्व—५१ ।

नरपतिनाहृ रचना काव्य प्रमुख कृतिया—वीरनदवरामा कथा-वस्तु भाषा
तथा काव्य का उदाहरण—२१ ।

चत्वरणा रचना काव्य और कृतिया—पथाराजरासा विषयवस्तु प्रामाणि
कता प्रतिष्ठा भाषा रस याजना अन्कार याजना धामिर् तत्व दशावतार वणन
समकालीन सामाजिक चरित्र का निरूपण कथानायक का चरित्र काव्य का उदाह
रण—१२ ५७ ।

भट्ट कदार परिचय तथा प्रमुख कृतिया—जयचम्पकाण रचना काव्यान
१ । नि १—५७ ।

अपुंकर कवि रचना का प्रमुख कविता—जयमयकजसिचद्रिका, विषयवस्तु
आदि—१७ ।

जगनिक रचना का जीवन परिचय आश्रयता प्रमुख कविता—अल्हाखट
विषय वस्तु बार वगन का उदाहरण—१७ ।

श्रीधर रचना का प्रमुख कविता—रामानन्द विषय वस्तु एतिहासिकता
रम, छन्दकार-याज्ञता का उदाहरण—१८ ।

अय कवि छसरा विद्यापति रचना, ममकानीन परिस्थितियां तथा
महत्व—५८ ।

अध्याय : ३

भक्ति युगीन निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति

प्रारम्भिक कानीन परिस्थितिया—६० ।

प्रमुख कवि—जयश्वर रचना का एतिहासिकता प्रमुख कविता—गानगाविन्द
रसनारायण तथा चण्डीक सम्प्रदाय परिचय एव वषय विषय—६१ ।

नामदेव रचना का परिचय सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कविता—निगुनबानी,
काव्य का उदाहरण—६१ ।

त्रिनाथन जन्म परिचय जीवन सम्प्रदाय स्थितिया रचना का, वषय विषय
आदि—६२ ।

रामानन्द जीवन परिचय प्रमुख कविता रामानन्द की गिष्य परम्परा सन
कबीर पीता रविनाम घना अनन्तानन्द मुग्गुगानन्द नरहयानन्द मागानन्द मुघानन्द
भवानन्द तथा गानवानन्द काव्य का उदाहरण—२७ ।

मननाथ रचना का आश्रयता सम्प्रदाय परिचय जीवन परिचय
आदि—६२ ।

कबीररास जन्म का जन्म सम्प्रदाय स्थितिया रचनाकानीन परिस्थितिया
जीवन परिचय वषय परिचय सम्प्रदाय परिचय, वषय विषय काव्य का उदाहरण—६४ ६७ ।

सुम्ना रचना का जीवन परिचय वषय विषय काव्य का उदाहरण—२७ ।

नामदेव जीवन परिचय रचना का कविता—वन्नावाक्यान आदि—६८ ।

घना रचना का जीवन परिचय मिष्टान्त परिचय वषय विषय आदि—६८ ।

वणी रचना का सम्प्रदाय परिचय आदि—६८ ।

रविनाम जीवन परिचय रचना का भाषा पद्य परिचय, काव्य का
उदाहरण—६८ ।

पीपा जीवन परिचय सम्प्रदाय परिचय रचना का पद्य परिचय—श्रीपीपाजी
की बाणी काव्य का उदाहरण—६८ ।

धमदास जीवन परिचय, रचना का, सम्प्रदाय परिचय, वषय विषय काव्य
का उदाहरण—६६ ।

अष्टाकर कवि रचना काल प्रमुख कविया—'जयमयकजसिचद्रिका विषयवस्तु
आदि—१७ ।

जगन्निब रचना काल जीवन परिचय, आश्रयदाता प्रमुख कविया—'आम्बाखड'
विषय वस्तु वार वगत काल का उदाहरण—१७ ।

श्राधर रचना काल, प्रमुख कविया—'गामन' विषय वस्तु एतिहासिकता
रस छंद अलंकार-याचना काल का उदाहरण—१८ ।

अय कवि सुसंग विद्यापति रचनाएँ समकालीन परिस्थितिया तथा
महत्व—१८ ।

अध्याय : ३

भक्ति युगीन निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति

प्रारम्भिक कालीन परिस्थितिया—६० ।

प्रमुख कवि—जयदेव रचना काल एतिहासिकता प्रमुख कवियों—गानगाविन्द
रसनारायण तथा कान्हादा सम्प्रदाय परिचय एव वषय विषय—६१ ।

नामदेव रचना काल परिचय सम्प्रदाय परिचय प्रमुख कविया—निगुनवाती
काव्य का उदाहरण—६१ ।

त्रिनाथन जन्म परिचय जीवन सम्प्रदाय विवृत्तिया रचना काल वषय विषय
आदि—६२ ।

गमान् जीवन परिचय प्रमुख कविया गमान् की शिष्य परम्परा मन
कबीर पादा रविनाथ धन्ना अनन्तादत्त, मुग्गुगान् नरहृयान् यागान् सुधान्
भवान् तथा गानवान्, काव्य का उदाहरण—६२ ।

मननाद रचना काल, आश्रयदाता सम्प्रदाय परिचय जीवन परिचय
आदि—६३ ।

कबीरनाथ जन्म काल जन्म सम्बन्धा विधिया रचनाकालीन परिस्थितिया
जीवन परिचय वषय परिचय सम्प्रदाय परिचय वषय विषय काव्य का उदाहरण—६४ ६७ ।

गान् रचना काल जीवन परिचय वषय विषय, काव्य का उदाहरण—२७ ।

तात्पर्य जीवन परिचय रचना काल कविया—'तन्नावाक्यान, आदि—६८ ।

धन्ना रचना काल जीवन परिचय सिद्धान्त परिचय वषय विषय आदि—२८ ।

वधा रचना काल सम्प्रदाय परिचय आदि—६८ ।

रविनाथ जीवन परिचय रचना काल भाषा पद्य परिचय काव्य का
उदाहरण—६८ ।

पीठा जीवन परिचय सम्प्रदाय परिचय रचना काल, पद्य परिचय—'धापापात्रा
की भाषा काव्य का उदाहरण— ८ ।

धन्नाम जीवन परिचय रचना काल, सम्प्रदाय परिचय, वषय विषय काव्य
का उदाहरण—६६ ।

'रत्नखान', मत्स्यच्छावली, 'भक्ति विवक' नान पराधि वारहखडी 'रामा वतार लीला, ब्रजलीला, ध्रुवचरित विष्णुविभूति तथा 'मुखमागर आदि काव्य क उदाहरण—७७ ।

अश्वर अनय जम वान जीवन परिचय वष्य विषय प्रमुख कृतिया— नान योग विनाश याग, ध्यान योग 'विवक दीपिका 'ब्रह्म नान तथा अनय प्रकाश आदि—७८ ।

जगजीवन दास सम्प्रदाय परिचय जम काल जीवन परिचय गुर परम्परा, नसिद्ध कृतिया— शब्द सागर नानप्रकाश आगमपद्धति, महा प्रलय प्रमप्रथ, अधि विनाश आदि काव्य का उदाहरण—७९ ।

लालनाथ जम वान जीवन परिचय, बाल्यावस्था मिद्धान्त प्रचार गदस्य जावन, कृतिया— लालनाथ का चतावणी काव्य का उदाहरण—८० ।

प्राणनाथ जम वान जीवन परिचय धमनान प्रमुख कृतिया—८० ।

धात्रा लान जीवन परिचय रचना काल गुर परम्परा किवन्तिया प्रमुख कृतिया— नादिरुनिकान काव्य का उदाहरण—८० ।

साध सम्प्रदायी मत प्रवतन वान प्रमुख मत—जोगीनाथ वीरभान तथा उगा दास प्रमुख कृतिया— वाती आदिउपदेश निवान नान पाया साध पत आदि—८१ ।

हरिनाथ जम काल निरजनी सम्प्रदाय क प्रवतक प्रमुख कृतिया— हरिपुरपत्री की वाणी काव्य का उदाहरण—८१ ।

वावरी साम्प्रदायिक कवि सन वावरी साहिवा गुरु परम्परा रामानन्द (द्वितीय) दयानन्द तथा माया नन्द वावरी साहिवा क प्रधान शिष्य—वीर गुहमाई मूफी साह (शाह फकीर) शाह फकीर का रचनाए— शब्दसार आदि । अय सन्त—जगन्नाथनदास भीष्मा साहव हरिलाल साहव आदि । भाषा साहव की रचनाए । अय सन्त—हरिनाथ साहव गाविण साहव पलटू साहव जानकी दास, गुनानसाहव, यारी साहव आदि । वावरी साम्प्रदायिक कवियों के काव्य क उदाहरण—८१ ।

अय साम्प्रदायिक सन दरियानास रामवरानास दूनन दास गरीबनास परशराम^१वाचाय बाबा रामच^२ बाबा रामच^३ की कृतिया— वरणचरित्रका शिष्य परम्परा नवनिधिनास दरियानास तथा शिव नारायण आदि । जीवननास की शिष्य परम्परा दूननास, दवीनास गुमाई नास धमदाम तथा उपाध्याय चमार आदि । अय सन्त मिद्धान्त पहनवाननास पासीनास वातकनास अमरनास अक्षगरभान नास तथा अय दाम आदि काव्य क उदाहरण—८२ ।

दरियानास (प्रथम विहारी निवासी) तथा दरियानास (द्वितीय भारवाह निवासी) अय सन्त दननास आदि—८२ ।

पानपनास जम काल पानप पय वश परिचय शिष्यादीशा रचनाए— वाणी प्रथ । शिष्य परम्परा मनसानास, वागीनास, चूहडराम तथा बुद्धिनास आदि—८४ ।

वमान जीवन परिचय सम्प्रदाय परिचय जीवनाम्बधी विवर्तितया आदि-३० ।
नानक नानक के अथ नाम-गुरु ताता बाबा ताता ताता शाह ताता शेष
नानक पादशाह और ताता नाम आदि तम परिचय तम परिचय बा पादश्या गिता
गहस्य जीवन जीवन सम्बधी विवर्तितया वषय विषय काय का उदाहरण-३० ।

अगद जीवन परिचय वश परिचय रताता वान गहस्य जीवना काय का
उदाहरण-३१ ।

अमरदास वश परिचय जीवन परिचय प्रमुख रचना-मान काय का
उदाहरण-३१ ।

रामदास जम परिचय वश परिचय काय का उदाहरण-३२ ।

अजन देव जम परिचय जीवन सम्बधी विवर्तितया विवाह और गहस्य
जीवन महत्वपूर्ण सवतन काय प्रमुख रतिर्या-मुख्यना काय का उदाहरण-३२ ।

हरगाविद जम परिचय जावन परिचय गहस्य जावन आदि-३३ ।

हरदास जम परिचय वात्पादस्था र्थवर भक्ति आदि-३३ ।

हरकृष्णराय जम परिचय तथा अय विवरण-३ ।

तेगबहादुर जीवन परिचय प्रमुख रचना काय का उदाहरण-३३ ।

गोविंद सिंह जीवन परिचय गहस्य जीवन प्रमुख कृतिया-दमदा पातशाह
काय का उदाहरण-३४ ।

बदा बहादुर वास्तविक नाम न मणदेव गुरु प्रस्त नाम गुप्तका सिंह जम
परिचय तथा सम्प्रदाय परिचय आदि-३४ ।

दादू दयाल जम परिचय जीवन सम्बधी विभिन्न मन प्रसिद्ध कृतिया-
अनभयवाणी तथा कायावति वषय विषय दादूवषय निष्य परम्परा-मुत्तरदास यत्
मुदर दास कनिष्ठ जगजीवन दास गरीबदास राजवासा हरदास जनदास चित्रास
बखना बनवारी जगजीवन छीतम और बिशनदास दादू व काय के वषय विषय काय
का उदाहरण-३४ ।

राजब साहब जम तिथि जीवन परिचय प्रमुख रचना-वाणी तथा सर्वांग
काय का उदाहरण-३५ ।

जनगोपात जीवन परिचय कायगत प्रभाव काय कृतिया गीताद् जम तीना
परची काय का उदाहरण-३६ ।

धरनी दास जम वान जीवन परिचय वश परिचय पथ परिचय प्रसिद्ध
कृतिया-शब्दप्रकाश रत्नावली प्रमप्रकास आदि काय का उदाहरण-३६ ।

मुत्तर दास जम काल वश परिचय जीवन परिचय प्रमुख कृतिया-ज्ञान
समुत् मुदर बिनास सर्वांगयागप्रदीपिका पञ्चमिचरित मुखसमाधि अम्भत
उपदेश स्वप्न प्रबोध वेद विचार उक्त अनूप पञ्चप्रभाव नानयूनना मुदर
प्रयावली दो भाग काय के उदाहरण-३६ ।

मनूक दास जम काल समवादीन परिस्थितिया वश परिचय बा यावस्था
जीवन सम्बधी विवर्तितया गुरु परम्परा गहस्य जीवन, प्रसिद्ध कृतिया-ज्ञानबोध,

'रतनखान, भक्तवृष्ठावली', 'भक्ति विवेक नान परोष्ठि, वारहखडी रामा वतार लीला ब्रजलीला ध्रुवचरित', विष्णुविभूति तथा मुखसागर आदि काव्य क उदाहरण—७७ ।

अन्य अनय जन्म काल जीवन परिचय बन्ध विषय प्रमुख कृतिया—नान योग' विज्ञान योग, ध्यान योग विवेक दीपिका, ब्रह्म नान तथा अनय प्रकाश, आदि—७८ ।

जगजीवन दास सम्प्रदाय परिचय जन्म काल जीवन परिचय गुरु परम्परा, प्रसिद्ध कृतिया—शब्द सागर 'नानप्रकाश आगमपद्धति महा प्रलय, 'प्रमत्तय, अधि विनाश आदि काव्य का उदाहरण—७९ ।

सान्नास जन्म काल जीवन परिचय बाल्यावस्था मिथ्यात प्रचार गृहस्थ जीवन कृतिया—तालदाम की चतावणी काव्य का उदाहरण—८० ।

प्राणनाथ जन्म काल जीवन परिचय धमनान प्रमुख कृतिया—८० ।

बाबा ज्ञान जीवन परिचय रचना काल, गुरु परम्परा विवृत्तियाँ प्रमुख कृतियाँ—नादिरुनिकान काव्य का उदाहरण—८० ।

साध सम्प्रदायी मत प्रवतन काल प्रमुख मत—जोगीनास वीरभान तथा उपा दास प्रमुख कृतिया—बानी आदिउपदेश निवान नान पाथी साध पत आदि—८१ ।

हरिनाम जन्म काल निरजनी सम्प्रदाय क प्रवतक प्रमुख कृतियाँ—हरिपुरुषजी की बाणी, काव्य का उदाहरण—८१ ।

बावरी साम्प्रदायिक कवि सत बावरी साहिवा गुरु परम्परा रामानन्द (द्वितीय), दयानन्द तथा माया नन्द बावरी साहिवा क प्रधान शिष्य—बीर गुम्भार्ड भूषा साह (शाह फकीर), शाह फकीर का रचनाए—शास्त्र आदि । अन्य सन्त—जगजीवननास भाखा साहब हरिनान साहब आदि । भाखा साहब की रचनाए । अन्य सन्त—हरनाल साहब गाबिण साहब, फलदू साहब जानकी दास, गुलानसाहब यारी साहब आदि । बावरी साम्प्रदायिक कविया क काव्य क उदाहरण—८१ ।

अय साम्प्रदायिक मत दरियानास रामचरनास दूशन दास, गरीबनास परारामदेवोबाय बाबा रामचन्द्र बाबा रामचन्द्र का कृतिया—चरणचन्द्रिका शिष्य परम्परा नवनिधिनास दरियानाम तथा शिव नारायण आदि । जीवनदास की शिष्य परम्परा दूतनाम, दबोनाम गुसाईं दास धमनास तथा उपाध्याय चमार आदि । अन्य सन्त सिद्धानास पहनवानास पासीनास वाननास अमरनाम असगरभान दास तथा अन्व दास आदि, काव्य क उदाहरण—८३ ।

दरियानाम(प्रथम बिहारा निवासी) तथा दरियानास(द्वितीय मारवाड निवासी) अन्य सन्त दनास आदि—८४ ।

पानदाम जन्म काल पानप पथ वन परिचय शिष्याश्रीक्षा रचनाए—बाणी प्रथ । शिष्य परम्परा मनसादास कागीनास, चूहदराम तथा बुद्धिनाम आदि—८४ ।

रामचरण सम्प्रदाय परिचय जन्म काल जीवन समय की विवक्षितया विविक्त कृतियाँ—८४ ।

दीन दरवेश जन्म काल जीवन परिचय सम्प्रदाय परिचय जीवन समय की विवक्षितया रचनाएँ आदि—८४ ।

यारी साम्प्रदायिक मत प्रमुख गत—गूफी साहब हुमन मुम्मन शाह बुम्मा शाह तथा बेशवाम आदि बेशवाम की रचनाएँ—अमीधूर । अय सत—पन्तूनाम तथा भीष्मा साहब—८५ ।

जगजीवनदास (द्वितीय) सतनामी सम्प्रदाय का प्रवर्तन जीवन परिचय बात्या व था गुरु परम्परा प्रमुख कृतियाँ—शब्दावती नानप्रनाश मत्प्रनय तथा प्रथम प्रथ आदि—८५ ।

बाबा किनाराम अधारी जावन परिचय गरीदीना प्रमुख कृतियाँ—विद्वन मार—८६ ।

तुलसी साहब साहब पथ का प्रवर्तन जन्म काल तियि समय की मतभन्न वग परिचय बात्यावस्था प्रमुख कृतियाँ—घट रामायण शब्दावती रत्नसागर तथा पद्मसागर—८५ ।

शिवदयाल जन्म काल राधास्वामी सम्प्रदाय का प्रवर्तन प्रमुख कृतियाँ—प्रम बानी जीर जगत प्रवाश—८६ ।

अ त सत नागी साम्प्रदायिक मत—एन् राज शिव्य परम्परा गगाराम सत राम तथा भगीरथदास । अय साम्प्रदायिक सत तामरदास पहनवान दास गाविन्द साहब पानपदास रामचरण सहजोबाई दयाबाई हर तान साहब तथा चतुभज साहब आदि—८६ ।

भक्ति युगीन निगुण काय की प्रवृत्ति का महत्व—८६ ।

अध्याय ४

भक्ति युगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति

भक्ति युगीन सूफी काय की परम्परा का प्रवर्तन काल तथा प्रसार । मुहता दाऊद कृतियाँ—चदावन अथवा चदावत रचना काल कथावस्तु तथा अय तत्व—८८ ।

कुतबन रचना काल कृतियाँ—मगावती कथावस्तु तथा अय तत्व काय व उपाहरण—८८ ।

मक्षन जीवन परिचय कृतियाँ—मधुमालती रचना काल कथावस्तु अय त व काय व उपाहरण—८९ ।

मनिक मुम्मन जायसी जीवन परिचय जन्म काल रचना काल प्रमुख कृतियाँ—पन्मावत का रचना काल, कथावस्तु अनकार योजना, कथातत्व तथा उपाहरण—९० ।

आलम रचना काल, प्रमुख कृतिया आदि—८७ ।

उसमान जीवन परिचय, यज्ञ परिचय प्रमुख कृतिया—'चिन्तावती' रचना काल कथावस्तु अथ तत्व तथा काव्य क उदाहरण—८८ ।

जान कवि वास्तविक नाम, जीवन परिचय रचना काल, प्रमुख कृतिया विभिन्न कृतिया म प्रमुख कथानत्व काव्य क उदाहरण—१०२ ११३ ।

शप नबी जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—'नानदाप' रचना काल प्रमुख तत्व एव काव्य क उदाहरण—११३ ।

वासिमशाह जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—'हम तवाहिर' रचना काल प्रमुख तत्व एव काव्य क उदाहरण—११५ ।

नूर मुहम्मद जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—'इन्द्रावती' अनुरागवासुरी तथा नलदमन । 'इन्द्रावती' की कथा अथ तत्व अनुरागवासुरी की कथा काव्य क उदाहरण—११७ ।

हुसेन अली जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—'पहुपावती' रचना काल कथा वस्तु, अथ तत्व एव काव्य क उदाहरण—१२२ ।

शय निसार जीवन परिचय रचना काल प्रमुख कृतिया—'यूसुफ जुन्या' की कथा अथ तत्व तथा काव्य क उदाहरण—१२३ ।

शाहनजफअली सलानी जीवन परिचय रचना काल प्रमुख कृतिया—'प्रम चिगारी', प्रमुख तत्व एव काव्य क उदाहरण—१२४ ।

दवाजा अहमद जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—'नूरजहा' काव्य तत्व एव उदाहरण—१२५ ।

शय रहाम जीवन परिचय, प्रमुख कृतिया—'मापाप्रमरस' रचना काल, प्रमुख तत्व एव काव्य क उदाहरण—१२६ ।

नसीर जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—'यूसुफ जुन्या' काव्य तत्व एव उदाहरण—१२७ ।

अस कवि तथा काव्य अनात कवि द्वारा रचित नामरूप अलीमुराद द्वारा रचित 'कथा कुवरावत' प्रमुख तत्व एव काव्य क उदाहरण—१०८ ।

मकिन मुगीन सूफी काल की प्रवृत्ति का महत्व—१२१ ।

अध्याय . ३

भक्ति युगीन राम काव्य की प्रवृत्ति

भक्ति युगीन राम काव्य का प्रवृत्ति का आरम्भ और विकास राम काव्य की प्राचीन परम्परा अथ साहित्य म राम कथा मधुन साहित्य म राम कथा, बौद्ध साहित्य म राम कथा जन साहित्य म राम कथा प्राकृत कथा म राम कथा मधुन मध्य रचनाओं म राम कथा अथ भारतीय भाषाओं म राम कथा क विविध रूप—१३३ ।

गोस्वामी तुलसीदास जन्म तिथि सम्बन्धी विविध मत जन्म स्थान जीवन परिचय वात्स्यायव्या धर्मादि जीवन भक्ति साधना प्रमुख कृतियां । तपसा व वष्य विषय मानसरूपक राम कथा रामराय की धर्मराय म कथा रामचरितमानी दृष्टि काण । रामचरितमानस—रचना कान कथा विभाजन गीतावनी (पद्यावनी रामायण तथा रामगीतावनी)—वष्य विषय तथा अय तय । विनयप्रविक्षा—वष्य विषय । शीतानी—वष्य विषय । कवितावनी—वष्य विषय तथा काव्य का उदाहरण—१ ५ १४२ ।

अग्रदास जीवन परिचय रचना कान प्रमुख कृतियां—अप्याम, ध्याममर्रा अथवा रामध्यान मजरी कडलियां अथवा विनोयेश उपपाया वामनी दृगार रससागर अथवा अग्रसागर काय का उदाहरण—१४३ ।

नामादास जीवन परिचय रचना कान प्रमुख कृतियां—मत्तमान रामाप्याम तथा रामचरितसग्रह । शक्तमान के विविध टीकाकार एव टीकाण । काव्य का उदाहरण—१४४ ।

दानकृष्ण रचना कान प्रमुख कृतियां—ध्यानमजरी नेहप्रकाश 'सिद्धान्तव दीपिका दयान मजरी ग्वालपट्टनी प्रमपट्टेली प्रमणीयिका प्रमपरीणा तथा परतीन परीभा आदि काय का उदाहरण—१४५ ।

रूपनाथ सम्प्रदाय का नाम रूपमयी काव्य का उदाहरण—१४६ ।

बाजानन्द जीवन परिचय काय का उदाहरण—१४६ ।

कृपानिवास जीवन परिचय वश परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१४ ।

प्राणचन्द चौहान जीवन परिचय रचना कान प्रमुख कृतियां—रामायण महानाटक काय का उदाहरण—१४७ ।

छत्तसाल जन्म कान जीवन परिचय प्रमुख कृतियां—काय का उदाहरण—१४७ ।

रामप्रियाशरण प्रमहनी जीवन परिचय रचना कान प्रमुख ग्रन्थ—सीतायन काय का उदाहरण—१४७ ।

जानकीरसिक शरण रममाता जीवन परिचय अय नाम रसमानिनी तथा रसमानिका प्रमुख ग्रन्थ—अवधी सागर रचना कान तथा काव्य का उदाहरण—१४८ ।

रामप्रपन्न मयुराचार्य जीवन परिचय प्रमुख ग्रन्थ भगवतगण दपण माय्यकविता बनी वात्मीकि रामायण की टीका तथा 'रामनन्दप्रकाश' काय का उदाहरण—१४८ ।

दयादास हरिसहचरी अय नाम जनहरिया हरि तथा हरि कवि प्रमुख कृतियां—अप्याम तथा जानकी गीत काय का उदाहरण—१४८ ।

हरिदास जीवन परिचय प्रमुख कृतियां—रामतापनीयोपनिषद तथा रामस्तव राजभाष्य काव्य का उदाहरण—१४८ ।

मूरकिशार जीवन परिचय रचना कान प्रमुख ग्रन्थ—मिथिला विलास काय का उदाहरण—१४८ ।

प्रयागदास तथा हृदय राम जीवन परिचय प्रमुख कृतियां—हनुमानाटक मुत्तमाचरित तथा रक्षमणिमगन काय का उदाहरण—१४८ ।

१ रामप्रथम रचना काल, प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण—१५० ।

अवधशरण जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—सयमिधुचन्द्राय, काव्य का उदाहरण—१५० ।

प्रमत्तया प्रमुख ग्रन्थ—हानी, कवितादिप्रबंध तथा श्री सीताराम नखशिख', काव्य का उदाहरण—१५० ।

सियासखा जीवन परिचय तथा काव्य का उदाहरण—१५० ।

१ चन्द्रबना वास्तविक नाम वनवदास प्रमुख कृतिया—अष्टयाम पनावली काव्य का उदाहरण—१५० ।

१ रूपसरम जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—सीताराम रहस्यचंद्रिका 'रसमजरी गुरुप्रनापश्रादश तथा श्रीगुरुचवामहात्म्य काव्य का उदाहरण—१५० ।

रामप्रमाण विट्काचाय जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—शियापत्री तथा 'गीतानात्वयनिर्णय—१५१ ।

रामकनकास प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण—१५१ ।

जीवाराम युगनप्रिया प्रमुख कृतिया—रसिकप्रणा 'भक्तमान पनावली शृंगाररहस्य तथा अष्टयामवर्तिक काव्य का उदाहरण—१५१ ।

जनकराज त्रिगारीकरण रसिकब्रजा जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—काव्य का उदाहरण—१५१ ।

शिवनाथ पाठक राम काल जीवन परिचय वन परिचय प्रमुख कृतिया—'मानस मयक मानसग्रन्थिप्राप्योपिका तथा कामीरि रामायण का भावप्रनाम टीका, काव्य का उदाहरण—१५२ ।

कमलनाम जम निधि सम्बन्धी विविध मन जीवन परिचय राम कथा का स्वरूप, प्रमुख कृतिया—रामचरित्रा रामचन्द्रिका का परवर्ती राम कथा-साहित्य पर प्रभाव काव्य का उदाहरण—१५३ ।

रामगुनाम द्विवेदी जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—कवित्तप्रबंध रामगीतावली 'ललितनामावली वितय नर पंचक दाहावतारामायण हनुमानाष्टक रामकृष्ण सप्तक धीशृणावचरत्नपंचक श्रीरामाष्टक रामावितय, राममनवराज तथा 'बरवा आदि काव्य का उदाहरण—१५४ ।

विश्वनाथसिंहनू देव जावा परिचय प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण—१५५ । रघुनाथसिंह जावन परिचय प्रमुख रचनाते काव्य का उदाहरण—१५५ ।

प्रतापकुंदरि यादें जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—काव्य का उदाहरण—१५६ । काष्ठजिह्वा स्वामी देव जावन परिचय प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण—१५६ ।

उमापति त्रिपाठी कवि जावन परिचय प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण—१५६ ।

युगलानयनशरण हमनना जम काल जीवन परिचय प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण—१५७ ।

रामवल्लभाशरण प्रमनिधि जमवान जीवत परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५८ ।

बजनाय पूजवणी जमवान जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५८ ।

जानकी प्रसाद रसिकविहारी जमवान जीवत परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५८ ।

बनादास जमवान जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१५८ ।

शीतमणि जमवान जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१६० ।

सरयूदास प्रमुख कृतियां—पतावती भवसारोपण रसिक वस्तु प्रकाश तथा भक्तिनामावली काव्य का उदाहरण—१६० ।

सीतारामशरण रामरमरगमणि जमवान जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१६ ।

सियानालशरण प्रमदना जमवान जीवन परिचय प्रमुख कृतियां काव्य का उदाहरण—१६१ ।

अन्य कवि रामदास तपस्वीजी मनभावनजी शंकरदास मणिराम लक्ष्मी नारायण दास पौहारा पतितदास रामशरण रवनाथदास हनुमानशरण मधुरअनी रघुनाथदास रामसनेहा वनदूदाम जानकीशरण प्रीतिनता परमहंस सीताशरण रामवल्लभाशरण युगत्रिविहारजी काव्येभ्यो मणि सीतारामशरण भगवानप्रसाद रूपकना गामतीदास माधवतता सियाशरण मयकरिया प्रमअनी जानकीप्रसाद कामदमणि सीतारामशरण गुभनीना मिथा रामशरण तपसी जनकदुवारीशरण वामनजी रामाजा सत्गुरुप्रसाद शरण काचन कवचि मजर जनी मुदरदास प्राणचद चौहान माधवदास चारण हृदयराम मानेदास कपरचद कृष्ण मडन सुखेव मित्र लालदास वारहठ नरहर दाम ज्ञानदास जोगराम भगवत सिंह सहजराम पंचमसिंह हरिसवक शमनाथ वदीजन मधुसूदन इच्छा राम, मनजू नलकदास शिवसिंह घमान सदरि कवचि क्षमकरण मित्र हरिचरण दास हरिसहाय गिरि मून परमश्वरी दास गणेश ब्रजनाथ देवादास कायस्थ धनीराम रुद्रप्रताप सिंह गोकुलनाथ जानकीचरण शिवब्रह्मशराय रामगोपाल रूपसहाय साताराम नवलसिंह कायस्थ भगवतदास रामानुजी रामनाथ गिरिधरदास रसिक गावि रामनाथ प्रधान कृपाराम लालेदास मातीराम प्रतापसाहि युगलमजरी रनहरि मोहन विचारण्यनीथ जनकलाडिनी शरण प्रियासखी किशोरदास हरिदास सहाय समरदास रामनाथ, हरिजन सियारामशरण लछिराम हरिब्रह्मसिंह नरमण रघुवर शरण श्रीनिवास जानकीप्रसाद (प्रथम) गावानदास दयानिधि सरदार कवि छलधारी ईश्वरी प्रसाद गोमतीदास बाबा हरिदास वामुदवदास सूरजदास माहनदास गोकुलप्रसाद ब्रज राम वल्लभशरण रायदयाल जानकी प्रसाद (द्वितीय) भगवानदाम खली प्रमसखी (तृतीय) लालकवि वदेहीशरण न्यामसख धुवदास बदन पाठक इद्रजीत सिंह नालमणि

महावीरदास चतुरदास राधव्रतम न्यामनाथ गौरीगकर वदीश्वर दीप्तिन समर
सिंह पूषरपूरनचंद शिवप्रकाश सिंह गकर विपाठी मुनिनाथ माधव कत्यक महेशदत्त
सीताराम प्रवाद्याचार्य पद्मनाभाचार्य मानमणि छेन्नालाल काशाराम मुन्नालाल
हरीराम युगल प्रसाद चौबे अना सिमारसिंह रमिक बलभरण स्वयंप्रकाश, गुमानी
पन्त रामकिशोर दास, विष्णुप्रसाद कुवरि, रामप्रिया—१६१ १६७ ।

भक्ति युगीन राम काव्य परम्परा का महत्व—१६७ ।

अध्याय . ६

भक्ति युगीन कृष्ण काव्य की प्रवृत्ति

भक्ति युगीन कृष्ण काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ प्रेरणा पूर्य रचनाएँ विभिन्न
सम्प्रदाय विष्णु स्वामी सम्प्रदाय निम्बाक सम्प्रदाय राधावल्लभ सम्प्रदाय आदि—१६८ ।

हितहरिवंश जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—राधामुद्यानिधि यमुनाप्लव
हितचौरासा तथा स्पृह वाणी । काव्य क उदाहरण—१७१ ।

दामोदर दाम मवकजी जीवन परिचय, कृतियाँ—मवक वाणी काव्य के
उदाहरण—१७३ ।

हरिराम व्यास जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—व्यास वाणी
रागमाना तथा नवधम और स्वधम पद्धति काव्य क उदाहरण—१७४ ।

चतुर्भुज दास जन्म काल जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—द्वादशमय काव्य
क उदाहरण—१७५ ।

ध्रुवदास जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ काव्य क उदाहरण—१७६ ।

नहीनागरदास जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—सिद्धांत दाहावसा
पनावती तथा रसपनावती काव्य क उदाहरण—१७८ ।

क मण पुत्रारी जन्म काल जीवन परिचय काव्य का उदाहरण—१७९ ।

मगवानदास अनयअता जीवन परिचय कृतियाँ काव्य क उदाहरण—१८० ।

रमिक दास (प्रथम) रमिकदास (द्वितीय), रमिकदास (तृतीय), रमिकदास
(चतुर्थ) रमिकदास (पंचम) काव्य क उदाहरण—१८१ ।

ब दासनदास 'चाचाजी जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ, काव्य का उदा
हरण—१८१ ।

हरिदास रमिक जीवन परिचय कृतियाँ—'याधारण सिद्धान्त' तथा 'गम क
प'—१८२ ।

बनभाचार्य जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—चौरासा वरणवन का
बासा, तरवणीपरिचय, पूव मीमासा भाष्य अथवा जमिनी गूर भाष्य प्रकरणानि
'भागवत टीका, अष्ट भाष्य, मुवाधिनी, दामन धम (यमुनाप्लव) वातवाध, सिद्धान्त

मुक्तावती पुष्पाप्रवाह मयीता भू, तयस्ता सिद्धांत रहस्य भक्तकर्म प्रवाह विभक्त
धर्मार्थ्य वृष्णास्य चतुश्चोकी भक्ति यधिनी जनभू पत पत मयास विभक्त
निरोध लक्षण सेवापत्र) पत्रावतम्बत शिवा शनार मधुगा व 'यानादेन
प्रभावत पुरधोत्तम सहस्रनाम विविधि तामायनी तामावत विवरण
आदि—१८३ ।

गोपीनाथ जीवन परिचय ग्रंथ माध्यामीपिना—१८२ ।

बिठ्ठनाथ जम कान जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—विष्णु मदन
निवृत्तप्रकाशतीका जगन्नाथ वा जतिम ल अम्पाम गुणाधिनी की पूर्ति श्री
टिपणी भक्त जश भक्त ह्यु भक्ति निणय' पात्रा गय टीका विनिता
शृंगार रस मदन निणय ग्रंथ एव स्फुट स्तान तथा टीका जति—१८४ ।

गोकुलनाथ जम कान जीवन परिचय जति—१८४ ।

कुम्भन दास जम कान जीवन परिचय वष्य विषय काय क
उदाहरण—१८४ ।

सूरदास जम कान जीवत परिचय प्रमुख कृतियाँ—गर नागर सांघ्य
नहरी सूर सारावती गोवद्धन रीता दशम स्वध मीता नाम लीता प
सग्रह सूरसागर सार भागवत सर पत्नीसी मरुसासजी का पत्र प्राण प्यारी
अथवा श्यामसगाई याहो ननदमयता एकादशी महात्म्य तथा रामन
वष्य विषय काय कता सिद्धांत निरूपण तथा काय क उदाहरण जति—१८६ ।

परमानंद दास जम कान जीवन परिचय कृतियाँ—दान लीला ध्रुव लीला
वा चरित परमानंददासजी का पत्र वलभ सम्प्रदायी कीतन सग्रह मप
परमानंदसागर तथा परमानंद दास जी के पद कीतन सग्रह जति काय क
उदाहरण—१६१ ।

कृष्णदास अधिकारी जम कान जीवन परिचय कृतियाँ—जगन्मानचरिता
'ध्रमर गीत प्रमत्त्व निरूपण भक्त मात की टीका यध्व बन्धन धाणा
प्रमत्तराशि तथा हिरोरा लीला वष्य विषय काय के उदाहरण—१८३ ।

गोविंद स्वामी जम कान जीवन परिचय वष्य विषय काय के उदाहरण—
१६४ ।

नन्ददास जम कान जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—अनेकाय मजरी अथवा
अनेकायनाममाता अथवा अनेकाय भाषा मानमजरी अथवा नाम मजरी अथवा
नामभाला अथवा नामचितामणि माला रस मजरी मप मजरी विरह मजरी श्याम
सगाई सुतामा चरित रमिमणी मगत प्रमत्त गीत रास पचाध्यायी सिद्धांत
पचाध्यायी तथा दशमस्वध भाषा आदि—वष्य विषय तथा काय क उदाहरण—१८६ ।

छोतस्वामी प्रेम काल जीवन परिचय काय के उदाहरण—१६८ ।

चतुर्भुज दास जम कान जीवन परिचय पत्र सग्रह—चतुर्भुज कीतन सग्रह
कीतनावली दान लीला, मधुमालता तथा भक्ति नाप । काय क उदाहरण—
१६८ ।

मीराबाई जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—नरसीजीरोमाइरो मीन गाविण
की टीका 'राम माविन्द सारट व पत् मीराबाई का मनार गवगीत, 'राम
बिहार, मीरापत्नावली तथा कुत्कर पत् काय व उदाहरण—१८८ ।

रसखान जीवन परिचय कृतिया—पमवाटिका तथा मुजान रसखान काव्य
के उदाहरण—२०० ।

नरोत्तमदास जीवन परिचय कृतिया—मुत्तमा चरित ध्रुव चरित तथा
विचारमाला' काव्य का उदाहरण—२०१ ।

भक्ति युगीन कृष्ण काय की परम्परा का महत्व एवं परवर्ती काव्य पर प्रभाव—२०१ ।

अध्याय • ७

भक्ति युगीन नीति काव्य की प्रवृत्ति

भक्ति युगीन नीति काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ, पूर्ववर्ती कवि—प्रमुख कवि
नरहरि जम बाल, जीवन परिचय ग्रन्थ—दक्षिणी मंगल छप्पय नीति तथा
कवित सग्रह काव्य के उदाहरण—२०३ ।

टाटरमल जम बाल जीवन परिचय काय का उदाहरण—२०४ ।

बारबल जम बाल जीवन परिचय, काय व उदाहरण—२०५ ।

तानसन जम बाल जीवन परिचय ग्रन्थ—सगीन सार रागमात्रा तथा
ध्याणशम्नोत्र काय व उदाहरण—२०५ ।

गग जम बाल जीवन परिचय ग्रन्थ—गगपत्नावली गगपच्चीसी तथा
गगरत्नावली' काव्य के उदाहरण—२०६ ।

मनोहर जम बाल, जीवन परिचय ग्रन्थ—शतप्रश्नात्तरी काय के उदाहरण २०७ ।

जमाल जम बाल वष्य विषय काव्य व उदाहरण—२०७ ।

रहीम जम बाल जीवन परिचय ग्रन्थ—रहिमन विनाय, रहिमन विनो
'रहीम कविता'वनी 'रहिमनचरिका 'रहिमन शतक 'रहीम रत्नावली दोहावनी,
नगर शामा बरवय नायिका भू धानघाना कृत बरवय मदनप्यक' यन
कीतुक जानकम शृंगार सोरठा तथा रहीम काव्य काव्य के उदाहरण—२०८ ।

काशिर जम बाल जीवन परिचय काय का उदाहरण—२०८ ।

बनारसीदास जम बाल, जीवन परिचय ग्रन्थ काव्य का उदाहरण—२०८ ।

रत्नावली जीवन परिचय, काव्य के उदाहरण—२१० ।

भक्ति युगीन नीति काय की प्रवृत्ति का महत्व—२१० ।

अध्याय • ८

भक्ति युगीन लक्षण काव्य की प्रवृत्ति

भक्ति युगीन लक्षण काय का आरम्भ । प्रमुख कवि—हृपाराम कृतिया—
हितवर्गिणी, काव्य के उदाहरण—२१२ ।

बलभद्र मित्र जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—तन्मित्र ग्रन्थ विभाग
बलभद्री ध्याकरण हनुमानचरित, गोपधरा सामई टीका तथा पूरण विचार काव्य
का उदाहरण—२१३ ।

मोहनलाल मित्र जीवन परिचय रचना काल कृतियाँ—शृंगार सागर—२१४ ।

वंशवृद्धा जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—रामचरिता कविप्रिया,
रामचरिका वीरचरित अथवा वीरसिंहचरित विमान गीता 'जहोगीर जग
चंद्रिका रतनवामनी छत्तमाता रामअनंत मजरी 'जयमुनि की कथा काल
चरित हनुमान जन्म लीला रस तलिन तथा अमिय पूं काव्य का उदाहरण—
२१४ ।

गुहकर जीवन परिचय रचना काल कृतियाँ—'रसरतन काव्य का उदाहरण—
२१८ ।

मुबारक जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—अनकथाक तथा तिनकगनक,
काव्य के उदाहरण—२१८ ।

सुंदर जीवन परिचय रचना काल कृतियाँ—गुहकर शृंगार, बारहमासी,
सिंहासन बत्तीसी तथा धवनीला काव्य के उदाहरण—२२० ।

छीहन कृतियाँ—पचसहेनी तथा 'वामनी रचना काल—२२१ ।

सनापति कृतियाँ—कवित्त रत्नाकर रचना काल काव्य का उदाहरण—२२१ ।

भक्ति युगीन उदाण काव्य की प्रवृत्ति का महत्व—२२३ ।

अध्याय . ९

रीति युगीन शृंगार काव्य की प्रवृत्ति

रीति युगीन शृंगार काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ, पृष्ठभूमि । प्रमुख कवि-चिंता
मणि जन्म काल जीवन परिचय ग्रन्थ—'काव्य विवेक' कविकुलकल्पमनसू, काव्य
प्रकाश रामायण छविचार विंगन तथा 'रस मजरी, काव्य के उदाहरण—२२४ ।

विहारी लाल जन्म काल जीवन परिचय कृतियाँ—सतसइया अथवा बिहारी
सत्सई काव्य विषय काव्य के उदाहरण—२२७ ।

मनिराम जन्म काल जीवन परिचय ग्रन्थ—'नितननाम छदसागर रस
राज साहित्यसागर तथा शृंगार तथा मनिराम सतसई काव्य के उदाहरण—
२३ ।

कुतपति जीवन परिचय रचना काल कृतियाँ काव्य का उदाहरण—२३१ ।

सुखदेव मित्र जीवन परिचय रचना काल कृतियाँ काव्य का उदाहरण—२३३ ।

देव जन्म काल जीवन परिचय ग्रन्थ—भवानी विनास प्रम तरंग अथवा
कुशा विनास रसविनास, प्रमचरिका सुजान विनोद, सुमिन विनोद, 'सुखसागर

तरंग भावविनास रसान्तर लहरा काव्य रसायन विंगत अल्प्याम प्रेमणी
विका 'राधिकविनास, मुन्दरी सिद्धर रागरनाकर दवचरित जानि विनास
वृक्ष विनास', पावस विनास, दव छानक' प्रम दान तथा शिवाचक काव्य क
उदाहरण—२३४ ।

सुरनि मिथ जम कान जीवन परिचय, ग्रथ—काव्य सिद्धान्त आदि काव्य
का उदाहरण—२३६ ।

भिखारी दास जीवन परिचय रचना कान ग्रथ—रमसारास नामप्रकाश
'छन्दोगव विंगल', काव्यनिगय शृंगार निगय विष्णुपुराण भाषा' शतरजशतिका
छन्दप्रकाश बागबहार 'रागनिगय ब्रजमहात्म्य चन्द्रिका' 'पथ पारख्या 'वण
निगय' तथा 'रघुनाथ नाटक', काव्य क उदाहरण—२३७ ।

भूपति जीवन परिचय, रचना कान ग्रथ काव्य क उदाहरण—२३८ ।

ताप मणि जीवन परिचय ग्रथ काव्य का उदाहरण—२३९ ।

सामनाथ जीवन परिचय, रचना कान, ग्रथ—'रसपीपूषनिधि', कण लीला
पवाध्यायी, 'सुजान विलास तथा माधव विनाद नाटक—काव्य क उदाहरण—२४० ।

रसलील जम कान, जीवन परिचय ग्रथ काव्य क उदाहरण—२४१ ।

दूनहू कवि—जीवन परिचय रचना कान ग्रथ—कविकुलकठाभूषण, काव्य के
उदाहरण—२४२ ।

रतन कवि जीवन परिचय ग्रथ काव्य का उदाहरण—२४३ ।

चन्दनराय जीवन परिचय रचना कान ग्रथ काव्य का उदाहरण—२४४ ।

दवकीनन्त जीवन परिचय रचना काव्य का उदाहरण—२४५ ।

घानराय जीवन परिचय ग्रथ—दलल प्रकाश' काव्य का उदाहरण—२४६ ।

बनी बनीजन जीवन परिचय ग्रथ—१४७ ।

पद्माकर - जम कान, जीवन परिचय कृतियाँ—हिममत बहादुर विरगावली,
'पद्माभरण, 'जगतविना प्रकाश पचासा गगालहरी, रामरनायन, 'भाषा हितो
पदेग, ईश्वर पच्चासा, 'आतिजाह प्रकाश' तथा प्रतापसिंह विरगावली, काव्य क
उदाहरण—२४६ ।

खाल कवि जम कान, जीवन परिचय रचना—धमुनावहरा, 'रसिकान्त,
हमीरहठ' रायोमाधव मितन राधाचक, शीतलजा का नयनिध', नट निबाहन
बसी सीता 'भाषी पच्चीसा, 'कुत्राचक 'कविपण साहित्यान्त' 'रम्य,
'अलकार प्रम भजन प्रगार प्रकाश भक्ति भावन साहित्य भूषण, साहित्य
दपण 'आहालुगार 'शृंगार कवित्त गदाचक, गणगाचक' 'गगतक, कवित्त
दप्यमासा, 'कविहृदय विना' 'जगतहर रम्याव, विजय विना' तथा 'पटशुनु
बधन, काव्य क उदाहरण—२४८ ।

प्रताप साहि जीवन परिचय, रचना कान ग्रथ—'व्यगपयकीमुना काव्य
विनास, 'अर्थासिंह प्रकाश शृंगार मररी, शृंगार गिरामणि अलकार चित्रामणि
'काव्य विना', 'जुगन नयनिध' 'रमनदिका आदि काव्य क उदाहरण—२४९ ।

रसिक गोविन्द जीवन परिचय रचना का प्रथम काव्य का उदाहरण—२५० ।

अन्य कवि बनी जसवत सिंह मन्त्र राम निषाद उग्र नाथ कवी शीर
कण्ठा रसिक मुमति यजन अली मोहित तोष विधि अनपति यशोधर कमर मणि
शभूनाथ शिवसहाय दास रूपसाही छविनाथ बरीशाल मत्त हरिनाथ मन्तराम
रामसिंह यशादानदन वरन, मुन्दीन तथा ब्रह्मदा । श्रुतिया सर्व विषय तथा काव्य
के उदाहरण—२५१ ।

रीति युगीन शृंगार काव्य की प्रवृत्ति का महत्त्व—२५३ ।

अध्याय . १०

रीति युगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति

रीति युगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ प्रमुख कवि—भूषण राम कान
जीवन परिचय कृतिया—शिवराज भूषण शिवा वावनी तथा छत्रसाल दशक बध्य
विषय का य के उदाहरण—२५८ ।

कानिदास त्रिवेदी जीवन परिचय कृतिया—कानिदास द्वारा काव्य के
उदाहरण—२६४ ।

श्रीधर ओषा जन्म काल जीवन परिचय ग्रन्थ—जगन्नामा आदि—२६५ ।

रघनाथ (प्रथम)—रघुनाथविनास रघुनाथ (द्वितीय)—भूषण महिम्न तथा
रघनाथ बदीजन—रसिकमोहन काव्य कानाधर जगतमाहन इश मही मथ तथा
सतमई की टीका काव्य का उदाहरण—२६५ ।

भान कवि जीवन परिचय रचना काल ग्रन्थ—काव्य का उदाहरण—२६६ ।

बनवारी जीवन परिचय रचना काल काव्य का उदाहरण—२६६ ।

गोकुल नाथ गोपीनाथ तथा मणिदेव रचनाए तथा काव्य के उदाहरण—२६७ ।

जोधराज जीवन परिचय ग्रन्थ—हम्मीररासा काव्य का उदाहरण—२६८ ।

सबल सिंह चौहान जीवन परिचय ग्रन्थ—महाभारत अनु संहार तथा
हपविनास काव्य का उदाहरण—२६८ ।

छत्रसिंह वायस्थ जीवन काल ग्रन्थ—विजयमुक्तावली काव्य का उदा
हरण—२६८ ।

नाल कवि जीवन परिचय ग्रन्थ काव्य का उदाहरण—२६८ ।

सूदन जीवन परिचय ग्रन्थ—सुजानचरित काव्य के उदाहरण—२७ ।

खमान बदीजन जीवन परिचय रचना काल ग्रन्थ—काव्य का उदाहरण—२७१ ।

चन्द्रधर बाजपयी जन्म काल जीवन परिचय कृतिया—हम्मीर हठ
काव्य का उदाहरण—२७१ ।

शभनाथ मित्र जीवन परिचय ग्रन्थ—रसतरंगिणी रसकह्नोल तथा
अनकार दीपक काव्य का उदाहरण—२७२ ।

पद्माकर भट्ट जीवन परिचय, ग्रन्थ—हिम्मतबहादुर विद्यावली, काव्य का उदाहरण—२७३।

भगवतराय खोंची जीवन परिचय कृतिया—'रामायण' हनुमत् पञ्चीसा तथा हनुमत् पञ्चासा काव्य का उदाहरण—२७३।

साला ठाकुरदास जन्म काल जीवन परिचय ग्रन्थ ठाकुर टसक काव्य का उदाहरण—२७४।

गिरिधर दास जन्म काल जीवन परिचय ग्रन्थ काव्य का उदाहरण—२७४।

रीति युगोत्तम वीर काव्य का परम्परा का महत्त्व—२७४।

अध्याय . ११

रीति युगोत्तम भक्ति तथा नीति काव्य की प्रवृत्तिया

रीति युगोत्तम भक्ति तथा नीति काव्य की प्रवृत्तिया का आरम्भ प्रमुख कवि—वद जन्म काल जीवन परिचय कृतिया—समतगिरि छत्र' भाव पञ्चासिका, शृंगार निशा पवनपञ्चीसा, हितारण मधि वृद्धतसई, वचनिका, सत्यस्वम्प यमवसतसई' हितारणपक्ष भारत क्या तथा प्रतापविनास' काव्य व उदाहरण—२७५।

वसन्त कवि जन्म काल जीवन परिचय काव्य का उदाहरण—२७७।

आनन्द जीवन परिचय, रचना काल ग्रन्थ—आनन्दकवि काव्य का उदाहरण—२७८।

शर गाविल्लसिंह जन्म काल जीवन परिचय कृतिया—मुनीतिप्रकाश सवलाकप्रकाश प्रेममुमाग 'बुद्धिसागर तथा बडीचरित काव्य का उदाहरण—२७८।

पदानन्द जीवन परिचय कृतिया—मुनीतिप्रकाश 'मुजानगतक' मुजान सागर विरहनाना इन्द्रलता यमुनायग प्रातिपावस प्रमथिका, गायक परीभा आदि। काव्य व उदाहरण—२७८।

रसनिधि जीवन परिचय रचना काल, कृतिया—रतनहाराग, बाह्यमासा' रसनिधिसागर' आदि—२८०।

गिरिधर जन्म काल जीवन परिचय ग्रन्थ—कविराय गिरिधरराय कृत कृतिया, काव्य व उदाहरण—२८१।

युगोत्तम मिश्र जीवन परिचय, कृतिया काव्य व उदाहरण—२८२।

शरद्वाराम जीवन परिचय ग्रन्थ—वसन्तपुराणभाषा काव्य का उदाहरण—२८२।

हरनागयण रचना काल, कृतिया—माधवानन्दकामकान्ता तथा बठान पञ्चीसी काव्य का उदाहरण—२८३।

ब्रजवासी दास ग्रन्थ—ब्रजविभाग तथा प्रथम काव्य काव्य का उदाहरण—२८३ ।

बोधो जीवन परिचय रत्ना वाच ग्रन्थ—विश्वनाथ तथा धरणादा काव्य के उदाहरण—२८३ ।

रामचन्द्र रचना काव्य ग्रन्थ—वरणादा काव्य का उदाहरण—२८४ ।

मनचित्त जीवन परिचय कृतियाँ—काव्य का उदाहरण—२८४ ।

मधुसूदन दास जीवन परिचय रत्ना वाच ग्रन्थ—रामायण काव्य का उदाहरण—२८५ ।

दीनदयाल गिरि जमकाव्य जीवन परिचय कृतियाँ—अनुगागण काव्य तरंगिणी अयाति माता वराय निगण अयाति रत्नम तथा वागवत काव्य के उदाहरण—२८५ ।

मनिधर सिंह जमकाव्य जीवन परिचय कृतियाँ—काव्य का उदाहरण—२८६ ।

कृष्णदास रचना काव्य ग्रन्थ—माधुसूदन काव्य का उदाहरण—२८७ ।

गणेश कवि जीवन परिचय कृतियाँ—सामीरि रामायण प्रथम प्रकाश प्रथम विजय तथा अनुमत पंचोत्ता काव्य का उदाहरण—२८७ ।

सम्भन कवि जमकाव्य कृतियाँ काव्य का उदाहरण—२८८ ।

नलक दास कृतियाँ उदाहरण—२८८ ।

नवल सिंह काव्यस्य जीवन परिचय कृतियाँ सप्तमाचन जीवितनम रसिक रजनी विनाय भास्कर वजराजदीपिका गुणरत्ना मवा कवितावता भाषासप्तशती कवि जीवन जाहा रामायण, रुक्मिणी मंगल मून पाना रहस्य वामना आध्यात्म रामायण रूप रामायण नारी प्रकरण साना स्वयंवर रामचन्द्र विभाग भारतजातिव रामायण गुमरता दानात सवा नाम रामायण रामायण काव्य तथा आ ग भारत काव्य का उदाहरण—२८८ ।

रामसहाय दास जीवन परिचय कृतियाँ—पत तरंगिणी रामसप्तसई शृंगार सप्तसई वरहारा रामसप्तशती तथा वाणी भयण काव्य के उदाहरण—२८९ ।

पजनेश जीवन परिचय कृतियाँ—मधुप्रिया नयनिघण्टु पजनण पंचोत्ता तथा पजनण प्रकाश काव्य का उदाहरण—२९० ।

विजय जमकाव्य जीवन परिचय कृतियाँ—दृगार ततिता दृगार बत्तीसा तथा दृगार चानासी काव्य का उदाहरण—२९० ।

रोनि युगीन भवित तथा नानि काव्य की प्रवृत्तियाँ काव्य—२९० ।

अध्याय ' १२

भारत दु युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

भारत दु युगीन हिंदा कविता की पृष्ठभूमि नवजागरण प्रमुख कवि भारते दु हरिश्चन्द्र—जीवन परिचय प्रमुख कृतियाँ—मनि सवस्व कानि र स्तान यशाव

महात्म्य प्रवाधिनी श्री पंचमा तमय लीला दान लीला प्रम मालिका
 प्रम सरोवर प्रम मापुरी प्रम तरण विनय प्रम पचासा सतसई शृ गार,
 आदि काव्य के उदाहरण—२८४ ।

जगमाहन सिंह जीवन परिचय, प्रमुख कृतिया काव्य का उदाहरण—२८५ ।

प्रतापनारायण मिश्र जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—प्रम पुष्पावली मन की
 लहर नाकावित शतक शृ गार विलास मानस विनाद प्रताप सग्रह । काव्य का
 उदाहरण—२८६ ।

राधाचरण गाम्वासी जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—नव भवनमान
 बारहमासी, भारत सगीत विधवा विनाय, आदि काव्य का उदाहरण—२८६ ।

रामकृष्ण वर्मा जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—वनवीर पचासा काव्य का
 उदाहरण—२८७ ।

राधाकृष्ण दास जीवन परिचय प्रमुख कृतिया—विजयिनी, पृथ्वीराज
 प्रयाण भारत बारहमासा जुवनी दशशुभा रामजानकी प्रताप विसजन
 आदि काव्य का उदाहरण—२८७ ।

बन्दीनारायण चौधरी प्रमथन जीवन परिचय कृतिया—जीण जमपट,
 आनन्द अण्णाथ्य मयन महिमा आदि काव्य का उदाहरण—२८७ ।

बाबा मुमेर सिंह जीवन परिचय कृतिया—मुन्गी निलक काव्य का
 उदाहरण—२८८ ।

राव कृष्णदेव शरण सिंह गाव जीवन परिचय कृतिया—प्रम सन्देशा
 दोहावनी आदि काव्य का उदाहरण—२८८ ।

महं गारामण मनादान शिब नथमा प्रसा—२८८ ।

अय कवि—हादरसी चित्रज्ञान नथाराम गावि राम मानानीन चीव शिवरत्न
 शुक्ल शिरस सगर कवि गावि गन्ना दुग्गक दशप्रसा कविचरुती
 आदि—२०० ।

भारत शृ गुगीन कविता का मह व—२०० ।

अध्याय . १३

द्विवेदी युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तिया

द्विवेदी युगीन कविता का पृष्ठभूमि मत्वार प्रसा द्विवेदी जीवन परिचय
 प्रमुख कृतिया—रमा स्तुति गन काव्य मजपा द्विवेदी काव्य माना तथा कविता
 कलाप आदि काव्य का उदाहरण—२०१ ।

श्रीधर पाण्डे जीवन परिचय कृतिया—राम गन्त सार रश्मीर मुपमा
 भारतगीत पनत्रिय वनाण गोविता भीत चर्गीय दीणा आदि काव्य का
 उदाहरण— ०२ ।

नाथूराम पार्म गकर जीवन परिचय कृतिया—अनुराग रत्न, गकर सतसई
 आदि, काव्य के उदाहरण— ० ।

बाल मुकुट गुप्त जीवन परिचय कृतियाँ—रत्न कविता काव्य का उदाहरण—३४।

अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध जीवन परिचय कृतियाँ—रत्न रत्न प्रम प्रम पुष्पहार उपाध्याय राधोत्तम त्रिप्रसाद श्रेणी काव्य रसकनक आदि काव्य का उदाहरण—३५।

राय देवीप्रसाद पूण जीवन परिचय कृतियाँ—मूलप्रम रत्नी कुत वसत वियोग आदि काव्य का उदाहरण—३६।

रामचरित उपाध्याय—जीवन परिचय कृतियाँ—रामरत्न विद्यामणि काव्य का उदाहरण—३६।

गिरिधर शर्मा मोरतन जीवन परिचय कृतियाँ—मान यन्ता आदि—३०७।
रूपनारायण पाडय जीवन परिचय कृतियाँ—पराय काव्य का विदग्ध आदि काव्य का उदाहरण—३०७।

राम नरेश त्रिपाठी—जीवन परिचय कृतियाँ—मिनत स्वप्न मन्गी आदि काव्य के उदाहरण—३७।

मथिलीशरण गुप्त जीवन परिचय कृतियाँ—अजित अनप साकत विदग्ध त्रिया सिद्धराज यथाधरा भारत भारती जयद्रथ वध शपर पारवती आदि काव्य के उदाहरण—३८।

गोपाय शरण सिंह जीवन परिचय कृतियाँ—माधवा कान्बिनी मानवी जगदानोक आदि—३९१।

बन्नीनाथ भट्ट जीवन परिचय काव्य का उदाहरण—३९१।

गुरुभक्त सिंह भवन जीवन परिचय कृतियाँ—नूरजहाँ आदि काव्य का उदाहरण—३९२।

हरदयानु सिंह जीवन परिचय कृतियाँ—दत्तवश रावण आदि—३९२।

वियोगी हरि जीवन परिचय कृतियाँ—ब्रज माधुरी सार प्रम पथिक प्रदाकण आदि काव्य का उदाहरण—३९२।

बनदेव प्रसाद मिश्र राजहम—जीवन परिचय कृतियाँ—राम राय मानस मयन आदि काव्य का उदाहरण—३९३।

गिरिजाशक्त शुवन गिरीश जीवन परिचय कृतियाँ—तारक वध आदि—३९३।

मोहनानन महतो वियोगी जीवन परिचय कृतियाँ—अछूत निर्माय एक सारा धधले चित्त तथा कल्पना आदि—३९४।

अनूप शर्मा जीवन परिचय कृतियाँ—वधनाम आदि—३९४।

द्वारिकाप्रसाद मिश्र जीवन परिचय कृतियाँ—कृष्णायन काव्य के उदाहरण—३९४।

वेदारनाथ मिश्र प्रभात जीवन परिचय कृतियाँ स्वर्णादय ककेयी आदि—३९५।

अय कवि—मुरारि बाजपेयी रामचंद्र शुवन महेशचन्द्र प्रसाद सत्याशरण कौशिक राठीर जगन्नाथ प्रसाद मिश्र हिनवी जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी जी पी श्रीवास्तव विजयानंद पाडय होमवकी देवी उपाय नारायण पाडय हृदयेश रामशरत शुवन रसान 'राचाप्रम' पाडय रामाना शिवी समीर मुकुन्दर पाण्य रामानज तान श्रीवास्तव नक्षमीधर बाजपेयी श्यामनारायण मिश्र मन्त शिवेनी गजपुरी ब्रज रत्नराज, शिवमाणर पाण्य जनाननका शिव, जगन्नाथ प्रसाद मित्त आदि—३९५।

द्वितीय युगीन कवि काय का महत्त्व—३१५ ।

अध्याय . १४

आधुनिक युगीन राष्ट्रीय काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युगीन काव्य प्रवृत्तियाँ का आरम्भ राष्ट्रीय पृष्ठभूमि, राष्ट्रीय भावना प्रघान काव्य रचना करने वाले प्रमुख कवि बन्दीनारायण चौधरी प्रमथन राधा चरण गास्वामी भारतेंदु हरिश्चन्द्र, राधाकृष्ण दाम बानमुकुन्द गुप्त तथा प्रताप नारायण मिश्र । वष्य विषय भोगान्तिक एतदा प्राणतिक सौन्दर्य साम्प्रतिक गौरव धार्मिक उन्नत नया गौरवपूर्ण अतीत आदि विभिन्न कवियाँ व काव्य के उदाहरण—२१७ ।

द्वितीय युगीन राष्ट्रीय काव्य की प्रवृत्ति प्रमुख कवि श्रीधर पाठक नायराम शर्कर गोपान चरण सिंह मथुरी चरण गुप्त सपनारायण कविरत्न ठाकुर प्रसाद शर्मा रामनरेश त्रिपाठी, गयाप्रसाद शुक्ल 'सतही' महाबारी प्रसाद द्विवेदी अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध तथा राय देवी प्रसाद पूण आदि । वष्य विषय आर्थिक सामाजिक साम्प्रतिक और राजनतिक अवस्था का चित्रण तथा राष्ट्रीय चेतना का जागरण, प्रमुख कवियों के काव्य के उदाहरण—३२० ।

प्रसाद तथा प्रसाद के परवर्ती युग में राष्ट्रीय काव्य की प्रवृत्ति का विकास राजनतिक पृष्ठभूमि तथा राष्ट्रीय आन्दोलन राष्ट्रीय भावना प्रघान प्रमुख कवि सिया रामचरण शुक्ल जयचन्द्र प्रसाद मुमता कुमारी चौहान मूयवान्त त्रिपाठी निराना मोहन लाल द्विवेदी गिरिजा दत्त शुक्ल गिराज डा० रामकुमार वर्मा गोपान शम्भु सिंह नराधी, माधन लाल चतुर्वेदी डा० हरिवंशराय बच्चन हरिवंश प्रसाद नरद शमा शिव मणन सिंह मुमन भगवता चरण वर्मा डा० रागव राधव, शम्भार बहादुर मिश्र रामशंकर शुक्ल अचन आरमी प्रसाद मिह बानकृष्ण शर्मा नवान त्रिलोचन पास्त्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र उष्य चरण भद्र तथा गया प्रसाद पाठे आदि काव्य के उदाहरण—३२२ ।

आधुनिक युगीन राष्ट्रीय कविता की प्रवृत्ति का महत्त्व—३२७ ।

अध्याय १५

आधुनिक युगीन छायावाद काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युगीन छायावादी काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ छायावाद की परिभाषा, स्वल्प प्रस्था और प्रभाव रामचन्द्र शुक्ल विनय माहून शमा नन्द लाल झाक पदा डा० नगद डा० रामकुमार वर्मा डा० चक्रान महाशेखी मुमिता नन्दन पत आदि की छायावादी विषयक धारणा—३२८ ।

छायावाद के प्रमुख नाम अक्षय प्रसाद पश्य प्रमुख काव्य विषय वष्य विषय छायावादी काव्य आधुनिक, क्षरता तथा कामायनी आदि काव्य तत्त्व एवं काव्य के उदाहरण—३३१ ।

सूयवान् निपाठी निराता परिवर्त प्रमुखा वा यथा—परिचय अग्निमा
बोधिका तुनसीनाय अग्निमा वना यथा इत्युक्त तथा अपरा प्रमुखा
वा यत्त्वं चर्प विषय विशेषता एव वा यत् उदाहरण—३३२ ।

मुमित्रानन्त पत्र परिवर्त प्रमुखा काव्य प्र—उदाहरण यदि यीणा
पत्र मान युगात् युगवाणा प्राप्या स्वर्ग रिश्वर स्वर्गधनि युगपत्
उत्तरा अमिता वाणा वना और युग ता तथा तारायान् आदि यथा विषय,
प्रमुखा तत्त्व विशेषता तथा वा यत् उदाहरण— ३ ।

महात्मी वर्मा जावा परिवर्त प्रमुखा काव्य प्र—उदाहरण रश्मि गीता
माधव गीत दीपशिखा तथा यामा आदि ज्ञायावा विषय विचार काव्य व
विषय प्रमुखा तत्त्व विशेषता एव वा यत् उदाहरण— ४ ।

छायावादी काव्य प्रवृत्ति व विकास मयागन्त वान् जय वदि टि० राम
कुमार वमा नरेन्द्र शमा जयन गापात्र शरण मिह नपानी वचना तथा भगवती
चरण वमा आदि ज्ञायावादी काव्य वा प्रवृत्ति वा महत्त्व— ४४ ।

अध्याय . १६

आधुनिक युगीन प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युग म प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ वैचारिक पृष्ठभूमि
प्रगतिवादी विषय कारण म मुमित्रानन्त पत्र प्रवृत्ति विचारान् मिह चोदान् आदि
व विचार—३४१ ।

मुमित्रानन्त पत्र व काव्य म प्रगतिवादी व उदाहरण युगात् युगवाणी
प्राप्या स्वर्गधनि स्वर्गरिण तथा अमिता म प्रगतिवादी काव्य तत्त्वा का
विकास—३४६ ।

सूयवान् निपाठी निराता के काव्य म प्रगतिवादी तत्त्व कुकुरमुक्ता म यथा
चित्रण निराता का यथात्मक दृष्टिवाण और निराणावा काव्य के उदाह
रण—२४७ ।

भगवतीचरण वर्मा व काव्य म प्रगतिवादी तत्त्व असागाडी गीतक कविता से
उदाहरण—३४८ ।

डा० रामचन्द्र शर्मा परिवर्त तथा काव्य का उदाहरण—२४८ ।

नरेन्द्र शमा व काव्य म प्रगतिवादी तत्त्व प्रवामी व गीत शीपक काव्य सहस्र से
उदाहरण— ४२ ।

रामश्वर शुक्ल जय व काव्य म प्रगतिवादी तत्त्व तथा काव्य व उदाहरण—
५ ।

रामधारी सिंह शिन्कर व काव्य म प्रगतिवादी तत्त्व तिहाय व आम् धूप
और धमा नीन वृषम रनी के फूल रेणवा नीम व पत्र तथा आदि आदि
काव्य म प्रगतिवादी तत्त्व तथा काव्य व उदाहरण—३१ ।

डा० शिवमगन मिह मुमन्त के काव्य म प्रगतिवादी तत्त्व पर आर्षे नही मरी
आदि सहस्र से काव्य व उदाहरण—२४२ ।

कदारनाथ अम्बान क काव्य म प्रगतिवादी तव 'नाद क वादन तथा 'युग का गगा' आदि स काव्य क उदाहरण—३१२ ।

नागाशुन क काव्य म प्रगतिवादी तव नगाजन का ललिकाण तथा काव्य क उदाहरण—३१४ ।

त्रिलाचन क काव्य म प्रगतिवादी तव धरती' शाप क काव्य मग्रह म उदाहरण—२५५ ।

डा० महेंद्र भटनागर क काव्य म प्रगतिवादी तव कृतिया काव्य का उदाहरण—२५६ ।

प्रगतिवादी की प्रमुख विपदाए तथा आधुनिक कवि काव्य की प्रगतिवादी प्रवृत्ति का महत्व—२५६ ।

अध्याय . १७

आधुनिक युगीन प्रयोगवादी काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युगीन प्रयोगवादी काव्य की प्रवृत्ति का आरम्भ प्रयोगवादी की परिभाषा तथा स्वल्प प्रयोगवाद विषयक प्रमुख धारणाए अथवा विचार—२५८ ।

प्रयोगवादी क प्रमुख कवि सच्चिदानन्द हीरानन्द वाग्यायन अथवा प्रमुख काव्य मग्रह—भक्तकृत चिन्ता इयत्तम हरी धाम पर क्षण भर वावरा अग्नी तथा आगन क पाठ शर ताग्मप्लव आदि तथा अन्य मौलिक काव्य मग्रहा म काव्य क उदाहरण—२५९ ।

गिरिजा कुमार भावुर काव्य विषयक धारणा प्रमुख काव्य मग्रह—'मजिन् नाश ओर निमाग तथा धूप क धान प्रमुख काव्य तव तथा उदाहरण—२६० ।

तारसुन्दर क अन्य कवि डा० राम विनास शर्मा, प्रमुख काव्य तव एव काव्य क उदाहरण—२६० ।

नमिचन्द्र शन प्रमुख तव तथा काव्य क उदाहरण— ६ ।

गजानन माधव मुक्तिबाध प्रमुख तव तथा काव्य क उदाहरण—२६० ।

प्रभाकर माधव प्रमुख तव तथा काव्य क उदाहरण— ६१ ।

भारत भूषण अग्रवाल प्रमुख काव्य मग्रह—दुवि क वधन आरत गहा तथा मुक्ति माग आदि प्रमुख तव तथा काव्य क उदाहरण— ६१ ।

शुनता माधव प्रमुख तव तथा काव्य का उदाहरण— ६ ।

हरिनागयण व्यास प्रमुख तव तथा काव्य का उदाहरण— ६३ ।

शमशर बहादुर मिश्र प्रमुख तव तथा काव्य क उदाहरण— ६२ ।

तरन मन्ता प्रमुख तव तथा काव्य का उदाहरण— ६२ ।

रघुवार शहाव प्रमुख तव तथा काव्य का उदाहरण— २२ ।

पमवार भारता प्रमुख तव तथा काव्य का उदाहरण—२६२ ।

तीगर सत्यक क कवि प्रयाग नारायण त्रिपाठी कानि चौधरी मन्त वा म्यायन कानि नाथ सिंह कुवर नारायण, विजय क नारायण छाही तथा जयेश्वर दयाल मन्तना काव्य विषयक ललिकाण प्रमुख तव तथा काव्य क उदाहरण— ६२ ।

आधुनिक युगीन प्रयोगवादी काव्य की प्रवृत्ति का महत्व—२७१ ।

अध्याय : १८

आधुनिक युगीन कविता की अथ प्रवृत्तियाँ

आधुनिक युगीन कविता का स्वरूप प्रमुख कवि बालकृष्ण शर्मा तथा काव्य तत्व तथा उदाहरण—३७२ ।

बालकृष्ण राय काव्य ग्रन्थ—राज बीता काव्य का उदाहरण—३७३ ।

जानकीवल्लभ शास्त्री काव्य ग्रन्थ काव्य का उदाहरण—३७४ ।

लक्ष्मीकांत वर्मा प्रमुख तत्व तथा काव्य का उदाहरण— ७५ ।

मुमिता कुमारी सिंहा कृतियाँ—विहाग आशा पत्र पयिना वासा के देवता काव्य का उदाहरण—३७५ ।

बच्चन प्रमुख काव्य ग्रन्थ काव्य का उदाहरण—३७६ ।

विद्यावती काकिल कृतियाँ—गुनागिन आदि—३७७ ।

नीरज कृतियाँ—विभावरी काव्य का उदाहरण— ७७ ।

श्रीपाद सिंह क्षेम कृतियाँ काव्य का उदाहरण—३७८ ।

गभूनाथ सिंह कृतियाँ काव्य का उदाहरण— ७७ ।

रमानाथ अवस्थी काव्य का उदाहरण— ३७८ ।

बालस्वरूप राही काव्य का उदाहरण ७८ ।

वीरेन्द्र मिश्र काव्य का उदाहरण—३७८ ।

रामावतार त्यागी काव्य का उदाहरण ३८ ।

श्री रामेश्वर राज खडलवान तक्षण कृतियाँ काव्य का उदाहरण— ५८० ।

डा० नानक सिंह काव्य का उदाहरण—३८० ।

डा० कुं रमा सिंह काव्य का उदाहरण—३८१ ।

डा० देवगज कृतियाँ—जीवन रश्मि धरती और स्वर्ग उवशी ने कहा तथा इतिहास पुरुष काव्य का उदाहरण—३८१ ।

डा० दाऊजी गुप्त कृतियाँ रीशनी की आधिया नीन बोली काव्य का उदाहरण—३८२ ।

डा० जगदीश गुप्त कृतियाँ—नाक के पाव तथा टूटती नहरें काव्य का उदाहरण—३८३ ।

डा० पुत्तू राज पुक्क कृतियाँ—अनग तथा मालूशाही काव्य का उदाहरण— ३८४ ।

डा० प्रताप नारायण टंडन कृतियाँ—पथरीन प्रतिरूप काव्य का उदाहरण— ३८४ ।

राजेंद्र विशोर काव्य का उदाहरण—३८५

वीरेन्द्र कुमार जन काव्य का उदाहरण—२८६

श्री राम वर्मा काव्य का उदाहरण—२८६

राजकमल चौधरी काव्य का उदाहरण—३८७ ।

अथ कवि तथा उनके काव्य का उदाहरण—३८८ ।

आधुनिक युगीन काव्य प्रवृत्तियाँ का महत्त्व—३८३ ।

परिशिष्ट नामानुक्रमिका तथा ग्रंथानुक्रमिका—३८७ ।

हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास

खंड १ . पद्य भाग

आदि युगीन अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति

हिंदी साहित्य के इतिहास व आदि युग में अपभ्रंश काव्य की प्रवृत्ति का विकास हुआ। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अपभ्रंश सम्बन्धित उल्लेख मस्कृत साहित्य में उपलब्ध होते हैं। प्राकृत भाषा का परवर्ती रूप अपभ्रंश ही था। सर्वप्रथम द्वितीय शताब्दी ईस्वी पूर्व में पतञ्जलि ने अपभ्रंश का प्रयोग भाषा व सम्बन्ध में किया था। सामान्य अर्थ के अनुसार मस्कृत के विकृत रूप का भी अपभ्रंश कहते हैं। तीसरी शताब्दी में आचार्य भरत ने भी लगभग इसी मन्त्र में अपभ्रंश का उल्लेख किया है। छठी शताब्दी में आचार्य भामह ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ काव्यादर्श में काव्या व भेदा का वर्णन करते हुए उसके मस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश रूपों का उल्लेख किया है। आगे चलकर आठवीं शताब्दी के पूर्व आचार्य ऋषि ने इन तीनों काय भेदों के अतिरिक्त एक मिश्रित काव्य और जाह दिया परन्तु अपभ्रंश को उल्लेख भी भाष्य में दी। आठवीं शताब्दी में उद्योतन ने भी अपभ्रंश भाषा व सामान्य प्रयोग तथा उसमें मस्कृत प्राकृत व सम्मिश्रित रूपों का वर्णन किया है। नववीं शताब्दी में आचार्य ऋषि ने अपभ्रंश का उल्लेख किया है। राजशेखर ने भी दमवर्धनी में विविध भाषाओं के सम्बन्ध में अपभ्रंश का वर्णन किया है। इसके पश्चात् अब अनेक विद्वानों ने भी अपभ्रंश व सम्बन्ध में विविध मन्त्र प्रस्तुत किए हैं। इसमें स्पष्ट है कि लगभग दूसरी शताब्दी से विकृत भाषा व रूप में सर्वप्रथम अपभ्रंश का आरम्भ हुआ था और छठी शताब्दी तक यह साहित्यिक भाषा बन चुका था। लगभग नववीं शताब्दी में उसका व्यापक प्रसार हो चुका था और इसके पश्चात् उस साहित्यिक भाषा का पूर्ण गौरव प्राप्त हुआ। बारहवीं शताब्दी में उसका साहित्यिक ह्रास आरम्भ हुआ और फिर क्रमशः इसका लोप होने लगा। इस प्रकार में अपभ्रंश का एक भाषा व रूप में प्रतिक विकास अधिक होता है। पहले यह आभीर आदि का भाषा थी। उसके पश्चात् उसने एक लोक भाषा का रूप लिया। फिर वह लिच्छवी का भाषा बनी और अन्त में उस साहित्यिक भाषा का गौरव प्राप्त हुआ। इस प्रकार काव्य में अपभ्रंश का अनेक रूप

विकसित हुए और द्रव्य व्याकरण का भी विभाग हुआ। र्थापान का भी अवभग का विकास स्पष्टतः अभितरिया जा गया है। जो कि अवभग का अर्थापान रूप का सम्बन्ध है इतम सवप्रथम उपनागर अवभग का उ उ रूप रिया जा गया है। अवभग का इम रूप को नागर और ग्राम्य अवभग का भिन्न रूप का जाता है। उम अवभग का विषय म मारण्य तथा अभिगाधु आदि यथाकरण। उ उ रूप रिया है। उपभग का यह रूप गुजरात और सिंधु उ पूर उ प्रमम म प्ररिया था। इम अतिमि वक्य अवभग दभिणी कश्मीर पश्चिमी पजाब तथा कश्म प्रमम म प्ररिया भी। जिन प्रकार से उपनागर अवभग से राजस्थानी का विकास माना जाता है उमा प्रकार म केक्य उपभग से नैहमी भाषा का विकास माना जाता है। अवभग का उागर भू नागर अवभग है जिसका धर गुजरात और पश्चिमी राजस्थान था। उम अवभग रूप की चर्चा भरत मुनि न आभीर आदि भाषा क रूप म की थी। मारण्य न भा उमता उलख किया था। हमचन्द्र ने भी इमी का अवभग का आग्न रूप माना था। गुजरात भाषा का विकास भी अवभग क इमी रूप स माना जाता है। अवभग का उ म जिनना साहित्य उपनघ है उसका अधिकांश उमक इमी भाषा रूप म है। अवभग का चौथा रूप ब्राह्मण अवभग है जिससे मि धी भाषा का आरम्भ माना जाता है। उम विषय म विस्तृत सामग्री उपनघ नही है और न ही इसम कोई विशय साहित्य लिखा गया है। उस प्रकार से अवभग की भाषा और साहित्य की कान सीमा उभग एक सहस्र वर्षों तक निद्ध हानी है यद्यपि उमका प्रसार उमक आन भा अनक शताब्दिया तक मिलता है।

अवभग में साहित्य रचना का आरम्भ—

साहित्यिक भाषा के रूप म अवभग की समृद्धि क पचाव उम साहित्य रचना आरम्भ हुई। राज दरबार म भी उस मायता प्राप्त हुई। अवभग भाषा के अन्तगत जा साहित्यिक विकास हुआ उसके स्फुट शक्ते विविध यकरण अथा म भिन्ने है जिनम अवभग क विभिन्न प्रसगानुसार उडरण प्रस्तुत रिये गया है। इसका शता नी क पश्चात चतुमुख द्राग स्वयम पुष्पन्त तथा योगी आदि कविया के य य उम भाषा म उपन घ हाते हैं। इसके अतिरिक्त उपभग दाता की एक पृथक परम्परा मिलती है। उस परम्परा म जिन कवियों का योगदान है यद्यपि उनके विषय म विशेष विवरण नही पान है परन्तु फिर भी भाषा का दृष्टि से उमका महक बहुत है। उत्तरी भारत क मिश्र मिश्र धत्ता म विविध विचारधाराओं के समथका ने अवभग म मुक्तक काय मुभापिन यण काय महाकाय चप काय तथा विविध कथाना की सृष्टि की। उम रूप स प्राकृत पगन प्रबध चितमणि प्रबध कोश तथा पुरानन प्रबध नयह आदि म अवभग के अनेक काय रूप उपनघ हाते हैं। साधन माला मकादश्य टीका तथा इकाणव आदि म भी ध्वयान से सम्बधित निद्धात मिलते हैं।

प्रमुख कवि तथा काव्य—

योगीन्द्र लिखित परमात्म प्रकाश और यागसार, मुनि रामसिंह लिखित 'पाहुड दाहा तथा सुप्राचाय लिखित बराग्य सार एव महानिर्णय आदि ग्रन्थों में भी अपभ्रंश की विविध शक्तियों की उपलब्धि होती है। दाहा छंद के रूप में भी अपभ्रंश का विस्तृत साहित्य उपलब्ध होता है। त्वेनेन लिखित सावयवधम्म ग्राह्य जिनपत्तमूरि लिखित चचरि, उपदेग रसामन रास तथा बाल स्वल्प एव मन्थर मूरि लिखित 'सजम मजरी आदि कृतियाँ इस परम्परा में विद्यमान रूप से अत्यन्त ही हैं।

अपभ्रंश का प्रथम कवि—

उपयुक्त कविता में योगीन्द्र का अपभ्रंश का प्रथम कवि माना जाता है। इनका वास्तविक नाम जाहदु है। उनके काव्य में मुख्यतः रहस्यवादी विचारधारा का परिचय मिलता है। इनके जीवन में सम्बन्धित कोई विशेष उत्पन्न इनकी किसी कृति में नहीं मिलता। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह उत्पन्न मिलता है कि यह अपभ्रंश का उपाधि मिला हुई थी। योगीन्द्र का रचना काल गणना की देखा जाता है। जसा कि ऊपर सन किया जा चुका है आध्यात्म मन्त्रो मुभाषित तत्र तत्वाथ टीका अमृतासीति निजानमाप्सव परमात्म प्रकाश योगसार और श्रावकाचार आदि उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं जिनमें अपभ्रंश भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में अंतिम तीन का ही विशेष महत्व है। इनमें से परमात्म प्रकाश योगीन्द्र की सबसे प्रथम रचना है जिसमें कवि के आध्यात्मिक विचार मगहीत हैं। इस कृति में ३३० दोहे हैं जिनमें विविध आध्यात्मिक विषयों का निरूपण मिलता है। यागसार में कवि ने १०८ दोहे लिखे हैं और उनका विषय भी आध्यात्मिक है। श्रावकाचार में कवि ने सामान्य उद्देश्य प्रस्तुत किए हैं। योगीन्द्र के लिये दुःख इन तीनों काव्यों में से कुछ पक्तियाँ नीचे उदाहरणाय प्रस्तुत की जा रही हैं

अप्या वभण वइमु ष वि ण वि घत्तउ ण वि मग्गु ।
 पुरिमु षउ सउ इत्थि ण वि णाणिउ मुणइ अमग्गु ॥
 जा णिसि मयवह देणियउ जाणिउ तहि जग्गइ ।
 जहि पुण जग्गइ सयउ जग्गु मा णिमि मणिवि मुउइ ॥ (परमात्म प्रकाश)
 आउ गलइ णवि मण गलइ णवि अगा ह गवइ ।
 माहु पुरइ णवि अप्प हित्ठ इम गमाउ भमइ ॥
 सा णिउ सबइ विग्गु सा मा एउद वि मा बुउ ।
 सा त्रिणु ईमउ वम मो सा अणु ता मिदु ॥ (योगसार)
 भागह करहि पमाण जिय इत्थि म करि स दप ।
 ह ति ण भत्ता पासिया दुइ काना मप ॥
 दुउद सहिवि मणुमत्तणउ भायउ परिउ जण ।
 इधम कउं कप यइ मूवहा गण्डि तण ॥ (श्रावकाचार)

योगीन्द्र का परवर्ती अपभ्रंश साहित्य—

योगीन्द्र का परवर्ती अपभ्रंश साहित्य का अन्तर्गत भाग तथा सरह भागि कवि-कविता के नाम उल्लेखनीय है। इस भाग कविता की रचना तथा मनुष्य मनुष्य दाहा कोश शीघ्र से प्रकाशित हुआ है। कुछ विद्वानों ने इन रचनाओं का पूर्ण अपभ्रंश मन्विद्यमान माना है। सम्भवतः यह मायना का कारण यह है कि भाग का कविपद्य प्रमाणा के आधार पर पूर्ण वगैरह का सिद्ध किया गया है। भाग का ७ ई. स. ११ ई. तक अनुमानित किया जाता है। भाग के अतिरिक्त सरह का भाग आठवां शताब्दी में तक समाप्त शताब्दी तक अनुमानित किया जाता है। इन दो शताब्दियों के मध्य जा अथ सिद्ध कवि हुए उनमें शबरपा भूषणपा कुंभा विष्णुपा दारिकपा शम्भुपा गडरीपा कुतुरीपा कमरिपा गारिका टेंगपा महापा भातेपा घामिसा निवापा तथा शातिपा जाति का नाम विगण रूप में उल्लेखनीय है। कुतुरीपा का नाम सिद्धा का उल्लेख मिनता है। सिद्धा ने जा काव्य रचना की उसका कुछ प्रतिनिधि उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

वाति अरे टिज वाता मुम्मुणि रे कक्काला ।
घण विपिट्टा वज्जइ करुणवि अई न रोता ॥
तहि वन खज गां मअ ना पिज्जिअई ।
हन कविज्ज पणिअं दुंदुर वज्जिअं ॥
चउमम वस्तुरि मिहता कप्पुर तादअई ।
मानइ अघन सरील तहि भरु घाअई ॥
पेंखं खट वरत्त मुद्धामुद्ध ण माणिअइ ।
निर मुह अग च्छाविअं जस नावि मणिअं ।
मनअज कुट्टं वट्टं जिडिम तं णा वज्जिअइ ॥ (काण्ह)
घाज त पिअत्त मुत्तिहि रमत गित पुण्ण चक्कावि भरत्ते ।
अत्त घम्म मिअत्त परनाअत्त गाह पाए दतीउ भअलोअह ॥
जहि मण पवण ण सचरइ रवि सत्ति णाह पवेस ।
तहि बत्तं चित विमाम करु सरह कहिअ उएस ॥
जात्त ण अत्त ण मत्त गउ णउ भव णउ णिब्बाण ।
एत्तं सो परम महामुद्ध णउ पर णउ अप्पाण ॥
सअ सवित्ति म करह रे घ वा भावाभाव सुमति रे बघा ।
णिअ मण मुणत्तं णिउण जात्तं जिम जन जलहि मिनत्ते सोई । (सरह)
वाजा तरवर पर बिज्जान च्चचन चीण पइठो वान ।
त्ति करिअ महागुत्त परिमाण तूइ भणइ गुरु पुत्तिअ जाण । (सूहिपा)
सहज थिअ करि वारणी साध ज अज्जामर होइ तिअ काध ।
दगमि तुज्जान रि ह तेअदमा आइव गराहव अपण बहिआ ।

चउशठि घडिए पठ पसारा पइठन गराह्व नाहि निमारा । (त्रिपदा)

एक पा विज्जइ मत्त ण तन णिअ घण्णा उदक्खि कम्म ।

णिआ घर घरिणी जाव ण मन्थ, तावकि पचवण विग्गिज्जइ ।

जिम्मि लोण बिलज्जइ पाणिएहि तिम्मि घरिणी उदक्खि ।

समरम जइ तवघणे जइ पुण त मम नित्त ॥ (कण्ठपा)

वंग ससार बारहिन जाआ उहिन दूध विवेंटे समाअ ।

बन्ध विआणल गविआ वाय, पिआ दुहिए मतिना साव ।

जो सा बुद्धी सो धनि बुधि जो सा चार सो मारी ।

निते निते पिआना पिह पम जूयज नेप्पाएर गात विग्ग वृषअ । (तानिपा)

पुतरप्रपि गगाया नववा गुह्मिहति ।

तम्माद्धम धिया पुसा तापस्नान तु निष्पत्तम ॥

धर्मो यदि भवत स्नानान वैवर्त्ताना कृतायना ।

नक्त त्वि प्रविष्टानां मत्स्यानां तु वा कथा ॥ (कणरापा)

कवि समभू अथवा स्वयम्भू—

अपभ्रंश साहित्य क अन्तगत उपयुक्त कविया क अनिर्गित समभू जयवा स्वयम्भू का भी विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है। वस्तुतः इस नाम में जमी नव कवल एक कवि का समझा जाता रहा है जबकि जब यह मिथ्या किया जा चुका है कि चतुस्रय स्वयम्भूतिना तथा त्रिभुवन स्वयम्भू पुन क नाम में य दा पथन चति का हैं। इन दाना का एक ही कवि समयत का भ्रम समभवत म कारण म का च्याकि इनका काव्य कृतिया म मुख्यत स्वयम्भू अथवा स्वयम्भू मात्र हा मितना है, चतुस्रय जीर त्रिभुवन नहा लिख गय है। एक मायना यह भा है कि चतुस्रय स्वयम्भू द्वारा आगमन तीन प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थों का त्रिभुवन स्वयम्भू द्वारा कुछ जग जीर तादृश्य मपूगता प्रदान की गयी। इन दाना कविया क विषय म अनुमान क कुछ तव्य उर विहित किय जान हैं कयाकि उनका निवाम स्थान आदि का कोई ज्ञान नहा मितना। इनकी कृतिया म सबप्रथम पाउमाचरित अथवा पमचरित या गमावण का नाम मय प्रथम उत्तमनीय है। इस रचना म बारह हजार श्लोक हैं। इनका कई प्रतिया उपनय हैं। यह काव्य मुम्बत दोहा छंदा म लिखा गया है। मय में प्रकृति वणन सामाजिक चित्रण रूप वणन वस्तु बान तथा कर्माभि जना क प्रभावगता चित्र उपनय हात हैं। इनकी दूसरा कृति मित्रामिचरित हरिवंश पुराण क्ता जाता है। इसम भी अठारह हजार श्लोक बताय जात हैं। कह जाता है कि मय या कुछ अम जगकिति न भी लिखा है। पूव ग्रन्थ का भाति य ग्रन्थ भा अत्रहात है। इन कविया का तीसरा ग्रन्थ पंचमाचरित है जिगहा का प्रति उपनय नहा है। पौम चरित तथा सिद्धमिचरित म म एक एक काव्यांग उपाहरण क विण ग्रंथ प्रस्तुत किया जा रहा है

पेक्खु पेक्खु आवतउ साहण गत ग जा म मय साहण ।
 पक्ख पेक्ख हिगत तुरगम ण्णयन विउत भयति ति गम ।
 पेक्ख पेक्ख चिधइ धूमइ रह तसस म्मिपा ग पा ।
 पक्ख पेक्ख वडडिय असिबत्त धाणरिय पाणविय पत्त ।
 पक्ख पेक्ख वज्जतइ तूरर नाना वि णिपाम मभार ।
 गल गज्जत घणह टकारउ गुह्ण विमात पासत्थारउ ।
 पेक्खु पक्ख समय सय रसता णाइ म ण्णउ गयण मता ।
 पक्ख पेक्ख पचतउ उणरव, गह चारह म ग गणि णायइ ।
 दसउर णाहु णिहालई जावहि समयु वि सणण पराउ तावहि । (पउमघरिउ)
 तहि अवसरि सरसइ धीरवइ वरि वानु दीण म विमन मइ ।
 एदेण समप्पिउ वायरण रमु भरह वाग विवरण ।
 विगणण एद पय पत्थाए भम्मह दणिणिहि जनवा ।
 चाणण समप्पिउ घण घणउ त अकर डवर घणघणउ ।
 हरिमेणि पाणिउ णित्तणउ जवरेहि मि वरहि वत्तणउ । (रिट्ठणमिचरिउ)

उज्जोयण सूरि अथवा उद्योतन सूरि—

अपभ्रंश काय की प्रवृत्ति के अतगत उज्जोयण सूरि अथवा उद्योतन सूरि का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह जन शताब्दर साम्प्रदायिक कवि थे। आठवीं शताब्दी में लिखी गयी उनकी कृति कुजायमाना शापक से प्रसिद्ध है। इनका भी एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तहे सा वि वरउ कि कुण्ण जणणहो जि वस्सइ विआर ।
 खना घई सइ जि वट्टु विआर भगि भरिअत्तउत्ति । (स ब्रह्मा)
 मह पत्तिय सु एव पत्त भणतस्स मत्तप मोत्त ।
 मा मा का हिसि मेत्ति उग्ग भुज्जेण व खनेण ॥
 जारजाअहा दुज्जणहो दुठठ तुरगमहो जिज ।
 जेण ण पुरउ णउ मग्गउ हू तीरत्त गत जि ॥ (कुजायमाला)

पुष्पदत्त अथवा पुष्पदत्त—

अपभ्रंश काय प्रवृत्ति के अतगत दसवीं शताब्दी में आविर्भूत पुष्पदत्त अथवा पुष्पदत्त का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। काय कौशल तथा भावाभिव्यंजना की दृष्टि से पुष्पदत्त की गणना अपभ्रंश के महत्वपूर्ण कवियों में की जाती है। वे षष्ठशताब्दी के साम्प्रदायिक कवि थे। कविपद विद्या का अनुमान है कि शिव महिम्नन्त की रचना भी इन्होंने ही की थी। इनका लिखी हुई प्रसिद्ध कृतियाँ मत्तिसट्ठि महापुरिस गुणा नवार णायकुमारचरिउ तथा जसहरचरिउ आदि हैं। इनमें से प्रथम बीस सहस्र श्लोकों का एक ग्रन्थ है। आदि और उत्तर पुराण के रूप में इनका विभाजन करके कवि ने उत्तर पद्य में पद्य पुराण तथा हरिवंश पुराण

को भी समाविष्ट किया है। इनमें चौबीसा तीर्थकरा का भी वर्णन किया गया है। जिस प्रकार से महाभारत के विषय क्षेत्र की विशालता और महत्व का प्रतिपादन करते हुए यह कहा जाता है कि ना कुछ भी उसमें है वह सबमें है और जो उसमें नहीं है वह कहीं नहीं है इस ग्रन्थ के विषय में भी कवि ने यही गर्वोक्ति की है। कवि की दूसरी कृति नायकुमारचरित अथवा नागकुमार चरित एक खंड काय है। इसी प्रकार से तीसरी कृति जसहरचरित अथवा यशोधर चरित भी एक खंड काय है। उनकी कथा का धार्मिक मद्भन में भा महत्व है। इन तीनों काव्यों में से एक एक अण उदाहरणान यथा प्रस्तुत किया जा रहा है

रज्जुद्वय कारणे पितृमारिज्जइ वधवहू भी सघारिज्जइ ।
जिहि अलि गधे सघारउ तिहि रज्जण लीउ त घारहु ।
भइ मामत मति कथ भायउ, चित्तिज्जतउ सवु परायउ ।
तडुल पमयहु कारणे राणा णरइ पडति षाड अविषाणा ।
जणउ रज्जु जि दुक्ख गुरवणउ जइ मुक्खे कि ताए मुक्खउ ॥

(तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकार)

अतेउरु अतेउरु हणइ मय कालहा आय हा कि कुणइ ।
सणणाट्टु कय तहा कि करइ छत्त छायहु कि उवयरइ ।
णउ कहि की मरण दिण उवरइ कमराणिनु सामाणिनु घरइ ।
मुत्त राय पट्ट वध वमइ कि आउ णिवधणु णउत्तहसइ ।
ण रहहि रहिज्ज वड कि मणुमह लग्गउ रज्जगहु ।
हाइवि जाइवि सट्ठसत्ति विह रायत्तणु सझाराउ जिह ॥ (नागकुमार चरित)
वाहित्तु तं भिन्नं मूत्रं तं सत्तं तं पशुं तं कुट्टं बहिरघं तं मटं ।
तं काणं काणीणं घणणीणं तं शीणं तुहरीणं बलं छीणं ।
णिन्नमं णिद्धमं णिच्छामं णिग्गमं णित्तं यं णिप्पामं चडानं तं पाणं ।
तं टावं कत्तवालं मत्तधिणीवालं दाणालं ते कोलं ते सीहं सददूतं ।
तं मिगिं वियरानं तं णहरं पहरालं तं पक्खं विछालं ।
तं सप्पं रत्तवणं ममासिणीं मच्छं छिच्छणइ रु घणईं बघणईं ववणईं ।
लुक्खणईं यक्खणईं कुक्खणईं नग्गणईं कुट्टणइं घट्टणईं वट्टणईं ।
पउलणईं पाउणईं हूणणईं चानणईं तणणईं मणणईं मणणईं गिलणईं ।
तिरणु णरणु मणुणु रक्खणु दुक्खणइ भुज्जति सग्गं कहु जति ।
पत्ता पणु णागइ जहि हिमं पणं घणु उपाजइ ।
ता बट्टुणिं मत्तिविं मुणिं पारदित्तं पणं विज्जइ ॥ (यशोधर चरित)

कवि धवल—

अपभ्रंश काव्य की आदि युगीन उत्तम परम्परा में कवि धवल का नाम भी उत्तमस्त्रीय है। इनके विषय में धर्म हरिवंश पुर्ण में १८ सहस्र श्लोक बतलाये जाते

है। ग्रन्थ की ११२ सधिया म म प्रयोग अंतिम १० म कवि ने नाम की यात्रा भी मिलती है। इस रचना म उद्यत न जया ममानीय तथा पूर्ववर्ती अनेक कवियों का उल्लेख भी किया है। ध्वज के रचना ताव न विषय म विज्ञान का अनुमान है कि वह इसका शताब्दी न जग म रना हागा। ध्वज न काव्य का एक उदाहरण यही प्रस्तुत किया जा रहा है

सा याणो ह्याल जमि नो कण्ड कमग्गमा ।
 महपुरिसतिसटिठ्ठन हरियमगराग्ग जयउ ॥
 हरिपडब्बाण क्हा चउमुह वागमि भामित जहया ।
 तह विरयमि तामपिया जण ण नामग्ग मण पउर ॥
 जइ गौत्तमेण भजिय सणिय रायणपुट्टिय जहया ।
 जह जिणमण कय तह विरयमि म्पि उग्गम ॥
 सुवउ भविमाणग्ग पिमुणक्कवना यमत्तजणगूल ।
 धणणय धवतण कय हरिवस ममाहण कग्ग ॥ (हरिवस पुराण)

कव्यामर अथवा कनकामर —

कव्यामर का उ उद्य कनकामर के नाम म भी मिलता है। यह दिगम्बर जन सम्प्रदाय क अनुगमन कर्ता व। १०वा शताब्दी क अंतिम वर्षों म इहाने एक काव्य ग्रन्थ की रचना की थी जिसका शीर्षक करकचरित है। इस प्रबंध काव्य म लघुत्व ने दस सधिया क अंतगत राजकुमार शरणा का कथा प्रस्तुत की है। इस कथा म राचकता तो विद्यमान है ही साथ ही साथ जन धम न सादर म भी रसका महत्व है। १०वा का य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सौ बम्हण परया रहा पनण समार ममाग्गिउ त्तें खणण ।
 दुग्ग भजिवि जग्गिहि दुप्पवम उप्पणउ कुमि कग्गि देम ॥
 सो वाणवि कम्म निम्मजा वि चमहिक्कणिवरिवरु ह्ओ वि ।
 पर पुरिमु रमप्पिण णायत्त ससार महणणव दुहइ पत्त ।
 एत्थत्थि भरत्त पुरि तामग्गिउ जायतु ण मुरवइ उहइ तत्ति ।
 वमुमित्त ताह वणि अत्थि साह सौ णायत्त घरिणिए सणाह ।
 एक्कहि णिण मुहत्त रमनयाग्ग उइ धूयत्त जायउ तम्मि साह ।
 पहिन्तारी णाम धणमई वि पुण दुग्गजा णाम धणसिरी वि ।
 धत्ता णाउदणयरि धणदत्त वणि धणमिक्का गहिण तग्ग मुयउ ।
 धणयान णाउ वदियसिउ धणवइक्कतु पग्गमहि ह्यउ ॥ (करकचरित)

मुनि रामसिंह—

दसवा शताब्दी म ही अप रस कवि मुनि रामसिंह का उल्लेख मिलता है। इनकी विधी इर् एक प्रसिद्ध कृति पाटुं दाहा सिद्ध की जाती है। इस कृति के संबंध म साहित्य क मा य विद्वाना म पारस्परिक विवाद है। कुछ विद्वाना का यह अनुमान है

कि पाठ्य दोहा शीषक कृति की रचना अपभ्रंश कवि यागात्र न का शी जिनका उल्लेख
 उपर किया जा चुका है। किंतु अनेक खान मूला के आधार पर अब यह मिट्ट किया गया
 है कि इसका वास्तविक रचयिता मुनि राममिह ही है। इसकाय ग्रंथ म २२२ छंदा
 और दाहा के अन्तगत कवि न याग और आपात्म के वास्तविक स्वरूप का निरूपण
 किया। भक्ति त्याग बलिदान तथा नव जाति के विषय में भी इसमें आत्मा और पवि
 त्रता पर बल दिया गया है। इसका एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

वामु समाहि करउ का जच ।

छोपु अछापु भणिवि का वचउ ।

हल सहि बलह कण भम्माउ ।

जहि जहि जावउ तहि अण्णणउ । (पाठ्य दाहा)

घण्णाल अथवा घनपाल—

अपभ्रंश काय परम्परा में घण्णाल अथवा घनपाल नाम के तीन कवियों का
 उल्लेख मिलता है। इनमें से जो प्रथम घनपाल है उनका समय तथा जन्म की भांति
 जाना है। इनकी एक कृति भविष्यत्त कथा नामक सातव्य शतकी है। ये प्रथम
 घनपाल कवि भविष्यत्त जन साम्प्रदायिक है। दूसरे घनपाल का विषय है कृति
 पाइयत्त छानाममाना शीषक में बताया जाये। इन अनिर्दिष्ट तीनों घनपाल
 का समय इन दोनों से भिन्न जगमग का नाम भी कहीं बाह्य अनुमानित किया जाता है।
 इनकी लिखी हुई कोई अपभ्रंश कृति उपलब्ध नहीं मिला। भविष्यत्त कथा में एक
 काव्यांश उदाहरणार्थ महा प्रस्तुत किया जा रहा है

पुरिसि पुरिसिवउ पालिव्वउ परघणु परवत्त णउ निव्वउ ।

त घणु ज अविणामियघम्म तम्म पुव्वकिय मुक्कम्म ।

त वत्तु परिआसियगतउ ज मुत्तियागिणहणि विव्वत्तु ।

णियमणि जण मक उप्पज्जइ मरणनि विण कम्मु त त्रिज्जइ ।

अणु वि मणमि पुत्त परमत्थे ववि णहि परिपुण्ण महत्थे ।

तरणि तरण तोयण मणि भाविउ पम्मम्मान दाणगुणगाविउ ।

तहिमि ज्वाल अह्हि मुमरिज्जहि एवव वार मुत्तमणु त्रिज्जहि ।

परघणु पायधुनि भाणिज्जहि परवत्त म ममउ गणत्त ।

जविज्जहि जणयणाणत्तु त्रिण निराव करिज्जहि वदण ।

धत्ता त्रिणघम्मगुणुत्त ममत्तमिण मुत्त मित्तउ ममणावमणु ।

रक्खिउ त्रिणसासणत्तेवाहि त्रिणिवि आवत्ति जनुत्तु घण ॥ (भविष्यत्त कथा)

देवसन जन—

दसवा शताब्दी में ही अत्रि काय परम्परा में एक अन्य कवि भी ज्ञात जा चुके
 जन के नाम से उल्लिखित किए जाते हैं। इनकी विधा है छंदा कृतिया का उल्लेख
 मिलता है जिनके शीषक नयचत्र तथा सावधम्म गीता हैं। देवसन जन न अपन

कायम मुख्य रूप से नीति का आध्यात्म तथा मन्तार भाषि की महिमा का वर्णन करते हुए आध्यात्म प्रधान विषयों की विवेचना की है। दशरथ एवं उग्ररथ (१) प्रस्तुत किया जा रहा है

दुर्जगण मुहिं होउ जगि मुषण पयागिय जण ।
जमित विमें वासरु तमिण जिम भरगउ कानण ॥
दि लउ हाहि म इन्दिहै पचह विणिण निवारि ।
इक्क निवारहि जोह्नी अण्ण पराई पाणि ॥ (सायबधम्मशोहा)

कवि धाहित —

अपभ्रंश कवि धाहित की एक रचना पउमतिरिचरित अथवा पञ्चमी चरित्र शापक से उल्लिखित की जाती है। इनका रचना काल भी ज्ञात नहीं अनुमानित किया जाता है। इस काव्य का एक अंश नीचे उदाहरणार्थ प्रस्तुत है

चित्तइ कुमारु दुस्सील एउ कन्त म भिन्न गह ।
अइविम्हउ तिम्भल कुल पमूय दुक्चारिणि कह ॥ (घ) स (घ) घष ।
उम्भग लभन हय (१) दुक्क मीन उम्भम विपम्भिय कामनीन ।
सुच्छ अणज निराणवप (१) अनाणिय मोहिय विगयमव ।
न गणइ निय कुनु मइतिज्जत न गणइ सीन रयण भजत ।
न गणइ माइ वणु स सहोयर न गणइ सामुय समुरउ देय ।
न गणइ सपण वणु मुहि परिपण न गणइ हह परनीय भयावण ।
न गणइ मरण लज भउ मेलनइ करइ अक्कज सुधुयइ । (पउमतिरिचरित)

कवि नयनवि—

अपभ्रंश काव्य की इस परम्परा में आगासी नाम नयनवि कवि का है। यह शिवम्बर जन साम्प्रदायिक कवि थे। इनका निवाह हुआ एक ग्राम आराधना शीपक से उपनाम होता है। यह ग्राम दो भागों में उपभेद्य है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है

महापडउ तसस माणिकवणदी सुयगप्पहाऊ इमोणामछी ।
घता पणम सीम तहो जाउ जगविकखापउ मुणि जयणदि अणत्तिउ ।
चरिउ मुत्तण णाइ हा, तेण अवाहहा विरइउ वु अहिणदिउ ।
आरामगाम पुर वरणिबेसे सुपसिद्ध अवतीणाम देस ।
मुख पुरिव विवुह्यणण्टठ तहि अत्य धारणपरी मरिटठ ।
रणउद्धर अरिवर सेतवज रिद्धि देवामुर जणि चउज (१)
तिवण पारायण सिरिणिवेउ तहिणरवर पुगमु भायणउ ।
मणिगण पह दुसियरविगमछि तहि जिणहर पडुविवहासअछि ।
निवविकवम कालहो वक्कणमु पधारहसवठर सणु ।

तहि केवलि चरित अम ठरण णायणदियविरइउ वच्छरण ।

जा पत्त मुणइ भावद लिहेद, मा सामय मुत् अदरैलहद ॥ (आराधना)

कवि वरदत्त—

आदि युगीन अपभ्रंश काव्य परम्परा में वरदत्त का नाम भी उल्लिखित किया जाता है। इनके लिखे गए एक ग्रंथ का परिचय मिलता है 'निम्का शीपक वरसामि चरित' है। इस ग्रंथ के रचना काल के विषय में कोई तथ्य उपलब्ध नहीं है। कुछ स्थला पर इस कृति को हस्तलिखित प्रतिया उपलब्ध हैं। इस ग्रंथ का निम्न काव्यांश उदाहरणार्थ प्रस्तुत है

अहो जण निमुणिण (णि) उजउ वन घरिउजउ (उ) वदरसामि मुनिवाचरिउ
साहउ मु मणाह मविमह मरु जि जिणग्गणु समुद्धरिउ ।

तववननामि पुरवरु पहाण अत्यथ भरहि वरगुणनिहाणु ।

जिण भवणिहि सदरु किउ पवित्त उउवित्ठार मडिउ पवित्तु ॥ (वरसामिचरिउ)

हेमचन्द्र—

भारहवीं-भारहवीं शताब्दी में इस काव्य परम्परा के अन्तर्गत हेमचन्द्र का उल्लेख भी मिलता है। इनकी मुख्य दो व्याकरण शास्त्रों के क्षेत्र में हैं। इनका लिखा हुआ मिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन नामक ग्रंथ अपने विषय की अद्वितीय रचना मानी जाती है। हेमचन्द्र ने इस ग्रंथ के अतिरिक्त एक रचना 'मत्त पुम्बक द्वासाय' शीपक से प्रस्तुत की। इस काव्य में लेखक ने अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जो उनके व्याकरण ग्रंथ में उदाहरणों के रूप में उद्धृत किये गये हैं। इन ग्रंथों के अतिरिक्त हेमचन्द्र ने काव्यानुशासन छन्दानुशासन देवानामभानाकाण आदि ग्रंथों का भी रचना की है। इनका एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

ज मत् त्तिराण त्तिअहण दइण पवमत्तण ।

ठाण गणतिण अगुत्तिउ जत्तियाउ नहण ॥ (हेमचन्द्रशब्दानुशासन)

कवि सोमप्रभ—

भारहवीं शताब्दी में ही अपभ्रंश काव्य परम्परा के अन्तर्गत सोमप्रभ का आविर्भाव हुआ। यह एक जन साम्प्रदायिक कवि थे। इनका लिखा हुआ कुमारपात प्रतिबाध शीपक एक काव्य ग्रंथ उपलब्ध होता है। परन्तु इस कृति में अपभ्रंश शब्दों की तुलना में संस्कृत तथा प्राकृत शब्द ही प्रधानतः उपलब्ध होते हैं। यह ग्रंथ मुख्य रूप से उपदेशात्मक है जिसमें कवि ने अनेक नैतिक कथाओं के माध्यम से चार्ित्रिक आशय उपस्थित किये हैं। पाच प्रस्तावों में विभाजित यह काव्य नाति अनाति का सम्यक् विवेचन करता है। ग्रंथ में विवरित प्रसंगा का आध्यात्मिक महत्व भी निरूपित किया गया है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है

पिय हउ पाकिक्क मवन्नु त्तिउ तुत्तु विरग्गि विवत्त ।

याइइ जण त्तिम मत्तुत्तिप त्ताविन्नि करत्त ॥ (कुमारपात प्रतिबाध)

जिनदत्त सूरि—

हेमचन्द्र न समराजीव अथ अपभ्रंश कवियाम जिनदत्त सूरि का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। नृदाती प्रथा की रचना की है जिनदत्त शासन उपदेश रसायन रास गानस्वरानुवचन तथा कचरी है। इन प्रथम तथा नृदा जन साम्प्रदायिक धार्मिक नियम विधान आदि स सम्बन्धित नीति उत्पन्न सम्बन्धी कथन प्रस्तुत किये हैं। इन कथनों का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

पण्डि गुणहि सत्यं वक्त्राणहि ।

जनि रयणिह रह भगण कयान न वारियइ

सउत्ताम्मु जहि पुरिमु वि जिनउ वारियइ

जहि जन कीर्यावण हुनि न दवयह

माहभान न निसिद्धा कय अटठाहियट् ॥ (कचरी)

हरिभद्रसूरि—

जन धर्माचार्य हरिभद्रसूरि की रचना हुई एक कृति समराइकवटा शीषक न उपनघ हानी है। परन्तु यह कृति प्राकृत भाषा में लिखी गयी है जिसमें नृदा नियम हुए अथ भा अनक प्रय कथाय जाते हैं। अपभ्रंश में लिखी हुई इनकी एकमात्र रचना णमिणाह चरिउ शीषक न उपन घ होनी है। इसमें अनक पौराणिक धार्मिक कथाया का सम्मिश्रण मिलता है। इस कथन में कथात्मक तत्वा की निहिति के कारण इस अपभ्रंश का एक विशिष्ट काव्योपनिधि माना जाता है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है

सवणाण विम्मणइ नयणरमण विह मेत्त गवय ।

गटयतच्चिय तिमिर हर जग पट्टु सति रवि सव ।

सवण ज जदानय लतिय विहन मट्टु आकख ॥ (णमिणाह चरिउ)

अदहमाण अथवा अद्दुरहमाण—

अदहमाण अथवा अद्दुरहमाण का रचना काल भी ११वीं शताब्दी से लेकर १२वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। इन्होंने अपभ्रंश में सत्स रासक की रचना की है। यह कथन मुख्यतः एक विद्यागिनी नायिका की विरह भावनाओं पर आधारित गायिका है। प्रथम संध्या तक है और इसमें कथात्मक तत्वा का समावेश बहुलता से मिलता है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है

पाण्य पिय वणवानन विरग्गिहि उत्पत्ति ।

ज सित्तउ वारासयहि जनइ पण्हनी चत्ति ॥

सोमिजन विव ज्ञ साम दीउहणहि पसयण्ठी ।

निवत्त बाट भर नायणा धूमण सिच्चति ॥ (सदेश रासक)

महेश्वर सूरि—

आध्यात्मिक विषय पर काव्य रचना करने वाले कवि महेश्वर सूरि का नाम भी यहाँ उल्लेखनाम है। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ मजममजरी शीपक से उपलब्ध होता है। जसा कि इसके शीपक से ही स्पष्ट है इसमें कवि ने समय के यथार्थ महत्त्व का बणन किया है। इस कृति का एक उदाहरण इस प्रकार है

दण्ड दमवि मणु बसि करु घरि सजमि अप्पाण ।
पाह महावतु निजिनिहि जिम पावहि निरवाणु ॥
समणह भूसण गयवसण मजम भजरि एह ।
सिरि महसरि सूरि गुण कनि कुउत मुणह ॥ (सजममजरी)

श्रीचन्द्र मुनि—

उपदेश प्रधान काव्य रचना करने वाले कविमा से अपभ्रंश परम्परा के अंतर्गत श्रीचन्द्र मुनि का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। इनका लिखा हुआ एक भास काव्य ग्रंथ कथाकोश शीपक से उपलब्ध होता है। इस ग्रंथ में ३३ अध्याय के अंतर्गत कवि ने पृथक् पृथक् कथाएँ प्रस्तुत की हैं जिनमें विविध गुणा से सम्बन्धित उपदेशों की तिहिति है। इस काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

लवि सिद्धि च समाहि वारण ।
समय मसार डहाह वारण ॥
पहु जए ज सरस निरतर ।
मुग्ग मयानप्पज अणुतर ॥ (कथाकोश)

पटमकाति—

जैन साम्प्रदायिक कवि पटमकाति का नाम भी इस परम्परा में उल्लिखित किया जा सकता है। अपभ्रंश काव्य की इस परम्परा के अन्तर्गत इनका एक कृति उपलब्ध है जिसका शीपक पारश्वपुराण है। जसा कि इस काव्य ग्रंथ में शीपक से ही स्पष्ट है इसमें जैन तीर्थंकर पारश्वनाथ की जीवन गाथा का बणन किया गया है। इस ग्रंथ का एक उदाहरण इस प्रकार है

मुपमिद्ध मन्ममूणियम धरु धिउ सवण मधु एह महिहिस ।
तहि चदमण पायणरिठि, मय सजम निवमइ जागुविसि ।
तहु सीमु महामइ नियम धारि पाववतु गुणावउ वधयानि ।
सिरि माहवसण महानु भाउ जिधमणु मामु पुण तामु जान् । (पारश्वपुराण)

अप्य प्रमुल कवि—

अपभ्रंश काव्य परम्परा के अंतर्गत उपलब्ध कविमा के अतिरिक्त अप्य भी अनेक कविमा से सम्बन्धित विवरण उपलब्ध होता है। अन्तम मन्तग नामक जैन जातीय विद्याधर बन्धु गारगधर आभमट्ट शातिभन्मूनि सामग्रस सम्मनगणि जिनपथ

सूरि विनयचन्द्र सूरि आदि व राम विनय रूप म उ उच्यते हैं। इतम म मरग का लिखा हुआ नाय भोजप्रबंध शापक से उगत ध है। राम कवि न प्राणि राजाभा के जीवन से सम्बन्धित कथाएँ प्रागुत की हैं। विद्याधर न विद्य हृण ग्रन्थ प्रागुत विमल सूत्र का उत्सव मिलता है। सारगधर का विद्या ह्रमा शास्त्रधर गद्यवि रामत प्रथ प्रसिद्ध है। ब वर क विद्य हण विगी भी गृधर प्रथ का उ उच्य गरी मियता। आमभट्ट की रचना उपदेशरमणी शीपक म उपन गहानी है। शानिभ सूरि न बाहुबिनिरास नामक कृति की रचना की थी। लम्भगगणि न गुणासाहाह चरिय प्रथ दा भागा म प्रस्तुत किया था। जिनपञ्चसूरि रामत जा गाम्प्रशामिन कवि न युति फद्दमाग नामक कृति की रचना की है। विनयन्त्र सूरि क विद्य हृण नमिनाय चतुष्पातिका शीपक प्रथ का उ उच्य मियता है। इन कविवा क वाक्य म कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किय जा रह हैं

- १ मुज भणइ मुणानवइ ? ज वण गयनसूरि ।
जइ सक्कर सय खडियि ता इम मीगी चरि ॥ (मेहतग)
- २ भअ भजिअ वगा मगु कनिगा तेनगा रण मुत्ति चन ।
मरहट्ठा घिट्ठा नगिअ कण्ठा सारट्ठा भय पाअ पाअपल ॥
चपारण कपा अ वअ सपा उत्थी उत्थी जाव हर ।
कासीयर राणा विअउ पआण विजाहर मण मत्तिचरे ॥ (विद्याधर)
- ३ नून चादल छाइ छह पसरी नि राण शण् खर ।
शत्र पाडि तुटालि तोडि हनिस्सी एव भणत्थूमण्टा ॥
झूठ गवमरा मघालि सहसा रे कत मरे कह ।
कठ पाग निवेश जाह शरण श्रीमत्तदव विभम ॥ (सारगधर)
- ४ रे घणि ! मत मअगज गाभिणि खजण तीअणि चदमुही ।
चवल जोबण जात ण जाणहि छइन समप्पहि काइ णही ॥ (धम्मर)
- ५ रे रजखइ लहु जीव बडवि रणि मयगत मारण
न पिइ अणगननीर हनि रा यह सहान् ।
अवर न बघइ कोइ सघर रयणायर बघइ
परनारी परिहरइ लच्छि परायह र घण् ।
कुमरपान कोपि चडिउ पाडइ सत्तकडा हि जिमि
ज जिणघम्म न मनिस तीहवि चाडिमु तम तिम ॥ (आमभट्ट)
- ६ प्रहि उगमि सूरवदिसिहि पहिनऊ चानिय चक्क ।
धूजिय घरयन घरहरए चनिय कुत्ताचल चक्क ॥
पूठि पियाणु तउ दियए भयवन भरह नरिदु तु ।
पिडि पचायण परदनह हिनियनि अवर सुरिदु ॥ (शालिभद्र सूरि)
- ७ अह काइल कुलरवमुम्मल वणि बमत पपटट ।

भट्ट व मयणमहा निबद्ध पयडिअविजय भरट्टु ॥

सूर पत्राइवि वतकर उत्तरसि आसत्त ।

नीसामु व ाहिण दिमिहि मनय समीर पवत्तु ॥ (सोमप्रम)

८ नय पिप्पइ ससणहि नहु विणइहि गुणिहि ।

ननु लउजइ नय माणिण नय चात्तुयसईहि ।

नय खरकाम नवयणि न विहवि न जोवणिण ।

दुग्गत्त मणु महिन्ह वितइ जायरिण । (लक्ष्मणमणि)

९ विरिमिदिमिदिमिदिमिदिमिदि ए महा वरिमत्ति ।

घनहन घनहन खलहन ए वादला वट्ठि ।

झवयव यवयव यवयव ए वीजुत्तिय यवयवइ ।

धरहर धरहर धरहर ए विरहिणि मणु कपइ ॥ (जितपद्य सूरि)

१० सज्जि नवि स्रोता नमि हिरसि । मन आपणपउ तउ खय नसि ।

ज्जिणि विक्खात्तिउ पहिउ छोट्टु । न गणिउ अट्टु भवत्तु नट्टु ॥ (विनयचन्द्र सूरि)

अपभ्रंश काव्य परम्परा का महत्व

राम प्रवार के आदि युगीन काव्य के अतगत जो प्रवृत्ति विकासशील रही उसमें उपयुक्त कविया का ही योगदान मुख्य है। इनके अतिरिक्त इस प्रवृत्ति के अतगत ही कुछ अन्य कविया का भी उत्पन्न किया जाता है जिनमें विद्यापति प्रमुख हैं। इनकी प्रसिद्ध छत्ति पदावता के नाम में उपलब्ध होती है। अपभ्रंश के अतिरिक्त भाष्य भाषाया का प्रयोग इनके काय में मिलता है। शास्त्रीय आधार पर विद्यापति ने राधाकृष्ण की भक्ति का गान किया है। इसके अनिर्दिष्ट उपयुक्त विवरण में यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अपभ्रंश काय प्रवृत्ति में मुख्यतः खल काय प्रवृत्ति काय समास्फुट काव्य ही निर्यात गया। मुख्य रूप से यह काय अपभ्रंश प्रवृत्ति की सभा विनयताया का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ है। विशेष रूप में जन धर्म से सम्बद्ध ज्ञान के कारण अपभ्रंश काव्य प्रवृत्ति में धर्म अध्यात्म भक्ति बराह्य नाति उपमा आदि से सम्बद्ध घनत्व भी स्वभावन समाविष्ट हो गये हैं। अपभ्रंश काय प्रवृत्ति का विस्तार मुख्य रूप में लगभग १५ सौ वर्षों का स्वीकार किया जाता है। आगे चलकर धीरे-धीरे गाथा काल के चन्द्रमण्डल जैसे कविया ने भी इस भाषा का प्रयोग किया। अतएव आदि युग के अन्त में अपभ्रंश काव्य का प्रवृत्ति का ऐतिहासिक महत्व है।

यह अनुभव हाना है कि आयु की अल्पता का दखन हुए राम और कृष्ण का गुण-गान उतना अधिक सम्भव नही है और तमक जनिग्विन पथ्वीराज व ऋण स भा उच्छ्रण हाना है । इसीलिए कवि स्वो स वच्छान प्राप्त करके काव्य गविन की कामना करता है । यही नही मन्त्रा व ऋण स उच्छ्रण हान या कामना स ही चंद का भी पथ्वीराज सहित आ म वनिदान करता पन्ना है ।

महारवि चन्द्ररत्नाने न गण रामाग्नि कवि हान व कारण पथ्वीराज रामा म अपन आश्रयणाता का गुण गान किया है । एतिहासिक ऋषिकाण म चण व चम महा काव्य म समकालीन सामाजिक आर्थिक राजशासितिक और धार्मिक वर्षों का विस्तृत चित्रण उपनय्य हाना है । दमत्रिण एतिहासिक तथ्या का ऋषि म यदि इस ग्रंथ म कुछ अप्रामाणिक तत्वा का भा उपनय्य या तत्र भी चम ग्रंथ का मन्व निविवाद रहना है । काव्य-कला की ऋषि म पथ्वीराज रामा म मुन्व रूप न वीर रस का चित्रण किया गया है । इसके साथ हा रौद्र बाभस भयानक और अन्धन रमा का मयाग भा है । शृगार रस भा च काव्य म स्वभावत विस्तृत रूप म समाविष्ट किया गया है । सामाज्य रूप स पथ्वीराज रामा का कथा म मुन्वत पथ्वीराज चौहान व युद्धा और विवाहा का हा वपन है । तमत्रिण वीर और शृगार रस एक प्रकार व क्रम बद्ध रूप म तमम मिलते है । कहा कहा पर ता इन रमा के परिपाक व सूक्ष्म अत्यंत उच्छ्रण उद्धरण मिलते है । उच्छ्रण के त्रिण निम्नलिखित छन्द ऋष्य है

मिर तुम्ही दृष्टी गयत कथो बज्जरी ।

तहा मुमरिय महमा ऋषि दोनी सुनारी ।

अमिय मह आषाम, लयो अछगिय उछगट ।

तहा मुमई परतपिय अरिण अरि कट्ट कथग ।

अत्हन कुमार विभ्रम मुग्घी रन ति विमानह मनु मयो ।

निहि दरस त्रिनाचन गगप्रर तिम षकर मिर धुर धुयो ॥

(पथ्वीराज रामा, छ० २२८७ स० ६१)

जमा कि उपर उचय किया जा चुका है शृगार रस का पाग भा इस काव्य म वार रस व समानान्तर हा मिलता है । महाराजा ऋषिना का गुण दूत प्रम कथा का विवरण रना है । वह उनग पथ्वीराज चौहान और रामा मयागिता व रति विलास का वपन करता हुआ पन्ना है

ताज गण्डनापत । बहिय र सत रक रर ।

अघर मधुर ऋषिण । तृनि अय र व पण ।

अरुष प्रसु मर अज । गज पत्रक पन्विकम ।

भूपन टट कथ । र है अष्ट वीच नरविय ॥

नीलान् धानं नपुंरु बभ्रिय । हारं हारं करणां निरु ॥

रतिवाह समर मुनि इच्छिनिय । कीरं कट्टं बभ्रिय गहर ॥

(‘पृथ्वीराज रासो’, छ० १४१ रा० ६२)

रस परिपाक के साथ साथ पृथ्वीराज रासा में अन्वहार निरूपण भी सामर्थ्य रिकता की वृद्धि में सहायता रूप में मिलता है । विशेष रूप में उपमा उपमेश प्रतीति भ्राति सदह अतिशयोक्ति एव दृष्टान्त आदि अलंकारों का प्रयोग हम काव्य में बतता म हुआ है । अन्वहार योजना में कहा-कहा पर इस काव्य का चिन्ता बनापूण एव चामत्कारिक बना दिया है यह मकेत निम्नलिखित उदाहरण में मिल सकता है

देखि तथ्य मजागि नहूँ तन काम करारे ।

हाय भाय विभ्रम कटाँछ दुज बट्ट भति निनारे ।

रचि तरंग झंकार वयन अणोन बसय सब ।

हरत दुष्य द्रम सम सिवान कुच चञ्चवक सोहि सब ।

द्विग भवर मकर बिबर परत भरत मनोरथ सबल मुनि ।

वर बिन्दुर उपति मनात म नन जानो किहि घटिय मुनि ।

(पृथ्वीराज रासो, छ० ११८८ रा० ६१)

पृथ्वीराज रासो का महत्व उसने विशिष्ट बहूत आकार रसात्मकता आनका रिकता भाषा शली एव लोकप्रियता आदि अनेक दृष्टियां से है । यद्यपि इस ग्रंथ में प्रक्षिप्त अशा का बतता से समावेश किया गया है परन्तु फिर भी कवि ने इसमें जिन पात्रों को प्रस्तुत किया है और उनमें माध्यम से जिन कथाओं की योजना की है व अपने आप में निर्दोष एव त्रमबद्ध प्रतीत होते हैं । विशेष रूप से कथा के नायक पृथ्वीराज चौहान का चित्रण कवि ने अत्यन्त सतक दृष्टि से कनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है । पृथ्वीराज चौहान के जीवन में नित्यप्रति होने वाले युद्धों में प्रमगा साथ प्रयाणा विवाह प्रमगा आदि के माध्यम से इसमें लखन में विविध यणना की आलोचना की है जिन्होंने ग्रंथ को मोहक बना दिया है । इसके अनिरीक्त कवि ने इस ग्रंथ के नायक पृथ्वीराज चौहान की सेवा में ३६ शत्रुिय वशा के प्रस्तुत रहने का उल्लेख भी किया है । इसी कारण यह ग्रंथ समकालीन राष्ट्रीय स्वरूप और परिस्थितियों के सद्भ म जन चेतना की विवक्ति करता है ।

पृथ्वीराज रासा में महाकवि चन्दबरदाई ने जिन धार्मिक वणना की योजना की है उनमें समकालीन धर्म भावना का सम्पूर्ण परिचय मिलता है । उपर्युक्त उल्लेखों का आधार पर यह कहा जा सकता है कि पृथ्वीराज चौहान के समय में हिन्दू धर्म के अतगत निगण और सगुण भक्ति का प्रचार था । भक्तजन ब्रह्मा विष्णु और शिव के उपासक थे । कविगण गणेश तथा सरस्वती की भी स्तुति करते थे जो जनता की जनम भक्ति और आस्था का सूचक है । पृथ्वीराज रासो में भी दशावतारा का वणन मिलता है । विष्णु की पत्नी का अन्वहार प्रमग इस ग्रंथ में मिलते हैं । यही नहीं, कीर योद्धाओं के

विश्व लोक में गमन का भी उत्सव इसमें किया गया है। शिव की उपासना शिव मंदिरा की चर्चा तथा वीर गति के उपरांत यादवा का शिव लोक गमन क प्रमग चदवरदाई ने प्रस्तुत किय हैं। शिव की पूजा और शिव मंदिरा स सम्बन्धित बघाए भी रासा म आमाजित किय गय हैं। इनक अतिरिक्त अय भी अनेक दवा देवताआ उदाहरण के लिए गणेश उमा सरस्वती हनुमान भरव, यम इद्र वरण गधव यम नारद तथा शक्ति आदि की उपासना के मकत भी इसम प्राप्त होते हैं। इनक अतिरिक्त भरव भूत प्रत बताल पिशाच एव यागिनिया आदि भी इसम किसी 7 किसी रूप म समाविष्ट हुए हैं। बौद्ध और जन धर्म क साथ साथ साई धर्म स सम्बन्धित विवरण इसम मिलत हैं।

जसा कि ऊपर कहा गया है दशावतार पृथ्वीराज रासो म वणन धर्म वणन का पृथक और मुख्य विषय है। इसम चदवरदाई ने मच्छ कच्छ बाराह गसिह वामन परशुराम राम, कृष्ण बुद्ध तथा कल्कि अवतारा का वणन किया है। गंगा आदि क महात्म्य का वणन भी इस कृति म मिलता है। गंगा क दशन गुण गान स्नान और जनपान का महत्व अनेक स्थला पर इंगित किया गया है। गंगा महात्म्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

पाप मनमथ हरन गग नव बघ अन पर ।

हरि चरनन करि जनम काम छड मु टुप्य बर ।

तीन लोक भर भवन तहाँ प्राकम सु धातन ।

निगम न हरि उर धरा धम्म तट काय प्रमानन ।

बछहि मु चतुर नर नाग सुर दुति दरसन परसन बिहर ।

निजीवनाय सा गग निधि जस सय उबल वसु अपर ॥

(‘पृथ्वीराज रासा, छ० ३१६)

जसा कि ऊपर सक्त किया गया है पृथ्वीराज रासो ममकानान आमाजित व्यवस्था का विस्तृत निरूपण करता है। इसम चदवरदाई ने विजयाश्रमा शीपावकी हाली तथा ग्रहण आदि का विस्तृत वणन किया है। नवरात्रि नौमुगा तथा विजया दशमी आदि क वणन भी इसम मिलते हैं। दुगापूजन क समय पशुबलि क विधान की भी इसम चर्चा है। नवरात्रि में व्रत का विधान भी इसम मनुष्य क लिए निरूपित किया गया है। दीपास्तव के अतिरिक्त लक्ष्मी पूजन एव दान दान क प्रमग ‘पृथ्वीराज रासो म मिलत हैं। शीपमालिका क अवसर पर जन समाज क हृष और उत्तम क सूचक वस्तुन इसम मिलत हैं। नवरात्रि क अवसर पर भी स्नान, ध्यान और दान का महत्व वर्णित है। वमतामव क अवसर पर प्रभु राज वणन के स्वागत म वसत पंचमी की कृष्ण की प्रतिमा क पूजन का उल्लेख इसम मिलता है। हातिकारमव का क्या से सम्बन्धित अनेक प्रमग भी इस काव्य म मिलत हैं। श्री धार्मिक पर्वों और उत्सवों क अतिरिक्त जमानसव एव विवाहासव क अंगणित

प्रसंग पृथ्वीराज रासो में उपनयन राज है। पृथ्वीराज गोशाला में नम के उपनयन का तो अत्यंत विस्मय वर्णन इस ग्रन्थ में मिलता है। जब नाम के अन्तर्गत पर ग्यानि पिया से मुह्त सम्बन्धी परामर्श गत जात आनि की जानतागि जात जात परम उपहार भेंट आनि की जात भी प्रसंग है। पृथ्वीराज को जात पराज विराटा के अवसरा पर भी उत्सवा की आयोजता प्रसंग इतिहास है। यद्यपि भी पराज विराट के विस्तार से विषय है। शत्रुन पर अपशत्रुन की सामाजिक मायागण विराट और मुगल मान दाना ही समाजा में था। श्री गन्धर्ग तपसा न स्वप्ना के भी प्रमाणा का विश्लेषण किया है। समझानीन सती प्रथा के भाजन विवरण प्रथम ग्रन्थ में उपनयन होते है। पृथ्वीराज रासो में जाके क्षत्राणिया के सती जात का प्रसंग वर्णित है। गामू हिक रूप से सतिया का परनायकमन भी प्रसंग वर्णित है। गना हान के परनायक नि परायण बधुए जिस जिस जाके म उनत पनि गय हण थ व। जाकर उनग मिलती है।

उत्तरहरणाय

विविध तरुनि न्यि दान अवर सामत गूर भर ।

अप्य अम्स ह्य नीय मिनिय रह हित धाम घर ॥

चित्त चित्त ख खनि गवनि पावक प्रजारिय ।

प्रम प्रीति किय प्रम नम गमह प्रति पारिय ॥

उजलिय काज जायास मिति हर हर सुर हर गौम भी ।

जह जह सुवास निजवत किय तह तहा तिय पिय मिलन भी ।

(पृथ्वीराज रासो ८० १६२४)

पृथ्वीराज रासो के चरित नायक सम्राट पृथ्वीराज चौहान है। उन्हा के जीवन चरित्र प्रमुख युद्ध एक विवाहा आनि का वगन इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। जम्भा बली इच्छिनी पत्नीरनी दाहिनी शशिवला पद्मावती हसावती सयोगिता आनि के अतिरिक्त अय केयाआ से भी पृथ्वीराज के विवाह इसमें विस्तार से वर्णित किय गय है। इसके अतिरिक्त गगभय तीन दजन प्रमुख युद्ध वसताना का उल्लेख भी प्रसंग है। भीमशैव चानुक्य जयचंद राठौर शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी परमान पडिहार मुगलराय भागी राज भान आदि से भी पृथ्वीराज के महत्वपूर्ण युद्ध का प्रसंग उल्लेख है। पृथ्वीराज के जीवन की कतिपय अय विशिष्ट घटनाओं का भी प्रसंग वर्णन है। पृथ्वीराज के अनिरिक्त इस ग्रन्थ में उसने रनसी नामक पुत्र का चरित्र भी वर्णित है जिसकी एक युद्ध में मृत्यु हो गयी थी। मुहम्मद गारी जा गानी का बादशाह था उमके पृथ्वीराज से थीस युद्ध का उल्लेख प्रसंग में मिलता है। य युद्ध विविध स्थाना तथा विविध परिस्थितियों में हुए थे। पृथ्वीराज चौहान रनसी तथा शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी के अनिरिक्त इस ग्रन्थ में भीमशैव चानुक्य जयचंद राठौर परमान रावत समरसिंह या सामत सिंह आदि के चरित्र भी वर्णित है। स्त्री पात्रा में इतिहास प्राप्त चरित्र सयोगिता इच्छिनी शशिवला पद्मावती तथा पथाकुमारी आदि से पृथ्वीराज के

विवाह का विधुत वषण इसम मितता है। इस प्रकार स महाकवि चदवर्णा-
 पथ्वीराज रामा जपन ममकारीन जीवन और परिस्थितिया का
 मन्तुन करन वाला महावाध्य है। इसम बार रस का प्रयानता दते हुए
 भयानक तथा अतमत रसा के समानांतर हा शृंगार रस का जसा समवेद
 वसा अयत्न तुनम है। परम्पर विराधा रसा का यह परिपाक उसम
 मितता का माग एव अमामाय छत्र विधान न साय-साय कवि की प्रतिभा
 वषण प्रति आदि न मितकर हिता क मवप्रथम महाकाव्य का अयत्न
 अधिकारी बना दिया है।

भट्ट कदार—

उपनयन नहीं हुई है। उसने स्वरूप और महत्व की कल्पना का मूल आधार मीरिका है जिसमें विविध ग्रामों में गाये जाते या उगाए प्रगतिरूप हैं जो विशेष रूप में वर्षा काल में गाये जाते हैं। भारतीय इतिहास में इन दो प्रगतिरूपों का विकास वीरों के चरित्र का आधार बनाने के लिए साहित्यिक विद्याओं में रचने में सिद्धि मिली है। आल्हा छन्द में भी इन दो वीरों के अद्वितीय बलिदान का विवरण है। इनके अतिरिक्त विद्याना का यह भी अनुमान है कि जगन्निभ ने किसी एक प्रसिद्ध काव्य की रचना की थी और आल्हा छन्द उसका कर्तृ छन्द विशेष अथवा अथ विशेष है जिससे अतिसूक्ष्म कवि ने चदलवली वीरों की गाथा का वर्णन किया था। चूंकि यह ग्रंथ मात्र मीरिका रूप में ही उपनयन हुआ है इसलिए इसमें समय-समय पर अनेक प्रगतिरूप अशा का समावेश हुआ गया है। सबसे फलस्वरूप इसका मूल रूप भी वहीं-वहीं पर परिवर्तित हुआ गया है। आल्हा और उन्नत सामान्य युग में जन्म था। वे युधिष्ठिर और भीम के अवतार के रूप में जन सामान्य में समानित हुए थे। आल्हा छन्द का एक काव्यांश उदाहरण के लिए यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

यह सुनि उन्नत बानन जाग । दाग कर्ण है ध्यान नुम्हार ॥
 दनिया मारि उटीमा मारा । बाजी सतबन्ध नी टाप ॥
 अटक पार नी बण्णा गागा । जान धरासान गजरात ॥
 धुर दक्खिन त ओ काबुन जग । बाजी टाप चटुना क्यार ॥
 धर में जाया टीका फर । ता रजपूती जाय नसाय ॥
 तुमहि हसीआ का टर नाहा । तुमको जानत भवन जहान ॥
 टीका लोटन का नाहा ॥ ताह प्राण रहे की जाय ॥
 याह रचाय नउ मनय का । टीका तुरत नउ चन्दाय ॥

श्रीधर—

आदि युगीन वीर-काव्य की इस प्रगति के अतिसूक्ष्म श्रीधर का नाम भी उल्लेखनीय है। इनका रचना काल पन्द्रहवां शताब्दी माना जाता है। श्रीधर ने रणमल्ल-शापक का प्रथम की रचना की थी। जसा कि इसका शापक से ही स्पष्ट है इसमें ईश्वर के राठौर राजा रणमल्ल की एक युद्ध में एतिहासिक विजय का वर्णन मिलता है। रणमल्ल का यह युद्ध पाटन के मूल में जफर खास हुआ था। श्रीधर राजा रणमल्ल राठौर के राजा मानित कवि थे। इनकी जाति यास बनायी जाती है। रणमल्ल के जफर खास युद्ध और जफर खास की पराजय का विवरण इतिहास में भी मिलता है और यह घटना सन १३८७ ई. का बताया जाती है। यह काव्य कुल ७० छंदों में लिखा गया है। यह काव्य प्रथम चारण परम्परा के अतिसूक्ष्म आवा है और इसमें कलात्मक दृष्टिकोण से भी इस छन्द अन्वय जादि की प्रभावशाली योजना मिलती है। इस काव्य प्रथम का एक उदाहरण इस प्रकार है

दमदमइ तमउमकार डकर दान डोनी जगिया ।

सुर करहि रण सहणाइ समुंरि सरम रसि समरगिया ॥
 बलकलहि काहन कोडि बलरवि कृमन रायर बरहरइ ।
 सचरइ शक मुरताण साहण साहमी सवि मगरइ ॥

अथ कवि—

ऊपर जिन रचनाओं का उल्लेख किया गया है उनमें अतिरिक्त भी कुछ कवियों की रचनाएँ इस युग में उपलब्ध हैं। इन कवियों में खुमरा तथा विद्यापति के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। खसरा ने साधारणतः दाह और पहलिया इत्यादि की ही रचना की है। विद्यापति ने मुख्यतः पद्मवला की रचना की है जिसमें आंगारिक भावनाओं की प्रधानता है। कहने का आशय यह है कि उस प्रवृत्ति में वीर रस प्रधान काव्य मुख्यतः उपयुक्त कवियों द्वारा ही लिखा गया। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है राजनतिक अशांति और साम्प्रदायिक युद्धों पर वीर भावना के काव्य में समुचित विकास के लिए आधारभूमि उपस्थित की। यदि इस युग में एक आर पद्मीराज रामा जस महाकाव्य लिख गये तो दूसरी आर रणमन्त्रजना लघु काव्य-कृतियाँ भी लिखी गयीं। हिन्दी के परवर्ती काव्य में वीर भावनाओं का समावेश मिलता है। परवर्ती युग में जो कविता लिखी गया उसमें वीर रस के तात्त्विक नमावेश का परिचय यथास्थान दिया जायगा।

भक्ति युगीन निर्गुण काव्य की प्रवृत्ति

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति युग के अंतर्गत निम्न तीन प्रवृत्तियों का मूल प्रथम उल्लेख किया जा सकता है उसका सम्बन्ध निर्गुण काव्य में है। भारतीय पर विदेशी और विद्यर्मी जाति का आधिपत्य न जाने कब पश्चात् धार्मिक भावनाओं का जन्म में उत्पन्न हुआ। पन्द्रहवीं शताब्दी से यह धार्मिक भावना काव्य में एक गुणित स्वस्व ग्रहण करती दिखाई देती हैं। मुसलमानों के निरन्तर आक्रमणों का सामना करते हुए हिन्दू जाति ने इन युद्धों को एक प्रकार के धर्म युद्ध के रूप में ग्रहण किया। महमूद गजनवी के बारह और मुहम्मद गौरी के बीस युद्धों के पश्चात् भारतभर में राजनीतिक अस्थिरता और परतलना की स्थिति उत्पन्न हो गयी। ये विद्यर्मी और विदेशी जब तक देश पर आक्रमण और चूतमार करके चले जाते थे तब तक भी वहाँ विशेष धार्मिक समस्या उत्पन्न नहीं हुई। परन्तु जब मुसलमानों की स्थायी रूप से यहाँ बसने का विचार करने लगे और उनकी शासन व्यवस्था में हिन्दू धर्मानुयायियों पर कर का बोझ अधिक बढ़ गया तब धर्म के क्षेत्र में एक प्रकार की तबकेनना का जागरण हुआ।

धर्म के अतिरिक्त विद्यर्मीयों से हिन्दू धर्मानुयायियों को स्वयं अपनी सामाजिक और वर्ण व्यवस्था के बर्ण्य से भय था। मुसलमानों में जहाँ एक ओर सभी में एकता और समानता की भावना थी वहाँ दूसरी ओर हिन्दुओं में वर्ण प्रवस्था अपने उग्र रूप में विकसित थी। अनेक धार्मिक सम्प्रदाय प्रचलित थे जिनके अनुयायी हिन्दू परस्पर विरोध और शत्रुता की भावना रखते थे। अस्पृश्यता की भावना भी प्रचलित थी यद्यपि अनेक बन् बन् मतों ने इसके निराकरण का प्रयत्न किया।

ऐसे प्रकार की परिस्थिति में निर्गुण सम्प्रदाय के अंतर्गत एक विशिष्ट काव्य प्रवृत्ति विकसित हुई जिसमें मुख्य रूप से साम्प्रदायिक एकता और समानता की भावना निहित थी। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यह एक आध्यात्मिक आन्दोलन था जिसमें बाह्य आन्दोलन की तुलना में आंतरिक युद्धों पर अधिक बल दिया गया।

जाति और सम्प्रदाय विहीन यह विचारधारा समकालीन आधुनिकता का दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। इस निगुण वाच्य में वापस पहला धारा मित्रही है वह जान और साधना पर आधारित है। उस समय साधना-मुद्रा की भावना प्रधान है। यदि वाच्य प्रवृत्ति की दृष्टि से देखा जाय तो यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास के अन्ततः भक्ति युगान्तर निगुण वाच्य प्रवृत्ति का प्रसार स्पष्टतः तरहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक मिश्रित है। मसूद गजनवी मुहम्मद गारी कुतुबीन काजवा बज्जत अनाज्जान खिजबी सरदार म्याजा फीरोज तुगनब तमूरनग बज्जत इब्राहिम खा बज्जत ताजा, सिकन्दर शाह इब्राहिम ताजा बाबर अमायू गरजाह मूरा, अकबर जहांगीर शाहजहाँ औरंगजेब बहादुरशाह मुहम्मदशाह नारिंशाह तथा अहमदशाह टुराना आदि मुसलमान आक्रमणकारियों तथा शासकों के द्वारा राज्यकाल में यह प्रवृत्ति किसी न किसी रूप में विद्यमान थी। इन विद्वानों का धार्मिक चरित्रता में युक्त नाति और शिष्टता के प्रति अनहिन्दुता में इस वाच्य प्रवृत्ति के प्रसार में योग दिया। भक्ति युग में निगुण वाच्य की प्रवृत्ति के अन्तर्गत जिन प्रमुख कवियों का योगदान है उनका सर्वांगीण परिवर्तनमय विवरण नीचे उपस्थित किया जा रहा है।

जयदेव—

निगुण वाच्य प्रवृत्ति में सर्वप्रथम उदयनीय नाम जयदेव का है जिनका रचना काल तरहवीं शताब्दी माना जाता है। बचन जय विशिष्ट शैली में भाषण पूर्व पानिया का उल्लेख करते हुए जयदेव का चर्चा की है। एतिहासिकता का दृष्टि में भाषण जयदेव समय प्राचीन है। गाँव गाँव में ही विद्वान् कृत है। जयदेव के सम्बन्ध में जो विवरण उपलब्ध हैं उगल यह जानना है कि यह राजा जयसंगमन की ममा के पालक तथा मंगल थे। उनके विवाह तथा चाम धार्मिक जीवन से सम्बन्धित अनेक विवरण उपलब्ध हैं। ब्राह्मण कथा पचावना उनकी पत्नी थी। गान गाँविक के अतिशय जयदेव ने रचना राधक तथा चंद्रनाक नामक दो अन्य कृतियों की भी रचना की थी। जयदेव ने अपने वाच्य में अत्यन्त के रूप में जान बचा करके कुछ गाँवियों का पचर्चय तथा राजा के शिष्ट जान निर्दिष्ट किया है। जीव की मुक्ति उनके विचार से तथा ही सकता है जब गाँवियों का धार्मिक कृत्य का राधा से प्रेम है। जयदेव के सम्बन्ध में चन्द्रनाक का रचना तथा भक्तमान में भाषण मिलते हैं। जयदेव के सम्बन्ध में विषय में यह कहा जाता है कि यह निम्बाक सम्प्रदाय के थे। कुछ लोग उन्हें बिल्लु ग्वाभी के सम्प्रदाय का भी मानते हैं। परन्तु निगुण वाच्य के जो वेक इनका कविता में सर्वप्रथम उपलब्ध है उनके कारण इन्हें एतिहासिक महत्व इस वाच्य-परिष्कार के सम्बन्ध में भी है।

नामदेव—

उन नामदेव का समय तरहवीं शताब्दी माना जाता है। महाराष्ट्र

साहित्य में एक प्रतिष्ठित मत के रूप में स्थायी विषय माना है। इसका जन्म म. १२०० में सतारा जिनके नामकी समीप स्थान में हुआ था। इसकी जीवन तथा रचनाएँ के विषय में विविध विज्ञानों में पारस्परिक मतभेद हैं। तथा जाता है कि म. १२०० के पुत्र धर्म और राजाबाई नामक पत्नी के इनके प्रारम्भिक मूला व शायिक और विद्वान नामक पुत्र हुए थे। ६० वर्ष की अवस्था में १३१० में इसकी मृत्यु हुई। जय देव की भाँति ही नामदेव का भी निगण वाच्य परम्परा के प्रयत्नकार होने का अर्थ प्राप्त है। यह विद्वान सम्प्रदाय के अनुयायी थे जिसमें नाम स्मरण का महत्त्व अधिक है। तथा जाता है कि सत नामदेव ने चानदेव मन्ताराज के साथ उत्तर भारत का भ्रमण करके एक घम प्रचार किया। विद्वान सम्प्रदाय के अर्थ प्रसिद्ध सत नामदेव का नाम गुम्हार चाखा मन्ताराज नामाई तथा का हापात्रा नामि जय प्रसिद्ध मान भी हुए हैं। नाम देव के विषय में भी जिनके विद्वान्तिया का प्रचार है। कहा जाता है कि इनका नाम देव करत नाम एक बार इन्हें पश्चानाग और चानदेव और तब विज्ञाना धरु का मन्ताराज मानकर एक हान भक्ति का माग अर्पित किया। नामदेव के विषय में यह भी कहा जाता है कि इनके विचार वारकरा सम्प्रदाय से प्रभावित थे। यह सन्त तुकाराम के आध्यात्मिक आदेश भी कहे जाते हैं। नामदेव की निगण वाच्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

माइ न होनी वाप न हाते कम न होता कामा ।

<

×

भाई रे इन मनन हरि पखी ।

हरि की भक्ति साधु की सगति सोई यह दिल लखी ।

यह समार हाट का गखा सत्र कोउ बनि जहि आया ।

जिन जस तवा तिन तस पाया मूरख मून गवाया ॥

आत्म राम देह धरि आया तामे हरि का देखी ।

वहन नामदेव बनि बलि जही हरि भजि और न लेखी ॥

त्रिनोचन—

सत त्रिनोचन नामदेव और ज्ञानदेव के गर वताये जाते हैं। इनका जन्म धर्म देव नाम में हुआ था। इनके जीवन के विषय में अनेक प्रकार की किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं। आदि प्रथम में कबीर के दो दोहा में त्रिनोचन और नामदेव के संवाद का विवरण है। कुछ विज्ञानों का यह भी अनुमान है कि नामदेव और त्रिनोचन स्वामी रामानन्द के पूर्व समय के थे। कुछ प्रमाणों के आधार पर इनका जन्म तेरहवीं शताब्दी में माना जाता है। त्रिनोचन के पन्ना में आध्यात्मिक विषयों पर विवेचना मिलती है। यह भी उल्लेख मिलता है कि यह एक सम्प्रदाय के अलग विष्णुस्वामी की परम्परा के अनुयायी थे। परवर्ती काल में वनम सम्प्रदाय के पुष्पि माग का आरम्भ भी इन्हीं से हुआ था।

रामानन्द—

रामानन्द जी का जीवन विवरण हिंदी साहित्य के आचार्यों में मतभेद का विषय

है। डा० फ़ुह्र प० रामचन्द्र गुवन तथा मन्त्रिण आदि विद्वानां नवन जन्म
 काल व विषय म विभिन्न अनुमान प्रकट किय है। अगत्स्य महिमा म भी इनक जन्म
 का भिन्न काल मिनता है। उपलब्ध प्रमाणा व आजाग पर नका जन्म काल मन
 १२८८ म तक १४७० के मध्य था। इनकी माता का नाम मुञ्जाता और पिता का नाम
 पुण्यसन्त था। मत्तमाल व प्रसिद्ध टाटाकार प्रियाणास भाण्यारवर तथा प्रिममन
 इनका जन्म प्रयाग म मानत है। बताया जाता है कि रामानुज की शिष्य परम्परा व
 अलगत द्वाचाय क अतिरिक्त राघवानन्द नाम क जा प्रसिद्ध पापी हुए ह ज्ञान
 याग चल स रामानन्द की अल्प योग म रथा की थी। कहा जाता है कि राघवानन्द न
 ही उन्हें किष्की नवीन सम्प्रदाय व प्रवचन का प्रस्था दी था। कुछ विद्वान रामानुज
 सम्प्रदाय व एक विशिष्ट प्रवक्तव क रूप म भी उनका अल्प करत है। एक मन व
 अजुमार श्री सम्प्रदाय की दा विशिष्ट शाखाग हा गयी था जिनम द्वितीय का पुत्रद्वारा
 रामानन्द न किया था। रामानन्द जी की विद्या कई विशि कृतिया म आण्य
 मन्त्रात्रमाधर श्रीरामानुज पद्धति गीताभाष्य, अनिष्यभाष्य, जानरभाष्य
 सिद्धांतपत्र रामरक्षास्तात्र 'षागन्तिलामणि रामाराधनम्' 'काल विनार
 'रामानुदादश, जानतिलक जानलीना आत्मवाच राम मन्त्र नाग प्रन तथा
 आध्याम रामायण आदि क नाम लिम जान हे। जय कृतिया व सम्भ म भा रामा
 नन्द की स्फ रचनाजा का विवरण प्राप्त हता है। आहरण क लिए मन्त्र रतावना
 म भी रामानन्द क नाम व चार पद उपलब्ध हान है। रामानन्द का महत्व हिदा
 माहिय म रामभक्ति सम्प्रदाय व प्रवक्तव आचाय क रूप म अत्यतम है। इनका गिष्य
 परम्परा म सन कबार पीपा, रविनास घन्ना, अनन्तानन्द नुरमुसानन्द नरह्य नि
 यागानन्द मुञ्जानन्द भवानन्द तथा गालवानन्द आदि क नाम विाप रूप स उल्लेखनाय
 है। सत रवन्नाम व मद्रह प्रय 'सवागा म रामानन्दजी का एक पत्र उपलब्ध हाना
 है जा इस प्रकार है

हरि चिन जन्म वया साध रे ।

बहा भया अति मान बडाई धन म् अघ मनि साया र ॥

जनि उत्तम तफ दधि मुहायो मचन कुमुम मूचा सया रे ।

माइ पत्रपुत्र बल्ल चिप मुप, अति सान धुनि धुनि राया र ॥

मुनिग्न भजन साध की मगनि, अतरि मन मन् न घाया र ॥

रामानन्द रतन जन्म ज्ञान थापनि पत्र काह न जाया र ॥

सन नाई—

रामानन्द क गिष्य मन नाई का समन चौहवो मञ्जाना माना जाता है। बहा
 जाता है कि य बीरर क राजा क आधय म रहन थ और मन्त्र पालनर र सपनाजान
 थ। यह बारकरी सम्प्रदाय के अनुगामा भा बताया जान है। कुछ विद्वाना का यह
 भी मत है कि यह बाघवगढ़ नरेण क आनय म रहन थ। एक मन्त्र पत्र का मिनता है

कि यह स्वामी रामानन्द के समतानीय धरणी गरी। इही भक्ति की रक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की विवक्षितिया का भी प्रकार है। आगे पाठक को नाम पर सन पय का भी प्रवचन होना उचित किया जाता है। यह जीवना सम्बन्धित कुछ चामत्कारिय घटना भी माहिय प्रकाश उपलब्धी है।

कबीररास—

सत कबीर का जन्म काल पता नहीं माना जाता है। जन्मस्थान रियासी कबीर साहब जी की परिचयी पोषाजी की दाशा कबीर चरित माघ तथा अथ ग्रन्थ में इनके जीवन में सम्बन्धित जिन विषयों में बताया है। बाबा हरि प्रिय तथा वेस्केट आदि के मत से कबीर सितार गीत समतानीय धरणी जाति कबीर जन्म के जोर अनेक पन्ना में इस तथ्य का उल्लेख किया है। जन्म निश्चय कही है कि इनका जन्म हिन्दू परिवार में परन्तु पाना पापय मुत्तमान परिवार में हुआ था। इनके पोष्य पिता का नाम नीरू अथवा नीरुदा और माता का नाम गीता बताया जाता है। जन्मति के ही अनुसार इनका जन्म काशी में तथा मृत्यु मगध में हुई थी। गोरखपथी योगिया के सपत्न से कबीर ने योगभ्रमण और ज्ञान की प्राप्ति का थी। इही के सानिध्य के कारण कबीर ने आध्यात्मिकता का आरक्षण में पत्थर विरक्ति का अनुभव किया। कबीर रामानन्द के शिष्य किस प्रकार हुए यह विषय में भा विवक्षितिया का प्रचार है। कुछ विद्वान कबीर का गुरु शय तरी गी मानते हैं जिसका उल्लेख खजानतुन आसफिया नामक ग्रन्थ में किया है। कबीर के काव्य में गीतत्व विवक्षित हुए हैं उनका महत्व कबीर की जाविभाववातीन सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में विशेष रूप से है। कबीर ने अपने ज्ञान माग में जिन सिद्धांतों का अनुमोदन किया वह मुख्यतः हिन्दू धर्मशास्त्रों द्वारा अनुमोदित हैं। कबीर बचनावनी के सम्बन्ध में भा भिन्न प्रकार के मतों का विवरण किया है। कबीर ने अपने काव्य में मुख्य रूप से धार्मिक आडम्बर का विरोध करते हुए निगुण माग का समर्थन किया है। कबीर ने अपने काव्य में वास्तविक ज्ञान के प्रकाश के लिए अपने साधु गुरु का ही महत्व सर्वोपरि स्वीकारा है। इस सम्बन्ध में अनेक पन्नों का उल्लेख है जिनमें एक इस प्रकार है

राम मोहि सतगुरु भिन अनेने कानिधि परम तनय सुखनाई ।

काम अगिनि तन जरत रही है हरि रसि छिरकि बुनाई ॥

दरस परस त दुरमनि नासी दीन रत्नि ल्यो आई ।

पापड भरम कपाट खोनि क अनभ कथा सुनाई ॥

बहु समार गभीर अधिक जन का गहि ल्याव तीरा ।

नाव जहाज खेवरया साधू उतर दास कबीरा ॥

एक रहस्यवादी कवि के रूप में कबीर का स्थान हिन्दी काव्य में बहुत ऊंचा है। कबीर के काव्य में इतने गूढ़ और गम्भीर विषयों का विवचन है जो सामान्य ज्ञान से

परमै । म्यूक्त जावन-नरता का विठना मूख विवचन कबीर न किया है उतना अथ किमा कवि ने नहा । आध्यात्मिक विषया का विवचन करत हुए कबीर न आत्मा-परमात्मा क सम्बन्ध पर, बिम्बार न विचार किया है । कबीर का लिखा हुए रमनिया सबदा तथा उलटवामिया आदि म भा गम्मार अथ का निहिति भिन्ना है । आत्मा का विवचन करत हुए कबीर न उक्तता जा रूप बर्णित किया है वह अथ न प्रतीकात्मक ह । कबीर का मुख्य सिद्धान्त, यद् अथ कि जय नव मनुष्य की आत्मा प्रकाशित नहा हाती तब तब उक्त जावन म आप्त अथान का अथकार दूर नहा हागा । कबीर का उलटवामिया म भी ता गूण शक्ति सिद्धान्त सामान्य जावन सभों म मिलत है उनका इस अर्थि स बहा-मह्व है । कबीर क बीतर मून स इस सम्बन्ध म एक उलटवामि इस प्रकार है

अनूप वा तन गवन राता ।
 नाव बावन वाज गगता ॥
 मोर न माध टुनहा नीरा ।
 अथ जागि वहाता ॥
 मध्य व चाग्न समधा दाहा
 पुत्र चाहिन माना ।
 दुःखनि तापि चौक बगरी
 निभम पण परवाना ।
 भात अति बरानिहि घाया
 भडा बना कुणवाता ॥
 पाणिगूण भया भा महन
 पुपमनि पुरनि ममाना ।
 कहहि कबीर गुना हा मती
 गुना पण्डित पानी ॥

इस प्रकार म कबीर न आध्यात्मिक विषया का टुनहा चित्र अथन वाच्य म किया है । कबीर क काश्य म रहस्यात्मक तवा की प्रधानता का भा मून वाग्य यहा है कि कबीर न जानी बलनामक मामय्य का उपपाय करते हुए चित्तारमक और प्रतीकात्मक पण की रचना की । कबीर क रहस्यात्मक मूनरत आत्मा और परमात्मा क पृथक्करण का स्थिति का प्रकट करन का प्रयास किया गया है । अन्तव की माहृता भावना जय तथया नष्ट न जाती है तब मनुष्य अथवा ब्रह्म का परम गता क प्रीति जा मिक समरण करना है । आत्मा का आत्म विस्मरण ता ब्रह्म म उगता विवचनाकरण है । कबीर का निहिति प्रक्रिया क अनुमात्र स्थिति न जान विस्मरण का अन्तिम स्थिति कह है जब आत्मा और परमात्मा का एक रूप हुना है । इतर पण न यह कहा जा मरता है कि कबीर का रहस्यात्मक मूर्वी सञ्ज्ञित माय

ताओ और भक्ति युगीन अशैतवाणी मत का सम समान्य रूप है। आत्मा और परमात्मा का एकीकरण और परमात्मा में आत्मा का विन्नीतीकरण इगर्बी धरम परिणति है। साराशा यह कहा जा सकता है कि कबीर ने जिन निमण ज्ञानमार्गीय भक्ति का प्रतिपादन किया वह धार्मिक आध्यात्मिक जाघार पर आश्चर्यविहीन है। कबीर का यत्तित्व और दृष्टिकोण ज्ञान व्यापक और प्रभावशाली था कि कबीर के परमात्मा उनका एक सम्प्रदाय प्रशस्त था। उनके सम्प्रदाय के मुख्य समर्थक में अनेक प्रसिद्ध निमण कवि हुए जिनमें दादूदास मुन्दास गरीबदास और धरणास आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कबीर के नाम पर कुछ उपाहरण भी प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो उनके दृष्टिकोण के विविध पक्षों के स्पष्टीकरण की दृष्टि में महत्वपूर्ण हैं।

व दिन कब जावग भाइ ।
जा वारनि हम देह धरी है
मिनिबो जग जगाए ।
हो जानू ज हिन मित्र खू
तन मन प्राण समाइ
या कामना करी परपूरन
समर्थ हा राम राइ ।
माहि उदामा मायो चाह
चितवत रनि बिहाए
सेज हमारी सिध भइ है
जब साज तब खाइ ।
पहु अरदास दास की मुनिय
तन का लपति बुलाइ
कह कबीर मिल ज साई
मिनि करि मगत गाइ ।

+

}

+

मैं सासन पीव गाहनि आई ।
साई सग साध नहीं पूगी
गयो जावन मुपिता की नाई ।
पक्ष जता मिनि मज्ज छायो
तीनि जना मिनि जगन निखाई
सखा सहनी मगत गाव
मुख दुष माव हनद चलाइ ।
नाना रग भावरि फरी

गाठि जारि बठ पनि ताइ
 पूरि मुत्तग भया बिन दुहा
 चौक न रगि घरया सगौ भाइ ।
 अपन पुरिष मुत्र नबहु न देन्या
 मता हान समथी समचाइ
 वह बबीर हू सर रचि मरि
 निरौ वन्त ल तूर बजाई ।

+ +

हम सब माहि सकल हम माही ।
 हम थ और दूसरा नाही ।
 तीन चोक म हमारा पसारा
 आवागमन सब धन हमारा ।
 घर दरमन कहियन हम भखा
 हमहा अनीन रूप नही रखा ।
 हमहा आप कबार कहावा
 हमहा अपना आप लखावा ।
 चीनी चीना बीनी चरिया ।
 काठ क ताना काठ क भरनी
 बीन तार स बीनी चरिया ।
 दगला पिगला ताना भरनी
 मुपदन तार स बीनी चरिया ।
 आठ कपल दल चरया रात्र
 पाव तन गुन तीनी चरिया ।
 साई का सिपन माम दम राग
 ठाक ठाक क बीनी चरिया ।
 सा चारु मुर नर मुनि योग
 ओडि क भना बानी चरिया ।
 दास बबीर जनन स आग
 ज्या बी त्या घरि दीनी चरिया ।

सरना—

सब कहना का रखना-काठ चोखो मनाथी का उत्तरादि माना जाता है मद्यपि
 मनाथ का नाम और स्थान क विषय म विगता म मउभे है । क्या जाना कि यह जानि
 क कहाँ म । परन्तु इहानि क्या भी शक हैया नहीं का । इनक विषय म अनक

विव-तिया प्रसिद्ध है। जो शत्रु आघ्यात्मिक विषय और द्वारा प्रसिद्धि का रण करती है। यदि प्रथम म द्वारा काय्य मरति है। जय मरति विषय का रण मरति न भी मुख्य रूप से आघ्यात्मिक विषय पर काय्य रचता है। काय्य का का उदाहरण इस प्रकार है

एक बूढ़ जन बारने चानक टुग पाय ।
 प्राण गय सागर मिय पुनि वाम न आय ॥
 प्राण ना थाक फिर नही बस फिरमाजा ।
 बूढि मुय नीका मिल बहू काह चलाजा ॥
 मैं नाही बछ हो नही बछ जाहि न मारा ।
 जोसर लज्जा राखि नह सदाना जन तारा ॥

नालदेव—

भक्तियुगीन निगण काय्य की प्रवृत्ति अतन्तग कुछ मरिती मरति नाम भा उल्लिखित किय जात है जिनम नानक एक हैं। यम रश्माय का विवामा मरति नाम की मेहनत या। इनकी धार्मिक भावना म मुख्य रूप म सत्त्व मिद्धता का प्रधानता है। उनके पदों का एक समूह उत्तराधासयान के नाम म उल्लिखित किया जाता है। उसीलिए इनका नाम उत्तराधासयानी भी कहा जाता है। उनके पदों का रचन पर यह ज्ञात हाता है कि उनके विचारा पर शय मन का प्रभाव अधिक था। उनके रचना का न भी चौदहवीं शताब्दी ही अनुमानित किया जाता है।

धना—

मत्त धना का समय पंद्रहवीं शताब्दी अनुमानित किया जाता है। यह जाति के नाट्य है। कहा जाता है कि यह सननाई तथा रविदासक आघ्यात्मिक मिद्धता म मन्वय रखत था। इनके पद भी आन्ति प्रथम म सक्ति है। इनका विवाच-स्थान राजपूताना म टाक नामक स्थान के अतन्तग धवन गाव-वनावा-जाना है। इनके काय्य म भा एश्वर भक्ति म सम्बन्धित सामा य जोर सरन भावनाओं की ही प्रधानता है।

वेणी—

निगण काय्य प्रवृत्ति के अतन्तग सत धनी का भी नाम उल्लेखनीय है। जिनका रचना का न निश्चित नहीं है। इनके विषय म गुरु अन्तर्दक्ष के एक पद म भी उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि उनके विचारा पर नाम सम्पूर्ण का विशेष प्रभाव है।

रविदास—

सत रविदास रामानन्द के बारह प्रधान शिष्या म एक जात है। उनकी जाति चमार थी जिसका उल्लेख म हाते स्वयं किया है। सत धना और सारासाई म पदा म भा रविदास का उल्लेख मिलता है। कुछ विद्वान यह साधुसम्प्रदाय के प्रवर्तकों म भी प्रानत है जिसकी स्थापना बारभान म श्री श्री श्री रविदास के शिष्य उदयदास

कें अनुगामिया म थ । मन रविदास का कुछ नाम कबीर का ममवालीन भी बताते हैं । 'भक्तमान म भी इनका उल्लेख मिलता है । कहा जाता है कि महाराणा सागा की पत्नी बालारानी इनका एक शिष्या थी । अधिकांश मन कविया का भाति रविनाम भी ज्ञानित म । इसीलिए उनकी भाषा मिश्रित है । इनके द्वारा बताया गए एक पद्य का उल्लेख रदासी पद्य के नाम से भी मिलता है जिसका मानने का विविध प्राप्ता म मिलते हैं । सत रविनाम के काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

माधव अविद्या अहित कीन ताते विवेक दीप मदान ॥

।मग। मीन भग पतग जुजर एक दीप रिनास ।

पच दीप असाध जामहि कीन ताकी आस ॥

जत थन जीव जटा तहा नौ करमवा मग जाय ।

माहू पास अवद्ध बाध्या करिय कीन उपाय ॥

विगुण यानि अवतत सभव पाप पुण्य अमाच ।

मानुपाधवार दुतभ निहू मगनि पाच ॥

रदास दास उपाय तन त्रम अप न तप गुण जान ।

मनत जन भवहरन , परमानंद करन निदान ॥

पीपा—

सत पीपा का उल्लेख श्री रामानुजी की शिष्य परम्परा म मिलता है । भक्त मान के टीकाकार प्रियदास का लिखा गया पीपाजी की कथा नामक एक काव्य भा उनके विषय म बताया जाता है । इनके समय के सम्बन्ध म फरहर तथा कनिषम आदि विद्वाना म मतभेद है । जनरत कनिषम ने जतपान साधनमिहू रावराया की परम्परा म इनका रखा है । इनका रचना-काल का पतावा अज्ञात है । इनका अनुमानित किया जाता है । इनका काव्य सर्व गान्धिका म मकनित है । इसका अतिरिक्त इनकी रचनाका का एक मन्त्र था पापाजा की बातों शायक म भी बताया जाता है । पीपा के काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

बाया दया बाया दयन, बाया जगम जाना ।

बाया छूप दीप नवना बाया पूजा पाता ॥

बाया बहू घन छोजन तब निडा पाई ।

ना कछ आरवा ना कछ जावा राम का त्रुताई ॥

जा अज्ञात माई विना गा गाज मा पार ।

पापा प्रनव परम तव हा मनगु हाय तयाव ॥

धमदास—

सत धमदास कबीर के ममवालीन बताया जान है । यह बाधवगढ़ के निवासी और, जानि के वश्य था । भात-भाग के अनुगामी हान के परचार यह कबीर से

दीक्षा केर उन्ने प्रमुख शिष्या म माय हए । इका सब म मयुग काय म नै कि इहाने कबीर के गुरु उपदेशा को साया म ओर सतत भाषा भती म गवाण । रूप म जनगामाय के सम । रग्य । इनका समय सातहया शताब्दी अनुमानित किया जाता है । सत गरीबनाम न भी अपन वाणी प्रथ म धर्मशास्त्र का उत्प्रेय किया है । इनके विषय म यह भी उल्लेख मिलता है कि कबीर पथी होये व पूर यह मगुण भति व उपासक ध जोर कबीर से प्रभावित हाकर ही इ हाा अपना म परिचित किया था । सत तुलसी साहय विचित पत्र रामायण नामा प्रथ म भी सात उ तय मिलता है । कबीर म इनके विचारा म पर्याप्त साम्य मिलता है ओर कबीर के साम्यवादी सिद्धांता स भी इनके रहस्यवात् म पर्याप्त एकरूपता बनायी जानी है । गन धमनास के काय का उदाहरण सम प्रकार है

सतगुरु जाबो हमरे दस निहारा बाट छनी ।
वाहि दस का बतिया रे तारें सत गुजान ।
उन सतन क चरन पछारी तन मन करी कुरवान ॥
वाहि देस की बतिया हमम सतगुरु जान कही ।
आठ पहर क निरखत हमरे नन की नीद गई ॥

कमात—

स त कमान कबीर के औरस पुत्र कहे जाते हैं । यह उनके शिष्य क रूप म भा कबीर मन का प्रचार करते रहे । कहा जाता है कि यह जाति के मुसलमान थ । इनके ज म ओर कबीर क जोरम पुत्र हान के सम्ब ध म अनेक प्रकार की किवदंतिया का प्रचार है ।

नानक—

गुरु नानक सिख्वा के आदि गुरु के रूप म माय किय जाते हैं । इनके अनक नामो का उल्लेख मिलता है जिनम गुरु नानक बाबा नानक नानक शाह नानकदेव नानक पाणशाह जोर नानक सादेव आदि है । इनका जन्म सन १४६९ म साहार क अ तगत तनमठी नामक स्थान म हुआ बताया जाता है । इनके पिता का नाम बालू एय माता का तप्ता कहा जाता है । यह जाति क खत्री थे और मुख्यत कृषि काय करत थ । बायावस्था के पश्चात इनके हृदय म नान का प्रकाश हुआ और स्वती शि ता का परित्याग कर यह सतमग एव ज्ञान चिन्तन करने लग । इनके जीवन म सम्बन्धन अनेक प्रकार की किवदंतिया प्रचलित है जो उनके महत्व का सूचन करती हैं । इनका विवाह मूना की कया मुनबिखनी म हुआ था जिससे इनके शिष्य द तथा रदमीन्स (रदमीन्स) नामक पुत्र हुए थ । कहा जाता है कि यह अपने बहनोई जय राम क प्रयास स मुनतानपुर के गबनर दीलन खा के यहाँ मोदी के रूप म भी रहे थे । इनका परमात्मा का दशन होन का भी उल्लेख मिलता है । शी गुरु प्रथ साहय म इनकी रचनाएँ मिलती हैं । इनके उपदेशा म मुख्यत एकेश्वरवात् स सम्बन्धित सिद्धांत

मित्र हैं। नानक जो के बाप इनका एक पथ चना। इन्होंने अन्तिम समय में अपना शिष्य पहिना का अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जा गुफ अगद के नाम से विख्यात हुए। नानक के बान्धु का एक उदाहरण इस प्रकार है

शुब कछ जीव का ब्योहार ।

माता पिता भाई मुन बाघव अफ पुनि गृह की नार ।

तन त प्राण हात जब पार टरत प्रत पुकार ।

बाघ परा बाऊ नहि राख पर तें त्र विकार ॥

मृग तस्ना त्या जग रचना यह त्था हूँ बिचार ।

कह नानक भद्र राम नाम नित जात हात उगार ॥

अगद—

गुरु नानक के परचात उनके द्वारा मनानात शिष्य पहिना गुफ अगद के नाम से उनका गद्दा पर बठ। अगद के पिता का नाम फर और माता का नाम दयाकुमारा था। इनका समय सातहवां शताब्दी है। इनका विवाह खावा से हुआ था जिससे इनके दानू नया दामू नामक दो पुत्र भा थे। कहा जाता है कि गुफ अगद बापशाह तुमासू द्वारा भा सम्मानित किए गए थे। अगद का रचनाए प्रथम सातह में संकलित हैं। अगद का पिता तथा एक दाहा उदाहरणाय नाम प्रस्तुत किया जा रहा है

जामुख तामुख रागिया दुख भा सभाल आइ ।

नानक कहै सियाणिय या कन्त मितावा हाइ ॥

अमरनाम—

गुरु अगद के परचात गुरु अमरनाम का नाम इस परम्परा में उचित किया जा सकता है। इनके पिता का नाम तजमान तथा माता का नाम कथनकुमारा था। इनका पत्नी मनसादेवी था जिससे इनके माहारा तथा माहिक नामक दो पुत्र तथा राना एवं भाना नामक दो पुत्रियाँ हुई थीं। कहा जाता है कि इनके जन्म करने बापशाह अकबर भा आय थे। इनके पुत्र भाना का विवाह हरिदास यज्ञा के पुत्र जग से हुआ था। जग इनका भक्ति भावना में बहुत प्रभावित हुए और इनके परचात इनका गद्दा पर रामनाम के नाम से बठ। गुरु अमरनाम का रचनाओं में 'आरत' भाषक कृति विषय रूप में प्रसिद्ध है। गुरु अमरनाम की भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है

तू आप आप समु करता काइ दूजा हान मु ओरा कहिय ।

हरि आप बात आपि बुनाव हरि ।

आप जति भति रवि रहिय ।

हरि आप मार हरि आप छाँ मनहरि मरगि पति रहिय ।

हरिबिनु कोइ मारि आवनित मकर ।

मन में निनिद निम्बनु हाँ रहिय ।

उठदिया बहदिया गुनिया गंगा हरि नाम ध्याइय ।

जन जाना गुन गुन हरि त्रिय ।

रामदास—

गुरु रामदास का जन्म सन ११४४ म हुआ था । राम जीत गुन पृथीगण महान्व तथा भजन क नाम उरि त्रिय त्रिय नाम । राम जीत गुन भक्त का राम दास ने सबसे योग्य और भक्ति म दिष्टा रगन वाना जाहरर जना उगगाधिकारी घोषित किया । सन १५८१ म गुरु रामदास का स्वर्गवास हुआ । प्रसिद्ध ग्रन्थ गाथि म गुरु रामदास की रचनाएँ उपलब्ध हैं । रामदास का एक उपाहरण म प्रकार है

हौं क्या साताहीबिरम जनु बन्धी तरा घन्धिया ।
तू अगम ल्यानु जगम्मु है आपि तहि मिता ।
मैं सुझ बिन बना की नाहा तू जति सया ।
जो तेरी सरणागती तिन तू छलाई ।
मानक बेपरवाज है विमु तिन न समई ।
सगति सत मिता हरि सरि निरमति नाय ।
निरमति जान नाय मनु गवाय भये पवित्र सरीरा ।
दुरमति मत गई भ्रम भागा ही म बिनठा पारा ।
निन्दि प्रभू सत सगति पाव निज घर हा आबासा ।
हरि मगत रगि रसन रसाय नानक नाम प्रगासा ॥

अन्नदेव—

गुरु अन्नदेव का जन्म सन १५६३ म हुआ था । जन्म जावन क विषय म अन्न देवदत्तिया प्रसिद्ध हैं जा बाल्यावस्था म ही उनकी ईश्वर भक्ति म दिष्टा की छातव हैं । उनकी विवाह विशनचंद की पुत्री गमा म हुआ था । इनका पुत्र का नाम हर गोविंद था । गुरु अन्नदेव ने एक महत्वपूर्ण कार्य यह किया कि जवन पूर्ववर्ती सभी गुरुओं की रचनाओं का संकलन किया । ये जीवन भर अनश्व प्रचार क पंड्य ला थे भी शिवादि रं और इ रं अनेक पीडाएँ सहन करनी पडा । अन्त हरगोविंद के अपना उत्तराधिकारी घोषित करन क पश्चान सन १६०६ म उन्होंने जपन प्राण छा । गुरु अन्नदेव की प्रसिद्ध कृतिया म सुखमती का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । इनके का य का एक उपाहरण इस प्रकार है

गावत राम के गुण गीत ।
नाम जपन परम मुख पादय आवागवणु मि मरे मीत ।
गण गावन होवन परगाम चरण बमन मट हाय निवास ।
सत सगति मट हाई उधार नानक भव जन उत्तरसि पार ।

हरगोविन्द—

गुरु हरगोविन्द का जन्म सन १५८१ में हुआ था। अपने पूर्ववर्ती गद्दी अधिकारी के साथ हुए कठोर व्यग्रहार तथा रचित पद्यत्रा के कारण उनके समय तक मित्रों में पर्याप्त राय का भावना जाग्रत हो गयी थी। इसीलिए विगुद्ध धार्मिक भावनाओं के स्थान पर अब कुछ राग हिंसा वृत्ति भा कर्म नग य। इसीलिए मित्रों के स्वयं मन्दिर में एक अकान तन्त्र की स्थापना उनके समय में की गयी और पवित्र घम-ग्रथा तथा गुरु का स्थापना के लिए पचास प्रधान स्तंभों का नियुक्त किया गया। गुरु हरगोविन्द की दामोदरी तथा नानकी नामक दो पत्नियां थीं जिनमें प्रथम सन्तिका तथा द्वितीय सत्तगबहादुर का जन्म हुआ। सन्तिका के दो पुत्रों नामक पुत्र हुए जो इनके परवान गद्दी पर बैठे। इनका स्वर्गवास सन १८६४ में हुआ था।

हरराय—

गुरु हरगोविन्द के परवान गुरु हरराय उनके गद्दी पर बैठे। इनका जन्म सन १६३० में हुआ था। इनके विषय में जो विवरण उपलब्ध है उसमें यह जाना जाता है कि यह बचपन में ही ईश्वर भक्ति की वृत्ति रखते थे। कहा जाता है कि किमा कारण से अपने पुत्र रामराय से कुछ हान के कारण उन्होंने उनके स्थान पर हरकृष्ण राय का अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। इनका स्वर्गवास सन १६६१ में हुआ था।

हरकृष्ण राय—

गुरु हरराय के परवान गुरु हरकृष्ण राय गद्दी पर बैठे जा उनकी पत्नी कृष्ण कुंवर से उत्पन्न हुए थे। इनका जन्म सन १६५५ में हुआ था। अपने पांच वर्ष का छोटी अवस्था में ही यह गद्दी पर बैठे थे। औरंगजेब के आक्रमण पर जब यह उमर मिनने के लिए दिल्ली की ओर जा रहे थे तब माता के अन्तर्ग्रन्थ हो जाने के कारण सन १६६४ में इनका स्वर्गवास हो गया।

तेगबहादुर—

गुरु तेगबहादुर गद्दी पर सन १६६५ में बैठे थे। कहा जाता है कि उनके भाई करिमन तथा अन्य अनेक व्यक्ति उनके रूप रखते थे और इनका हृया तक करने के लिए सर्व प्रयत्नशील रहते थे। यह भी बताया जाता है कि इनका भेंट भ्रमण शान में मन्त्र मन्त्रों के साथ ही हुई थी। आगे चलकर यह औरंगजेब द्वारा बना बना नियमों के तहत सन १६७५ में इनका स्वर्गवास हो गया था। गुरु तेगबहादुर की स्तंभिका गुरु पण साहिब में संग्रहीत है। उनके काश्मिर का एक उत्सव नाम प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्रीगुरु नारायण गुरुि सत् ।

छिनु छिनु श्रीगुरुि सत् ।

सन्तानो विधिपन स्या गोदा वातानन अज्ञाना ।

किरण भयो अकू नहि समस कोन कुमति उग्राना ।

मानुस जन्म जियो जहि ठगुर गा । तथा धिगराया ।
 मुक्ति होति नर जाने गुमिरे निमग्य त ताया गाया ।
 माया को भङ्ग बहा बरनु है गग त पाहू ताई ।
 नानक कहत चेतु चित्तामणि होइ न ज्य सता ॥

गोविन्द सिंह—

गुरु गोविन्द सिंह की प्रसिद्धि भारतीय इतिहास में ज्ञात कारणों से है। मात्र नाति के अक्षर में विद्यमान परिस्थितियाँ और उनकी अत्यन्त दृढ़ गुरु गोविन्द सिंह ने महत्वपूर्ण कार्यों ने भी उन्हें प्रसिद्धि दी। गुरु गोविन्द सिंह के पहला पत्नी मन्गी नाम अजीत सिंह नामक पुत्र ने जन्म लिया। दूसरी पत्नी में जारावर सिंह तथा जुषार सिंह जन्मे। इनका एक और पुत्र पतह सिंह उनकी जिना नामक पत्नी में उत्पन्न हुआ। गुरु गोविन्द सिंह ने अपने समय में आठ बार जीरगजब की गनाया से भीषण युद्ध किया। इनके जवार सिंह तथा पतेह सिंह नामक पुत्रों का - जीर ७ वर्ष का अवधि में दीवार में चिनवा दिया। इनके शेष दो पुत्र भी युद्ध में वारगिन का प्राप्त हुए। गुरु गोविन्द सिंह की कृतियाँ में मना सिंह द्वारा सन्निहित दगवा पाननाट का प्रथम प्रसिद्ध है। गुरु गोविन्द सिंह का स्वगवास्त सन १७०० में हुआ था।

बदा बहादुर—

गुरु गोविन्द सिंह के पश्चात् उस परम्परा में वीर बदा बहादुर का नाम उन्नत नाय है जिनका पूर्व नाम लक्षमणदेव था। इनका जन्म सन १६७७ में हुआ था। गुरु गोविन्द सिंह ने उन्हें गुरुबख्श सिंह नाम दिया था जिनके यहाँ अपनी शूरवीरता के कारण बदा के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके समय तक सिक्खों में बहुत वमनस्य की भावना आ चुकी थी और उनकी एकता नष्ट हो गयी थी। सिक्ख धर्म के अन्तर्गत अथवा भी अनेक प्रकार के सम्प्रदाय चल। इनके प्रबन्धकों जीर ममथका में गुरु नानक के पुत्र गीच के पक्षीधर हम्पत रामराय वार सिंह राम सिंह सुयरा शाह मुताब दाम दयान दास आदि के नाम विशेष रूप से उन्नतनीय है। इनके अतिरिक्त सतत जम्भनाथ सतत शख फरीस सतत सिगाजी तथा सतत भीपन आदि के नाम भी यहाँ उल्लिखित किये जा सकते हैं।

दादू दयाल—

भक्ति युगीन निगण का यह प्रबन्ध के अन्तर्गत सतत दादू दयान का नाम विशेष रूप से उल्लिखित किया जाता है। इनका जन्म सन १५४४ में अहमदाबाद में हुआ था। मुत्सन्त पत्नी विल्सन तारासत गेरोना स्वामी दयानन्द सुधाकर त्रिवेदी तथा भिनिमोहन सतत आदि विद्वानों में इनकी जानि और पत्रक व्यवसाय के सम्बन्ध में मनभङ्ग है। इनके गुरु का नाम बुडहन बताया जाता है। कुछ लोग उन्हें बरीर के पुत्र कमाल का शिष्य बताते हैं। इनके दो पुत्रा गरीबदास और मिरनी दास तथा दो

पुत्रिया नाताबाई और माता बाई का भी उल्लेख मिलता है। कहा जाना है कि इनकी अकबर से भी भेंट हुई थी। इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ म जनमय बाणी तथा कायावेलि हैं। दादू दयाल के भक्ति ज्ञान आश्रम योग माया ब्रह्म आदि विषया में सम्बन्धित सिद्धांता का कबीर की विचारधारा में पर्याप्त साम्य मिलता है। इन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं में कबीर का उल्लेख करते आश्रम किया है। इनके परचात इनका एक पद्य स्वतन्त्र रूप में दादू पद्य के नाम में प्रचलित हुआ। इनके अनेक शिष्य थे जिनमें मुदर दास (गच्छ) मुदर दाम (कनिष्ठा) जगजीवनदास गरीबदास रज्जवदास हरदास जन गापान चित्रनाम बखना बनबारी जगजीवन छीनम और विशननाम आदि के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं। इनमें से सुन्दरदास ने ज्ञान समुद्र तथा मुदर विनाम नामक दो ग्रन्थों की रचना की थी। रज्जवजी ने सर्वांगी नामक कृति की रचना की थी। दादू के वाक्य में मुख्य रूप में इश्वर भक्ति सतिग महिमा, साम्प्रदायिक बमनश्य निमनन आदि विषयों का समावेश मिलता है। दादू दयाल के वाक्यों का एक उदाहरण नाश प्रस्तुत किया जा रहा है

मालिक महारवान करीम

गुनहगार हर राज हर दम, पनह राखि रहीम ॥

अव्वन आखिर बन्ना गुनही, अमन बद बिसियार ।

गरक नुनिया नितार माह्वि दग्बद पुकार ॥

पगामास नका बनी करन बुराई बद पन ।

बससिन् तू अजाव आखिर त्वम हाजिर सल ॥

नाम नर रहीम राजिक, पाकपरवरणिकार ।

गुनह फिर करि देहु दादू तनव दर दीनार ॥

राजब साहब—

सन राजब साहब दादू दयाल से प्रमुख विषय थे। इनका जन्म सम्बन् १६१० में हुआ था। यह जाति के पठान थे। दादू दयाल से भेंट होने के परचात इन्हें जीवन से विरक्ति हो गयी थी। इनकी मृत्यु के परचात इनका एक पृथक् सम्प्रदाय चल पड़ा था। इनकी रचनाओं में बाणी तथा सर्वांगी ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। इनका मृत्यु-वर्ष सम्बन् १७४६ बताया जाता है। इनके वाक्यों का एक उदाहरण इस प्रकार है

मीन समु न ठाहर दूद्रा पन अगस्त ।

राजय रीना सिंह सा जहा पर दम हम्म ॥

जब राजब पन जीन गन सधुदारपन विगण ।

प । पन्नग पपातनू प्रप त पाया दय ॥

श्रवण नन मुत्र नासिका मटिवणावणाहार ।

राजब पात पय का प्राण पिठ ब्यवहार ॥

१६८२ बताया जाती है। इसके पिता का नाम बाबा क्यामगु २२ नाम कहा जाता है। कुछ लोग उनका नाम बाबा गुन्नार नाम और का नाम गुन्नार नाम ही बताते हैं। इनकी जाति भी विद्वान नाम ब्राह्मण और गरी पृथक् पृथक् माता है। कहा जाता है कि बाल्यावस्था में ही मनुकास क हृदय में भगवत्प्रभित क प्रति अनुराग था। उनकी दानशीलता की अपार कथाएँ प्रसिद्ध हैं। बचपन में ही उनकी इस प्रकार की भावनाओं का देखकर उनके माता पिता विचित्र हो गये। परन्तु माय ही कुछ साधुओं ने उसी समय उनका उत्तम भविष्य की घोषणा की थी। उनके गुरु महारामा बिटठनदास बताये जाते हैं। आध्यात्मिक क्षमता में उनका निष्ठा गुरु मराम स्वामी क विद्या। मयुरादास की परिचयी में उनकी गुरु प्रवृत्तता क अतिसत बिटठल शक्ति देवनाथ तथा भवनाथ आदि का उत्कृष्ट भिन्नता है। यह भी अनुमान किया जाता है कि १२ वर्ष की अवस्था के पश्चात् मनक का विद्याह दूना था। उनका एक पुत्री भी उत्पन्न हुई थी। परन्तु उनकी पत्नी और पुत्री दाता का ही दहान्त हो गया था। पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने अपना पतक व्यवसाय करन का पयत्न किया परन्तु उगम इनका मन न रमा। परोपकार और परमवा ही उनकी प्रमुख काय था। जीवन क अन्तिम काल में ही मनुकास ने अपना अधिकांश अष्ट काय रखा। अन्तत अनक साधु मतों की उपस्थिति में मनुकादास ने सन १६८२ में अपना गारा छोड़ा। सत मलकदास की प्रसिद्ध वृत्तियाँ में नाम बोध रतनखान भवन बच्छावनी भक्ति विश्वक ज्ञान परोक्षि बारहखनी रामअवतार लीला व्रज लीला धव चरित्र विभय विभूति तथा सुखसागर आदि विशेष रूप से उत्कृष्टनीय है। इनका मयु के पञ्चान मनुकासी सम्प्रदाय क नाम से एक पथक मत चला। रामसनही आदि साधुओं ने इसका विशेष प्रचार किया जिस मनुकादास ने अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। रामसनही क अतिरिक्त मनुकादास के शिष्या में दयालदास गुणामादास पूरनदास बालदास आदि शिष्या के नाम भी विशेष रूप से उत्कृष्टनीय है। सत मनुकादास के काय क कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

राम नाम दीउ बसे सरीरा । जस पत रह मध्य छीरा ॥
जसे रहै तिन म तला । तस राम सकन घट घेना ॥
जस सुमन मा रह खस वार् । तस राम सकन घट पार् ॥
जसे घरती के बिच पानी । तमे राम सकन घट जानी ॥
जम दरपन म परछाही । तस राम सकन घट माही ॥

+

।

+

हमरे गुरु की अद्भुत लीला न कछ पाय न पीव ।
ना वह साव ना वह जाग ना वह मर न जीव ॥
बिन पावन उँ जाय अवास बिन पखन उँडि आय ॥
बिन पावन सब जग फिरि आव सा मरा गुरु भाई ॥

गत्र न काज वावर हरि गत्र प्रहारा ।
 गवहि त रावन गमा पाया दुःख भाग ॥
 जरन खुगौ रघुनाथ क मन नाति मागता ।
 जा क जिय अमिमान ह ताका नोग्न छाता ॥
 एक दया और दानता, न रहिन भात ।
 चरन गहा जाय साध क, रात रघुगइ ।
 यहा बटा उपदेश है परद्राहन करिय ।
 कहै मलुक हरि मुमिर क, भीमागर तरिय ॥

अक्षर अन्वय—

सन अक्षर अन्वय का जन्म सन १६१३ म हुआ था। यह मनुस्मृतिके राजा पृथ्वीचक्र के दीवान थे। आगे चलकर ये जावन में विरक्त हुए। गये थे और पत्नी में जाकर रहने लगे थे। क्या जाना है कि मन्सूख छत्रमान उनके गिण्ये हुए गये थे। जान और भक्ति विषयक उनके मिथ्यात्व के उच्च कानि के हैं। उनके कृतियाँ म जान याग विज्ञान याग ध्यान याग विवेक दापिका ब्रह्म जान तथा अन्वय प्रकाश आदि कृतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

जगजीवन दास—

सन जगजीवन दास नाम के प्रसिद्ध नायु सत्तनामी सम्प्रदाय के अन्तर्गत हुए थे। इनका जन्म सन १६८२ म वागवती जिन में हुआ था। यह जाति के ठाकुर थे। उनके गुरु काशा निवामी विम वरपुरुष थे। बूढ़े लगे इन्हें मूला शान्ति और गाविन्द माहर्षि का गिण्ये बताया है। गुप्तान साहब का परम्परा में भी उनके उल्लेख किया जाता है। इनका प्रसिद्ध कृतियाँ म शान्त-सागर नाम प्रकाश आगम पद्धति महाप्रत्यय प्रम प्रत्य तथा अष्टविनाश आदि के नाम विषय रूप में उल्लेखनीय हैं। जगजीवनदास के नाम से ही एक अन्वय सत कवि भा उल्लेखित किये जाते हैं जिनमें जगजीवनदास पद्यों तथा जगजीवन निरन्तरी हैं। इनके कान्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

अर मन समुति कर पहिचान ।

का त अहमि कहीं त आयमि काह मम भुजान ॥

मुधि मभारु विचार करिक वृद्ध पाठिन जान ।

नान यह दुई पारि निन का अरन नहि अम्पान ॥

साह गइ यत् काय काया कग्नि भाया दान ।

ताग सुवर बच काउ नहि हय्या मबका ध्यान ॥

घबरण बगवर हा नति धात नाम निगवान ।

जगजीवन सतगुरु साधिन है अरु रट्ट उपदान ॥

सालदास—

सत सालदास का जन्म सम्बत १८६७ जीर्ण मृगशिरा १७०५ म दृष्ट पी। यह जनवर राश्य के अन्तर्गत तिनी ग्राम म स्थित थे। तिजनता के कारण मन्त्री गान्धर अपनी जीविका चलाते थे। बचपन से ही इनकी रति धार्मिक यतिप्रा की ओर थी। फकीर गदन चिश्ती की मताह पर १८८० अथवा सिद्धांता का प्रचार करता आरम्भ किया। गृह त्याग कर भवन उपदेश पाठ ही करता लगे। पीडा म १८८० आरंभ कल्या का सामना करना पडा। इनके एक पुत्र पत्नी तथा पुत्री स्वस्थता का भी उन्मत्त मित्रता है। उनके काय का एक सग्रह लान्दास की उपासनी पीडा म उन्मत्त विद्या जाता है। इनके काय का एक उपाहरण इस प्रकार है

नाजकी भगत भीष ना मागिय मागन आव शरम ।
 घर घर टाडत दुख है क्या बाणशाह क्या हरम ॥
 नाजकी साधु एमा चाहिए धन कमारर पाय ।
 हिरदे हर की चारुरी पर धन कभू न जाय ॥
 नाजकी हक खाइय हक पीइय हर की करो फरोह ।
 इन बाता साहिव यशी विरते काय ॥

प्राणनाथ—

सत प्राणनाथ का जन्म सम्बत १६७५ म हुआ था। यह काठियावाड के निवासी थे। उनकी जाति क्षत्रिय बनायी जाती है। अनेक प्रदेशों का भ्रमण करने के पश्चात् यह पना म जाकर रहने लगे जहा पर महाराज छात्रसान उनके शिष्य बन गये थे। उनके धर्म विषयन पान बन्त विस्तृत था जीर्ण विभिन्न भाषाओं और विभिन्न सम्प्रदायों के धार्मिक सिद्धांतों की अवगति रह थी। कहा जाता है कि कलकत्तेशरीफ शापक एक ग्रंथ इन्होंने फारसी म लिखा था जो अब भी उपलब्ध है। प्राणनाथ के अग्र्य ग्रंथों म प्रकृत बानी ब्रह्म ज्ञानी बीस गिरोहा का बाव बीस गिरोहा की हकीकत कीमत प्रमपहरी तारतम्य तथा राज विनोद आदि ग्रंथ हैं। अपनी पत्नी के साथ मयुक्त नयन म १८८० हान पदावती शीपक रचना भी प्रस्तुत की थी। उनके विषय म नागरी प्रचारणी सभा की खोज रिपोर्टों एक सम्पीरियन गजेरीयर आरंभ तिच्या आदि म भा सूचनाए प्राप्त होती हैं। महातरियाय शीपक एक अग्र्य ग्रंथ भी उनके लिखा हुआ बताया जाता है। प्राणनाथ के मत का उनके जीवन काल म बहुत प्रचार था। उन्होंने एक नवीन मन का भी प्रवर्तन किया जो धामी पथ के नाम म विख्यात था। उनके प्रधान भक्तों म पंचम सिद्ध और जीवन म ताने थे। इनम म पंचम निह न कुछ मनया की तथा जीवन मस्ताने ने पंचक दोहा की रचना की थी। प्राणनाथ का स्वगवास सम्बत १७५१ म हुआ।

बाबा साल—

सत बाबा साल मानवा प्रज्ञेय के निवासी थे और इनकी जाति क्षत्रिय थी।

यह ज्ञानार्थक समकालीन बतौर जान है। इन गुरु का नाम चतुर्न स्वामी था। इन जन्म से सम्बन्धित अनेक सामकारिक घटनाओं का विवरण विद्वानों के रूप में उपलब्ध होता है। कहा जाता है कि उन्होंने नाट्यलिङ्गनाम नामक एक फारसी ग्रन्थ की भाषा रचना की। भौतानात्मिक सिद्धांतों का अनुसरण प्रभाव था। इन सिद्धांतों का अनुभववास के परिचय बतलाने में प्रचार रहा। इनका काल एक उदाहरण के प्रकार है

जान अन्तर ब्रह्म प्रदान धर्म मीन भाव गाव गीत ।

निसन्नि उमने रहित कुमार, प्रकृति गुरुन जुहू एकातार ॥

दहा भातर श्वास है स्वाम भीतर जाव ।

भाव भानर वासना किस विधि पाय पीव ॥

साध सम्प्रदायी सत—

साध सम्प्रदाय के अन्तर्गत मन जागीराय सत बारमान तथा सत ज्ञान दाम आदि का उल्लेख किया जाता है। इस सम्प्रदाय का प्रवर्तन वानसम्बन्ध १६०० के लगभग माना जाता है। सत बारमान का रचना बानस माहात्म्य है। जागीराय का निष्ठा तथा एक ग्रन्थ जाति उत्पन्न शारक से भी उल्लिखित किया जाता है। इस सम्प्रदाय का अन्य विभिन्न रचनाओं में निदान चान पाया तथा साध पथ आदि हैं।

हरिदास—

मन हरिदास का नाम सात्वत प्रजापति से माना जाता है। यह निरञ्जना सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। हरिदासजी हरिपुर्य के नाम से भी उल्लिखित किये जाते हैं जिनका रचना हरिपुर्य जी का वाचा के नाम से प्रसिद्ध है। निरञ्जना सम्प्रदाय के अन्य प्रसिद्ध कवियों में निपट निरञ्जना तथा भगवानास निरञ्जना भी बतलाये जाते हैं। हरिदासजी के काल का उदाहरण के प्रकार है

नति स्वत मू धरना नहि स्वत स्यु प्राति ।

किरतम तत्रि गावि भना यह साधा की रीति ॥

बाबरा साम्प्रदायिक सत—

मन बाबरा साहिवा मन मायानन्द का लिप्या थी। मायानन्द के पूर्व बाबरा पथ रचना में रामानन्द (तीर्थीय) तथा दयानन्द के नाम बतलाये जाते हैं। मन बाबरा साहिवा का भक्ति निश्चल और सरल भावनाओं से युक्त था। इनके प्रधान लिप्या में बाबरा का नाम दिया जाता है। इनके गुरु भाई सूफीगाह भी बतलाये जाते हैं जिनका रचना साहबकोर के नाम से उल्लिखित की जाती है। इनकी एक रचना साहबकोर के नाम से भी प्रसिद्ध है। साहबकोर के मत में ही जगदीश्वरनाम का भाषा उल्लेख किया जाता है। भाषा साहब और हरिनाम साहब भाषा लिप्यन्तर्गत में थे। भाषा साहब की रचनाओं में राम कृष्णिया राम सह्य नाम राम रब

रास राग राम बलि तथा भगवान्छायी आनि प्रगिड है । उनके अतिरिक्त इनका वाय भीष्मा साहब की वाणी नीनक म भी मिलता है । इन गंगा क अतिरिक्त एसी सद्भ म सत हरनाम साह्य गाविन् साह्य पटू साह्य जानकीनाम गुलाल साह्य यारी साह्य आनि र नाम विशेष रूप म उतघीय है । इन गत कविया की कछ प्रसिद्ध रचनाए इस प्रकार है

समधि बूयि रन गदना साधा गूब नगई लडना है ।
 दम दम कदम परे जागे वा पीछे नाहि पछरना है ॥
 तिन तिन पाव लग जो तन म घन सनी क्या टरना है ।
 सबद खधि सममर जेर करि उन पाचा की घरना है ॥
 काम ब्राघ मन् चोभ बद करि मन कर छोरे मरना है ।
 घना रह मदान के उपर उनी चाि मभरना है ॥
 आठ पहर भसवार मुस्त पर गापिन नाहा परना है ।
 सोस दिहा साह्य क उपर विगता डर अब डरना है ॥
 पलटू बिना रुड के उपर अब क्या दूयर करना है ॥ (पलटू साह्य)

दीज दो प्रभ वास चरन म मन जस्थिर नहि पास ।
 ही सत् सत् जीव को वाचा नहि समान उर सात ॥ (भीष्मा साह्य)

भनि परकासित कहिय भवगा साह कन अत्रिकारी ।
 का पतिवना को जवव ता का विमचारी वारी ॥
 कवन नीर कवन जन कहिय को जमत को खारी ।
 का है कूप गगाजन का ह का है सनिन उवारी ॥
 का है कीट पनग वीन है को है नपति भिखारी ।
 का है चिऊना हरित कवन है का जम का मारी ॥
 कह गगान मह बूयि थका जिव निरवत को निरवारी ।
 सतगुर कृपा सत सरनामनि भवसागर तें उवारी ॥ (गुलाल साह्य)

बावरी रावरी का कहिय मन ह कव पतग भर नितभ भावरी ।
 भावरी जानहि सत मुजान जिह हरिरूप हिय दरसावरी ॥
 सावरी मूरत माहनी मूरत द करि ज्ञान जन लखावारी ।
 खावरी सा है तेहारी प्रभू गनि रावरी दखि भई मति बावरी ॥ (बावरी साहिबा)

हमारत एक अन्ह पिय प्यारा है ।

पन्धन नूर मुहम्मद साह्य जाका सक्न पसारा है ॥

चौहूँ तबक जाकी हमनाई झिलमिल जीति मिनारा है ।

बेचमून बेचून अकना हिंदू तुम्क म यारा है ॥

साइ दरबस दरस निज पायो माई मुमनम साग ह ।

आव न जाय मर नहि जीव यारी यार हमारा है ॥ (यागे साहब)

अथ साम्प्रदायिक सत—

उपयुक्त सत कविया के अतिरिक्त मत रगियाणाम मत रामचरण दाम मत धरणदास मत दूलन दास मत गरीबणाम मत परमुराम त्वाचाय मत बाबा रामचंद्र आदि भी हुए । बाबा रामचंद्र सीतारामी सम्प्रदाय के प्रवक्ता थे । इनकी प्रसिद्ध रचना चरण चंद्रिका नाम स उपलब्ध है । तथा सिध बाबा तबनिघणाम व । मन दीयाणास तथा सत शिवनारायण आदि भी इन काय परम्परा म उल्लिखित किय जा सकते हैं । जगजीवन दास की सिध परम्परा म दूता णास, दवीणाम गुसाईणस समणस, एव उपाध्याय चमार आदि हैं । सिद्धाणाम पत्रवानणाम घामीणस बालकणस अगणस अगणभान दाम अजबणस आदि क नाम भी यमी सत्तम म उल्लिखित किय जा सकते हैं । इन मना वा रचनाओं क कछ उदाहरण ए प्रकार है

मन मगन भया जब क्या गाव ।

ये गुन इंद्रीदमन करेगा वस्तु अमाती सा गाव ॥

तिरलोकी की इच्छा छा जग म विचर निर्वाव ॥

उनटी मुलटी निरति निरतर बाहर म भीतर नाव ॥

अपर सिंहासन अविचन आमन तहा मुग्नि ठहगाव ॥

त्रिकुटी महल म सज बिछी है द्वाणम अण छिप जाव ॥

अजर अमर निज मूरत मूरत आश माह दम ध्याव ॥

सकल अनोरथ पूरन साहिव बरि नहा मौजन जाव ॥

गरीबणस सत्पुरुष बिरेही, साचा सतगुरु दरमाव ॥ (गरीबदास)

मुम कृष्ण से मिनन की आरजू है ।

शबा रोड तिन म मती जुम्नजू है ॥

नही भानी हैं मुमको बाते किये का ।

मुना जब म उम यार का मुकनगू है ॥

नहीं मुमका मतलब जती म किये म ।

चुभा जब म तित म सनम छुमनू है ॥

जो आगिह है उमहा नहीं उम गागिन ।

तड़पना अबन म घटा तबह है ॥

गराके मुदम्बन विई भिगने यारा ।

एसा दा जहा म वो ही गुरु है ॥
 सभी आशिको पे किया कम तू ।
 मुआसी प तरा तहा तिन रजु है ॥
 जहा नेघ रनगीत बती है व हाजिर ।
 हर एक गुन म उमरी मिनी मुश तू ॥ (चरनदास)

दरियादास—

दरियादासी साम्प्रदायिक सना म दरिया दा ता नाम भी उच्यनीय है ।
 दरियादास नाम के दा मत हुए बनाय जात हैं । उनम म मत दरियादास (प्रथम) विचार
 क रहन बा न थ जोर मत दरियादास (द्वितीय) मारवा क रत बा न । उ ठ दरिया
 सात्व भी कहा जाना है । एम सम्प्रदाय क अतगत अय भा अनक प्रसिद्ध मत एम
 जिनम दत्तदास का नाम विशेष रूप म उच्यनीय है ।

पानपदास—

मत पानपदास का ज म सम्बन् १७७६ म आ था । इनम मत क अनुयायी
 पानपदासी कहतात हैं । कहा जाना है कि यह बीरवन क वंश म जम थ । उनका
 बचपन ब कपो म यतीन आ था । भगवन चवा म अनुक्ति क कारण इ जाने
 अपन गुरु भगनीराम म दीक्षा ली थी । गुरु की आगा स ही एतान धर्मोपदेश का बाप
 आरम्भ किया और प्रचाराय विभिन्न स्थाना का भ्रमण भा किया । उनकी रचनाए
 बाणा य य म सगहीत है । उनका स्वगवास सन १८० म हुआ था । उनकी शिष्य
 परस्पर म मशादास काशादास बूहगराम तथा बुद्धिदास आदि के नाम विशेष रूप म
 उच्यनीय है ।

रामचरन—

मत रामचरन का नाम रामसन्ही साम्प्रदायिक सना म विशेष रूप स उ च्यनाय
 है । उनका ज म सम्बन् १७७६ म हुआ था । यह सतराम क नाम म भी प्रसिद्ध है ।
 उनकी रचि भगवन भक्ति की आर होन के सम्बन्ध म कठ निवर्तनिया प्रसिद्ध है ।
 ए हान अपन गुरु कृपाराम स दीक्षा ली थी । इनका स्वगवास सन १८५१ म आ था ।
 उनकी विशिष्ट कृतिया म नाम गुरु महिमा नाम प्रनाय शब्द प्रकाश अणामय
 चिन्ताम जमत उपदेश जिज्ञासा बाध विश्वास बाध विश्रामबोध सप्तदा
 निवास रामरसायन बोध चिन्तामणि मन छन्द शब्द तथा पि सागर अदि
 विशेष रूप स प्रसिद्ध हैं ।

दीन दरवेश—

सन दीन दरवेश का निवास स्थान पाटन बताया जाता है । उनका समय १८वीं
 शताब्दी बताया जाता है । यह सूफी मार्ग थ । और जिनम निगण भक्ति सम्प्रदाय
 म आय थ । उनका शक्ति ज्ञान बल कम था । कहा जाता है कि स य तत्व की छाज

शिवदयाल—

सत शिवलयाण का जन्म सम्बन्ध १८८८ में हुआ था। यह आगरे के निवासी थे। यह राधान्वामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक बन जाते हैं। उनके विराग पर मुन्शी साहब का सिद्धांता का प्रभाव बताया जाता है। उनके विशिष्ट समयका म रायबहादुर शानिगराम है जो हजूर साहब के नाम से प्रसिद्ध हुए। दुर्गागायत्री के ग्रन्थों में प्रमथानी और जगतप्रकाश के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं। १० ब्रह्म शहर मित्रों भी इस सम्प्रदाय की व्याख्या की है।

जयसत—

उपयुक्त साम्प्रदायिक मतों के जनितरिक्त जय भी अन्तर्गत हुए हैं। इनमें नागी सम्प्रदाय के अंतर्गत सत उत्तराज का नाम दिया जा सकता है। इनके पिता का नाम पूरन एवमाता का नाम नानकी था। इनके सबसे प्रसिद्ध शिष्य गगाराम थे। सत शिष्य परम्परा में सत मतराम तथा भगीरथ दास भी हुए। इनके अनिरिक्त अथ विविध साम्प्रदायिक मतों में तावत्तास पहलवान दास मोविन्साहब पानपत्तण रामचरन सहजोबार्ध दया बाई हरनाथ साहब चतुभज साहब आदि के नामों का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है। इन सतों ने इस परम्परा के अंतर्गत निगुण सिद्धांता का प्रचार किया।

महत्त्व—

इस प्रकार स भक्ति युग में निगुण-काय परम्परा के अंतर्गत जिस सम्प्रदाय का प्रसार हुआ वह दार्शनिक और आध्यात्मिक सिद्धांता के निरूपण की दृष्टि से विशिष्टता रखता है। इस सम्प्रदाय के अनुयायियों ने मुख्यतः एकेश्वरवाद पर बल दिया। हिंदू और मुसलमान दोनों ही सतों ने एकेश्वरवाद का समर्थन करते हुए बहुदेवता का विरोध किया। इस प्रकार के मत का मूल कारण यह है कि निगुण साम्प्रदायिक सत पूण ब्रह्म में आस्था रखते हैं। परमात्मा के अस्तित्व और गुणों का विश्लेषण करते हुए इन सतों ने उत्तम एकीकरण का अनुमोदन किया। परमात्मा का पूण ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि भक्त स्वयं को निगुण और सगुण में परे रखें। सतों में अंतर्गत तीन विविध सम्प्रदायों का विकास हुआ है जहाँ पृथक् पृथक् रूप से आत्मा और परमात्मा में एकीकरण की श्रमियां विशेषरूप से की गईं परंतु वे सभी एक स्वर से कहती हैं कि साधक की साधना की साधकता तभी है जब उसे पूण ब्रह्म की प्राप्ति हो जाय। रूप सद्म में परमात्मा तथा आत्मा का जो विश्लेषण इस परम्परा के अंतर्गत हुआ है वह अत्यंत है। निगुण सतों ने परमात्मा की सत्ता सचने बताते हुए यह स्पष्टतः घोषित किया है कि उसमें पृथक् आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है। अनेक मत यह भी मानते हैं कि जीवात्मा अंतोत्तमत्वा परमात्मा में निवास करती है परंतु उनकी धारणा यह है कि जीवात्मा परमात्मा का पूण रूप नहीं है, बल्कि एक अंशमात्र है।

जीवामा और जट जगत् क सम्बन्ध म भी मता न माया आदि का विवचन किया है । मता क दार्शनिक मत और व्याख्यानिक सिद्धान्त म सूत्र ज्ञान और ज्ञाना क परमात्मा क प्रति पूग समरण का अनुमान मितता है । उपर इस परम्परा का जो सतिन विवरण उपस्थित किया गया है व० नउ मत गारा माच विविध सिद्धान्त का परिचय प्रस्तुत करता है ।

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति

भक्तियुगीन हिन्दी काव्य की विविध प्रवृत्तियों में सूफी काव्य की धारा का भी विशिष्ट महत्व है। सूत्र रूप में हिन्दी सूफी काव्य का प्रवृत्ति का प्रमाण चौदहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक मिलता है। इस काल में मध्य लगभग बीस सूफी कवियों ने अनेक प्रेम काव्यों का प्रणयन करके हमके विज्ञान में योग दिया है। सूफी काव्य का प्रथम विषय में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि इसका रचना पद्धति भारतीय परम्परा की तुलना में अपभ्रंश फारसी मननवा पद्धति में अधिक प्रभावित है। सूफी काव्य प्रवृत्ति का आरम्भ हान के पूर्व भारत काव्य परम्परा में विविध प्रकार के प्रमादयान उपलब्ध होते हैं। नीचे हिन्दी में लिखित सूफी काव्य का प्रवृत्ति का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुल्ता दाऊद—

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सूफी काव्य की प्रवृत्ति के अंतर्गत सर्वप्रथम कवि मुल्ता दाऊद का उल्लेख किया जाता है। मुल्ता दाऊद की निजी हुई एक कृति चदावन अथवा चदावत शीपक से उल्लिखित की जाती है। मुल्ता दाऊद द्वारा प्रणीत यह कृति एक प्रेम कथा है जो नार या लारिक तथा चदा के प्रणय पर आधारित है। भारतीय साहित्य में ज्यातिरीन्दर ठाकुर लिखित वण रत्नाकर जैसे ग्रंथों में उल्लिखित नोरिक नरयो के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि इसका सम्बन्ध किसी लोकगीत अथवा लोककथा से भी हो सकता है। इसलिए इसकी लोककथा भी कहा जाता है। इस कृति का रचना काल संवत् १२७८ बताया जाता है। इसकी जो प्रतिया उपलब्ध हैं वे सभी अत्यन्त प्राचीन तथा पुराने अवस्था में हैं। इसमें चौपाई और दोहा छन्दों का प्रयोग मिलता है। इसकी भाषा अवधी है जिसमें मातायी तथा शौरसनी आदि का भी प्रभाव है। कथा मूला के अनुसार इसका नायक नारिक अहीर गोवर नामक स्थान का निवासी है। उसकी पत्नी का नाम मना है। उसी स्थान के एक अन्य निवासी बावन अहीर का विवाह सहस्त्र का कथा चाना से होता है। सयोगवश लारिक और चाना का परस्पर प्रेम हो जाता है। बहस्पति नामक एक दूती उन दोनों की भेंट

करती हैं। धीरे धीरे नायक नायिका की पारस्परिक अनुरक्ति बढ़ती जाती है और अन्त में वे दोनों उम स्थान में छात्र-छात्रिका बनकर चलने लगे हैं। लारिख का भाई बबर उम राजना चाहता है परन्तु सफल नहीं होता। लारिख और चाचा गंगा पार करते हैं। चाचा का पति बाबन भी वहाँ पहुँच कर उम प्रताड़ित करता है परन्तु निराश लौट आता है। गंगा पार करते समय बबल भा चाचा के रूप पर मुग्ध होकर राजा करिगा से उसका मौल्य का प्रशंसा करता है। राजा गगळ नामक मल्ल का लारिख के पास भेजता है परन्तु वह लोरिख से पराजित हो जाता है। यही दशा बोदई नामक मल्ल की होती है। अन्त में दस ब्राह्मण लारिख का राजा के सामने प्रस्तुत करने हैं। राजा उसकी शिष्टता में प्रसन्न होकर उम ब्राह्मणों के साथ विदा कर देता है। वे मग्य उनीसा पहुँचते हैं। वहाँ पर चाचा को एक नाग उम जाता है। लारिख पीडा से विह्वल होकर चिता पर चाचा के साथ जलकर प्राण दान का निश्चय करता है। इसी समय एक गारुडी के आ जाने से चाचा की प्राण रक्षा हानी है। फिर लारिख सारगपुर आ जाता है। चाचा एक स्वप्न देखती है कि उसे एक ताता यागी अपहृत कर लगे। लोरिख एक मन्त्री से चाचा का छोटकर जाता है और तभी ताता यागी चाचा का अपहरण कर लेता है। लौटकर लारिख उमका पीछा करता है और उम पकड़ लेता है। वे दोनों चाचा सहित नगर ममा पहुँचते हैं। यहाँ पर भा लारिख को ही चाचा की प्राप्ति हानी है। इधर दूसरा आर मना लारिख के विभाग में बड़ी कठिनाई से दिन व्यतीत करती है और उम एक मन्त्री पृथ्वी है। यह मदेश पाकर लारिख वास्तु लौटता है। चाचा का पिता उन दोनों के सम्बन्ध का स्वीकार कर लेता है। कथा का कुछ विस्तार हमारे आगे भी है परन्तु उससे सम्बन्ध में बार्द मुनिश्चित विवरण उपलब्ध नहीं है। इस कृति के सम्बन्ध में अष्टन कादिर अजन्तायूनी की रचना सुतधुवतुबारीय में भी उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि यह सूफी का यह बहुत प्रचलित था तथा विद्वानों ने इस मान्यता की थी।

कतबन—

कतबन का समय सातहवाँ शताब्दी का आरम्भिक माना जाता है। इनके लिखे हुए प्रेम नायक का नायक मगावनी है। कतबन ने इस ग्रन्थ में अपने ममतामयी शायक शमशाह का उल्लेख किया है जो नीनपुर में रहते थे। कतबन के गुप्त शायक सुनते थे। कतबन का निम्ना हुआ मगावनी शीर्षक प्रेम नायक इस प्रकृति में ललितार्थिक महत्व रखता है। इसका रचना सन् १५०५ माना जाता है। इसकी जा प्रति उपलब्ध है यह पूरा नहीं है। कतबन ने स्वयं शमशाह उल्लेख किया है कि इसकी कथा का आधार पूरे प्रचलित बार्द नाटक कथा थी। यद्यपि कतबन में पूरे इस प्रकार की बार्द कृति नहीं मिलती परन्तु शायद ही उनसे शम शयन में यह अनुमान लगाया जाता है कि वह किसी न किताब में पूरे प्रचलित रही होगी। मगावनी में कतबन ने चरित्रिक के राजा शमशाह के कथार तथा मगावनी का कथा प्रस्तुत की है।

राजकमार मृगावती के रूप पर मुग्ध होकर उमकी प्राणित व निष्प्रयत्नशील हो जाता है। अनेक वर्षों का सामना करते हुए अतः वह उमका योग पट्टणों में मग्न होता है। मृगावती उड़ने की विद्या जानने के कारण एक दिन राजकमार को छोड़कर वहीं उड़ जाती है। राजकमार पुनः मृगावती का खोजा व लिंग पाणी व वेग में पन पड़ता है। अनेक स्थानों को पार करते हुए वह एक पहाड़ी पर एक शहर रक्षिणी नामक एक कन्या की किसी राक्षस से रक्षा करता है। रक्षिणी का पिता इस पर प्रसन्न होकर उन दोनों का विवाह कर देता है। फिर राजकमार मृगावती के राज्य में जाता है। इधर दूसरी ओर राजकमार मृगावती अपने पिता की मृत्यु का जानने के कारण स्वयं राजकाज करने लगती है। राजकमार उमके राज्य में चारह वर्षों तक रहता है। फिर अपने पिता का संश्लेष पाकर वह मृगावती सहित वापस लौटता है और माग में रक्षिणी को भी ले जाता है। जन्म से घर पट्टणकर अपनी दायाँ पत्निया सहित वह मुग्धवृत्त रहने लगता है। एक बार शिकार करने के समय उमकी मृत्यु हो जाने पर मृगावती तथा रक्षिणी ज्ञाता उसके साथ मनी हा जाती हैं। मृगावती के कुछ काव्यांग इस प्रकार हैं

गाहा दोहा अरन अरन सोरग चौपाई के सरन ।

आस्तर आधि बहुत जाय जो दमी चुनि चुनि कछ साय ॥

पन्त मुहावन लीज वान । तह्व सुत न भाव आनु ।

+ + +

दोय मास दिन दस मही पहर लौराय जाय ।

येक येक बोल मानी जस पुरवा इकठा भवचित नाय ॥

+ + +

सप बुन जग साचा पीरु नाम तत मुघ होय सरीरु ।

+ + +

साह दुसन जाह बड राजा एत्र सिघासन उनको छाजा ।

पन्ति औ बुघवत समाना एर पुरान अरथ सब जाना ॥

+ + +

रक्षिणी पुनि बसहि मरि गई कतवती सतसा सति मई ।

बाहर वह भीतर वह हाई घर बाहर का रहै न जोई ॥

बिधि कर चरित न जान आनु जा सिरजा सो जाहि निआनु ॥

महान—

भक्तियुगीन मूर्खी काय प्रवृत्ति के अतगत मधुमालती के लेखक महान का नाम भी विज्ञाप रूप से उल्लेखनीय है। इनका जीवन परिचय बहुत कम उपलब्ध होता है। मधुमालती की एक उपन्यास प्रति के आधार पर इनके जीवन का जो विवरण मिला है उससे यह ज्ञात होता है कि महान शरणाह के उत्तराधिकारी सलीमशाह के

समकालीन य । मझन के गुरु का नाम शत्रु मुहम्मद या गौन मुहम्मद बताया जाता है । मझन की जाति और घम आदि क विषय म भा का विषय विवरण उपलब्ध नहा हाता । परन्तु कुछ लोग का यह अनुमान है कि य मुसलमान थ और इनका पूरा नाम गुफ्तार मिया मझन था । मझन न मधुमालती क आरम्भिक भाग म अरबुवश उमर उस्मान तथा अली आदि खलीफाया की वपना की है । हजरत मुहम्मद क प्रति भी उनकी भावना उसम अभिव्यक्त है । यह भा अनुमान लगाया जाता है कि मजन अनूपगढ़ अथवा चर्नाली क निवासी थ । मधुमालती का रचना राग सन् १५४५ है । इसकी एकाधिक हस्तलिखित प्रतिया उपलब्ध हानी हैं । इसकी कथा का आधार एक लोकप्रसिद्ध कहानी है । यह कहानी सवथा कल्पित है और इसम एतिहासिकता अथवा प्रामाणिकता का अभाव है । कहानी का नायक मनाहर बनहगढ़ अथवा बनसर क राजा मूरजभान का पुत्र है । बारह वष की अवस्था म उस पिता क द्वारा मदी मिलनी है । नर्य गान आदि म उसकी बहुत रचि रहनी है । एक बार अठ रात्रि क समय मनाहर का मुफ्तावस्था म दखकर अफ़राण उस मट्टामर नगर का राजनमारी मधुमानती की चित्रसारी म पहूचा देती हैं । जब क जागजर एक दूसर का दखन हैं ता परस्पर अनुरधन हाकर अपन परिचय देते हैं । मधुमानता अपन पिता का नाम राजा विशमराव बनाता है । प्रमवार्ता करत हुए दाना पुन सा जान हैं । तत्र अफ़राण मनोहर का वापस उसके घर पहूचा देती हैं । प्रात काल मनोहर अपनी धाय ग तथा मधुमानता अपनी सहेलिया स रात्रि की सपूण घटना का वणन करत हैं । मनाहर लाया क वपन समझाने पर भी एक जोगी का वेप धारण करक मधुमानती की छाज म निक्क पटना है । एक नोका पर वह ममुद्र म यात्रा करता है जा तूफान आ जान क कारण टूट जाती है । अपने साथिया म बिछर कर मनाहर एक नकली क तप क मट्टारे बहता हुआ एक निजन बन म पच्छता है । वग उस एक गुफरा मिलती है जिसका नाम प्रमा है । वह चित्तविश्रामपुर के राजा चित्रमन को जपना पिता बताती है । वह यह भा बताती है कि किस प्रकार म साथिया सहित यवन समय एक रागम उस पकड कर जगल म रख गया जहा वह एक वष ग एकातवाम कर रहा है । उसम यह भी पता चलता है कि वह मधुमानती की बचपन म हा गनी रही है । मनाहर उसकी सारी कथा सुनकर उसी क स्थि हुए हृदियार म रागम का वष कर दता है और उस सहर उसक पिता के पास पहूचा देता है । उस नगर म कुछ विषय अवस्था पर मधुमानती भी अपनी माता क साथ आनी था ग इस बात आन पर प्रमा का सहायता म मनाहर स उसकी भेंट हानी है । मधुमानती की माता रूपमजरा की जानकारी म जब यह लय आता है सा यह अपनी पुत्री का भाप द रनी है जिनक प्रभाव म वग पी बनकर उठ जाती है । पी रूप म उठत हुए हा यह मानगड क कवर तागवग का दखती है । ताराचद उस पकड मता है और उसकी पूगी कानी मुनता है । वह मनोहर म उसका मिलन कराने का भी प्रय करता है । ताराच उध सहर उसक माता पिता

की चिन्तना शाखा के प्रवर्तना में शय्य दिगामुखी प्रमुख थे। शक्तिपात अमरकान्त
हुसैन शाह शर्मा मय गुम्मान जोरुग शय्य अमरकान्त शय्य द्वयातीत भाति की गु
शिव्य परम्पराओं का उदय जायगा। किया है। जायमी के विषय में कहा जाता है
कि सान वय की अस्या में चार निताय के कारण यह कल्प ही मय थे। इसी पर
आय पर हाय और पर पर जाता रहा था। जायमी के अनिर्मित अमरी के नि
धम माधना में व्यतीत हुए थे। जायमी का प्रमुख रचनाओं में पन्मावत अग्रगण्य
आखिरी कथाम मन्गी वार्त्ता निरावत तथा माग्नीतामा के नाम विशेष रूप में
उल्लेखनीय है। महारातामा नामक कृति भोगर्तातामा अथवा कन्तातामा जीवक म
भा उल्लिखित की जाती है। इसी प्रकार से निरावत विश्रग्धा के नाम में और
मोस्तीनामा मताय नाम से भी उल्लिखित की जाती है। इन कृतियों के अनिर्मित
जायसी की अन्य रचनाओं में ममता कर्त्तनामा मुक्तरानामा अथवा मुक्तरानामा
माहरानामा अथवा हातीनामा गुवानामा तकरानामा त्रावत मन्कावा
रतरावत तखरावत मयरावत मुकरावत उहरावत ननावत पनावा,
परमाथ जयजा तथा पुषीनामा आदि का भी उल्लेख किया जाता है। ये रचनाएँ
कहीं उपलब्ध नहीं हानी।

मन्विक मुहम्मद जायसी की कृति का मुख्य कारण उनका विद्या रत्ना प्रसिद्ध
प्रमाण्यन पदमावत है। एतिहासिक दृष्टिकोण से इनका उल्लेख गार्सा द तामी ने
सबप्रथम किया था। इसकी अनक प्रतिष्ठा सम्पादित हुई है। इसके रचना काल के विषय
में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। विभिन्न विद्वानों ने इसका रचना काल सन १५२१
सन १५४० सन १५०८ सन १५३८ तथा सन १५४१ अनुमानित किया है। जायसी
ने पन्मावत का स्पष्ट उल्लेख किया है कि इसके रचना काल के समय दिल्ली में
शेरशाह का शासन था। पन्मावत में जायसी ने मिहनुदीन के राजा गधवसन की
पुत्री पन्मावती और चित्तौड़ के राजा रतनसेन की प्रमत्त्या प्रस्तुत की है। पन्मावती
अत्यन्त सुन्दरी थी और उसके योग्य वर नहीं मिलता था। उसके पास हीरामन नाम
का एक गुणी ताना था। एक दिन वह तोता पन्मावती से उसके वर के सम्बन्ध में
वार्त्तालाप कर रहा था। तभी राजा गधवसन के सुनने के कारण वह उनमें भयानुर
होकर वही उड़ गया। एक वानिय द्वारा पकड़ा जाकर चित्तौड़ में एक ब्राह्मण द्वारा
श्रय किया गया। उस ब्राह्मण ने उस राजा रतनसेन के हाथ एक लाख रुपये में बेच
दिया। एक दिन राजा रतनसेन शिकार खेलने गया और उनकी अनुपस्थिति में उनकी
रानी नागमती ने सान में पन्मावती के रूप की प्रशंसा की। नागमती ने तोते को मारने
की आज्ञा दी परन्तु दासी ने उस राजा के भय से छिपा लिया। राजा रतनसेन चोटने
पर तान का न पाकर बहुत उद्विग्न हुए और अतत वह उनके सामने लाया गया।
तान ने ममस्त वत्तात उनके सामने प्रस्तुत किया और पदमावती के असाधारण रूप के
विषय में भी बताया। फलतः राजा बहुत उत्कण्ठित हुए और जोमी का भेद धारण
करके पन्मावती का प्राप्त करने के लिए निकल पडे। राजा के साथ ही सोलह हजार

अब राजकुमार भी इस यात्रा में चले। हारामान ताना बराबर उनकी माँ दान करता रहा। अनक कष्ट चलते हुए य लोग सिन्धुतीर तक पहुँच सके। वहाँ पहुँचने पर राजा रतनसेन अपने साथियों के साथ भगवान शिव के मन्दिर में पद्मावती का नाम स्मरण करने लगा। दूसरी आर हीरामन ने सारा समाचार पद्मावती को बताया। पद्मावती के तिन पद्मावती पूजा करने के लिए शिव मन्दिर में आयी। राजा उनकी स्तुति करके अचूत हो गया और पद्मावती को ले गया। पुन चतना लौटने पर उसे पद्मावती का सपना मिला कि जब तक वह सिन्धुतीर पर विजय नहीं प्राप्त कर लेगा तब तक उसका पद्मावती से मिलना नहीं हो सकता। शिव की आराधना करने के पश्चात् रतनसेन ने गुरु पर चण्डिका का परशु उगी बना लिया गया। उस मूली पर चण्डिका देव का आदेश हुआ। परशु उमके साथी मानह सहस्र जागिया के रूप में राजकुमारों ने गुरु पर लिया और भगवान शिव के दर्शन में विजय प्राप्त की। पद्मावती के पिता गणवसेन ने अपनी पुत्रा का विवाह रतनसेन से कर दिया। विवाह के पश्चात् रतनसेन चित्तौड़ लौट आया और मुख्यपुत्रके तिन पत्नीय करने लगा। उसने दरबार में राघव चतन नाम का एक पत्नी था। कहा जाता है कि उस यक्षिणी सिद्ध थी। अब म्यानाय पड़िता से अमृतस्य ही जान के कारण उमका निष्पत्तन कर लिया गया। राघव चतन तिनकी के बाणगाह अलाउद्दौल के पास गया और पद्मावती का वचन दिखाकर उसके अमाधारण सौन्दर्य की चर्चा की। अलाउद्दौल ने पद्मावती का प्राप्न करने के लिए राजा रतनसेन का एक पत्र भजा। अलाउद्दौल और रतनसेन में युद्ध छिड़ गया। अनके वर्षों के पश्चात् अन्ततः अलाउद्दौल ने मघि का प्रस्ताव किया। राजा ने उस स्वीकार करके बाणगाह का अपने महल में भोज पर निमन्त्रित किया। वहाँ पर दूषण में पद्मावती को छाया अग्रकर बाणगाह अचूत हो गया। बाद में जब रतनसेन उस विदा करने बाहर द्वार पर आया तो बाणगाह ने कपटपुत्रके उम बना बना लिया और दिल्ली में आया। पद्मावती ने पति का छान के लिए एक कूटनीतिक चाल चली। उसके आदेश में गौरा और बाण नामके दो गुरबीर सात ती मन्त्रिका सहित बादशाह के पास पहुँचें। बाणगाह का यह मन्त्र भजा गया कि पद्मावती राजा से पहल भेंट करेगी। अनुमति मिलने पर पानका में तिन गुरु मन्त्रिका ने राजा को मुक्त किया और वह गुरबीर चित्तौड़ पहुँच गया। इसमें पद्मावती राजा देवपान में युद्ध में उमकी मारु हो गयी। उमके मर के साथ पद्मावती का नागमना मना हो गया। इसमें बाणगाह ने पुन चित्तौड़ पर आक्रमण किया परन्तु पूरा ममारार मुन कर उम अचूत था हुआ। इस प्रकार में इस कथा में मगुरु ने एक ऐतिहासिक कथा नके के आधार पर अनेक कथित प्रमथा का ममारार किया है। यह एक उच्छ्रुत प्रमथान है किममें एक उच्छ्रुत महाकाव्य के मभा गुण विद्यमान हैं। जनकार यात्रना रूप वचन तथा आध्यात्म निरूपण की दृष्टि में इसमें कुछ काव्यात्म नीर प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

सरवर तीर पद्मिनी आई गावा हासि नग मुगगाई ।
ससिमुख अग मलयगिरि वागा गगिनि शानि ला ७ प पागा ॥
ओनई घटा पर गग ला । गगि न मगग गी ७ जगु ग । ।
भूति गगोर दीठि मुख सावा मय पग मट ७ ७ पागा ॥

× × ×

बहनी वा घरनी ममि वागी माध वा जातु टु आ ॥ ।
उन वान ह जन वा जा ७ मारा य ७ ७ मगगी मगाग ॥
गगन नगत जा जाहि ७ गन व मग वा श्रा ७ ह ।
घरती वान बधि सब रागी सागा ग म मव गागा ॥
राव राव मानुम तव टाई मगा ७ गू वध अग माइ ।

वरनि वान अस जापह व ७ रन वन गाय ।

सो जहि तन सब राधा पयहि तन मग पाय ॥

× × ×

तन चितउर मन राजा वा हा हिव सिषत बुधि पममिनि ची हा ।
गुरु सुआ जइ पय दखावा विनु गुरु जगन वा निरगुन पावा ?
नागमती यह दुनिया धधा वाना न साइ न एनि चिन बधा ।
राधय दूत सो मगानू माया रताउती मुनतानू ॥

× × ×

ओहि मित्रान जा पट्टव काई तव हम बहव पुष्प भन साई ।
है आग परवत व बाटा विषम पहार जगम मुठि पाटा ॥
बिच बिच नदी खोह जी नारा टागहि ठाव व ७ बट पारा ।

× × ×

पडिन गुनि सामुद्रिक देखा गगा रूप और गवत विशपा ।
रतनमन यह उग्र निरयरा रतन ज्वानि मन माथे परा ॥
पट्टम पनारत त्रिग्री जा जारी चाद मुरज जम हाय जजारी ।
जस मालनि भोग विद्यागी तस जाहि नागि हाय यह जोमी ।
सिंहल दीप जा यह पाव मित्र हाय चित्र जीर गहि आव ।

+ + +

जब गगि गुर ही अहा न ची हा काहि जतर प ७ बीचहि दी हा ।
जब ची हा तव और न काई तन मन जिउ जीवन सब काई ॥
* हों हों करत धाक तराई जब भवा मित्र कर्णपर धाई ।
मार गुर कि गुर जिवाव और वा मार मर सब आव ॥

मूरु मनि हस्ति कर चर ही नहि जानी जान गुन ।

× × ×

गुरु हस्ति पर च । सा पखा जगन ना नास्ति नास्ति प दवा ।

अध मान जस जन मह धावा जन जावन चन त्रिष्टि न जावा ॥

गुरु मार मार दिव दिव तुरगम ठाठ ।

नातर करहि एताव बाहर नाच काज ॥

× × ×

बाधि गा मुआ कर्त मुख कना चूरि पात्र मनसि धरि उवा ।

तहना बन्त पय घरभरहा आपु आपु मह रात्न बरहा ।

विघ्नाना किन हान जकूरा जहि भा मरल डहन धरि चूरा ।

तो न हान चागा व आसा किन किरि हार टुकन लइ तासा ?

यह त्रिप चार सब बुधि ठगी जी या काल हाय नइ नगी ।

एहि चूरा माया मन भूना जया पखी नस तन फला ।

यह मन कठिन मर नहि मारा कान न देख दख प चारा ।

+ +

ना बह भएउ भीर कर गू न बह दीपक भएउ पनगू ।

ना बह करा भ ग व हाई ना बह आपु मरा त्रिउ धाई ।

ना बह प्रम औगि एक भएउ न आहि हिय मीम डर गएऊ ।

तहि का कहिय रहिय त्रिउ रहै जा पानम लागि ।

न बह मुन लइ घसि वा पानी वा आगि ॥

+ + +

गुए कहा हम हू अज भूव टूट हिंजान गरव जति फूल ।

तरा व बन ताह यमरा परा साय तह बरा बरा ।

मुख नृत्वारि परह्या घाना आठु बिप भा जब पाय नुनाना ।

वा व भाग विगयि अस फला आठ ताइ पग्विवा कट धरा ।

मुखी निचिन तारि घन बरला यइ न चित्त आग है मरला ।

भूव हमर गरव तहि माही मा बिमरा पावा जहि पाही ।

हाई निचिन बठ तहि आग नब जाना घाना त्रिए गाना ।

चगन न गम्क काट त्रिउ तब रे चरा मुख साइ ।

अब जा फे पग गिउ तब राठ वा हाइ ?

आत्म—

भक्तिमुगीन मूरु। नाम्ब रा प्रपति व अन्तगत आत्म का नाम भा उचितिनि किया जा गयता है । यह आत्म अकबर व समरानान बनाय जान है । आत्म का सिद्धी हर् अनक कृतिमा वा चया बी जाना है त्रिनम सरप्रविद्ध माधवानन नाम

कथना चौपाय प्रमाण्या है। नये अतिरिक्त श्याम गोही तथा आनम की नाम दा अय रताआ का भी उ तय किया जाता है। आनम कवि क कुछ अय नाम भी बताये जाते है ता आनम क कवि क कवित्त आनम क, रम कवित्त अन्तरमायिता और 'गुणनी' जाति है। आनम का पुरा नाम शय आनम बापाया जाता है। 'गय सार्' क नाम म भी य प्रसिद्ध थ। कछ ताय शय का आनम की उपाधि जीर कछ योग उनदी पत्ता का नाम बतात है। 'श्याम गोही' म कवि आनम न दाहा चौपाई शता म कविता क 'विवा' का वगन किया है। आनम कवि रीति वाध्यात्मक रचना है। य भी कवि क सूची प्रस्तुतगत तथा की श्लि म विगिष् कही जा सकती है।

माधवानन कामकथना एक चारप्रिय कथा पर आधारित प्रमाण्यान है। इसका रचना-काल मन १५८ कहा जाता है। 'मम आनम न चार प्रकथित कथित कथा का प्रस्तुत किया है। 'मका जाघार माधवानन नामक एक ब्राह्मण और कामकथना नामक एक वर्या का प्रेम गाथा है। कामकथना राजा काममन क रायात्रय म रहती थी। माधवानन वीणावादन म कलात्मक उत्कृष्ठा क कारण उस माहित कर नेता है। पुमाग्यवश राजा क द्वारा निष्वासन आता हा जान क कारण वह कामकथना क विद्या म पीठिन हुना है। अनन विक्रमाश्रिय की सहायता स वह अपनी प्रमिका का पुन प्राप्त कर नेता है। यही नही वह अपनी पूव प्रमिका नातावनी का भा प्राप्त करता है और मुखपूवक जीवन व्यतीत करने लगता है। इस प्रमाण्यान म कवि ने 'चौपाय' प्रम क जागार पर जाध्यात्मिक इक्षरीय प्रम का वगन किया ह। दा तथा चौपाय्या स यह का य जवही भापा म लिखा गया है। यह जाध्यान माधवानन भापा क नाम स प्रसिद्ध है। 'सकी भून कथा पर आधारित कछ अय रचनाए भी मिलती ह जिनम गणपति निधिन माधवानन प्रबध दाधक कशनाम निधिन माधवानन कामकथना चरित्र किसी अना ककवि द्वारा रचित माधवानन कामकथना चौपाई तथा हनारायण कवि चारा निधित माधवानन काम कथना जाति की रचना भी की गयी है।

उसमान—

भक्तियुगीन सूफी का य की प्रवृत्ति क जनगत उसमान लिखित चित्रावली शापक काय का नाम भा विशय रूप स उतखनीय ह। उसमान गाजोपुर के निवासी थ। उनक चार भाई 'गय अजीज' 'मान' उताह शय फजुलाह तथा शय हुसन थ। इनक पिता का नाम शय 'मन' था। उसमान जहांगार क समकालीन थ। उसमान के गुर का नाम बाबा हाजा था ता चिरनी सम्प्रदाय के अनुगामी थ। इनके पीर शाह निजाम विश्वा थ। चित्रावला नामक प्रमाण्यान का रचना काल सत्रहवीं शताब्दी माना जाता है। 'सम विषय' म स्वय कवि न प्रथम उ तय किया है। चित्रावली क कथा का आरम्भ कवि न नपान क राजा घरनीधर की शिवाराधना स आरम्भ

किया है। राजा पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखने थ। भगवान शिव म राता का यह वर दान प्राप्त होता है कि वह स्वयं अपन जग म राजकुत्र क रूप म जन्मग। उचित समय पर राजा क यहाँ पुत्र जन्म हाता है। पण्डित लोग लान इत्यादि विचार कर उनका नामकरण करते हैं। मुजान नामक यह पुत्र बन्नु शीघ्र ही अपना प्रथम बुद्धि स विद्या पान प्राप्त कर लेता है। एक बार मृगया क अवसर पर आधा क कारण वह अपन साथियों स पथक हो जाता है। रात्रि भूत कर वह एक पहाड़ क निकट पहुँचता है जहा एक देव का निवास था। देवा हुआ राजकुमार मुजान वहा सा जाता है। देव लीगन पर उस साया देख कर उसकी रणाय वहा बठ जाता है और चौकसी करन लगता है। सयागवश उसी समय उमका परिचिन एक दूमरा त्व आता है ता उम रूपनगर की राजकुमारी चित्रावती का वरण का उत्सव दखन चलन के लिए अनुराध करता है। राजकुमार का मुरगा का ध्यान कर के ताना उम मुप्तावस्या म ही अपने साथ ल जाते हैं। रूपनगर पच कर क उम राजकुमारी चित्रावती की चित्रसारी म मुना दते हैं। वहा पर राजकुमार जय जागता है तब वह चित्रावती क चित्र का देखकर मुग्ध हो जाता है। त्नी चित्र म अपना ना चित्र बनाकर वह पुन मो जाता है। यथासमय उत्सव समाप्त हान पर त्व उम पुन वापस न आत है। दूसरे दिन चित्रावती राजकुमार क चित्र का देखकर मुग्ध हा जाती है और उगन विरह म पीडित रहती है। धीरे धीर यह चला चित्रावती का भाता रानी हीरा तब पहुँचती है। रानी इस प्रसंग पर ब्रह्म हाकर उम चित्र का नष्ट करा त्नी है। श्वर चित्रावती चार दूता का राजकुमार मुजान की छाज म भजता है। इनम स परेवा नामक एक दूत मुजान के पास पहुँचन म सफल हाता है। वह उम चित्रावती तथा उमके पिता चित्रमन क विषय म समस्त सूचनाएँ दता है। फलत राजकुमार मुजान रूपनगर क लिए चल पडता है। परेवा उम एक नन्दन सहायताय त्ना है जिसक प्रभाव म क अद्भुत रहता है। रूपनगर पच जान पर राजकुमार शिव मन्दिर म टडर जाता है और दूत चित्रावती का जाकर त्व आगमन का समाचार देता है। चित्रावती उम गदेश देती है कि शिवरात्रि क दिन जागिया का भाजन बगने समय वह मग्य म उम दान दगी। वह उम चलावती भी त्नी है कि इस अवसर तक क लिए उम अपना आशिमक बत एकत्र करते रहना चाणिए क्योंकि उसका रूपनगन भौतिक क दुआ क लिए असह्य है। शिवरात्रि क अवसर पर चित्रावती की छवि का देखकर राजकुमार अचन हा जाता है। पुत्र चलना लीगन पर उम चित्रावती का मन्त्र मिनता है और अब क ताना एक दूमरे का नियम तान कर है। त्व त्वन पापक का अवाति प्राप्त करके चित्रावती का एक दूत उमके चलावन क लिए राजकुमार का प्राया देकर गुना म ल जाता है। अब चित्रावती का पाछा और बड जता है। गुना म राज कुमार को एक अत्रगर नियत जाता है परन्तु त्वरा विरामि का लीगता न रहन कर तान के कारण उम पुन उगन त्ना है। यह त्वरा एक बतमानुष राजकुमार क नाय

सहानुभूति प्रकट करता है और फिर म उग एक दूगम अतः दया है जिसके पत्र स्वरूप पूरा अजन का प्रभाव समाप्त हो जाता है। अर्थात् यज्ञ उग एक शक्ति प्रकट होता है। इससे पहले कि हाथी के द्वारा उगा प्राण हृदय का एक चिन्ता साधक की हृदय का अपन पत्रा म दया कर उगा लगता है। मत्र हाथी राजकुमार का है। अतः और वह एक योगी म जा पहुँचा है। तभी पर सागरमय की राजकुमारी की तारीफी उम देखकर मुग्ध हो जाती है। कौतावनी उग रात्र की जात्र १० मंत्रों का है और सप्ताह होने पर उग पठ हो जाती है। अतः यज्ञ म बंधा जाता है। दूगम जात्र कौतावनी पर आसक्त साहित्य नरेण उगा रात्र पर आश्रमण कर जाता है। मुद्र म राजकुमार मुजान साहित्य तरण का वध कर रात्र का रत्न करता है। कौतावनी के पिता उन दाना का विवाह कर रत्न है परन्तु राजकुमार मुजान उग विवाह म मितन तत्र प्रतीति करन का आश्रम जाता है। एक दिन राजकुमार मुजान और कौतावनी शिव पूजन के हेतु गिरिनार पर्वत पर पञ्चन है। वहाँ पर कौतावनी का दूत परेवा पुन उह छात्र जाता है। उगकी प्रेरणा म राजकुमार मुजान रूपनगर के लिए प्रस्थान कर देता है। रूपनगर पञ्चन पर परेवा चित्रावती का मन्त्रेण तन जान ममय माग म रानी हीरा के दूता द्वारा बन्दी बना लिया जाता है। राजकुमार चञ्चन प्रतीति करने के पश्चात् अन्त म प्रत्याप करने लगता है। चित्रावती का पिता उगकी हत्या हाथी से करवाना चाहता है परन्तु मुजान उग हाथी को परास्त कर जाता है। अन्त म राजा मुजान को बन्दी बना लेता है। वान म राजा का उमर्क विषय म समस्त सूचना मिलती है और वह चित्रावती का मुजान से विवाह कर देता है। विवाह के पश्चात् वे दोनों सुखपूर्वक बहने रहने लगते हैं। दूसरी जोर कौतावनी हृदय का रूपनगर भजती है। वह राजकुमार मुजान का कौतावनी का स्मरण कराता है। अब राजकुमार चित्रावती को लेकर वहाँ म विवाह होता है और भाग म कौतावनी का भी अपन साथ ले जाता है। अन्त म अनेक मन्त्र का सामना करने हुए वह अपने रात्र म पञ्चन है। वहाँ पर वह यह पाता है कि उमर्क माता पिता उसने विषाग म जन्म हो गया था। मिलन की उच्छ्रम म उमर्क नेत्रा म पुन ज्योति जा गयी। वहाँ राजकुमार मुजान को राजपत्र दे दिया और वह सुख से रहने लगा।

एक प्रकार म एक कथा म नन्दक न सौन्दर्य प्रेम विषय विषय जाति का नीतिक आधार पर जो चित्रण किया है वह आध्यात्मिक सन्तुष्ट म भी महत्त्वपूर्ण है। सूफी प्रमाण्याता की आदर्शमक प्रेम पद्धति इस काव्य म भी मिलती है। कवि उसमान न एक श्रद्ध म प्रेम और सौन्दर्य तत्व का जा निरूपण किया है वह भी आध्यात्मिक सन्तुष्ट म महत्त्वपूर्ण है। आत्मा और परमात्मा के जातिपण के सन्तुष्ट म भी इसका महत्त्व है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित का वाश दृश्य है

जहाँ रूप जग बनिज पसारा आइ प्रेम तट कीय योदारा ।

दीपक जाति प्रेम उजियारा प्रेम पतंग आनि तत्र जारा ।

रूप वास मा कतिक वेवा प्रम भार भी जिव परटवा ॥

—

—

रूप प्रम भित्ति जो मुख पावा दूनहू भित्ति त्रिग्टा उपजावा ।
जहि तन प्रेम जागि मुनगाइ विरह पान हाइ दे पुनगा ।
प्रम अकुर जण सिर बाग विरह नीर मा तिन तिन बाग ।
प्रम दीप जह जाति दिग्गाइ विरह दइ छिग छिन उसकाइ ।
एहि विधि प्रम विरह एक मगा एउमन भी मानहु रगा ।

—

—

उठे अकुनाइ मान टुउ भारी कुचर पाम आइ एक मारी ।
सीस नाक व बटा सारा पूछ वान खि मुख आरा ।
ना उघाक पूत बहु पीरा कहि वारन भा पीन सरीरा ।
वाक पीन भया मुख राग कट वान वनिहारी माता ।

कवि उममान न चिदावती का य म वणन प्रमग म आखट नन ग्राडा नगर
नयशिख आति वणन विस्तार म प्रस्तुत विद्य है । मरावर वणन का एक प्रमग आरमा
वीर परमा मा क रूप व सत्भ म भी मावकता रखता है

बूडि बूडि हरहि सय जहि जत भाग सा पाउ ।
बोड घाघा काउ मानि ल काउ छछ बहराउ ।
मरवर टूडि सय पचि रहा चित्रिनि खाज न पावा कहा ।
निहमी तीर भई धरागा घरी यान मय विनय नागी ।
गुप्त तौहि पावहि का जानी परगट नह जो रहहि छाना ।
चतुरानन पति चारी बेदू रग ग्राजि प पाव न भू ।
सखर पुनि हार व मवा बाहि न मित्रिउ तीर का दवा ।
हम जधी जहि आनुन मूगा भू तुगर कहा ती बूगा ।
कौन मा टाउ जहा नुम नाहा हम चगु जाति न दखि काहीं ।
पान ग्राज तुम्हार मा जहि लखनाव पय ।
कान होइ जोगी भण तीर पुन पन गरप ।

त्रिवावती काव्य एव तृगारित काव्य है । इसन मयाग शृगार वियाग शृगार
क माय माप बार रम का भी ममावग मिता है । प्रमगिर रूप म कवि न अय
अनेक विपदा को भा एम ममाविल विया है निम मात्विक भावनाजा का श्रुता
ओर बाँछनीयता निरिल की गयी है । एम काव्य मे कुछ अय प्रमग नीच उमन विये
जा रत है जो विविध मन्त्रों म महत्व रखन है

विद्य बिना कुछ काट न पावा विद्या आनि मुख इच्छ पुरावा ।
विद्या घरें तम कर न जाग, विद्या हुने पर भुग न शारा ।

एहि तग गाह सार य दीजा त त ि या व जदिरया जीजा ।
 दिया हते िमि तग गूना िया हने पर आपन गृणा ।
 िया हते घर पाव सोभा जा पग गीप पर लभा ।
 दीया दाज मग गा त गोवा िया हा तो पाई गोया ।

+

+

पान डारि वर िया मवानी साम नत ागी लपगगी ।
 उल्टी दष्टि र टक ताई सजग रहे जनि तातु न जाई ।
 तो तहु मव बठि दे जीऊ निगर छाछ मही त षीउ ॥
 निजमो मयनी एक िनि मयत मयन गा पति ।
 तत्वममी पुनि तत्व सा जाय नरत सत गूनि ॥

+

+

धूषट घाति रूप अस देया सा दया जहि सीग मुरेया ।
 अधर घट सा अभिरित पीजा जहिने पियन अमर भा हीया ।
 राहु भरास वतानिधि कापा ताउन पन आनन पट झापा ।
 पुनि मनमव रत पागु मवारा घाति जछून वनर पिचकारी ।
 रग गुनान दाउ न भर राम रोम तन मानी सरै ।
 सेद थभ रोमच तन जामु पतन गुरभग ।
 प्रथम समागम जो किया सीतन भा सब जग ॥

×

+

रूप प्रम बिरहा जगत मूत सृष्टि के यम्भ ।
 ही तीनके के भ कहु क्या करौ आम्भ ॥
 जाग राउ राजसुख करई सबक जगि सवा चित धरई ।
 जाग चार जा परधन चहा बिरही जग बिरहानन दहा ।
 जाग वारी खेनन जूआ कानु एक काहू मन दूआ ।
 जागहि सिद्ध ध्यानधरि हीण जागहि दुखी दुख मन हीण ।
 जाग पन्ति पन्त हरिखानी जागहि बानक कहै कहानी ।
 मैं अजान जग बाज मम जान न कछ सोहाय ।
 कही कहानी प्रम की कहि निति जाय बिहाय ।

जान कदि—

भक्तियुगीन मूफा का य प्रवृत्ति के अतगत जान कवि का नाम भी उल्लेखनीय है । नवा धाम्तरिक नाम यामत या था । यह राजस्थान के निवासी थे । इनके समय क विषय म अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है । परन्तु इनका रचना काल १६१४ से लेकर १६६४ तक अनुमानित किया जाता है । यह कायमखानी काल म हुए थे जिसका विस्तृत विवरण कायमरासा म उपलब्ध होता है । जान की निखी हुई कुन

रचनाएँ ७६ बतलाया जाता है। इनमें काममत्रा रासा आदि कुछ कृतियाँ प्रकाशित
 भा हा चुकी हैं। नाममात्रा अनकार्यी काज जमा रचनाएँ भा श्रुति प्रस्तुत का।
 इनकी लिखा हुई प्रेम-कथाओं में बनवावती कामरता मधुकर मानवी रतना
 बला तथा छिता आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। जान कवि की भाषा
 म श्रुति का प्राधान्य है। सस्कृत अरबी तथा फारसी का भाषा उसमें बलवत्ता म
 समाविष्ट हुए हैं। लाक पदवि पर भा कवि जान न कुछ श्रुति का रचना की है
 जिनमें कथा मोहनी, कथा नन्दमयता श्रुति लतामयनी कथा कतावती कथा
 मयमजरी, कथा खिञ्जला गार्हिजादे वा दवत का चौपाई कथा कतरर कथा
 तमीम अक्षरी, कथा अरुमर पातिगाह का कथा छविसागर कथा निमन्त्र
 कथा कामरानी 'श्रुति विरहमन्त्र श्रुति बारहमासा तथा 'श्रुति वियागसागर आदि
 का नाम उल्लिखित किये जाते हैं। जान कवि का गुणपीर शत्रु मुद्गम विश्वी
 थ। इनका कृतवा म कृतवा जमान शत्रु पुरातन और पुरातन का उल्लेख भा कवि न
 किया है। पीर जलाल मुन्नाहीन का भी उल्लेख कवि न किया है। इनका समय जहापीर
 एव शाहजहा का शासन-काल अनुमानित किया जाता है यद्यपि कवि न शीरगजब
 का भा उल्लेख किया है। जमा कि ऊपर उल्लेख किया जा रहा है कवि जान का लिख
 हुए ७६ श्रुति बतलाये जाते हैं। ऊपर उल्लिखित श्रुति का अनिश्चित जय कृतियाँ म
 चन्द्रमन राजा भालनिधान का कथा चौपाई कथा मुद्गम रास का श्रुति बुद्धिमागरे
 कथा पातमन्त्रस कथा दवतवी कथा कौतुहला कथा मनमता कथा जानवती
 कथा कुनवती कथा बलूकिया विष्णु सबइया व पूननाह कवि जान कृत, पर
 श्रुति वर्णा, पर श्रुति पवगम घुघटनामा टुगार मन भावमन्त्र विरहमन्त्र
 दरसनामा अरुपनामा प्रमसागर वियागसागर, चन्द्रप कतान भाव
 कतान मानविना विरहा क मन्त्राय प्रमनामा रम काण टुगार निवक
 रम तरगणी बतननामा निपुण्य मुघाणिय 'बुद्धिमायक बुद्धिप
 सतनामा बननामा उत्तम गवन् द्विपमागरे बन्नामा जफनामा अनशाय
 नाममात्रा बाजनामा कवृत्तरनामा गुण श्रुति श्रुतिवती श्रुति निपुनामा
 तथा पाहूम परोभा आदि हैं। उपर्युक्त कृतियाँ म न कवि जान का प्रमुख प्रमाणवाता
 का मशिल परिक्रमा मक विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

कथा रतनावती —

जान कवि लिखित कथा रतनावती गायक प्रमाणवाता का कथा का मय मय
 प्रकार है। अमृतपुरी का राजा जगतगण नि मन्त्रान जान का कारण निरापादक बनवाम
 मन का विचार करता है। प्रमुख श्रुतिवता उम एसा करन म शरित है और बतान है
 कि यदि वह राजा उन्मत्त का पुत्रा जगराना म श्रुतिवत का ना मय पुत्र उन्मत्त
 होगा। यह जानकर राजा अपने मन्त्रा जगजावन का श्राव घन मन्त्रि मन्त्रि विद्या
 का प्रस्ताव भजना है जिस स्वाचार का विद्या जाता है। यथामय जातराह का पुत्र

जन्म लेता है। परन्तु यथास्थिति बनाई। फिर तीर्थहृत्वा ने परमात्मा उगम के कारण कारक नक्षत्र है। समीपवर्षण गण गीया न मी भी मन् पुत्र न मी सा है। राजा पुत्र का नाम महिमोहन तथा म भी पुत्र का नाम उगम रखा जाता है। पौत्र वर्षा के पश्चात् राजा अपने पुत्र का एक नामा तथा मुद्रित रखा है। महिमाहन नाम पर चित्रित चित्र को देखकर अगुस्त हा जाता है। और उगा का विना करता हुए मन् बना रहता है। यह बड़ प्रयत्न म उगाता उगाता मन्मा है और अन्त म मन्मुद्रियति बताता है। राजा जाम म चित्रित उगम विना म विपय म अमरात्रा म मन्मन् को स्मरण करता है और उगा के अनुसार पुत्रवारी मगर व राजा सूरज की पुत्री रतनावती की खोज म दूता का भजता है। दूता के अगम रखा पर राजपुमार महिमोहन स्वयं रतनावती की खोज म निवृत्त पन्ता है। पनाग सह्य मुष्ठा सहायक जनमा पर वठकर उसके साथ जाते है। चीन म पन् चने पर उग उग रतनावती का काई पना नहा लगता तब वह चित्रपुरा पन्न चता है। चित्रपुरा म उग रूपम गान का निर्देश मिलता है। इस यात्रा म जनयाग मन् रखा जाता है और महिमाहन जनता रह जाता है। इस समय वह एक जानी के बुद्धि म पग जाता है। जाना की स्त्रा महिमाहन पर आसक्त हो जाती है। वहा म किसी प्रकार पाठा छात्र के महिमाहन प्रता अप्सराआ दानवा आदि के सम्पर्क म जाता रखा जनत रजाजा विषय के पास पहुँचता है। उनकी कृपा से वह एक महान म प चता है जहाँ किमी दय की बदिनी पद्मिनी से उसकी भेंट होती है। पद्मिनी उम अपना सन्ती रतनावती के विषय म समस्त सूचनाएँ देती है। महिमाहन दय का परास्त करके पद्मिनी का मुक्त करता है और सिहन पहुँचता है। वहा उस अपना मित्र उत्तम भा मित्र जाता है। वही पर पद्मिनी उसकी भेंट रतनावती से करानी है। रतनावती के जा पर महिमाहन का एक देव रूपपुरी म रूपरम्भा के पाम उगा ल जाता है। रूपरम्भा रतनावती के माता पिता का उसका माहन से विवाह के लिए राजा करन का प्रयत्न करती है। इधर महिमोहन द्वारा परास्त दय का भाई उम पकड जाता है। रतनावती इस पर अत्यन्त चिन्तित हानी है। उसकी पीडा देखकर राजा सूरज सभी दय को परास्त करके महिमोहन और रतनावती का विवाह कर देता है। रतनावती के जाग्रह पर उमका विवाह पद्मिनी से भा हा जाता है। जनत वन् अपनी दाता पत्निका सहित घर आकर मुख शांति से रहने लगता है।

जान कवि चित्रित कथा रतनावती शीपक प्रमाणान की रचना कवि ने साहजिकता के शासन काल म की। इसम कवि ने निगण ब्रह्म की बन्दना के पश्चात् सरन और सुधाप भाषा शनी म कथा का वर्णन किया है। कवि ने आरम्भ म ही इस कथा की यापरता और उद्देश्य के विषय म भी संकेत किया है। कथा के मूल उद्गम स्रोत के विषय म भी जान कवि ने इसम यापक विवरण प्रस्तुत किया है। इस प्रमाणान के कुछ का याश उपाहरणाव नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

अबन् असतुति कश्च नाम कश्चिन् जाजम तानी नाम ।
भल दय कर समय कुरात की मसन नत धपान ।

साइ गान्धर् धर्म बाबा नाक समयाओ ममार ।
 मेप महिमद पीर मारा जाजमवस जगत उजियारी ।
 मप महिम हामवा पार हामारा आहि ।
 । कगमान परगटे भद सब जग पूजन ताहि ॥

रहत आमर माहि पनसाहि मवन दाप म रूपन ताहि ।
 सब कर जाव दृगिपान म स्वाम का आव भाव ।
 मोन मान उजवक जो आवाम दण रहिन पत्र अरदास ।
 तियो दीलपावा रामा द्रपुरी नवन घहराइ ।

कहै जान जाव बन्दा नवास कर कया अनुपम प्रकाम ।
 ताक मुनत हा मुप प्राण तुक मुक लइ मुकीरत कान ।
 अण मरन मरन हा भाव समान हा बा चित चाव ।
 अर मरन हाइ मुद्र भाषा ताता मव कर अमिलापा ।
 हवा गुणरथ समनमा जानन साच तर क सरवन मृगानन ।
 भाषारथ निम करु जान ससकृत है मुगन वपान ।
 मसकृत जाम बा टाय भाषा कविन कही कह बिन नाव ।
 बार है पम रुप मुप या माना वामु मुवा जुवा माहि नाहा ।

कथा पुत्रपवरिया —

जान कवि विधि कथा पुत्रपवरिया का रचना सम्बन्ध १६८२ म हुई था । इसमें कवि ने राजा भूपाल और रानी पावती के एक पुत्रात्तम की प्रसन्नता का वर्णन किया है । एक बार पुत्रात्तम एक अस्त्रियापणी का शत्रुता है और उन पकड़ गया है । वह पत्नी उन अपना कथा गुनाउ ए बनानी है कि मैं प्रमपुरी के राजा जगमन और रानी रूपनिधि की पुत्रा मुकसी अथवा गुनामी है । कनपुरी का राजा उष्य मित्र और रानी दुगावता के पुत्र का नाम पुरपति है । एक बार विद्या ध्यति ने पुरपति के मामन परिना तथा इन्दीपि आदि के रूप का कथा करन शा गुनामा के मोर्य का वर्णन किया । उनमें प्रमावित हाकर मुपनि अथन मिन महान के माव ताता मात्र म चन ताता है । मित्र से विटह कर वह धनर कथा भागता है परन्तु मुकमा का पता नहीं लगता । एक बार जगमन म वह एक दुविपना म्ना का शत्रुता है । कथा बनानी है कि मर मित्रा का नाम चनुमत्र और माता का नाम मित्रिदा है । मरा नाम निमन है और मरी एक बहिन परमन नाम का है । निरुद ता मुगमा के विपन म मूचना के वा आखासन देता है । यह म अरनी बावन परमन के पाउ चनुमरी भेद ताता है । राजकुमार निमन का शनव म पराकर चनुमरी का शत्रुता है । वही राजकुमार का भेद अथन बिना मित्र मगान

से भी हो जाती है। विभादे गुनेरी ग। गारी कथा बगानी है। पुण्योत्तम से उतारी भट भी होती है। परन्तु गुागी की माता इस बात पर राय प्रकट करती है और उर पशु बना देती है। अतः म पानी कृती है कि म क नाम मे इती प्रकार पगणी बनी हई भक्व रही हू। गारी कथा गुागर पुण्योत्तम उग अपनी धम बहिन बााजर गुरपति की खोज म चन पन्ना है। तो वन म वह प्रमगुरी पठु कथा है। अगग पुण्योत्तम के प्रयत्न म गुागी और गुरपति का विवाह हा जाता है। पुण्योत्तम और निमलदे तथा महानन्द और परमवन् भी परस्पर विवाहित हाकर गुण्युवक जीवन पतीत करने गगते है।

मून कथा क साय साय प्रागगिक रूप म गगन न इम ग्रथ म अनक अय वणन भी समाविष्ट किय हैं जिनम नखशिख वणन पनघट वणन तथा बारागाम आि हैं। इम कथा म दाह और चौपाई छन का प्रयाग किया गया है। इतने कुछ काव्याग इस प्रकार है

बछया निह परवे करतार ।

जाने ह्व आव उपगार ॥

काऊ धिर नाहिन रट जा उपया ससार ।

अमर रहत है जगत म जान मुजस उपकार ।

— — —

जावे जग गग लान है मुफ्त वही जग नारि ।

बिरहनि बपुरी नागि है ज्या फागुन तरमारि ।

‘कथा रतनमजरी —

कवि जान त्रिषित कथा रतनमजरी की नायिका रतनमजरी और नायक मधुसूदन है। व दाना एक दूसरे का स्वप्न म देखकर परस्पर अनुरक्त हो जाते है। एक बार शिवार के समय मधुसूदन का एक पक्षी उडा ल जाता है। इस पर उसके पिता अजयचन् आत्म हत्या कर तत है और उसकी माता राना चन्द्रावती शोकाकुल हा जाती है। अन्त दर जाने पर मधुसूदन प ता स बचकर एक बाग म पहुचता है। वही पर उस रतनमजरी क वणन हाने है। रतनमजरी क पूछने पर वह उसे अपना परिचय देता है। रतनमजरी क पिता उन दाना का विवाह कर देत है। कुछ समय पश्चात रतनमजरी किसी पक्षी पर माहित हा जाती है और मधुसूदन जब उसे पकडने जाता है ता वह प री उस नकर उसी स्थान पर छड आता है जहा से पहल लाया था। वग पर मधुसूदन का एक जोगी मित्रना है जिसस दी ता नकर वह स्वय भी जोगी बन जाना है। वहा पर मधुसूदन की भए एक त्व स होनी है जो रतनमजरी का प्रमी था। वह दव रतनमजरा क प्रति उसके दड प्रम को देखकर उसे पहाड पर फेंक देता है। वहा उस गुफा म मधुसूदन की भेंट एक सिद्ध स होती है। सिद्ध के दिये हुए दो बाणा का नकर मधुसूदन फिर लौटता है और अनक विघ्न बाधाओ पर विजय पाता हुआ आग बगता है। वह उग्रभान क भाई का भी दवा स मुक्त कराता है और फिर

रतनमजरी के साथ मुखपूवक लीजकर निवास करने लगी है। इस दृगारिक प्रेमकथा में कवि ने कहीं-कहीं आध्यात्मिक तत्वा का निम्पन भी किया है। इसमें कुछ काव्यात्मक इस प्रकार हैं

अब ननन की मुनहु निवाइ पवन बरन मान चन्ना ।

के मग भूनि परयो त्रिा छोना के कउ दन में रामन गना ।

नननि के रसना नहा बरनत रूप मुना ।

रसना बिन देखी नहे, ताउं कहे न झाइ ॥

गुर बिन मारग कौन बताव का प्रातम परमन परसाव ।

कठिन पच पुनि अचित्त कृपना गुर किन्धी बिन चवत न चना ।

नाम ब्राध तिसना लुबध भाया माउ नचा ।

मारग चनि नाहिन सुक जा मिर परि यर मार ॥

गुर बिन का मठ चित्त चिन्त गुर बिन कौन मिताव मित ।

जाप काजिय आप तत्रि ली निर पच जान ।

जब ल आपु न दूर है कौन गज का गन ।

‘कथा छोना’—

जान कवि लिखित कथा छोना शायक प्रमात्यान में देवगिरि के देव का स्ववनी कथा छोना की कहानी है। इसमें सौन्दर्य का उन्ना मुनकर राम नामक एक राजा ब्राह्मण वेद में आया और राजा देव के पुत्राग्नि के यत्न रहने लगा। पुत्राग्नि के प्रयत्न से एक दिन राम ने छोना के ज्ञान विद्य। बाद में उसने अपना वास्तविक परिवर्ध राजा देव पर प्रकट किया। राजा देव ने अपना सगल करके तान कर्षों बाद विवाह करने का निश्चय किया। सगर्द के परवान राम अपने नाम ली आया। उधर राजा देव ने अपनी पुत्रा और जामाता के लिए अत्यात्यान के विरहागों का बुताकर चित्रमन् बनवाया। चित्रकारों ने छोना की उरि लकर यथा एक चित्र बनाकर अत्यात्यान के पास भज दिया। अलाउद्दीन ने उस पर मुग्ध होकर राजा देव पर आश्रमा कर दिया। गुर पर विरह न प्राप्त कर सकने पर राषक चवन नामक पत्नि का सहा पर अलाउद्दीन दास के रूप में गुर में प्रविष्टा। छोना ने पूजन करते जान समय उम पहिचान लिया और बनी बनवा दिया। छोना के सममान पर राजा बापस गिरी ली सोने लगा परन्तु अरने कुछ गनिहा का गुर में जानकर उसने पुन गद पर विद्या। फिर उसने सखपूवक छोना का हृत्त करवा दिया। उरि अरने प्रप नों के बाक्य भा छोना उम पर प्रमन्न नही हू और अपने प्रानी सगाइ का बाउ अत्यात्यान का बधा दी। दूसरी बार राजा देव ने गुराग्निवाार जातकर राजा राम जागी के रूप

म अनाउहीन के पास पहुँचा। वहाँ पर उन राजा राजास्यगिरि अम श्रेष्ठ प्रशासकी ने उनको सम्मान सहित बिदा कर दिया।

कथा कामलता —

जान कवि लिखित कथा कामलता शीघ्र अमा गात वा राजा राजास्यगिरि १६७८ माना जाता है। यह एक त्रय टुटि है। अगला कथा भाग मन्त्री का राजा रसान है। एक बार राजा स्व न मन्त्री गुन्गरी का अग्र रण था उभा उभा मन्त्री बुधवत न उस जगा लिया। इस पर राजा क्रुता गया। उग्रता उ उमरी पीना का समक उसर वणन व अनुमार ही स्व न मन्त्री का एक पित्र बाया। उ पित्र माग म स्व उद् य स रण लिया गया कि यदि कोई अर्था अगला अग्रिय गाता हा ता राजा को सूचना द। एक दिन एक पवित्र उम पित्र हा अग्र म म् गुना मी कि वह मुन्गपुरी की रानी कामलता है। जा आ जीवन अविवाहित रान का प्रण कर रही है। यह सूचना पाकर राजा रसान और मन्त्री मुन्गरी गुन्गरी पन्न हैं। वग पर बुधवत व कौशन म रसान का चित्र बनाकर कामलता का लियाता है और बनाना है कि वह भी अविवाहित रहना चाहता है। कामलता राजा म उ वन की उग्र प्रकट करती है और फिर उन दोनों का विवाह हा जाता है। यह प्रमाणान एक प्रतीकात्मक रचना है। इस कवि न यह अभियन्त करने की चला की है कि प्रकृत सारी सत्ति परम ब्रह्म रूपी चित्रकार का ही रचना है। उ रचना म कवि न उत्र भाषा का प्रयोग किया है। उ म दोह और चौपाइया का ही प्रयोग आ है।

कथा कनकावती —

कवि जान लिखित कथा कनकावती शीघ्र पमाख्यान का राना जान मन १६१८ है। उ समय जहागीर के शासन का था। उ एक त्रय जाख्यान है जिसकी रचना कवि न केवल तीन दिनों म की थी। उम टाहा और चौपा या का प्रयोग किया गया है। इसकी कथा का सम्बध राजा भरत व पुत्र परम म है। परमहण एक बार स्वप्न म किसी अनान मुदरी को दख कर उस पर मुग्ध हो जाता है। उम विवरण व अनुमार एक चित्रकार उस मुन्गरी का चित्र बनाना है। एक विप्र उम चित्र को देखकर उ सूचना दना है कि परमहण ने राज स चार सौ काम व ज तर पर सिधपुरी ह जहा की राजकुमारी कनकावती का वह चित्र है। परमहण का सूचना का प्रा न करने व पश्चान विप्र का कनकावती न पास भ्र दना है और ब कनकावती म परमहण व विषय म बनाना है। परमहण जोशी क वप म स्व भी मता सहित च पन्ता है। उसके पिता भरतराय जगपतिराय म कनकावती व विप्र गु भी ठान गने ह। इस मुद्ध मे भरतराय को पराजय होनी है। परमहण को काइ म यासी जन साथ न जाता है पर तु विप्र परमहण और कनकावती न म य पत्र उम व पनाय रखता है। एक बार परमहण सयासी न सीधा हूँ कल्पनिधि नामक विद्या न वन पर सिध नगर पहुच जाता है। उन दोनों का वही विवाह भी हो जाता है। कुछ समय पश्चात

परमरूप का अपना गन्तव्य का स्मरण होता है और वही अपना वापस आ जाता है। ज्ञानपतिराय का ज्ञान यह सूचना मिलता है कि वह मना लेकर आश्रम में चला जाता है। वह एक मुग्ध के द्वारा बोधा नगर में चला जाता है जिसमें बड़ा प्रलय का सा दाय उपस्थित हो जाता है। परमरूप स्वयं बड़ा जाता है और जगदगुरु नामक व्यक्ति उसका रक्षा करता है। कनकावती बहना दूर जगदगुरु के पास पहुँच जाता है। कुछ समय पश्चात् जगदगुरु ने प्रिय विवाह के प्रस्ताव का स्वीकार कर लिया जाता है और उन दोनों का विवाह हो जाता है। इस प्रकार में उनके सुखपूर्वक जीवन के साथ इस कथा का अन्त होता है। यह कथा कापलिन है और अन्य प्रमाख्याओं की धारा पर ही लिखा गया है। इसका एक काव्यात्मक प्रकार है

भाषा अपना जा मुख आर्त्त स्वात्मा न मनसा ध्यात् ।

निपत ह्य नहि न अमुनाय पत्न नत्वा मना अस्मात् ।

प्रथ बुधिसागर अथवा कथा मधुकर मातला —

कवि ज्ञान लिखित प्रथ बुधिसागर अथवा कथा मधुकर मातली शीपक प्रमाख्या अथाध्याय एक शीपसागर ज्ञान के पुत्र मधुकर और मातली नामक एक कथा की प्रेम कहानी है। मधुकर मयागवत मातली का अध्यापक नियुक्त हो जाता है। जब रत्न का मधुकर के इस प्रेम-व्यापार का पता लगता है तो वह उस लेकर बाहर चला जाता है। दूसरी बार मातली का भाई का विदेशी शासक जय कर ले जाता है। मधुकर के पिता का विदेश में मृत्यु हो जाने के पश्चात् मधुकर को आता है। मातली की यात्रा करने पर उसे माया विवरण पाने होता है। वह ज्ञान करता है यह सूचना पाता है कि मातली ने जब बाह्यगाह के गुप्त प्रतापन जम्बाकार कर लिया तब बाह्यगाह ने पुनः नृसिंहान्त के पास के हाथ लगे बंध लिया। एक बार मातली के माया मधुकर भाई नृसिंहान्त पर चला गया। वहाँ पर नृसिंहान्त के पास के अपना कथा का दासी के रूप में मातली का रथ लिया। मातली के रूप पर लगे कथा का पति मुग्ध हो गया और मातली ने गति निरन्तर ज्ञान पर अपने उभे मधुकर में बंध कर पाना में फँस लिया। इस मधुकर ने एक अरमना में निकला। अरमनी के भाई प्रस्ताव का मातली ने स्वीकार कर लिया। मधुकर इस समय भाई किसे प्रकार में उठा जाता करता रहा। एक बाल्याय पर वहाँ के प्रयात मंत्रों के मातली के रूप पर मुग्ध होना और उसके मोक्ष का बंधन मुनन पर लगे के बाह्यगाह ने उभे लगे कर लिया। बाह्यगाह ने मातली का अनुरक्ति अपने मन में रखकर उस मधुकर का भाई अरमना ममनकर ली लिया। किमा प्रकार अन्त कथा के अन्त में पत्न्याय मधुकर और मातली एक नाव में बहा में भाग निकलने में मग्न रहे। सुभाषण ने के के लगे हो जाने पर वे पुनः अमन अमन होकर भयंकर गये। बड़ी कठिनाई के पश्चात् वे अपना बंधन पत्र लेना के बाह्यगाह हासिल करने के लगे लगे बना दिए गए। बाह्यगाह के अब उनके प्रेम का सूचना मिली तब उभे उन दोनों का विवाह करके लगे पर लगे लिया। यह कथा भी पूर्ण काल्पनिक है।

कथा कवतावती —

कवि जान विद्या तथा कवतावती श्रीपद प्रेमात्म्या रूपगुरी क राजा मन्तरा तथा रानी रूपेया के पुत्र क बन्धु और कवतावती क प्रेम पर आधारित है। राजा ने अपने पुत्र क विवाह क विषय उमरी मन्त्रागुप्त और गुन्धिया क विषय मगवाये। इ द्रव्यन क उनम म विगी को भा पमन् गरी किया। एक बार एक तोम क द्वारा इ द्रव्यन का मन्त्रागरी क राजा मन्तरा की उतारी राती मन्त्रागरी की पुत्री कवतावती क सौत्र्य की मूचना मिली। उमर मृ भी बनाया कि मन्त्रागरी म उनम भी किमी राजकुमार का पमन् न किया। तात की मन्त्रागरी म द्रव्यन और कवतावती क मध्य विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ और फिर दोना का विवाह हुआ गया। विवाह के उपरान्त एक दिन मन्त्रागरी का मन्त्रागरी दोना को गुन्धिया मन्त्रागरी म गया। वहा स लीते समय एक देव कवतावती का मन्त्रागरी म गया। जागन पर मन्त्रागरी जागी वानर कवतावती को छानन गया। मन्त्रागरी पश्याह हावी गोप नाहर भूत प्रन पिशाच आदि से किमी प्रकार अपनी रक्षा करने मन्त्रागरी कवतावती के पास पहुँचा। वहाँ पर देव से उमन उम मुक्त कराया। जाग चक्कर उमन वनसागर नाम के एक राजा स भी उसरी रखा गी। मन्त्रागरी नाव एक बार भवर म टूट जान पर क दोना फिर बह गये। कवतावती ती बहकर अपने पति के मगर म पहुँच गयी। परन्तु म उदन को अन्तराण ने गयी। ताने ने माध्यम से ही उन दोना को पुन एक दूसरे क पत्र प्राप्त हुए। मन्त्रागरी म प्राथना करने पर इ द्रव्यन पुन अपन यहाँ आ सका और फिर क दोना सुखपूर्वक जीवन पनीन करने गग। मन्त्रागरी प्रमाख्यान का एक कायाग उन्महणाव म प्रकाश है

मुख आना जा जिय म आई भापा जा आई सो आनी ।

रहवो बागर भाऊ किम भापा आव भनी ।

५ दिन कि ग ज्या साँझ तसी भापा उकनि निग ।

उकनि विमेष साचु के जानहु भापा जाव सो मानहु ।

उकति भनी भापा म जाव ती वह सोना मुग ध बहाव ।

सकृत म्भाररे मितावी मद्य विनाय क साजबजावी ।

मह कवतावाम कठिनाइ ताते कहि बहु जुगनि गताई ।

कथा मोहिनी —

कवि जान विद्वित कथा मोहिनी श्रीपद प्रमाख्यान राजकुमार मोहन और राज कुमारी मोहिनी के जीवन पर आधारित है। मोहिनी सभी बरो से कुछ प्रश्न पूछनी थी आर क उसका उत्तर न ले पात ये। जब मोहन ने उसके प्रश्नों का उत्तर दे दिया तो मोहिनी का उससे विवाह हो गया। इस कथा म कवि जान ने आध्यात्मिक ज्ञान आदि का भी सा मिक विवचन किया है। नीच लिखी हुई पत्तिया स यह स्पष्ट हा जाता है

रूपवन्ति अति माहिनी माहा सब मस्य ।
 और हम पर ग्यान का बावत नाहिन पार ।
 सखिविद पुनि प्राकित पया बना ग्यान का जाति ।
 कावित्र जित जहान म काऊ नासम हात ।
 बाका वाने अति विकट अरप सहन घट बाद ।
 बुद्धि आगर नागरि मुमग एसा भद्र न हाद ।
 जन ग्यानी जगत म सबका उपजा हींस ।
 जप माहता माहनि रावत है निस घांस ।

कथा नतदमयती —

कवि जान लिखित कथा नत-मयता प्रसिद्ध पौराणिक आख्यान पर आधारित है। इसमें कवि ने राजा वीररत्न के नव जोग पुत्रक नामक एक पुत्रात्मक नव का कथा लिखी है जिसका विवाह विधव के राजा भाम का कथात्मकता म आया। एक हमक माध्यम से इन दोनों का परिचय हुआ था जो मयता के व्यवहार में दरताजा तक की उपस्थिति जान पर भान का पाणिग्रहण हुआ था। जग में हर जान के पचास राजा नव और राजा मयता का जित विपनिपा का सामना करना पया था उनका भी हममें उल्लेख है। कथा का जन नव के स्वाभाविक रूप के परभाव दमयता के सना प्रमग तक है। इसमें कुछ कात्यायन म प्रकार हैं

बाचा मैं तु शयन माहि यक भाति पाद प नाहि ।
 सबहा की मति चुनि चुनि लाया चतुरन हन अगजा बावा ।
 बन्त मिनीना मिन मुवास अति मुत्तय है नत प्रकास ।

भूषण प्यास उगम रहै निव भाजन भूत नाहिन बहै ।
 पून की मान रा भूषण वाम जर ए रात उसास जुनहै ।
 जीवन कम वने बनिना का अब तु पियार का नाहन प्यै ।
 मन बरा अति मन तें कामत मग जित पाम तरा नन जहै ।

प्रथम लला मजनु —

कवि जान लिखित प्रथम लला मजनु प्रसिद्ध प्रेम कथा पर आधारित है। लला मजनु का प्रेम एक पाशापाता म हा आरम्भ होता है। जब लला का पाशापाता आना बंद कर दिया जाता है तब मजनु मियारा के रूप में लला म मितता है। मजनु का पिता उम अपने माय लेकर मक्का चला जाता है। लला लला के प्रति प्रेम दृष्ट कर वह लला के पिता के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। वह विवाह के लिए कुछ मंत्र रखता है। मजनु उम पूरा करने का चला करता है तब इन्तजनाम लला पर मुग्ध होकर लला म विवाह कर मता है। मजनु का अब लला विवाह का सूचना मितता है ता वह बहुत दुःख होता है। कुछ समय पश्चात् अपने पति का मरु हा जान पर लला

भी सती हो जाती है। मज्जू भी उसी ममादि के पाग ही था। प्राण न था है।

‘कथा कलावती —

कवि जान लिखित कथा कथावती शीरस प्रमादयान विनामपुर के राजा निपतरय तथा रानी वनकावती के पुत्र पुरार और कथावती के शरीर पर आधारित है। पुरार एक बार शिकार गेते समय एक रात एक ध्यति में राजा मुपगग रत्नपुर तथा रानी प्रत की पुत्री कथावती के शीरस के विषय में जानाया प्राप्त करता है। यह मुपगर पुरार उसने रूप की कल्पना कर उसकी प्यात्र में नत पता है। गिरियामण्डप पर वह राजा और राजकुमारी का विरहमगी धात गतापर मुग्ध कर गया है। कथा कथावती से उसका विवाह हो जाता है।

‘कथा रूपमजरी

कवि जान लिखित कथा रूपमजरी शायद प्रमादयान का रचना काल अज्ञान है। इस ग्रंथ में कवि ने हस्तिनापुरी के राजा हस्तमन और उसकी पत्न्या पन्मावती के पुत्र ग्यानसिंह और कचनपुर के राजा के शीरस तथा हस्तमन की पुत्री राजकुमारी रूपमजरी की कथा वर्णित है। ग्यानसिंह के मित्र व्याससिंह का भी उल्लेख कवि ने इसमें प्रासंगिक रूप से किया है। एक बार दाना मित्र रात में बालचीन करत एक जब सायं ता ग्यानसिंह ने एक स्वप्न देखा। कुछ समय बाद जब उसने बसा हा स्वप्न पुन देखा तब उसने पता लगाया कि जिसका वह स्वप्न में स्थिता है वह रूपमजरी है। उमर हेतु वह घर छोड़कर चला पता है। चार माह के बाद वह अपने ननिहाय पट्टेच कर बसा भी रूपमजरी का चित्र देखा है। इसके भा दा महीन बाद वह के वनपुर पट्टेच कर मानिन की सहायता से रूपमजरी से भेट करता है। वह गुप्त रूप में रूपमजरी के साथ विवाह करके चला पता है और तपस्विधा की सहायता से कुशनपूरक अपने घर चला आता है। प्रसंगत इस प्रमादयान में कवि ने विविध आध्यात्मिक विषया का भी वर्णन किया है। इसके कुछ वाक्यांश इस प्रकार हैं

पान वसन की साभा रूपन फन सा पहिरि आभूषन ।

मधुरवचन मधकर बहुबोध अवर पत्र पीन नगि भास ।

यक पाव तरवर घरे तरन चौप मन माहि ।

रूपमजरी आइतै करे बिछोना छाहि ।

जा गुर की सवा कर इक मन इक जिय हा ।

इष्टया पूजे प्राण की चिंता रहै न का ।

दन प्याती मजरी कुबर करत है पान ।

सवन सुनी मुप ऊचरी नग तीन ही जाम ॥

क्या पित्ररथा साहिजादे वा दवल दे की चौपई —

कवि ज्ञान विखिन प्रस्तुत प्रमाणान का रचना ज्ञान सन १६४८ माना जाता है । कहा जाता है कि इसका विषय काल नन १७०० २१ ई और इसका विषयक पत्रहचंद्र हैं । इसका रचना १० चौपाइया म रही । कवि न प्रथम मुनतान अनाउदान क पुत्र पित्ररथा साहिजादे का उल्लेख किया है । उसका मामू अतर्फों प । मुनतान न अनक राया का पराजित करके अपन अधीन कर दिया । अन म अतर्फों न मुनतान क आदा पत्र करनरा पर आक्रमण किया और उन पराजित किया । करनराइ अपन परिवार का छात्रक भाग गया । उसका मित्रया का अतर्फों तिला ल आया तिनम सराना कवन का मुनतान अनाउदान न अपना परानी बना लिया । कवन न मुनतान स अपना विछो मइ पुत्रा तवन का छात्र करान का अनुराध किया । मुनतान क आदा पर अतर्फों उनका राजकर न आया । उस समय पित्ररथा का अवस्था दम और तवन का अवस्था लाठ वष की था । व तौना एक साथ रहन तग और उनम परम्पर प्रम हा गया । मुनतान न यह देखकर पित्ररथा की मां स कहा कि साहिजादे का विवाह उनर मामू अलकडा का पुत्री स कराया नाम और तवन दे न उनका मित्रना जुमना बन करा दिया जाय । पित्ररथा का मा न यह बात मानकर तवन का किसी अय धान पर पहुचवा लिया । अब व दाना चपा करना कना तया मुनतान नामक दूनिमा क माध्यम न एक दूसर क पास अपन प्रम पत्र भजन तग । पित्ररथा का मां न तवन का और मा दूर भज लिया । साहिजादे न यह जानकर बहुत आमकना अनुभव की । मुनतान न उसका विवाह का विधियां मयप की और पित्ररथा का विवाह पाहनागी स हा गया । विवाह क पत्रान पित्ररथा मक दवल दे का ही पात्र करना गया । उनर सच्च प्रम का पता जब मुनतान का गया ता उसन उन ज्ञाना का मित्रन करवा दिया । साहिजादे अपना ज्ञान पनिया क साथ रहन गया । यह अधिकांश कल्पित तारा पत्र हा आधारित है और इसका अनक वान इतिहास सम्मन नहा है । इसका कुछ पायाश एम प्रकार है—

रूपव त कान नर नार धरना को छवि भई अपार ।

रूपवत मुख ज्ञान बान जिय का रूप ज्ञानो आन ।

रूपवत का त्रि क तावन सब मसार ।

नानि की या रूप है तावत इहा जघार ॥

पान मार त अघर का नानि अत्रन भार ।

भूपन जति भाग तगै नाहि रहा दकि हार ।

शेषनवा—

ज्ञानराय चापक प्रमाणान क रचयिता कवि अज्ञानी है । यह ज्ञाना क वाच्यता

जहाँगीर के समकालीन थे। इस घण्टा रणनामाला १६१६ है। जागीर में कवि ने भगवत नाम स्मरण की महिमा वर्णित की है। इसकी कथा में मंगिसार मित्र के राजा राय सिरोमणि तथा पुत्र जागीर तथा विद्यानगर के राजा गुप्तेश की कथा देवजानी के प्रेम व्यापार का वर्णन है। जागीर एक बार मित्र के समय जंगल सायिया से भटक जाता है। सिद्धाचार जोगी उम राग रागिनिवा की मित्रा भेजे है। राजा गुप्तेश देव जानीप की जोगी के वध में प्रसन्न उमरे उखार का प्रयत्न करता है। राजकुमारा देवजानी की मन्त्री मुर्तानी उम रतनाम्या में जाती है। वह उमरे मोक्ष के विषय में देवजानी का सूचना देती है। देवजानी जागीर के रूप पर मुग्ध हो जाती है। वह प्रयत्न के बाद वह देवजानी से भेंट करता है। जागीर के रूप से एक स्थिति घोट पर उखार होकर वह नित्य देवजानी से भेंट करने लगता है। एक बार राजा के पलायन हुए बाद से जानदीप घाट पर से गिर पड़ता है और राजा के पूछने पर मित्रा कारण बताता है। राजा उस मन्त्रुण्ड की जाना देता है परन्तु घाट में मन्त्री की सलाह से उम एक काट के मद्रक में घट करके पानी में बहा देता है। जानदीप राजा मानराय की राजधानी पड़चता है और वध में से निवृत्त कर राजसमा में प्रस्तुत किया जाता है। राजा उम अपने पुत्र के रूप में रख लेता है। देवजानी जानदीप के विरह में आरमभान करने का प्रयत्न करती है परन्तु भगवान शंकर की कृपा से वध जाती है। उहा का प्ररणा से राजा जानदीप की छात्र करना है और अन्त में देवजानी के स्वयंवर की घोषणा करता है। जानदीप वहाँ आता है और उसका देवजानी से विवाह हो जाता है। बहुत समय तक वे दोनों सुखपूर्वक वहाँ रहने लगते हैं। तत्पश्चात् राजा मानराय की मन्त्रु हो जाती है और उसकी ३६ रानिया अपनी सहेनिया सहित सती हो जाती हैं। राजा मानराय की पुत्री दामावनी का योग्य वर से विवाह करने के पश्चात् जानदीप राजराज देवने लगता है। देवजानी की सहेनी मुर्तानी भी अपनी सहेनी के पास चले पड़ती है। अनेक प्रासंगिक कथाओं और देवजानी के मुरत्सेन नामक राजा द्वारा हरण जानदीप के आश्रमण मुरत्सेन की पराजय और अन्त में जानदीप के स्वदेश वापस लौटने की कथा इसमें वर्णित है। अन्धी भाषा में यह काव्य दोहे चौपाई छन्दों में लिखा गया है। इसमें कुछ काव्यात्मक संस्कार हैं

एही जुगुति तिन बीनेउ भारी निसि जाय विरहिन दुखमारी ।
 देखत चन् चन् विरारा पविहा बोल सबद जिउ मारा ।
 बोवहि मार सार वन माहा चीनी पकति वाम तन ढाहा ॥
 काधिन कूवत कलरव वानी विरह पसीजि भीजि तन चोनी ॥

भए सजाइत तुण्ण चन् हस्तिन पपरी ताहन मड ।
 घुमरहि घटा जनु सावन आय अकुस कीह तुरत चमकाये ॥
 घमरहि घन जनु धानु निमाना जनु बगुपाति फरहरा बाना ॥

मान् बाज्रन म सहनाई मानहूँ सारग सवल् मुनाई ॥

त्रिय जोवन जन नद को पानी उतरि गय का मख् बानी ।
तिरिया जानि दूध की नाई विनम बरि सुवात् न पाइ ।
तिरिया कबल एम सम तूना पानी गय न सा रग फूना ॥
तिरिया बदलि पम का नाई, एक बार पर हाय मित्रि जाई ॥
तिरिया माटिक बामन जस पाग छति रसाइ न पम ।
तिरिया जस मागी की गगरी मात्त बूत् पन्न पन विगरी ॥
ओगुन भरा सा तिरिया नसा गुन अघार ।
सठ करत् चित भीतर जा पुग्बहि कग्नाग ॥

वासिमगाह—

भक्तिभुगान सूफी प्रमादवान काव्य का परम्परा में कामिगाह विहित 'हमजबाहिर' शायक रचना का नाम भी उ उखनीय है। कामिगाह उखनऊ जिन व अतगत दरियावा' नामक स्थान में निवासिता थे। उनका पिता का नाम इमानुन्ना था। इस ग्रन्थ का रचना काल सन १७८२ है। वासिमगाह दिल्ली के सय्या मुहम्मद गाह के समयकालान थे। ग्रन्थ के आरम्भ में कवि ने अउन पार कगामगाह के माय-माय पीर मुहम्मद पीर अगारफ तथा पीर अता का भी उल्लेख किया है। इन प्रमाणान में कवि ने बनधनगर के मुनतान बुरहान गाह के हजरत खिय स्वाजा के आनीबा' से जन्म पुत्र हम तथा चीन के राजा आनम शाह और राना मुताहर का राजकुमारी जबाहिर की प्रेम तथा वर्णन का है। बुरहान गाह की मृत्यु के पश्चात् राना में अराजकता फैल जाती है। इस का विना प्रसार रचना माना मुर्गान वहा में हया न जानी है और राना में जाकर सम्मानपूर्वक रहने लगता है। वहा पर स्वयं में हम जिनी मुन्तरी का देख कर मुग्ध हो जाता है। हमारी आँखों की राजकुमारी जबाहिर एक परी में परिचय पाकर हमें नाम में उस अपन पाम रख लेती है। जबाहिर का विवाह मुलतान भोनागाह के पुत्र जिनोर से हुआ निश्चित हुआ है। जल परी जिनोर का डीक कर नहीं मानती और अनुकूल वर का पात्र में हम के पाम पहुँचती है। इस खन्म में देखा मुन्तरी और जबाहिर के अन्वयन में साम्य स्वर उगम मिलने का प्रयत्न करने लगता है। जल परी राजकुमारी का पुत्र बाई मदा नूँ के पानी और इमा बीच रानी उस बनी बना बना है। राना का उमान दखर अनेक राजकुमारियां में उसके विवाह का प्रस्ताव रखा जाता है परन्तु वह किसी से विवाह करने का तयार नहीं होता। समागता कुछ परिया जबाहिर ने निज जिनोर का बरात में से जिनोर का उगार हम को उसक स्थान पर उग रना है और रयाग से उन प्रमियों का विवाह हो जाता है। विवाह के पश्चात् वे फिर हम का उठाकर जिनोर का उग राना पर मुसा देती हैं। अब जबाहिर जिनोर का पति राना में स्वाकार नहा

चल पड़ता है। माग म अनेक कठिनारथा को पार करता हुआ वह कायापति नामक बजारे से मिनता है और पुन जाग बड़ता है। उगते गमी सायी पीछ छूट गये होते हैं। डर राजकुमारी द्रावती भी स्वयं म किसी रूपवाग जागी का श्रेणी है। मता नामक मालिन की सहायता से व दाना परस्पर भेंट करते हैं। राजकुवर उसने सो रूप को देखकर अचत हो जाता है। अतः राजवनी एव प्रतीकारत्मक कथा सिग्गर उमर पाम छोड जाती है। राजकुवर को इसी बीच दुजन राय क द्वारा बदी बना लिया जाता है। वह तीन के तारा राजवती के पास अपना समाचार भजता है। राजकुमारी की सनाह से कृपा नामक राजा की सहायता म राजकुवर मुक्त होना है। ओर कठिनारथा के बाग समुद्र की देवी कमना प्रसन्न हानी है और राजकुवर समुद्र म प्राण मानी प्राप्न करके लौटता है। राजा जगपति अपनी कथा से उमका विवाह कर दता है। कथा क उत्तराड म राजकुवर की पूर पत्नी मुत्तर के विरह का बणन है जिसम कीतिराय नामक पुत्र उपजत हाता है। राजकुवर क वियोग म पीडित रानी बडी कठिनारई स पुत्र का पापग भी करती है और राजकाज भी चनाती है। रानी को उसकी सहनिया अनेक प्रकार की कथाए सुनायी हैं। राजा हस रम्भा चित्रसेन मालती महावली राजा एव राजवल्लभी आदि की कहानियां सुनाकर रानी किसी प्रकार तिन काटती है। इसी बीच नाभ नामक एक स्त्री कीतिराय पर कुछ जादू टोना करती है और दड स्वरूप देश से निष्कासित कर दी जाती है। वह जतपुर पहुच कर वहाँ के राजा कामसन से रानी सुदर क रूप का बणन करती है। कामसेन मोहिनी मालिन का जागी के वेप म रानी सुदर क पाम भेजता है परंतु वह अपने प्रयास म सफल नहीं होती। फलतः राजा कामसन कानिजग पर चढाई कर देता है परंतु युद्ध म मारा जाता है। जत म रानी मुत्तर वियोग की पीडा न सहन कर पाकर पवन के द्वारा स देश राजकुवर क पास भेजती है जिस पाकर राजकुवर इ द्रावती सहित लौट आता है और फिर वह सब मुल म रहने लगते हैं। एक बार शिकार के समय राजकुवर एक ताते मे बन्दम और प्रमा की कथा सुनता है। उस कथा का उसपर ऐसा प्रभाव पडता है कि कुछ समय के पश्चान उसकी भी म यु हा जानी है। उसकी दोनो रानियां उसी क साथ सनी हो जाता है।

रम रचना म कवि न एक की पत कथा प्रस्तुत की है जिसका आध्यात्मिक महत्व है। इसक सभी पालसाधक मोह वासनाओ इद्रियो आदि के प्रतीक है। जीव ब्रह्म की साधना करते हुए अनेक प्रकार की बाधाओ से मुक्ति पाकर अतत प्रम भावना का आनय लकर परम सौ दय का साक्षात्कार करता है। रसम कवि ने विविध बणन रम त व और आनकारिकता आदि का सम्यक रूप से समावेश किया है। इसके कुछ का दाश उदाहरणाश नीच प्रस्तुत किय जा रहे हैं

करो मुग्धमद साह बघ्यानु । है सूरज देहनी मुलतानु ।

धरम पय जग बीच चनावा । निबर न सबरे सा दुख पावा ।

बहुत सनानीन जज कर । आइ महाम बन हूँ कर ।
सब काहू पर दाया घरद । घरय सहिन नुतनाना करई ।

मन दग मा दक नानि मयारा । मधि पग माहि सब मसारा ।
न्यत्र एक नाक पुलवारी । न्यत्र तहां पुष्प जी नारी ।
दोउ मुख माभा बरनि न जाई । चर मुज नत्र भुं आई ।
तयी एक दखउ तहि ठाऊ । पूछउ नामा निव्हर नाऊ ।
बहा अहूँ राजा औ गनी । इद्रावनि ओर बुवग गियाना ॥

आगमपुर इद्रावनी कु धर कातिजग गय ।

प्र म हुने साउह कह दीहा अनच पिनाय ।

मो मह पायी क जा काउ पढ़इ तानि दाया मा तहि सुत्र बर ।
हाइ मुखी जा पढ़ई सुधारी हाइ घना जा पढ़इ भिधारी ।
पं विपत्र मों सम्पत पाव बाउर पं नान मन आव ।
पं विद्यागी हाय मजागी नाम गग पं जा राभा ।
विद्यार्थी पढ़ चिन नाई हाइ ताहि विद्या अधिवार ।

भयउ सम्पूर्ण पायी पूजी मन की आत्र ।

पं सीग मघावी जब नग माहि अकाम ॥

भयउ घटा दालन सा कारा घरगन भय बाउर कमकारा ।
रौग सास घरग चौगानू यतहि बागहि चदि मगानू ।
हान आरग आपना चाहूँ अरि का हम्न चतान मराहूँ ।
माना घरग हन सब काई बापन घरग ठनाएन गान ।
गगन घरग घटा सा न गयऊ हिन हिन औ घनु हन हन भयउ ।
मानई घटा धूर मों तिन मनि गहा छिनाय ।
तहा महाभारतय भा सब परउ हूँ हाय ॥

बहो घरम का सान मबारे ना अघरम मो दग उबार ।
अमा मित्रगहार पगावा घरम कर का बाज जनावा ।
और मह बाज बर मो आइ करे सुभाषा मग भनाई ।
निग अघर्मा मया क तिन आव न मनायक जन बिन ।
बाधा जा नरक कुड माहा, महा मरीच अकारा नाहा ।

‘अनुराग बागुरी —

कवि नूर मुहम्मद लिखित अनुराग बागुरी गीतक समाप्तता में कवि ने पूरागुर
 क राजा जीव के पुत्र अत करण की कथा प्रस्तुत की है। उगरे सा र रा र पुटि
 चित्त तथा अहंकार नामक मित्र थे। अत करण की पत्नी का नाम महामाहिती था।
 अत करण एक बार सखमगता नामक मुन्गी की मणिमाता खरार उम पर मुग्ध हो
 जाता है। मणिमाता पहिनन बना ब्राह्मण उम बनाता है कि वह माता पहन उगन
 ज्ञातस्वाद नामक विद्यार्थी के गन में विद्यागुर गगर में ख्या थी। जानस्वा म उम यह
 ज्ञात हुआ कि सनहनगर के राजा की कथा सखमगता में उगरी विन्ता में प्रभावित
 हाकर उस यह माना भेंट की थी। अत करण ब्राह्मण में उम माना का पाकर सखमगता
 क विरह में पीड़ित रहने लगता है। वून नामक भणिया उमक पिता का राजकुमार क
 विरह का मून कारण बनाता है। किसी का सनाह भी न मान कर राजकुमार अत
 करण सखमगता का प्राप्त करन क निग घर में प्रस्थान कर देता है। सनही गुं राज
 कुमार का अपन निदचय पर दू दयकर उम एक तोत क साथ भग न है। माग में
 इन्द्रियपुर का राजा मायावी मनभावनी नामक रूपसा की सहायता में उस लक्ष्य अष्ट
 करना चाहता है। वह राजकुमार के सनही रागसनही तथा वागसनही नामक
 साधिया को भी बहकाता है। परंतु राजकुमार उमके आकर्षण में अप्रभावित रहकर
 सनही नगर पहुंच जाता है। तोते के प्रयास में सखमगता तथा अत करण के मध्य चित्ता
 तथा पत्नी का आत्मान प्रदान होता है। खर अत करण का पिता सखमगता के पिता
 के पास समस्त मूचनाएं भजता है जिसमें अबगन हाकर वह उन दोनों का विवाह कर
 देता है। फिर अत करण घर गीतर मुनपूत्रक दिन यनीत करन लगता है।

इस कथा में कवि ने पाता का नामकरण विशेष अयुक्तता की दृष्टि से किया
 है। अवधी भाषा में लिखा गया यह काय चौपाइया और बरवय उग में लिखा गया
 है। विविध प्रसंगा क अनुसार असम अनेक प्रकार क बगन समाविष्ट मिलत है। इसके
 कछ कायाग उगहरणाय नीचे प्रस्तुत किय जा रहे हैं

यह सनह की बात नीका है अनुराग बागुरी जी को ।
 है पुनि सखमगता साई सखमगता रागिनि हाई ।
 कामयाव किछु और न भाखा तन मन जीव भद सब राखा ।
 परगट राजा रानी बोता क गुलाब दुबारा खाला ।
 जा कर नन गुप्त कर हाई महा बरय मुत्र दत्र साई ।
 तन मन जिय क भण पियारे पट मण भाख भावन हारे ।

स्तन जमन दाश्मि फल सोहै क युता गगाजन को है ।
 कटि अनि सान चिहूर की नाई नाग है कीहा जगसाई ।
 जो काउ ना देवन चहे ता कटि ख नाहा अहै ।

उह जमत बनन के खम्भा व पन्वारिज ऊपर रमा ।
रमा वज ऊपर कित होई दही त्रिध रागा सोई ॥

पूना त्व मुनच्छन राता वृषा भरा रक्त सा प्याला ।
कहा अर राता अनुरागा धानिन निय पायसि कहि लागी ।
कहि सनट व दगध अपाग, राछन राति हिरण्य म डारा ।
बषा पीन रग लखि वहा कौ पात किन काहा ता ॥

नार एक मूर्ति पुर नाऊ राजा जाव रहै तहि टाऊ ।
वा बग्नी वह नार मुहावन नगर मुहावन सब मनभावन ॥
कौ सरार मुहावन मूर्ति पूर ।
कौ जाव राजा जिव जात न दूर ॥

तनुत्र एक राजा क रहा जन करन नाम सब कहा ।
सौम्यताव मुक्ता मराना सा सावित्री स्वात समाना ।
परत मूर्ति जो सा पग घर नगर राग मूध पग पर ।
वह पथ जा राख पाऊ वहै अहव सब हाइ बगऊ ॥
रत मघाना ताहि पत्तन ठाँव ।
एव मकप विवस्य सा दूबर नाँव ॥

बुद्धि चित्त तू मया सरत जगत बाव मुन अवमुन त्व ।
अत रत्न पाव नित आर रत्नन त्वि महामुख पावै ।
अहमार तहि तानर सखा निरख ।
रूउ राति व अनर नमुक जत्र ॥

अत रत्न मत्त एक राता महामाता नाम सयाता ।
बगनि न पाग मुग्गता सकत मुग्गा त्वि जगद ।
मवमगना त्वि अमाय चाहै तावन मध्य बरम ।
रत्न पागन फेरा तार चर विनवन सा चपता मार ।
अनर मनु रत वर राग श्याविना जगत मजारा ।
प्रातम प्रम पाइ वह नारी प्रम गविना भद पियाग ॥
सुता न रूप रत्न है जन नसाइ ।
प्रम रत्न व नासति नै छति जाइ ।

पह बाँसुगी मुन गा बाँ हिरण्य मात गना रहि हाँ ।
निगहन नाँ बाँना सारा मुन मुधि पर रहे कहि हाँ ।
मुनन जो यह सब मनाहर हान अथठ हान मुग्गीधर ।

यह मुग्धगी जा की बोनी जाय तू न वात घोनी ।
 बहुत देवता की तिन हर बहु मूरति ओधी हाइ पर ।
 वन दवहरा डाहि गिरान सपना की रीति मियाव ।
 जह इसनामी मुघ सा निसरो वात ।
 तही सबन मुघ मगन कल तसान ॥

हसेन अनी —

भक्तियुगीन सूफी प्रभाव्यात की परम्परा में कवि हुमन त्रिविध पुत्रपावती शीषक ग्रन्थ का नाम भी उल्लेख्य है। कवि हुमनअनी न इगम अपन उपनाम सना नर का उल्लेख किया है। कवि का निवास-स्थान हरिगाव था। उनसे काव्य गुरु केशवनाथ थे। पुत्रपावती की रचना वातगने १७३८ था। पुत्रपावती शीषक एक अर्थ कथा दुखहरनास का त्रिधा हुई भा बनाया जाना है जिसमें राजपुर व राजा परजा प्रति व राजकमार और अनूपण व राजा जम्बरगन की राजकुमारी पुत्रपावती की प्रेम कथा है। पुत्रपावती में कवि ने लानमाहि व पुत्र मानिकच और हपनगर के राजा पदमसन और रानी वीशत्या की पुत्रा पुत्रपावती व रूप की चर्चा तथा प्रेम-कथा वर्णित की है। पुत्रपावती रत्नसत धारि व म म पुत्रपावती व रूप की चर्चा सुनकर मानिक च पुत्रपावती व पास अपन चित्रका बनता है। पुत्रपावती उस चित्र का देखकर मुग्ध हो जाती है। वह स्वप्न में भी मानिकच का दखती है। अन्त में पुत्रपावती और मानिक च का विवाह हो जाता है और अपन मन्त्री वामसन की सलाह पर पुत्रपावती और मानिकच अपन दश तीर जात ह जहा पर उनके दबीनाथ नामक एक पुत्र भी उत्पन्न होता है।

स कथा के अनेक अंश उपलब्ध हैं। पुत्रपावती एक शृंगारिक काव्य है। इसमें शृंगार रस व सयाग और विदाग पदा अन्तर्भरतवा तथा विविध प्रकार के वगना का समावेश है। मन्त्री भाषा में ब्राजवा अक्षरी की प्रधानता है। शोषाश्या और श्लो छटा में यह काय किया गया है। सके कुछ काव्यांश इस प्रकार हैं

विरह विन्ध्य जा पर फफाता हूँ उस तम अगूर जमोता ।
 तेद गजक जनु करहि बना सीत सजाग ज दय नसाई ॥
 छवि मन्मा भय सतगार गये उधरि घट त्राज क वारे ।
 हसि हसि हल मद मन्मान बनकि बनकि मुख निकसहि वात ॥
 वातन बचन तनर त्रिपटाहीं मान ननन फिरहि पिराही ।
 निपति तजाती नवन मुखवाता हसि हसि वक हिए मन्पाला ।
 छाक म छवि पर न छाकू अस मन् पिया न हर विपाकू ॥

महाराज दय्या रनिवासू का बरना जानी बबितासू ।
 वनक घाम नाग च आरा औ मनिनात जनी सहि कोरा ।
 जगमग जगमग निस दिन हाइ म्रज चाद जात उन सोई ।

अनु को देख व सब नारी मी त्रुं जहि दद उत्तारी ।
रानी कोसिल जनमी वाग जगमा जानि जगन उत्रियारी ।

विधि अज्ञा एहा विधि हाग करा जा काया चूकहि मारा ।
प यह जानि मरतिहि न आनिय अन्न बहै जाग किन गानिय ।
पूठ काया हम निजु जानी चूठे आया आनु बजाना ।
अहै न काया अपना ओ नहि जाग काइ ।
एक रूप लखी जहाँ तजी गरम जग माइ ॥

‘गोष निसार’—

भक्तियुगीन मूसी काव्य प्रवृत्ति व अन्तगन गद्य निसार त्रिपिन यूमुफ जुनघा शीपक प्रमान्यान का नाम भा उन्नयनाय है । गद्य निसार गद्यपुर गाँव व निवासी व जिम अकबर के समकालीन गद्य हवातुताह न बसाया था । उनक पुत्र गद्य मुहम्मद गद्य निसार व बाबा और गद्य गुताम मुहम्मद उनके पिता व । गद्य निसार न अपन समकालीन दिल्ली मुलतान शाहजादम का लख्य किया है । यूमुफ जुनघा का रचना कवि ने मबत १७८० के लगभग की थी । एक अनिरिक्त उनक किताब अय ग्रंथा म महरनिगार रस मनाज ‘दीवान अहमन जोर’ जानी नय तथा नसाव आदि व नाम उन्नयनीय हैं । यूमुफ जुनघा म कवि न नवा याकूब व पुत्र यूमुफ और यमूम मुलतान की पुत्री जुनघा का प्रमनया वर्णित की है । यूमुफ अपन बारह भाग्या म सबम छोट थ और उनक भाद उनस ईष्या करत थ । एक बार व सब मित्रक उन्हें कुये म गिरा देत हैं और दूसरा का यह सूचना न है कि यूमुफ को भणिया था गया । इस दुपटना के फलस्वरूप नबी याकूब का दुनी पीना हाता है कि व अघे हा जान हैं । इधर यूमुफ को कुछ व्यापारी वत् म निकान उन हैं परंतु यूमुफ व भाइ उन व्यापारिया स यह कह कर स्पया यमूलन है कि यह उनका दाम था । शाहजाद जुनघा स्वल्प म यूमुफ व दगन करक उसम प्रम करन लगता है । परंतु प्रमवा वह मिय व बजार का ही युमुफ समझकर उसस विवाह कर लता है । यूमुफ का मोशगर ताग मिय व बाजार म दाम व रूप म बेचन पदुवत है । जुनघा उमर गीत्य का बसा मुनकर उन लगता और पहिवात लती है । वह अपन पति म आग्रह करत उन गरावा लती है । परंतु यूमुफ अब भी उतास रहता है । उन पिता का पास मनानी रहती है । कई बार वह भागन की भा बला करता है परंतु मजन नला हाता । व अपन पिता व पास एक मने मित्रबाता है । इधर जुनघा का अनया हान लगता है और बजार उत त्याग देता है । कुछ समय परबाग युमुफ को मुनतान मुहत्त परव अपना मत्रा बना देता है । अब वह अपन पिता से भेंट करता है और आग पत्रकर मिय का मुनतान भा बन जाता है । अपन विवाह म अघी हा गयी जुनघा का एक बार वह दगतर पन्चान लता है । उमके पिता अपन आगावाग म उम पुन मुन्गा बना न है और उन दाना का विवाह हा जाता है ।

यह प्रमाण्यत पारसी व कवि त्रिनामो की त्रिया ल^क मृमुफ त्राया शीदक राना पर आधारित यताया । ता है जा मत्र १४८ म त्रिया मया था । कवि न मृमुफ और जुतया की प्रम कथा व माध्यम म आध्यात्म मत्र पर भा अत्र त्रिपण विया है । यह भी कहा जाता है कि यी तया तृपत्र मत्र म त्रिया में भी वणिता है । इसम कवि ने शृ गार व सयोग और वियोग मया । माध्यम म प्रम त्रय का त्रिपण विया है । आनरात्रिकता तथा विविध यणना का ममायन भी इसम है । य प्रथम आधी भाषा म त्रिया गया है । उता म दाना ओर त्रिपार्ई व मय मोरगा ओर कविता भी मितते हैं । एसक कछ का योज उताहरणा । नीन प्रमुत त्रिय जा र है

त्रात धरम सब छाडि व आया मितिर न रग ।

चहो प्रानपत मार जा काहु वग परवस ॥

पानी हर गया पियामा रेतो देय सा भयो त्रगागा ।

काइ वाहित चरि चाहेन पारा वाहित फटया जा मगघारा ।

भयो काठ बहु प्रान अधारा वूडत बहत सी नाहि मगारा ।

जब बहु काठ नियर भा आई कात सरूप भयो टुपदा ।

अनय छाड चित उन सी लाव ताकर पत्र मानुग अग पाय ।

दीन दया न कर अस दया त्रिय अनय मुखी कर साया ।

तहि दयाल बहु दश्य विसार देय निमन्नि नष्ट त्रिचार ।

पुनवाटी बहु पून तगाय एक त एक मुरम वनाय ।

जो मन पुनप एक तिन त्रात्र ताय मख कछ हाय न आव ।

चित्र अनक जा रया चिनर माहित हाय रूप रग हर ।

आवे चित्र काज कछ नाही चित्र काज मवार मन माहा ।

का न चिन चितरे नावह चित विचित्र रूप निरमाव ।

जो बुछ र न हाय म तहि चित दीजिय काउ ।

जा न मर नहि वीछु तहि त प्रीनि तगाउ ॥

काउ कहै अहै तम राजा साहे तहवा जान विराजा ।

काउ कहै अहै निवग माहावा वरन नत कारि नी आवा ।

कोउ कहै कि नागिन कारी दी ह छात्रि मन सा उजियारी ।

काउ कहै श्याम अनि मोहा पुनप पराग जाय तहि सोय ।

शाह नजफअली सचोनी—

भक्तिपुगीन मुफ्ती काव्य की प्रवृत्ति व अतगत शाह नजफअली सचोनी त्रिखिन प्रम चिनगारी नामक प्रमाहयान का भी उत्तम विया ता सता है । शाह नजफअली रीवा नरश विश्वनाथ मिह व आश्रय म रहत व । इनका रचना का न मवत १८८ के

रगभग अनुमानित किया जाता है। कहा जाता है कि गाँव नरकप्रथम जय था। इस प्रथम कवि ने आरम्भ में निगम का गमन करत एक कठ प्रामाणिक उल्लेख किया है। इस परवाच कवि ने बामुंग का छवि की कवि कथा प्रस्तुत की है। कवि ने बताया है कि प्रेम की यह बामुंगी वस्तु निगम पतन का निवारण है। कवि हजरत मुना जीर एक चरवाच का कथा के माध्यम से बामुंग का छवि और वामुंगिता और उसका माध्यम से परम ब्रह्म के वाच का निवारण करता है। यह प्रथम वस्तु निगम सिद्धान्त का निष्पन्न है किमम कवि ने सद्भाषित व्याख्या की प्रस्तुत की है। इसमें कवि ने मोरताली प्रमी की वाहियाता का वाचनान्त विवरण प्रस्तुत किया है। इस प्रथम की रचना अवधी में हुई है। इसमें कुछ वाक्यान्त उदाहरणों का प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुना कथा बामुरिया गाँव बिठवन का गति राम मुनाच ।
 वन सा वाट भो हम चारा मव मुनन राव नर नारी ।
 छानी टूक टूक न पाऊ लो बिगहा क चाप मुनाऊ ।
 पिय म मित बिछल ना कान पर मिनन जा हे निन साद ॥

वसा अस रवा नहि वाज नाम विप और मारग पाऊ ।
 वसा अम धुनि कूबनपारा प्रमी नहा नथी ममारा ।
 वसा क भापा मुन ताता मय मघय है रवन मो रता ।
 प्रम कथा वसा अब गाँव मजनु न बिगनी बोगन ॥

रवाजा अहमद—

मतिमुगान मुना वाक्य की प्रवृत्ति के अंतर्गत रवाजा अहमद विभिन्न नूरजों की एक प्रमाणिक नाम भी विनियत किया जा सकता है। कवि रवाजा अहमद बामुंगी गाँव के निवासी थे। उनके पिता लाल मुद म तथा बारा चकू थे। उनके गुरु का नाम मुम्मद अमान था। 'नूरजों' की रचना कवि ने मदन १२०० में की थी। नरकही में कवि ने एक कल्पित प्रेम-कथा प्रस्तुत की है। ईरानग के मुननान मतिव कह और उनका बरम नूरताव पुत्र विद्याग में रक्षित रहते हैं। तपस्या करने पर दमनीर नामक पारक ज्ञान और आभावाचन के फलस्वरूप उनका यमोत्साह नामक पुत्र का जन्म होता है। यमोत्साह एक बार मदन में विद्या मुन्ना का गान के निहायन पर बड़ा क्रोध दृष्टता है और फिर उसके विद्याग में पति रत्न लगता है। दूसरा आरम्भ कर के मुननान का पुत्री मुनबाम भी उस स्वयं में अक्षर अनुक्त हो जाता है। यमोत्साह के मुननान यमोत्साह और उनका पना ममागान की मुन्ना कथा नूरजों की रचना केवलकम का पुत्र ममति नूरजों के अनुवाद में अक्षर विद्या कर लायन जाता है। वह नूरजों में यमोत्साह के मोरन का वाचन करता है। यमोत्साह बिगह में ममाधि लगाकर बैठ जाता है और फिर बामुंग अथन माधिया महिन नूरजों की

स्यो ज करने लगता है। सभी कृतियाँ इसी में बड़े रूप में प्रकृत हैं जहाँ उसका विचार
 उसकी अनि हास ही गतवाग में बसा दिया जाता है। गुणयोग का परिणाम उदास
 गी है। यहाँ घतन-प्रकृत्यकर प्रकृत ही में विचार कर लेता है। वाग में उदास गतवाग
 भी मिल जाती है। जत में बड़े अपनी गता पतिया सति घर ही आता है और
 राग या उत्तराधिकारी वापर मंत्र में प्रकृत लगता है। प्रकृत में बड़े का अर्थ
 भाषा का प्रयोग किया है। प्रमाणात् ता य की जय सामान्य विवशनात् भी प्रकृत
 विवशनात् है। प्रकृत कुछ वाक्यात् प्रकृतनात् गीत प्रकृत विवशनात् है।

अबमर सुमति तहाँ अम पावा हाय मुरति न चरन उगावा ॥
 आर्ष पास पाट गुनताना प्रेय मुनिन गा साव माता ॥
 तत्र ना हाय मुरनि ध दी हा यामन वाग मुनिनि तहि की ॥ १ ॥
 तत्रि सी रूप खरान विवशा जाति सवा मूरनि एव नखा ॥

हिरण्य अम प्रीत उतथानो प्रम तथा अय निषा कहानी ।
 बबन सा तस बभ जन् मरी जति न नखन होन दुष्ट दूरी ॥
 दक्षउ यदि वाजा न माहा दूस्स घान अवर क नही ।
 बाया माय नयनपुर घाटा देखउ सननीप के वाग ॥
 प्रम खनन जाना के (नन) माता वाजा माय भार और सागा ।
 सत्र गल्पनि वाजा के माही वसत ठाउ नखा क नही ॥
 तरजहा वाजा क जोती वाजा ममन् साप जह मानी ॥

नेत्र रहीम—

भक्तियुगीन सूफी का य का प्रकृत के अ तगत शब्द रहीम निखित भाषा प्रमरस
 शीघ्र प्रमाणात् वा नाम भा - लोचनीय है। शब्द रहीम जखन नगर क निवासी
 य। यह शब्द जगरी के जशन य। प्रकृत पिता का नाम यारमुहम्मद तथा बाया का
 नाम गद्य रमजान य। वाक्यात्स्था म हा पिता की मृत्यु हा जाने के कारण प्रकृत
 नाता लदावण न प्रकृत पावन पापण किया था। प्रकृत गुरु विनायनअनी य जो
 मयत् गाजीशाह क वशज य। प्रकृत मय म सद्गाट एववड सप्तम की मृत्यु हा चुकी थी
 और राज पचम गद्दा पर बट नय य। प्रकृत अपने श्रथ म अपने मित्रा वाजिद
 अना निरत विहारी मायर प्रामाण तथा वश्य यज बहादुर आदि का उल्लेख
 किया है। भाषा प्रमरस का रचना काय स १८१५ है। प्रकृत श्रथ म कवि न प्रमसन
 तथा चरनना की प्रम कवा का वणन किया है। रूपनगर क राजा रूपसन और
 उनकी रानी रूपमनी का वया साधना ने पश्चात् चद्रकना नामक पुत्री की प्राप्ति
 गानी है। प्रकृत मवी युवमन य य। प्रम इन नामक पुत्र उत्पन्न होता है। य दोना
 प्रचपन ग ही परस्पर प्रम करन लगत है। राजा यह समाचार पाकर उन पर प्रतिबन्ध
 लगा देता है। प्रमसन वही कठिनार्थ स अपने मित्र बन्सेन के द्वारा मोहिनी नामक

मातलिन व माध्यम से चद्रकता व पास में भिन्नता है। प्रमत्त मन्त्रा रूप में रनिवास में पञ्चकर चद्रकला में मिलता भा है। लौकिक बहू भाग बनात अपन पिता का बनाता है जा रष्ट हाकर उस घर में निकाल दन हैं। मन्त्रा में बिरवन हाकर प्रमत्त जगत में चला जाता है और सहपात का अपना गुण बनाकर माधना करन लगता है। इधर उसक विषय में पांडित चद्रकता को एक रूप में ठा न जाता है। अनक नाटकाय घटनाओं के पश्चात् रूप से चद्रकता का मुक्ति होता है और प्रमत्त में उसका विवाह हो जाता है। इधर चद्रकता का मातलिन दश में निष्कामित हान पर रन्नामा वात् के मुनतान अविद्य के यही पञ्च पर र्म चद्रकता के उसाधारण मात्त के विषय में बनाता है। बहू रूपनगर पर आक्रमण कर र्ना है पञ्चु चद्रकता के पवित्र सोत्त का र्धकर फकीर बन जाता है। अब रन्नामा फिर अनन पति और उम्बधिया सहित मुखपूर्वक रहन लगता है। इस रूप में र्धि न र्गार के मयाग और विषय दोना पना के साधनाय अर अनक विषय का प्रामाणिक रूप में समावन और वगन किया है। अबधी भाषा में निउ गय र्म रान्य में अर्धी पारसा की ज्ञानवला भा मिलता है। यह छत्ता सोपा का प्रयाग र्धि न र्म किया है। र्मक कुछ वाक्यां उदाहरणाय नाच प्रन्तुत दिव ता र्म है

प्रम का पान जगत त पारा सिख्य प्रम पान गुन मारा ।
 प्रम पान साध नहि आन जाव आप सा आय र्माद ।
 जगत पान तहि आग चग प्रम पान चिन नर र्जग ।
 प्रम पान हरि रूप सिखाव, धय गुमाण र्धि न चिन आव ।

रगना दाह पान कर मूरा, बिन रगना यह र्ह जपूरा ।
 जा न हात रगना मुख माहीं वा र्मवा नर पावा ताह ।
 बिन रगना का भे र्तावन भा र्मवा नर पावन ।
 रगना स भा वर पुगना रगना राज नर कर गाना ।
 रगना राजपा बटाव, रगना नरगह भाय मगा ।
 बिन रगना यह जनम अकार्य रगना त घर परमारय ।

कप र्वाग र्धर मन सावी साच रहा ता वाका पावी ।
 जब रग प्रम न हाई सावा हाग मिन न बन्त पांचा ।
 एक दिन कप साय निन मवा राज मिन हाय रि र्जा ।
 यह विद्य कप प्रम सा मन भरमन फिर गुं जी वत ।

नगर—

बि नसीर राजापुर तिन के अठगत रमानिया नामक गाव के निवासि य ।
 राजन में अनक कष्ट उठान के पश्चात् इतका भेंट मुहम्मद र्धी नामक एक व्यापार

से हुई थी। उसने दूह अनेक कथाएँ गुनाई थी जिनमें यह बहुत प्रभावित हुए। पारसी कवि जामी की निची हुई यूगुफ जुनघा कीवक कृति के लिपार नामा कवि के उद्देश्य 'अनुवाद' इशकनामा के आधार पर दूहा अपना काव्य की रचना की थी। इ हान अपने प्रथम अनुल अहदी नामक पीर की प्रशंसा की है ता कवि क गुफुफ। इग प्रथम का रचना कान सावन १२७४ है। प्रथम जसा कि उपर उल्लेख किया ता पता है कवि नसीर न यूगुफ जुनघा की प्रतिष्ठ प्रम कथा का ही यणत किया है। यूगुफ का जन्म किना नगर म हुआ था। इनका पानन पापण इनरी माना की मत्यु क कारण फूफी क घर हुआ था। फूफी उस अपने पास रचना चाहती थी और पिता अपने पास। अत फूफी की मत्यु क पश्चात ही यह पिता क पास आय। दूगरी आर सभूर शक क मुलतान की पुत्री जलघा स्वप्न म यूगुफ की श्रेयनी है। वह यूगुफ म मित्र का आशा म मिस क बजार क पास प चती है परंतु तब मन मानूम हाना है कि बजार यूगुफ नला है। यूगुफ अपने भाइया की श्रेय्या का पत्र बनकर जनक कल उगाता है। सौगार क द्वारा यूगुफ की मुक्ति हानी है और मित्र म जनघा उम दास क रूप म बिनने हुए देखपर पहिचान नती है। सौगार की लडकी तथा जनघा दाता ही यूगुफ स प्रम करती हैं परंतु वह विरक्त रहता है। अत यूगुफ मित्र ना बजोर बना लिया जाता है और वह जिब्रीन क आश से पुन यौवना जगछा स विवाह करक मुग़लूक जीवन यतीत करने लगता है। उसकी मत्यु के पश्चात जनघा भी अपने प्राण छोड देती है। इस शृंगारिक काव्य की रचना अवधी भाषा म दाहा चौपाई छाना म हुई है। अनकार निरूपण नखशिख वणन तथा जय प्रसंग भी इसमें विविध रचना पर समाविष्ट हुए हैं। इसमें कुछ काव्यांश इस प्रकार है

खरग कटारी विप भरे सत श्याम रतनार ।

वह यक्ति नहि बचत जहि चितवत एक बार ॥

— — —
बश रही अस नागिन बारी तहि कर डस नही जाये पारी ।

दोष नट मान जात उजियारा जमुना मान भई गग धारा ॥

— — —
अचरज रूप की रही वह बारी तह की सवन सजी रही बारी ।

बोहत बहुत खम रह पाधी उह तरवर पर साखी साखी ॥

कती गुनाय कती जही बना अचरज रूप रह बहा खना ।

चम्पा फून कती पर बिकस थास सुवास बसर कती निक्स ॥

कती म हरी कती बिकसे जाना कती सीधी दसमन मह जाना ॥

अथ कवि—

भक्तियुगीन सूफी काव्य की प्रवृत्ति क अतगत उपयुक्त कविया क अतिरिक्त कुछ अन्य कविया और उनकी रचनाओं का उल्लेख भी किया जा सकता है। इनमें

कथा अगाध कवि की निजी दृष्टि का स्वरूप तथा कवि अनामुराह की निखी दृष्टि किया
 कुबेरवत आदि क नाम विरूप रूप से उल्लिखनीय हैं। कामरूप की कथा में अवधर
 के राजा राजपति और रानी सूर्य के पुत्र कामरूप तथा कामकला के प्रेम का बचन है।
 कामरूप नामक मन्त्र के परामर्श से बहूत दान-पुण्य करने पर कामरूप उत्पन्न होता
 है। यात्रिपिया का भविष्यवाणा के अनुसार अवस्था प्राप्त होने पर कामरूप एक बार
 स्वप्न में सन्तान के राजा कामराज के पुत्रा कामकला का शत्रुता है। कामकला भा
 श्मा प्रकार स्वप्न में लज्जित दान करता है। दानों एक दूसरे के विरह में पाठित रहते
 हैं। कामरूप के पुत्र दावानल के यात्रना के अनुसार भयानक वरक यात्रियों से काम
 कला का परिचय पान का चप्पा होता है। कामकला की स्यादा देखकर पुराणि मुक्ति
 लक्ष्मी सहायता करता है। बड़े कामरूप का लेकर वापस नीकता है। भाग में राजा
 कर्ण कामरूप का समझता है परन्तु वह अपने हठ पर चला रहता है। अन्त में मात्रा में
 विघ्ना के कारण वह एक मन्त्रा राय में पड़ता है जहाँ पर रानी रावता राय करती
 या। रानी लज्जित रूप पर माहित हाकर उस प्राण दह नहीं देता। रात में चन्द्रमुखरा
 उस पर मुग्ध हाकर उस उठा ले जाती है। रात में उस तसमय नामक व्यक्ति के बधन
 में रहता पड़ता है। बन्धा कर्णार्थ में उस अपना मित्र चद मिनता है। आग धनकर
 उठे नाता चित्रमन चित्ररा गधवराज केवलरूपमिसर आदि मिनत है। अन्त में
 कामकला के स्वयंवर में बड़े पड़ता है और कामकला उस वर लेता है। दूसरे
 राजा का के विगद्य के कारण कामकला का पिता उस बड़ा बना जाता है परन्तु बाद में
 उसका विवाह हो जाता है और बड़े कामकला सहित अपने दान पड़कर मुग्धपुत्रक
 रण लेता है। काम कथा में अनेक सभ आख्यायिका दृष्टि से भा महत्व के हैं। इस
 कथा की भाषा मित्रा जना है जिसमें राजा वागी तथा अरवा-नारसी के अर्थिक
 है। इनके कुछ आख्यायिका अर्थपाय नाच प्रस्तुत किए जा रहे हैं

पनाहा विभावान जगन मन कुबेर बिन बनारानी कम गन ।
 विरगम निर बत न बात मना बनाराम राना कुबेर से जुदा ।
 जगन में मुने तब कुशन का कुटुंब के विरह का उगा तन में सुक ।

मगुन में चला हुआ मुने द विना कुबेर हमका भाग रगना सुना ।
 कुबेर निर में माना में बाता बचन मुने नित रह इस तुम्हारी सुगन ।
 परा भइ एक जब तक आकाश में तुम्हारे धरन का मुने आस है ।
 तू माना विना मगुन अब चनों मरनगार में जा बना में मिनी ।
 विनक के मुन्नेर न तब कला विजावा कवर के मगुन का रहा ।
 रहा तब माता न टका विना मगुन से कुबेर का विना तब विना ।

मुने तना का परिमती का एक अंग, विरनी सा चरा रह एक मग ।
 मुनिविना की बात जब पग उठा बज पग में पुनक महन धनधना ।

ही एक सोती है। जो प्रेम के रहस्य को नहीं जानता और जो प्रेम में साधना न करता वह जीवात्मा परमात्मा से गृह्यत्य के कारण विकृतता अनुभव नहीं करता और फलस्वरूप साधना के अभाव में ईश्वर का नहीं प्राप्ति कर सकता। संप्रदायों के इन सिद्धांतों का समकालीन तथा परवर्ती हिन्दी साहित्य पर जो व्यापक प्रभाव पड़ा वह भी इसके महत्त्व का परिचायक है।

अध्याय ३

भक्तियुगीन राम-काव्य की प्रवृत्ति

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तियुग के अन्तर्गत राम काव्य की प्रवृत्ति का सम्पूर्ण रूप विकसित मिनता है। यह काव्य प्रवृत्ति मधुग भक्ति की निरूपक है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राम काव्य की परम्परा भारतवासी में अत्यन्त प्राचीन है। यहाँ तक कि ब्रह्मकाल में भी राम कथा के विभिन्न पात्रों का उल्लेख मिनता है। ऋग्वेद अथर्ववेद तत्तिरीय आरण्यक ऐतरेय ब्राह्मण रामायण महाभारत, शतपथ ब्राह्मण जमनीय उपनिषद् ब्राह्मण छांदोग्य उपनिषद् बृहदारण्यक उपनिषद् ऋषीतकी उपनिषद् नाट्यायन आरण्यक वायुपुराण पद्मपुराण आदि ग्रन्थों में राम कथा के अनेक पात्रों का समावेश हुआ है। स्मृतियों के ग्रन्थों में भी महावीरचरित तथा उत्तररामचरित में राम कथा का वर्णन है। गस्तुत साहित्य में राम कथा का सबसे अधिक परिष्कृत और सजाविल रूप वाल्मीकि की रामायण में मिनता है जिसका रचना काल ग्यारहवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व अनुमानित किया जाता है। इसके पश्चात् महाभारत में भी राम कथा का सूत्रगत उल्लेख मिनता है। बौद्ध साहित्य में द्वापरयुग जातक अनामक जातक तथा द्वापरयुग कथानम में राम कथा का उल्लेख मिनता है। जन घम से सम्बन्धित साहित्य में भी हेमचन्द्र विष्णु जन रामायण जिनशाम विष्णु राम पुराण पद्मचन्द्र विष्णुगण्य विष्णु रामचरित एवं गामयन विष्णु रामचरित में भी राम कथा का समावेश हुआ है। उत्तरपुराण तथा आदिपुराण में भी रामकथा मिनती है। प्राचिन ग्रन्थों में भी रामकथा का तात्त्विक समावेश हुआ है। यागवाल्किष्ठ रामायण आश्याय रामायण अश्विन रामायण आनन्द रामायण काननिगम रामायण अग्निवष रामायण गमयान रामायण समयनिरूपण रामायण रामायण गार रामायण रहस्य राम हस्यम राम पातकम अश्व रामायण रामायणनाप्यदीपिका रामायण काननिगमसूचिका रामायणमग्रह गीण रामायण भद्रुणीरामायण सूत्र रामायण आदि रामायण विष्णु महात्म्य महारामायण हिन्दु मन्त्ररामायण कान रामायण आदि ग्रन्थों में भी राम

क्या उपन्यास होती है। इस अनिश्चित अभिप्राय में निरावधारित अथवा
 हनुमन्-विजय गुरुमुखावधारणारिणम साता विजय वापिष्ठात्तरगमायण
 गनमुत्रगवणारितम सायापास्यात् हनुमन्महिमा महाराजाम्बु वन्त्यागत्य
 आदि म भी रामन्यास का उपाय मिलता है। इन अनिश्चित महाराजामायण गमयुत
 रामायण लोमस रामायण अगस्त्य रामायण मजुल रामायण गोष्य रामायण
 रामायण महामाता गौहान रामायण रामायण मणिरत्न गोष्य रामायण
 चाण्ड रामायण मन्त्ररामायण स्वायम्बररामायण गुत्रमरामायण गषात्त
 रामायण देव रामायण श्रवण रामायण 'दुरत रामायण एत रामायण चपू म
 भा विविध प्रसंगा तथा सवासा के आधार पर राम कथा का विवरण उपन्यास होता
 है। संस्कृत महाकाव्य में रघुवश रावणवह अथवा गनवद्य मद्रिकाय अथवा
 रावणवद्य रामचरित रामायण मजुगी दशाननार चरित उत्तर राघव जात्रा
 परिणाम तामिन रामायण रामानिवासद राम रम्य अथवा रामचरित आदि
 म राम कथा का समावेश है। संस्कृत नाटका म उत्तर रामचरित रामाना
 महावीर चरित जनपराधव म जाना अथवा हनुमन्नाटक प्रतिमा नाटक
 यान रामायण मय गी वन्माण प्रमग राघव आ चय चन्मणि अम्भनपण
 अभिषेक नाटक रामाम्भुत्य उत्तरराघव छिन रामायण कृत्नारावण माया
 पुष्पक स्वान्तपानन जनिवराघव रघुविलास रघवाभ्युत्य दूताग
 उ मत्तराधव तारा गान्त्री परिणय आदि म राम-कथा से सम्बन्धित जनक विवरण
 समाविष्ट है। इन अनिश्चित रामचरित राघवपाण्डीय राघवनपथीय राघव
 पाण्डीय यात्राव सक्तनागस्तोत्र रामकृष्णविरोधकाय यात्रवराघवीय राघवया
 वीय रामनागापमन चित्रवद्यरामायण हसमदन अथवा हसदूत भ्रमरदूत भ्रमर
 सन्धेण कपित्थ वीथिन सादेश चन्द्रदूत, रामगीत गोविन्द गीता राघव जानकी
 गीता रामविलास मगीत रघुनन्दन राघव विलास रामशनक रामायणतक
 तथा आषारामायण आदि स्फुट काव्य खडकाव्य चित्रकाव्य तथा शृंगार काव्य
 आदि म भी रामन्यास की निहित मिलती है। क्या साहित्य म वह कथा कथा
 मरितमागर आदि म भी रामन्यास का समावेश है। चपू काव्य के अतगत चपू
 रामायण उत्तरराज चपू उत्तररामायण चपू आदि के नाम उल्लेखनीय है। संस्कृत
 गद्य रचनाजाम रामवल्पम शीषक ग्रथ का भी उल्लेख किया जा सकता है। अथ
 भाग्यनीय भाषाजाम तामिन रामायण कम्बन रामायण रगनाथ रामायण उत्तर
 रामायण भास्कर रामायण माता रामायण गोपीनाथ रामायण रामचरितम
 इरामचरितम कानास रामायण नाध्यात्म रामायण केरानक्षत्रा रामायण तीरावे
 रामायण मरावणराग त्रिविहरिम काशमीरी रामायण कृत्तिरास रामायण
 चन्दावनी कृत रामायण रामानन्दकृत रामनीता कविरत्न कृत रामायण
 रामानन्दकृत रामनासा कवि चन्द्रकृत जगन्धर रघनन्दन मास्वामीकृत राम

रामायण, जगन्नाथ रामायण, जगन्नाथ रामायण, कन्नड रामायण, रामायण, दक्षिण रामायण, विजय रामायण, विजय रामायण, भाव रामायण, रामविवाह, 'रामबालचरित' माता हरण, रावण मदादरा सवा, रणयन साता विरह, रामायण, रामविजय, गातिरामायण, 'रामायण आदि काय' रामकानन तथा कथा रामायण का नाम उल्लेखनीय हैं। विद्वान् माहित्य में भी विद्वान् रामायण गानाना रामायण रामायणकाकाकिन चरित्ररामायण हिरायनसरिराम रामरत्निय मरतका पानानारामकथा मरतना राममहद रामकियन रामनातक 'रामयागत' याम्ब आदि में भी राम कथा विविध रूपों में उपलब्ध हानी है।

गोस्वामी तुलसीदास—

भक्तियुगीन राम-काव्य की प्रगति के अन्तर्गत सबसे महत्वपूर्ण नाम गोस्वामी तुलसीदास का है। उनके जन्म के विषय में विद्वानों के पृथक् पृथक् अनुमान हैं। मध्व १५८८ उनके जन्म की तिथि अष्टमावृत्त अधिक मास में। तुलसीदास की मृत्यु तिथि मध्व १६८० मानी जाती है। तुलसीदास ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। अपा विषय में उन्होंने अपनी कुछ इतिहास में उल्लेख किया है। उनका जन्म स्थान के विषय में भी राज्ञापुत्र तथा मोरा का विवाह है। तुलसीदास का वाक्यावस्था का रचनाई में व्यतीत हुई थी। माता पिता के विवाह के कारण उन्हें विवाह करना पड़ा था। उनके कठिनाइयों के पश्चात् उन्होंने एक अनुमान मन्त्रिण में तालम लिया था। नरहरिदास से तुलसीदास ने राम भक्ति की शुरुआत की। उन्होंने विवाह भी किया था परन्तु विवाह के पश्चात् स्त्रियों के व्यग्र वचन से प्रभावित होकर वे संन्यास विरक्त हो गए थे। चित्रकूट में रहते हुए उन्होंने भक्ति-साधना की थी। विविध अवसरों पर उन्होंने अनेक तीर्थों का भी यात्रा की। काशी में उनका स्वभावसुखा। तुलसीदास का रचनाश्रम रामकथा नरहरि रामानन्द आदि रामायण रामचरितमानस पावती मगल गीतावली इत्यादि रचनाओं में निरमल रामायण दाहावली, कवितावली इत्यादि रचनाओं द्वारा गाठिए भक्तमित्रान विजय शाहवली बहुप्रतिभा, छन्दो रामायण छन्दो रामायण घमराम का गाना, भुव प्रनावर्षी गानाभाषा अनुमानगत अनुमानवाचक अनुमानपरक गानादिना राममुखावली पञ्चरामायण रणभूषण साक्षात् तुलसीदासजी मन्त्रमाचन सतभक्त्यात्मक मन्त्रगण तुलसीदासजी का वाक्य एवं उपलब्ध आदि का नाम उल्लेखित किया जाना है। इनका प्रामाणिकता के सम्बन्ध में भी विभिन्न विज्ञानों में मतभेद है। तुलसीदास जी आमनागदारा का परम्परा में हुए थे। त्रिगम उनका पूरा नाम थापणमुनि, मन्तारविमुनि, कर्मविमुनि, मन्तारमुनि, नाथमुनि, उदगा रामदिन, उदगा मन्तारवाच रामानन्दरादि

पठकोपाचार्य कुरेशाचार्य लोकाचार्य शलशाचार्य गुणयोग्याचार्य गणधरानन्द
द्वारानन्द देवानन्द श्यामानन्द प्रतानन्द निस्थानन्द पूर्णाणन्द हर्षानन्द म्प्यानन्द
हरिवर्षानन्द राघवानन्द रामानन्द सुरेश्वरानन्द माधवानन्द गरीवानन्द सम्मीलन
गोपालदाम तथा नरहरिदास हुए थे ।

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में राम भक्ति और राम तथा वा यजन करने के
साथ-साथ सद्ब्रह्मन्तिक रूप से काव्य के स्वरूप पर भी विचार किया है । उन्होंने काव्य
रूपी सरावर के पांच कमल मानते हुए अलंकार रीति गुण दाप तथा यजन का
मूलत्व दिया है । रामचरितमानस में मानस के रूप का यजन भी कवि ने प्रस्तुत
किया है जिसमें काव्य के सभी अंगों का समावेश हुआ है । यह इस प्रकार है

सप्त प्रबन्ध सुगम साधना । ग्यान नयन निरखत मन माना ॥
रघुपति महिमा अगुन अवाधा । बरनव सोल बर बारि अवाधा ॥
राम सोय जस सलिल मुधा सम । उपमा बीचि विनास मनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चोपाई । जगति मज मति सीर गुणई ॥
छंद सोरठा मु दर दोहा । सोइ वह रग कमल कुन सोहा ॥
अरब अनूप सुभाव सुभासा । सोल पराग मकरद मुभासा ॥
सुकृत पज मजल जति माना । ग्यान विराग विचार मराना ॥
धनि अबरेव कविन गुन जाती । मीन मनोहर ते बहु भाती ॥
अरथ धरम कामाणिक चारी । कटव ग्यान विग्यान विचारी ॥
नवरस जप तप जोग विरागा । ते सब जल चर चारु तडागा ॥
सुकृत साधु नाम गुन गाना । ते विचित्र जन विहग समाना ॥
सत समा चहु दिसि जवराई । श्रद्धा रितु बसत सम गाई ॥
भगति निरूपन विविध विधाना । छमा दया दम तता विताना ॥
सम जम नियम पन पन ग्याना । हरि पद रति रस बढ बखाना ॥
जीरउ कथा अनेक प्रसगा । तइ मुक पिक बह बरन विहगा ॥

तुलसीदास जी ने काव्य का शिवत्व के तत्व से युक्त होना आवश्यक बताया है ।
इसलिए उन्होंने नर राम की रचना नहीं की । अपने अधिकांश ग्रंथों में तुलसीदास
ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है । मसूत के उच्च पात्र के कारण उनकी भाषा में
संस्कृतनिष्ठता अपेक्षाकृत अधिक मिलती है । अवधी के साथ-साथ ब्रज भाषा का
आंशिक समावेश भी उनके काव्य में मिलता है । कुछ कृतियों विशेष रूप से कविता
बली गीतावली दोहावली तथा विनयपत्रिका में तो ब्रज भाषा अत्यंत परि-
मार्जित रूप में मिलती है । तुलसीदास की भाषा में स संस्कृतनिष्ठ भाषा ब्रज प्रधान
भाषा एवं अवधी के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

यत्र कुत्रापि मम जन्म निज कमलेश्वर भ्रमत जगज्जनि सकट अनेक ।
तत्र त्वन्भक्ति सज्जन समागम सत्ता भवतु मे राम विनाममेक ।

प्रयत्न भव जनित सत्याधि भयज भगति भक्त भय-यमद्वन्द्वरसी ।
सत भगवत अंतर निरंतर नही किमपि मति मलिन वह दास तुनसी ॥

कबहु न जात पराए धामहि ।
सतत ही दखा निज आगन सत्ता सहित बलरामहि ।
मरे थाबु कहा गारम को नवनिधि मन्दिर यामहि ।
ठाला म्वानि धारहन के मिस आइ कबहि बेकामहि ।
हौ बलि जाउ जाहु वितहू जनि मानु सिखावति स्यामहि ।
विनु कारन हठि दाप नगावति तान गए गह तामहि ।
हरि मुख निरसख पुरप बानी मुनि अधिक् अधिक् अभिरामहि ।
तुलमात्तास प्रभु दख्याइ चाहनि थी उर सलित सतामहि ॥

आल हि बानक माडव मनिगन पूरन हो ।
मानिह पातरि नागि चहू दिसि झूनन हा ।
गगाहन कर बलम ता तुरत मगाइय हा ।
जुवनिह मगन गाइ राम अहवाइय हा ॥

राम कथा का विस्मृत रूप स बणन करते हुए तुलसादास जी न आध्यात्मिक और दार्शनिक विषया पर भा विस्तार म विचार किया है। ब्रह्म माया अवतार जीव मुक्ति पान भक्ति आदि क विषय म तुलसीदास जी क विचार महत्वपूर्ण हैं। भगवान राम का तुलसीदास न विष्णु का अवतार माना है। उनके नाम और रूप का उपासक ईश्वर का उपाधि बताया है। ब्रह्म क निगुण और सगुण रूपा का तुलना म राम नाम का महत्व उद्दान विशेष रूप स प्रतिपादित किया है। माया को तुलसीदास न एक शक्ति माना है जा निगुणभक्ति को सगुणभक्ति म परिणत कर दती है। लौकिक और आध्यात्मिक दोनों ही अर्थों म कवि न माया क प्रभावा का बणन परम शक्त की रचना शक्ति क अर्थ में किया है। विद्या माया और अविद्या माया का विवचन करते हुए कवि ने जाव और जगन क सम्बन्ध म माया की सत्ता स्पष्ट की है। माया ने मुक्ति सब तक अगम्भव है जब तक जीव के हृदय म ज्ञान और भक्ति क गाय-गाय रामरूपा का प्रकाश न हो। कवि ने ब्रह्मा विष्णु और महेश का भगवान राम क जग म उपासक बताया है। स्वयं हनुमान न एक स्थल पर रावण की चनावनी देने हुए उमन कहा है कि राम क अनुसूचन न हान पर महत्या निव विष्णु तथा ब्रह्मा भी उसकी रक्षा नहीं कर सकत। तुलसीदास जी ने भगवान राम के अवतार का कारण ब्राह्मणों श्रमिया मुनियों आदि का रक्षा तथा अध्याय अधम आदि का निमूलन बताया है। जीव क विषय म गोश्यामा तुलसीदास जी का यह मत है कि बह ईश्वर का अर्थ है जगानिए वह ईश्वर क आधीन रहना है। जीव की प्राप्ति स्वयं तथा मुक्ति हीन

'कवितावली'—

गारवामी तुनसीदास की लिखी हुई कवितावली शा. १४२१ का प्रथम भाग में लिये हुए कवित्त और सबका छन्द सगहीन है। तुनसीदास का विविध स्वर काव्य प्रया की भाँति इसमें भी राम भक्ति तथा आध्यात्मिक भावों का विषय गम्भीर प्रणाली मिलने है। इसमें भी कवि ने छन्द विमात्रन रामदास के विविध काव्य के अनुरूप ही सात भागों में किया है। रामदास का प्रथम निवाह इगम भा. दुआ है यद्यपि विविध प्रसगा के अनुरूप कहीं कहीं विषय में अत्यन्त गतिपन्ना जीर कहीं पर अत्यन्त विस्तार भी मिलता है। ईश्वर के प्रति भक्त के आत्म निर्वन्त के प्रथम भी मिलने है। तुनसीदास जी के विविध काव्य प्रया में स कुछ प्रसंग उदाहरणान नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

प्रथम प्रथम बरिबड बाहुबड वीर

घाए जातुधान हनुमान निधा घरिब ।

महावन पज कजरारि ज्यो गरजि भट

जहाँ तहाँ पटके नगूर फरि फरिब ॥

मारे लान तारे गात भाग जात हाहा खान

कहैं तुनसीदास 'राखि राम की सौं टरिब ।

ठहर ठहर पर कहरि कहरि उठ

हहरि हहरि हर सिद्ध हस हरिब ॥

रीझि जापनी बूझि पर खीझि विचार विहीन ।

त उपदेस न मानही मोह महोधि मीन ॥

नागन भलो मनाव जो भनो होन की आस ।

वरन गगन का गेडआ सो सट तुनसीदास ॥

की तोहि नागहि राम प्रिय की तु राम प्रिय हो ॥

दुद मह रुच जा सुगम सोइ कीबे तुनसी तोहि ॥

अमिय मूरिमय चूरन चारू । समन सकल भवरत्न परिवारू ॥

सुजतसभु तनु विमन विभूती । मजन मगल मोट प्रमूनी ॥

जन मन मजु मुक्कर मन हरनी । कित तिनक गुन गन वष करनी ॥

जा सुमिरत सिधि हो गन नायक बरिबर बरन ।

करउ अनुपह सोइ बुद्धि रासि मुम गुन सनन ॥

मूक हाइ बावान पगु चरन गिरिवर गहन ।

जामु वृषा सा दयान द्रवठ सक्त्त कति मन दहन ॥
 नीन सुगण् म्याम तन्न अन्न बारिज नयन ।
 करउ सा मम उर घाम सुता छार सार मयन ॥
 कु इडु सम तह रमा रमन कन्ना अयन ।
 जाहि दान पर नह करत्त वृषा मत्तन मयन ॥
 यत्त गुण पत्त कत्त वृषा सिध नरूप हरि ।
 महामाह तम पत्त जामु बवन रवि कर निरत्त ॥ (रामचरितमानस 'यदना')

मनि मानिक मुहुता छवि जमा । अहि गिनि गत्र सिर साह न तसा ।
 नूप किरात्त तन्ना तनु पाद । तहहि नक्त्त सामा अधिकाद ॥
 तसहि मुक्कवि रविन युध कहण । उरत्रहि जनन अनन छवि तहहा ।
 भगनि त्तु विधि भवन विद्या । मुमिरत्त सारत्त आवत्ति घाई ॥
 राम चरित गरबिनु अह्वाए । सा भ्रम जात्त न कात्ति -पाए ॥
 कवि कावि अस्स हृत्तय विचारी । गात्रहि हरि जम कतिमन हारी ।
 काहें प्रात्रउ जन गुन माना । सिर घुनि गिरा जन पत्तिजाना ॥
 हृत्तय सिध मनि मीप ममाना । स्वानि सारत्त कर्हहि मुजाना ।
 जो बरपइ बर बारि विचार । ताहि कतिन मुहुतामनि चार ॥

दो०—जुगुति बधि पुनि पाहिरत्ति राम चरित बर ताम ।

परिहृ मजन विमन उर मामा जनि अनुगग । (रामचरितमानस)

जब त राम प्रताप घनसा । उत्ति भयउ अति प्रबन तिनसा ॥
 पूरि प्रवाग रत्त ति तारा । बन्तह मुत्त बन्तन मन माका ॥
 त्रिर्त्ति माह त कत्त बघानी । प्रथम अविद्या निता नमानी ॥
 अथ उमूक जह जत्त मुक्काने । काम काध कश्य महुक्कान ॥
 विविध कम गुन काज मुमाऊ । ए चकार युध रत्ति न काऊ ॥
 मगर मान मा म चारा । इत्त कर हुनर न कबनि आग ॥
 घम नगाय प्यान विद्याना । ए पक्त्त विवध विधि नाना ॥
 मुय मताय बिराग विवहा । बिग्न माह ए काज अत्ता ॥

दाहा —मह प्रताप रवि जाहें उर जब करत्त प्रताप ।

पत्तिन बाइहि प्रथम ज कत्त त पावहि नाव ॥ (रामचरित मानस)

नाम भगम नाम बल नाम मन ।

जमन जनम रघुनन्द तुनगिहि दर ।

जाम जाम यह यह तनु पुनगिनि ३ ।
तट तट राम विवाहिन नाम मातु ॥ (धरव रामायण)

राम वाम निगि जानरी लपन रात्रिनी जाग ।
ध्यान सबन व यानमय मुरतर पुनगी नोर ॥
रामनाम मनि दीप घर जीह दहरी द्वार ।
तुनसा भोतर रात्रिरा जा चाहगि उजियार ॥
हिय निगन नथनहि सगुन रगना राम गुनाम ।
मनहु पुरट सपुट तसत तुनसी तलिन ननाम ॥
नाम राम का वनपनर कति वल्यान निवाम ।
जा सुमिरत भया भाग तें तुनसा तुनगीनास ॥ (दोहावनी)

वामव वरन विधि वन तें सुहायना
दमान का वानन वसत का सिगार सा ।
समय पुराने पात परत डरत वात
पातत लनात रनि मार वो बिहाइ सा ॥
दख बर वापिना तडाग बाग का वनाव
रागवस भा बिरागी पवनकुमार सा ।
सीय की दसा बिचोनि विटप असोक तर
तुनसी बिचोवदा सा निनाक सोक खार सा ॥ (कवितावली)

बानधी बिसान बिबरान वान जान माना
नव नीत्रिने को वान रसना पसारी है ।
बधा वाम वायिका भरे हैं भूरि धूमस्तु
बीर रस बीर तगवारि सी उधारी है ।
तुनमी मुरेस चाप बधा दामिनी वना
बधा चनी मर तें कृसानु सरि भारी है ।
दख जातुवान जातुधाना अतुनानी वही
वानन उजारया जव नगर प्रजारी है ॥ (कवितावली)

राघो एक वाग किरि आवी ।
ए बर बाजि बिनाकि आपन वरग वनहि सिधावी ॥
ज पय प्याय पाछि कर पकज वार वार चुबवावे ।
या जीवहि मरे राम नाडिन । त जब निपट बिसारे ॥

1. भरत मौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहार ।
तदपि दिनहि दिन होत पावरे मनहु बमल हिम मार ॥
सुनहु पथिक ! जो राम मिलहि वन कहियो मानु नरसा ।
तुनसी माहि और सबहिन तें इहका बना जदमा ॥ (गीतावली)

ऐसी हीहु जानति भृग ।

नाहिन काहू सहा मुख प्रीति करि इह जग ॥

कौन भीर जा नीरदहि जहि लागि रटत बिहग ?

भीन जल बिनु तलवि तनु तज मलिन महन अमग ॥

पीर कछु न भनहि जाव विरह बिकन भुग ।

व्यास विसिप बिनाक नहि बलगान तुनुध कुरग ॥

म्यामघन गुनवारि छबिमनि मुरनि तान तरग ।

लायो मन बह भाति तुलसी हार क्या रसभग ? ॥ (श्रीकृष्ण गीतावली)

हरि तुम बहुत अनुग्रह कीहा ।

साधन घाम बिबुध दुलभ तनु माहि कृपा करि दीहा ॥

कोन्दि मुख कहि जाय न प्रमु न एन एक उपकार ।

तपि नाथ कछु और मागिही तीज परम उदार ॥

विषय वारि मन भीन भिन्न नहि हान कर पत एव ।

तारें सहिय बिपति अति दास्य जनमन जानि अनन ॥

कृपा वारि बसी पर अहुम परम प्रन मृदु चारा ।

एहि विधि बधि हनु मरा दुय कौजुन राम तिहारा ॥

हैं सुति विन्ति उपाय सवन मुर कहि कहि दास तिहार ?

तुनसिपास यहि जीव मोह रज जोद बाध्या गाइछार ॥ (बिनयवत्रिणा)

अप्रदास—

स्वामी अप्रदास जी राम भक्ति व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अन्याम व प्रानाथ' । यह
प्रसन्नमान के लक्षण स्वामी नारायणदास या नानादास व नी गुण थ । प्रियागत जान
इनके विषय म एक उल्लेख किया है जिसका अनुमान यह आमत व राता मानसिद्ध क
समकालीन थे जो अकबर के दरबारी थ । श्री अनुमान पर अज्ञान जी का सम्ब
सन १९५६ के लगभग अनुमानित किया जाता है । इ हान राम भक्ति म पाठ की
अग ता मधुरावासना का अनुमानित किया था । तथा एक प्राम्थन गिन्ध परम्परा थी ।
जगी प्रयागदास विनादी पूजनपास बनशरीरगत नरान्तगत मगवानास विचार
विचार जगत्पास जगन्नाथपास सत्तथा यमपास तथा छम्पास तय उपा धारि
थ । इनके जीवन के सम्बन्ध म जो बिबरन उपलब्ध है उपा अनुसार यह सम्बन्धान
म जन्मे थ । बचपन म यह श्रीकृष्णपास पर्याप्त व विष्णु पा । बाप म इति अपना

पृथक् गद्दी बनायी जिसमें नामादास दशमुरारि पूणवरागी शिवाकर तथा भगवन्ना रायण आदि आचार्य हुए। राम भक्ति परम्परा के अंतर्गत जो मत्पुरोपासना का विकास हुआ उसमें यह अग्रअली के नाम से भी प्रतिष्ठित थे क्योंकि इन परम्परा में अनी शब्द की छाव प्राचीनतम है। अग्रदास जी की विद्यी हुई कृतिषामें 'ध्यान मञ्जरी' अथवा रामध्यान मञ्जरी बुद्धिया अथवा हितोपदेश उपन्यास नामकी शृंगार रस सागर अथवा अग्रसागर आदि के नाम विषय रूप में उल्लेखनीय हैं। संस्कृत में इन्होंने अष्टयाम नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी। अग्रदास जी में काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

देखो झूलत राघो डोन ।

जनक मुता लीने सग सोभित गौर स्याम तन नान ।

हीरा पना नान पिराना रतन चचिन बमोल ।

श्रीडत राम जानकी दोऊ बज दुन्दभी डान ॥

हसत परसपर प्रीतम प्यारी आनन्द बरया सचोन ।

श्री अग्रअली मुनि मुनि मुख पावति बोरहि मीठ मान ॥

नामादास—

नामादास अग्रदास जी के सवप्रमुख शिष्य के रूप में उल्लिखित किये जाते हैं। अग्रदास के पूर्व इनकी गुरु परम्परा में कृष्णदास पयहारी अनन्तान्त तथा रामानन्द हुए थे। कहा जाता है कि इनकी भक्ति भावना और सिद्धि से प्रभावित होकर इनके गुरु ने इन्हें भक्तमाल नामक ग्रन्थ की रचना करने की प्रेरणा दी थी। इनके जीवन के सम्बन्ध में जो विवरण उपलब्ध होता है उससे अनुसार यह बचपन से ही नेत्रहीन था। पाँच वर्ष की अवस्था में ही इनकी मृत्यु अकाल के समय इन्हें किसी बदन में छोड़ दिया था। सयोगवश कीन्ह तथा अग्रदास ने इन्हें उस मांग से गुजरने पर उठा लिया और कमल के जल के छींटे देकर इनके नेत्र ठीक कर दिये। फिर महात्माओं के सस्त्र में इनका पानन पोषण हुआ। प्रियादासजी इन्हें अनुमान वश का बताते हैं। तुलसीराम तथा तपस्वीराम ने इस वंश के प्रवतका में रामदास का नाम लिया है। इस वंश के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों के भी पृथक् पृथक् मत हैं। इस सम्प्रदाय के अंतर्गत इनका नाम नामाअनी था। इसके पूर्व इनके नारायणदास नाम का भी उल्लेख किया जाता है। भक्तमान के अनिरिक्त इनकी एक अन्य रचना रामायाम शीषक से भी प्रसिद्ध है। रामचरित सग्रह नामक एक अन्य ग्रन्थ भी इनका रचा हुआ बताया जाता है। भक्तमाल शीषक ग्रन्थ का राम भक्ति परम्परा में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस ग्रन्थ की अनेक टीकाएँ की गयी हैं और उनकी एक पृथक् परम्परा ही विकसित हुई है। भक्तमान में रामानन्द सम्प्रदाय का संपूर्ण विवरण उपलब्ध है। यह ग्रन्थ ब्रजभाषा में लिखा गया है जिसमें छप्पय दोहा छंद आदि का प्रयोग है। भक्तमाल की टीकाओं में प्रियादास लिखित भक्तिरसबोधनीका नालचन्द्रदास

लिखित 'भक्तउत्सव' व 'व्याख्या' लिखित 'भक्तभालिष्यणा' गुमानाता
 लिखित 'फारसा' भक्तमात्र 'कानिमिह' लिखित 'गुरुमुखीभक्तमात्र' तुलसागम
 लिखित 'भक्तिप्रदाय' प्रतापसिंह लिखित 'भक्तिरत्नसुम' रघुराज सिंह
 लिखित 'रामरमिकावता' जगन्नाथ लिखित 'रमिकप्रकाश' भक्तमात्र 'भारतदु
 लिखित 'भक्तमाल' छाप्य, तपस्वागम लिखित 'रसूत्रमहावका' 'वानाप्रमाण' मित्र
 लिखित 'हरिश्चन्द्रप्रकाश' गुणाध्याय लिखित 'भक्तनामावताधुव' तथा
 भानुप्रताप निधारा लिखित 'अथजाभक्तमाल' ज्ञानि क नाम विद्यालय में छापनाय
 हैं। इनका एक रचना को उदाहरणार्थ नाम प्रस्तुत किया जा रहा है

जातिन मीना जन्म गया ।

जातिन त सब ही नागनि का मन का शूत्र गया ॥

अम्बर ज्ञानि अनित त 'पत्रा' निवि दुःसुमा बनाय ।

वरदान बुसुम अपार शक्ति त 'याम' विमानन छाय ॥

जनक मुता दापन कुत्रमत्ता सबल विरामनि नारी ।

रावन मरुतु कुमनि अमरल गण अनयमान भय हारी ॥

गुप्तर शीत गुहाग नाग की महिमा बहूत न आय ।

परम उत्तर राम की प्यारा पररज नाभा पाय ॥

वानप्रस्थ—

वानप्रस्थता वानप्रस्था का नाम से भा विख्यात है। यह विना स्वामी अथवा
 विनाशा घनानाम और चरणान का निष्य परम्परा म है। इनका रचना का
 म १७६६ त १७४६ त मध्य बताया जाता है। इनका विद्या हूँ रचनाका
 म घनानज। नहप्रकाश मिडान-तत्वनापिका दयानमतरा ग्यातपत्रा
 प्रमपहला प्रम पगा ता तथा परनापरागा ज्ञानि कृतिपा है। इनर बरन्द का
 एक उदाहरण नाम प्रस्तुत किया जा रहा है

दृष्टिया दूत बन जिनार ।

श्री जनन तना म पत्रा भाग मन भना दर तर डार ॥

निमि कत्र वत चन्द्रिना प्रग । अवध बिद्या उजियार ।

श्री वानप्रस्था रमिकन्द्र रात का आवन प्राण अघार ॥ ६

अनि अत्रा माधुग पगा विधि नागरि क तन ।

जदि दयत न तयाहि तान क अमन नन मन ॥

ति। अविता रू रहन एतर नदि तगा मुग्यवत ।

धय अननी गना मां मन में तहि भावत ॥

अनि मुक्तार श्याम बगीत बहि अविमल न मर ।

दूत नागरी पत्रा पत्रा कत्रक सम कयत ॥

तन गुग्घ मो भक्त परतु हैं अति उर राग ।
 देखत सिय पर जव जनिन प अनित उपाग ॥
 तव हसि कवर मुजान पानि निज निरति उपाग ।
 भूपन अत्रक मवारि मां छिन छिन उपजावत ॥

रूपलाल—

वानकृष्णजी के शिष्य रूपवान ध जिनका सम्प्रणय के अंतगत रूपमयी नाम प्रसिद्ध है। इनकी एक कविता का उदाहरण इस प्रकार है

पागुन भागन करि उच्यो अनित वडया अनुराग ।
 अब हिनिमिति हम यनिबो नी नी नम पाग ॥
 नानन नानन की जरी भरी रग पिचकारि ।
 जसि छाडी छवि सा विसि सिय उर जार निहारि ॥
 दुरि बिमना तव दीरि के पिय सिर कसरि तौरि ।
 हा हा हारा क उठी हिन मिनि तवन विसोरि ॥

बालानंद—

स्वामी बालानंद का जन्म मधन १७१० म हुआ था। यह राजपूताना के निवासी थे। बचपन से ही यह ससार से विमुख हो गये थे। इन्होंने महात्मा विरजा नंद को अपना गुरु मानकर उन्हें म दी ता नी थी। रामभक्ति में इन्होंने राम के वान रूप की उपासना का समयन किया है। इनकी एक रचना उदाहरणार्थ इस प्रकार है

मुमिरी मन राम सच्चिदानंद ।
 जा मुमिर त्रयताप हरतु है परत न जम के फल ॥
 ऋषिमख राखि निशाचर मार अभय किये मुनि के द ॥
 पद रज परसि सिना भई मुदरी धाय उदार गय द ॥
 जनक स्वयंवर पावन की है तां या धनुष प्रचण्ड ॥
 सिया जी विवाहि अवध हरि जाय घर घर भया है अनंद ॥
 मात कौशल्या करत जारती निरखन मुख के वंद ॥
 जयजयकार भयो गुरपुर म गावत बालानंद ॥

कृपानिवास—

कृपानिवास जी दक्षिण भारत के निवासी थे। इनके पिता का नाम सीतानिवास तथा माता का नाम गणशीता था। इनका बचपन का नाम त्रीनिवास था। बाल्यावस्था में ही इन्होंने जानद्विगाम जी से दी ता नी थी। मधुराचार्य के प्रिय शिष्य त्रियाचार्य से भी इनका भेंट हुआ थी। दामांतर प्रपन्न रामानुज से भी इनका सत्संग हुआ बताया जाता है। इनके प्रथम गुरु महिमा प्रायनाशनन तगनपचीसी युगनमाधुरी प्रकाश भावनाशनन जानकीसहस्रनाम रामसहस्रनाम अनंतचिनामणि

'ममय प्रवृत्त नियमुख गृह्यापास्य, वर्षो मव पत्नवता म्पग्मासृत्निधु
'रससारप्रथ र्हस्य पत्नवता सिद्धान पत्नवता उन्नतना अष्टक तथा अनुमत
पञ्चीसा आत्ति कृत्तिया बत्ताया जानी है । अन काव्य वा मक् उपाहरण इस प्रकार है
मुनधि दिया मात्री सिया का मुसकानि ।

नन धिल मुख बिकम मनाहर रसत्रमुत्ति धरि जात ॥

अधरनसन छबिहस्र असन का रमिन राम क अत्य प्रात ।

कृपानिवास सहज बस कर्ना प्यारा की यह वान ॥

प्राणवद चौहान—

प्राणवद चौहान लिखी क निवासि य । अहान रामायण महानाटक शापक
प्रसिद्ध प्रथ की रचना की था । इसका रचना काय सन १२१ है । यह नाटक दाह
और चौपाइयों में लिखा गया है । इसमें नयक न म पूरा राम क्या प्रस्तुत की है । यह
हिन्दी का सबसे प्रथम काव्यनाटक माना जाता है । इसकी रचना का मक् उपाहरण नाच
प्रस्तुत किया जा रहा है

कातिक मास पछ उजियाग । ताथ पुत्र साम कर वारा ॥

तात्ति क्या कीह अनुमाना । गाह मृतम लितापति पाना ॥

मवत सोरह स सत साग । पुत्र प्रगास पाय नय नाग ॥

जा सारद माता कइ दामा । बरनी आदि पुरय का माया ॥

छत्रसाल—

महाराज छत्रमान पन्ना क राजा म्पत्रराज क पुत्र थ । इनका जन्म मद्राज
१३०६ म हुआ था । इनकी लिखा हुई अनक कृत्तिया प्रसिद्ध है जिनमें रामायणार क
कवित्त रामध्वजाष्टक हनुमान पंचम गायत्री पञ्चमी कृष्णवत्सा क
प महााराज छत्रमान हिन अजरजनप न प्रन अष्टमी तथा राजनतिक ग्राह
समूह प्रमुख हैं । य प्रथ 'छत्रमान प्रवावता म न्तिरयित हए है । इनक काव्य का
एक उपाहरण इस प्रकार है

सातानाप सनुनाम सत्यनाप मभताथ

नाथ नाथ दव नाथ दीन नाथ जगति ।

रपुत्र जपुत्र जछत्रव दवत्रव

वित्रवत्रव वागुत्रव ध्यामत्रव त्रवरति ॥

रनबार रपबीर जपुबीर वत्रवार

बनबीर बीरबीर वत्रवार चात्रमति ।

रात्रपति रत्रपति, रमावति छत्रावति

राघावति रघावति रगावति रात्रवति ॥

रामप्रिया शरण प्रमथला—

श्री रामप्रिया शरण प्रमथला सिद्धिदा कृ निवाता थ । अनक एक महत्वा नामक

रत थ। एते त्रिये एण एक प्रथम वा य शीमायन वा उलय मिनता है त्रिगार
रचनाकाय सन १७०३ है। इन वाय का एक उलहरण एम प्रकार है
छत्रीनी जनक त्रिन री जोरी।

वरि त्रिगार त्रिपति नयात भनि त्रिगारन तण त ग।
एम एम चरति जरति पुति दोगति गणि प्रतिप्रिय मारी ॥
पुनि तेहि ते वतत्राति वात मटु मरि त्रिमि त ए पारी।
हसति हसावति जति मन भावति त्रि छवि गिध हनारी ॥
यहि विधि बानविना करति सब मति परम्पर तन तारी।
प्रियाशरण अलत्रिन की छवि त्रिय शनरनी तारी ॥

जानकीरसिक शरण रसमासा —

श्री जानकीरसिक शरण अयाध्या व निवासा व। ममाता त अतिरिक्त व
रसमानिनि तथा रसमालिका के नाम से भी विख्यात व। इनके त्रिय एण एक प्रथम वा
उल्लेख मिनता है त्रिमिका शीपक जवधीसागर है। इनका रचना सन १३० म २^६
थी। इन वा य का एक उलहरण एम प्रकार है

सिय राम रूप अपार पूरन अवति सागर यह महा।
रत माम जाम तरण दम्पति वेति भुय्य सम्पति जटा ॥
रतखानि रसिक नरेस जानवि जानराय तृपानरी।
सिय स्वामिना अनुगामिनी रसमानिका पता कनी ॥

रामप्रपन्न मधुराचाय —

श्रीरामप्रपन्न मधुराचाय मधुरप्रिया व नाम से भी विख्यात है। यह आचाय
की ह स्वामी की शिष्यपरम्परा म हए व। इनके त्रिय एण चार मम्भृतप्रथी वा
उल्लेख मिलता है जो भगवतगुण दपण माधुयकति वा शिष्वनी बाल्मीकि रामायण
की टीका तथा रामतत्वप्रकाश है। इनके वाय का एक उलहरण एम प्रकार है

सखि मैं आजु गई सिय कुज।
दखि नपति विसार दौर घरि पिचना पुज ॥
सब कही मैं सुनहु जानन जान कोसाचन।
फाग मिस का वरन चोरी चनहु हमरे तग ॥
मधुर प्रीतम आज तुमकों जीनिहो रतिरग ॥

हर्याचाय हरिसहचरा —

श्री रामप्रपन्न मधुराचाय की शिष्य परम्परा म ह्याचाय हरिमहचरी तथा
हरिदास व नाम उल्लेखनीय हैं। ह्याचाय व नामा म हरिसहचरा के अतिरिक्त जन
हरिदा हरि तथा हरिकवि भी प्रसिद्ध है। इनके त्रिय एण प्रथम म अय्याम तथा
जानकी गात प्रमुख हैं। स्वामी हरिदास अयाध्या व निवासा रामप्रसा व प्रशिष्य
हनुमानास व शिष्य थ। नव सिय एण त्रया म रामनापनीयापनिपद तथा राम

स्तवगजभाष्य के नाम उल्लेखनीय हैं। ह्याचाय तथा हरिदास के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

माई री राम रया सरजू तट माम खवन बट छाहा ।
 नाचत राम गीपाव तुव म र सीता गय्यानी ॥
 रागिनि मै अनुराग जना छिनी बन प्रमाण के माहा ।
 हरि सहचरि मुय चहन पहन म नाच ज मुधि नाहा ॥ (हयाचाय)

राम भवगुणापन नय गम्य गति गुम्न ।
 द्विभुज धनुषापत जानकारमिन्न भज ॥
 जानकीम जगदागाना ब्रह्माद्रात्सिखिताम ।
 चिदपा द्विभुजा न्यामा भजह रामवतनभाम ॥ (हरिदास)

मूरकिशार—

आचाय की ह स्वाामी त पीनगिष्य मूरकिशार का उल्लेख भी यहाँ किया जा सकता है जो जयपुर के निवासा थे। इनका रचना काल १७ वनाया जाता है। इनका काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

निवही तित्त ताक म मूर किशार विज रन म निमिक कुन का ।
 जिस जा रह्यो सन दीप लुवान क्या कमनीम रमातन का ।
 मिथिना वसि राम सहाय चहे ता उपासक कीन बहे भवना ।
 जिनर कुन बीच गपूत नहा कर आम दमादन व वन की ॥

प्रयागदास—

इसी परम्परा में स्वाामी मूरकिशोर के गिष्य मामा प्रयागदास का भी उल्लेख किया जा सकता है। इनका काम में इनका नाम का छाप परागदास व नाम स मितनी है। इनका रचना काल काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

परागदास ता पीप हाने राधा हान भुतवार ।
 आठ पहर छानी पर रत व दससय त पुावार ॥
 धुनि धुनि कमवा बटे महमवा पार न पाव गववा ।
 परागदास पहनवा व वारन रघवा हाग वषवा ॥

हरपराम—

श्री हारपराम पत्राव व निवासा थे। इनका पिता का नाम कृष्णदास था। इनका जन्म नामक पीप कृति की रचना का था जिसका समय सन १६२५ है। इनका प्रतिरिक्त मुत्तारगिष्ठ तथा दक्षमणिसमन भीषक म इनकी दो अन्य रचनाएँ भी उपलब्ध हैं। इनका काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

कौ हन काली श्री रपवार व मुधि है गिय की छिति माही ।
 ह प्रम नर कनक बिना मुवन १७ रावत बाग की टाही ॥

जीवित है ? वह बई का ताय गया त मरी तमा वि गरी ।

प्राण बग पत्तवत्र म जम आया है पर पावन गा । ॥

रामसखे —

स्वामी रामसखे का समय १८५० शताब्दी का प्रारम्भिक काल माना जाता है । यह आचार्य बशिष्ठजीव त निम्न व । स्वामी निम्न म निम्ननिधि स्वामिनि आनि थ । रामसखे का की रची हुई तृतिया म तमूषण पत्तवत्री स्वप्नममनिमिद्य नूय गधवमिजन दाहावत्री नत्यराधवमिजन कतिनारी रामसखेति पानतीना बानी मगनशनन तथा राममाना आनि हैं । उनकी वश तम्परा म आग पनकर स्वामी अवधशरण भी हण व जिनकी पिता का नाम रामपान था । उन्होंने स्वामी तदमणाचार्य से दीया गी था । उन्होंने प्रसिद्ध पायशास्त्री निम्नकर भद्र का शास्त्राय म पराजित किया था । महाराज रघुराज सिंह १० रामाधीन १० उमापति आनि भी तनक मपन म रह थ । यह अपने सम्प्रदाय म तान साह्य व ताम म भी प्रख्यात थ । उनके निम्न हण थ था म सत्यसिधचन्द्रोप्य प्रसिद्ध है । अवधशरण व का य का एक उदाहरण नाच प्रस्तुत किया जा रहा है

आपु की हात गुना सजनी मन्थ प्रगट यक कौतुक भारी ।

जैवन नारि बरानि सत्र रघु नाय तन्त्रो मियिनस जगरी ॥

श्री रघुवीर का दयि सरूप भई मति विभ्रम गावनि हारी ।

भूनि गइ अवधस को नाम तो देन तगी मियिनस को गारी ॥ (रामसखे)

यथा एका हमो निखितव तयाचारणना

स्त बहौ तापान परिणमति निम्नयामसदशम ।

तयवक सत्य विविधरसरूप परिणतम

प्रमाभ्यन्ता ह्यथा यपन्निगति नमित्तवतया ॥ (अवधशरण)

प्रमसखी—

स्वामी प्रमसखी न चित्रकूट व महामा रामदास गूदर से दीया गी थी । इनके निम्न ए प्रथम म हानी कविताप्रवध तथा श्री सीताराम नखशिख आनि हैं । उनके का य का एक उदाहरण इस प्रकार है

वामन तो न उर वर ते कर लखनी कपित कौन उठाव ॥

तानन त्रिष्टि परी जब ते प्रिय नाम गुने जमुवा जरि नाव ॥

प्रमसखा मध की मखिया मन जाय फस्या अब हाय न आव ॥

मूर्त जी रघुनन्दन की निम्नने न बन लखते बनि आव ॥

सियासखी—

स्वामी गानानन्दम सम्प्रदाय म सियासखी व नाम से विख्यात थ । य पायूनास जी व शि य र । सीताराम मन्त्रि की गद्दी अपने अनुज चन्द्रभती को देकर य चित्रकूट म रहन लग व । तनर अनुज चन्द्रभती का नाम बलदेव दास था जिनकी एक रचना

शृंगाररस रहस्य तथा अष्टयामवर्तिता की रचना की थी। स्वामी जनराराज विद्यारी शरण रसिक अनी के नाम से भी विख्यात है। इन्होंने जन्म सन १८१८ ई. में गणम तथा मृत्यु १८४८ में हुई थी। यह नाट्यावाङ्मय विद्यार्थी थे। बचपन में ही यह अयोध्या आकर रहने लगे थे और राजराजपट्टण की इलाक़ में अपना मुहूर्त बना लिया था। आगे चलकर यह रामचरणनाम के लिख्य हुए थे। तभी यह रसिकअनी के नाम से विख्यात हुए थे। इनके निम्न हुए ग्रन्थों में सिद्धांतमुक्तावली ज्ञानरत्नगण आत्मोत्तररहस्यदीपिका गुनसीतासचरित विनयसाररत्ना सिद्धान्तनीलाभा वाग्दृष्टी चरितशृंगार दीपक कवितावली ज्ञानकी करण भरण धासीता राम रहस्यरगणी आत्मसम्बधदपण हानिवाविनोद अनात्मर गुप्तदीपिका प्रतिदीपिका श्रीरामरासदीपिका दोहावली रघुवररक्षणभरण मिथिनाविनास 'अष्टयामप्रबंध' वर्षोत्सव पत्रावली, त्रिजामाचक श्रीसीताराम सिद्धांत तरगणी तथा अमर रामायण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कविता के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सब तजि अबधपुरी रहिए ।

राम रूप हिय राम नाम मुख कर सवा गहिए ।

मंजन पान सदा सरयू की समदुष मुख सहिए ॥

जहू तहू रामचरित मुनिए नित सहज मुखहि रहिए ।

श्री रामचरण रघुवीर वृपात कछ फन नहि कहिय ॥ (विदुकाचाय)

जय थी चन्द्रकला अत्रवती ।

अति मुनुमारि रूप गुन आगरि नागरि गव गह्वरी ।

निमित्त न प्रगटि सग सिय प्यारी प्रियकारी रसनी ।

चन्द्रप्रभा जी के मुहूर्त कल्पतरु उतही लता नवनी ॥

कचन बन कमला प्रमोद बन नीला नहरी मनी ।

मोहन जल बीन स्वर देरति प्रतिमा चित्त निखेनी ॥

युगन प्रिया अनुराग सदा सम्बध राग की नीली ॥ (युगलप्रिया)

राघव रगभरी जखिया अबनोकनि रगहि मजनु बारी ।

रगभरी मुसकानि मनोहर पान बिरी मुख रग र पोरी ॥

रग भरे मुख बना कल गज चान चन रग राचि रह्योरी ।

अगहि के रग भीजि रही हम नाहन जारत हा रगरोरी ॥ (रसिकअली)

शिवलाल पाठक—

स्वामी शिवलाल पाठक गोरखपुर जिनके निवासी थे। इनका जन्म सन १७५६ ई. में हुआ था। इनके पिता देवीदत्त पाठक और माता सान्धी देवी थी। इन्होंने शिवनोचन शास्त्री से शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी रामप्रसाद से भाई होने के कारण ज्ञानाजन किया था। इनकी रचनाओं में मानसमयक मानसजभिम्रायदीपक तथा बाल्मीकि

'अष्टयामपदावली' नाम से उल्लिखित की जाती है। सिवासजी जी के पुत्र रामानुज दास रूपसरस के नाम से विख्यात थे। इनके पिप्य चत्वारः क सुवराज नातारामशरण क नाम से प्रसिद्ध हुए थे। रूपसरसजी की कृतियां में साताराम रहस्यचक्रिका रसमञ्जरा गुणप्रतापजाता तथा श्रीगुणजयामहात्म्य आदि हैं। सिवासजी बचरवशात् तथा रामानुजदास के वाक्य का एक एक उदाहरण नाच प्रस्तुत किया जा रहा है

सिया बाद जु मुनिया भरज हमारा ।
 जोरन क ता जोर भरासा म्हार आस तिहारी ॥
 करनी की तुम और न लखा अपना बिरल संहारी ।
 एसा होय नहा या जग म नाग टग न तारी ॥
 रगमहन म जावन दीजा मुना पिवा अबध बिहारी ।
 सिवासखी क सरवस तुम हा जोर नग नहि सारी ॥ (सियामखा)

तखारी मिथिला मा नरा ।
 माघव मुक्लपथ पूरण तिथि वासर चन्द्रधरा ।
 चित्रा नखत लगन घनि घनि बह धय सा ध य परी ॥
 राना चन्द्रकाति नप अरिजित मुटुत की प्रति फरा ।
 ज मा चाणीवा ज जिनकी चन्द्रभता अनुवरा ॥ (चन्द्रभती)
 रतन जडित पिजरन म बानत छग न मधुरा बानी ।
 उट्टु नाच जागट्टु सियबलन नागर बर मुट्टाना ॥
 बाटि जनत स्या जुरि जाई दान हिन अट्टाना ।
 रूप सरस मुख लखा बाहूनाहि ता जावन हाना ॥ (रूपसरस)

रामप्रसाद—

स्वामी रामप्रसाद बिष्टुनाबाय क नाम से विगत हैं। इनके गुण आचार बसावन थे। भाग चत्वर न हान महात्मा उधारागम न गीता तथा 'नर पुत्र' का नाम रामगुनाम तथा पुत्री का नाम रामरबरा था। इनका रचनाशाला में गितावली तथा गताशासननिघण्टु उल्लिखित का जाता है। इनका पिप्य पम्परा में महात्मा मनिराम भी लगे थे। कहा जाता है कि यह स्वामी रामचरन नाच नम्परा में भी जाय थे जो रघुनाथ प्रसाद के पिप्य थे। रामचरनात् का कृतियां में जमनप्रतापनामिका रजमलिकरी रामगणना सिधारामगुणदश मयाविधि, छानन रामायण, जयमान सप्रह बरधविहू रचितावता, लखनवाडिक्र जे वास बिस्वागत' पराधत्तक नामांतर उपासनावत बिरसनात गीत अष्टनाम मयाविधि कवितावली का-अष्टनाम तूमन कोरन दत्तय राम परिमानस का टारा तथा रामनवर नशाया है है। इनके पिप्या में आराधना सुमरिना जनसारा रचनातीरता रचितास जोर हरिनाथ क नाम से चयनाद है। आचारामका घबलनास क पुत्र थे। इहान रचितिका नस्तमान पावस,

शृंगाररस रहस्य तथा अष्टयामवर्तिन की रचना की थी। स्वामी जनरत्न सिपाही शरण रसिक अर्थात् नाम भी विख्यात है। इत्यादि नामों का १-१८८ तक मंगल तथा मृत्यु १८४८ में हुई थी। यह काठियावाड़ का निवासी था। बचपन में ही वे अयोध्या आकर रहने लगे थे और राजराजपट्टण का नाम से जाना जाता था। बाद में आगे चलकर यह रामचरणपट्टण के शिष्य हुए गये थे। अभी यह रचित हुआ नाम से विख्यात हुए थे। इनके चित्र हुए थे। वे मिथिला तथा मुत्तावती का मन्तरणों आदि अन्तरहस्यदीपिका तुलसीदासचरित विरासतारत्निका सिद्धांतोत्तमा बाह्यखंडी चरितशृंगार दीपक कविता बनी जानकी शरण भरण श्रीमती राम रहस्यरगणी आत्मसम्बन्धदण्ड हासिकविद्या वदातमार मुभगीपिता चरितदीपिका श्रीरामरासदीपिका दोहावती रघुवरकरणभरण मियिताविनास 'अष्टयामप्रबंध' वर्षासव पत्तावती, जितासागर श्रीसीताराम सिद्धांत तरणणी तथा अमर रामायण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों के काव्य का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सब तजि अबधपुरी रहिए।

राम रूप हिय राम नाम मुख कर सब गहिए।

मञ्जन पान सदा सरयू की समदुख मुख सहिए ॥

जह तह रामचरित मुनिए नित सहज मुपहि रहिए।

श्री रामचरण रघुवीर कृपाते कछ फन नहि चाहिये ॥ (विदुकाचाप)

जय श्री चन्द्रकला अवनवी।

जति मुकमारि रूप गुन जागरि नागरि गव गह्वेनी।

निमि क न प्रगटि सग सिय प्यारी प्रियकारी रसनी।

चन्द्रप्रभा जी के मुदत कल्पतह उलही गता नवनी ॥

कचन बन कमला प्रमाद बन सीता लहरी मनी।

माहन जल बीन स्वर टरति प्रतिमा चित्त निधनी ॥

मुगल प्रिया अनुराग सदा सम्बध राग की रानी ॥ (धुगलप्रिया)

राघव रगभरी जखिया अवनीकनि रगहि म गनु धारी।

रगभरी मुसकानि मनोहर पान बिरी मुख रग रपारी ॥

रग भरे मुख धना बढ गज धाल चन रग राधि रह्यारी।

जगहि क रग भीजि रही हम नाहक गस्त हो रगरोरी ॥ (रसिकअलो)

शिवलाल पाठक—

स्वामी शिवलाल पाठक गोरखपुर जिन के निवासी थे। इनका जन्म सन १७५६ में हुआ था। इनके पिता देवीदत्त पाठक और माता सान्धी देवी थी। इन्होंने शिवनोचन शास्त्री से शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी रामप्रसाद से भी इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। इनकी रचनाओं में मानसमयक मानसअभिप्रायदीपक तथा बाल्मीकि

रामायण का भावप्रकाश टाका जादि है। इनकी रचना का एक उदाहरण इस प्रकार है

श्रासीवारम रसिक जह जसिप भक्त रसरत्न ।
 रचा सत्ताय विचारिक तुलसा रवि कन राज ॥
 पाठि विराजत जाजु रगि था सरजू क पार ।
 पाठक था शिवनाथ उर तसन उपासन हार ॥
 धर अरर अ र रहित जानि निरार पार ।
 पार निरार बठि गि जनक नना उर धार ॥

कथवदास—

जाचाम काव्यास का जन्म क्रि. श. १५०० म. विभिन्न विद्वानों म मतभेद है। उनका जन्म सन् १५०० सन् १५०४ सन् १५१२ तथा सन् १५१८ आदि माना जाता है। इनका मन्मथु सन् १५८० म हुई थी। काव्यास का आरंभ क मन्मथु सन् १५८० म हुई थी। उनका पिता का नाम काशीनाथ था जो मन्मथु सन् १५८० म राजपुराहित था। राम-नाथ्य का परम्परा म काव्यास का पिता था रामचन्द्रिका गोपक प्रबन्धकाव्य विषय महत्व रखता है। रामचन्द्रिका म काव्यास न राम काव्य का पूर्ववर्ती कथा-परम्परा का पृष्ठभूमि म प्रस्तुत किया है। इस शक्ति उ इसम जो विविष्ट प्रमा है उन पर मन्मथु क तथा पूर्ववर्ती हिन्दा साहित्य क विविष्ट मन्मथु का प्रभाव स्पष्टन था जा सकता है। रामचन्द्रिका प्रस्तुत राम कथा पूर्ववर्ती प्रभाव म युक्त हात हुए भा पयात्त मौनिकता निष्पन्न प्रतीत जाता है। इसका मुक्त कारण यह है कि रामचन्द्रिका म कवि न जिन पात्रों का चरित्र याचना था वह अप मन्मथु मानवीय गुण म युक्त है। रामचन्द्रिका म काव्यास न प्रबन्धकाव्य क तत्वा का निवाह करत हुए जानम्बन उद्धारन अनन्त मानवात्त जाति स्था म प्रवृत्ति का चित्रण किया है। रामचन्द्रिका म कवि न यह स्पष्टन गतत किया है कि इसका उद्देश्य राम का चरित्र क प्रकाश की छवि दिखाना है। उक्त गमचन्द्रिका अपना इष्ट मानकर उनका गुणगान किया है। काव्य न यद्यपि राम तथा प्रायः मन्मथु रूप म ही प्रस्तुत की है परन्तु उक्त मन्मथुता का विषय विचार नही रखा है। अन्य प्रमा जो पूर्ववर्ती राम काव्य म विस्तार से वर्णित है काव्य न यद्यपि ओपचारिक रूप म ही प्रस्तुत किया है। एक अनन्त गाम्भीर्य हान क कारण काव्य न मन्मथु म महाकाव्यत्व क निर्वाह का जोर अधिक ध्यान दिया है कथा का मन्मथुता क निवाह का जोर उतना नही। काव्य-सौष्टव्य की दृष्टि म रामचन्द्रिका का महत्व निर्दिष्ट है। रामचन्द्रिका क पूर्वाह जोर उतना नही मन्मथुता को सौष्टव्य मन्मथुता का प्राणिक रूप म मन्मथुता किय गया है। परन्तु राम साहित्य पर भा रामचन्द्रिका का व्यापक प्रभाव पडा है। रामचन्द्रिका विविष्ट रामायण 'पूर्ववर्ती' विविष्ट रामचन्द्रिका, मन्मथु गाम्भीर्य निर्दिष्ट गाम्भीर्य रामचन्द्रिका विविष्ट

सीतायन रघुराजासह लिखित राम स्वयंवर रगिन्नात बिहारी लिखित रामरत्नायन जानकीप्रसाद लिखित रामनिवागरामायण, नवलसिंह लिखित राम चंद्रविनास रामचरित उपाध्याय लिखित रामचरित चित्तामणि बलदेवप्रसाद मिश्र लिखित कौशल विशोर आदि म राम तथा का निर्वाह मिलता है। कथाकाव्य का इस प्रकार काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

रहो चुप हूँ मुन कथा न बन जाहूँ ।

न देखि सन तिनक उर दाहूँ ।

गगी अब बाप तुम्हारेहि बाय ।

कर उनटी विधि क्या कहि जाय ।

जगस्त ऋषिराज जू बचन एउ भरी मुना ।

प्रशस्त सब नीति सूतन मुदग जी म मुना ।

मुनीर तरु छट मडित समझ शाना घर ।

तहा हूम निवास की विमन पणगाना कर ।

तडाग नीरहीन त सनीर हात कशादास

पटरीक पड नीर मडनीन मनुहा

तमान वल्गरी समत सूखि सूखि न रह

त बाग फूनि फूनि न समून सूत छड ही ।

चित्त चकारनी चवार मार मारनी समत

हस हसिनी मुवादि सारिका सब पन ।

जही जहा विराम तत राम जू तही तहा

जनन भाति क जनन भोग भाग सो बन ।

रामगुलाम द्विवेदी—

श्री रामगुलाम द्विवेदी मिर्जापुर का निवासी थे। इनके गुरु रामप्रसाद जी थे।

गुलाम कवित्त प्रबंध रामगीतावली लिखित नामावली विनयनवपचक दोहावली

रामायण हनुमानाष्टक रामकृष्ण सप्तक श्रीकृष्णपचरत्नपचक श्रीरामाष्टक

रामाविनय रामस्तवराज तथा बरवा आदि प्रथा की रचना की थी। इनके काव्य

का एक उदाहरण इस प्रकार है

देखि हरि हारी रग रस ।

प्रम मुखदेखि सिय सखिन जय मह तखन ए बंध धस ।

झमकि गगी लनना गन उतत जनज मुहारे छस ॥

नप विदह पुरत ज जाई तिन बहु भाति हस ।

ज जग वसन सकल ग बार अजन नन धस ।

रामगुनाम जानकी वर क नित्र जस अवध लस ॥

विश्वनाथ सिंह जू देव—

महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव तीवा नरा जयसिंह क पुत्र थे । इन्होंने महात्मा प्रियानाथ से दीक्षा ली थी । उनके निम्न हुए अनेक ग्रंथ हैं जिनमें से प्रमुख 'गंगातीर टीका' 'तत्त्वमस्ययत्रिदात्र भाष्य' 'राधावल्लभाभाष्य' 'सर्वसिद्धान्त रामाहस्य' 'टीका राममन्त्रानिणय टीका' 'मुमागन्तात्र टीका' 'वात्रक टीका' 'विनयपत्रिका' 'टीका वप्यक सिद्धान्त टीका' 'धनुर्विद्या' 'रामचंद्रिका' 'कवित्तक' 'रामचाराहि कवित्तक' 'रामचाराहि क' 'समीपतरुण' 'मुक्ति मुक्ति सप्तान' 'दातानिर्णय' 'व्यपार चंद्रिका' 'भागवत एकादश म्बध की टीका' 'मुमाग का चान्सा' 'दाता रामपरब्र व्यस्य प्रकाश' 'विश्वनाथ प्रकाश' 'आहि कप्रणयाम' 'धनगान्द्रविांतरवाका' 'परमधम निणय' 'शांतिगतक', 'विश्वनाथ चरित' 'ध्रुवाष्टक' 'नितिक' 'माया गतक' 'परम तत्व' 'उत्तमकाभ्य प्रकाश' 'गीतारघुनदनानिका' 'रामायण' 'गाथा' 'घनदन प्रमाणिक' 'सर्वसंग्रह' 'रामचंद्र जू की सवारा' 'मदनमाता' तथा 'जात' 'रामचंद्र नाटक' आदि हैं । इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

नीकी पचवटी महा चरि तनि पूना फव गमग ।

बली बनि नगी मुमुत्र निपग राम परा टणी ॥

ताप नास मटी अनन्द उषगी सुष्णगदधटा ॥

कल्पोनुच्य घटी जाइ यहि डटी ताहै कुग म्वनग ॥

महाराज विश्वनाथसिंह के पुत्र महाराज रघुराजसिंह भी काव्य रचना करते थे । राम भक्ति में इनकी अनन्य आस्था थी । अनेक राम काव्यकार उनके नाम से रहते थे जिनमें लक्ष्मणप्रसाद सेत कवि हनुमान प्रसाद बाला गानाचरण माधन नर किरार पुष्कर सिंह जगन्नाथ प्रसाद गोविन्द तथा प्रसाद काव्यय गावित्य प्रसाद अत्रबस साठाराम बामुख रसिक नागयण रसिक विद्यारा तथा रामचंद्र गान्द्रा आदि थे । रघुराज सिंह की प्रमुख रचनाओं में 'मुन्तरगतक' 'विनयपत्रिका' 'रसिनी' 'परिणय' 'आनन्दाम्बुनिधि' 'भक्तिविनाय' 'रहस्यत्राघ्यासे' 'रामरसिकावता' 'राम स्वयंवर' 'विनय प्रकाश' 'रामब्रह्मयाम' 'रामचंद्रिका' 'धन विनाय', 'रामरजन' 'समरगाठ' 'जगन्नाथ गतक' 'रघुराजविनाय' 'विनयनाय' 'नक्तनाय' 'गान्द्रक' 'चित्रकूटमहात्म्य' 'मृगयागतक' 'पदावता' 'रघुराजविनाय' 'रामनागवतन' 'राम्य भावत्रभाषा' 'गान्द्रक' 'गमुगतक' 'हनुमचरित्र' 'परमत्राय' 'मुधनरिता' 'रघुराजकावना' नाम आदि हैं । इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मन्धारा रण महल में १ ।

कसरि कीष बीष नर नारा टितित उमति र्वेग ॥

एक ओर रणवणी राज साज जभरण जग ।
 एक आर गुवतिन जो मडन नी ह चीण म ग ॥
 गाइ रहे ताउ नाचि रहे ताउ रर गनि गन ॥ ग ।
 सग्यु मई भारती धारा पाइ गुनाउ प्रमय ॥
 रह्यो न मुरति सम्हार सबन का गुग जाउ ॥ ग ॥
 श्री रघराज मनोरथ पूरण भय मरुत गुग भय ॥

प्रतापकु वरि बाई—

प्रतापकु वरि बाई गायन दास रघुनीत का पत्नी था । उनका पति माग्या ५ महाराजा मानसिंह व । वचपन म ही स्वामी पूर्णात्मा त उपासक म राम भक्ति का उपाय हुआ था । विधवा हान पर इ हान रामचन्द्र का हा अपना परम्य समन किया । इनकी लिखी हुई पुस्तका म रामचन्द्र म मा रामगुणमागर रघवर मनह नीता राममुजस पचीसी राम प्रम मुघमागर पत्रिया रघुनाथ जी व वचित्त नजनपद हर जस प्रताप विनय श्रीरामन द्र विजय हरजस गायन जाति है । इनक का य का एक उपाहरण इस प्रकार है

मणि जटित खभ सुन्दर वनार दहनी रची विदुम मुधार ।
 मातित पर मानिक नम ताउ चित्राभ मनो वन वनि जाउ ॥
 चउ दिना बिराजत त्रिविध बाग ता माहि रत्नपतर रत्न बाग ।
 ऊचा सिंहासन जति अनूप ता बीच बिराजत त्रस्य रूप ।

काण्डजिह्वास्वामी देव —

काण्डजिह्वास्वामी 'देव काशी नरेश ईश्वरी प्रमान नारायण सिंह के गुरु थे । इ हान अनक प्रथा की रचना की जिनम रामायण परिचया विनयामन पतावती रामनगन वराम्यप्रणीप अयोधया विदु अश्विनीकुमार विदु गया विदु 'जानकी विदु पचत्रोशमहिमा मबरा विदु रामरग याम रग याममुघा उपासीसत स्तार जाति है । इनके का य का एक उपाहरण इस प्रकार है

सियजू की टहन म नित रहिहौ ।
 सतगुर जस कछ राह बताई बाही रूनि स ये जि ॥
 काम प्राध की मीत बनहा काहून कप्रन कछ चहिहौ ।
 बाद विबाद नही काहूँ से सब मत एक कर गहिहौ ॥
 सियपद म या चचन मन को प्रम रजु स धरि नहिहौ ।
 दण्ड दवता नीसिया जू की पण रज स तन म न ह ॥

उपापति त्रिपाठी कोविद —

श्री उपापति त्रिपाठी कावित्री सीतापुर व निवासी व । उनके पिता का नम शररपति त्रिपाठी था । उनके गुरुओं म श्रीकृष्णराम शप धनरतरि भट्ट तथा भरवदत्त मित्र थ । नपान नरेण मुरद्व विद्वमशाह न इनका सम्मान किया था । उचनऊ म राजा

ब्रह्मावर सिंह रीवा म महाराज विश्वनाथ सिंह तथा ज्योत्या क राजा ज्ञान सिंह ने भी इन्हें सम्मानित किया था। कहा जाता है कि इन्होंने काशी में महाशिव मंत्र में ब्रह्म विद्या प्राप्त की थी। इनके लिखे हुए ग्रंथों में 'यात्ररगिणी महातरवप्रकाश, कविलमूलसारासार पत्रजनिमूर्त्रचित्ति रत्नाकरवचनिका वनप्रकाश भाष्यटिप्पण', शत्रुदुधराधर' 'वाक्ष्यदुधराधर एवधतीय बद्धस्तुतिटीका सख्यसरोज भास्कर गीतगोविंद उमापतिशंकरद्वय मुधामदाविनी स्तात्र सरयू अष्टक सीताशतनाम वणमाला रामजानकी स्तात्र रम्यपटावली शाहावली रत्नावली श्रीधरशतक रूपाष्टक दशनशतक कानिकाष्टक जयाध्या विद्यनिका कर्णा वल्पलता रघुनाथस्तोत्र हनुमदष्टक सत्रोत्तर अष्टक राममंत्र ज्ञानवीस्तोत्र, रघुनन्दनपाडशक दूसनुमत कुडलिया, विचित्र रामायण राममगीत श्रुतुवणन हातिवा विसजन अरुमाता भाष्य दशनशतक त्रिविजयशतक राममहर्षनाम आदि हैं। इनकी लिखी हुई रचनेनाओं में से एक उदाहरण स प्रकार है

बनरा रे जनरपुर गला ।

निज सोभा रन सरम नसा द सब मनवारा गला ॥

नित्त निमित्त सत्र सब छूट का जाना का मना ।

कावि पाति मीन गति तथियन एसो अजव छत्रो ॥

युगलान वधारण हेमलता —

स्वामी युगलानवधारण हमरना का जन्म मने १८१८ ई० में हुआ था। वह पटना जिन क निवासी थे। इन्होंने कृष्ण नामक गुरु से गीता प्राप्त की थी। भक्तमानि मत की परंपरा में यह युगलानप्रिया जान गिष्य बन य। इनके लिखे हुए ग्रंथों में एक बड़ी सद्व्यास उपनयन हात है जिनमें 'सीताराम स्नहमांगर' रचकर गणनाथ मसुरमजु माता सीताराम नाम प्रताप प्रकाश' प्रमपरत्वप्रभा शाहावली विनय विहार प्रमप्रकाश नाम प्रम प्रवर्द्धनी मरग जसई, भक्त नाभावली प्रममग मुनिप्रकाशिका हृदयशुभासिना अम्यासप्रकाश उपनयनानिगनक उषरउत्तठा विलास मजमाशोनामा का विहार मनवाधरनक विरनिगतक वणबाध बीसायत्र, परमणी यत्र चीनीजा यत्र हणप्रकाश अनन्यप्रमो नवल नाम चितामनि मनवचनविनासिका वाउनग रूपरहस्य पटावली रूपरहस्यानुभव मनमुग्धप्रकाशिका अबधवाधपरत्व रामनामपरत्वपटावली सीतारामउत्सव प्रकाशिका अबध विहार' मुयसीमा शाहावली उषरउत्तययत्रिका नाममय एका परकाय योगसिधुनरग युगल वण विलास प्रबाध विषाशाहावली शिष्यरुपात प्रकाशिका प्रमोशयिका शाहावली वणविहारमा' चीनीसी उत्तरचरित्रप्रनानरी अम्यासप्रकाश जानकी स्नहमांगरतक', नामपरत्ववागिधा वण विहार शाहा मतविनयपत्रक विरनिगतक विष्णुस्तुतबोधवता तत्वउपदेशत्रय बाहुरासि सातबार मणिभाज अथपत्रक' मननमाहृत पाग्योद्वहकउद्वहकीवारमनना सिवा

शिव अमृत्यु पुत्रीक्षण गवाण्ड अण्णवापवापिनिजय पापुषु म्नात्र पूना पाग्मी
 हुरुष वचन हि नी पय ती वतीमी पा यत्र अ याम वरहृग अनय
 प्रमोद प्रीति पत्रामिता नाम त्रिता वसाचन वरम राम उररत्न मुष्ट महिमा
 मत्त वचनावती पाग्म माय विना विनाम जाति मुष्य है । इनो शब्ध का एक
 उदाहरण इस प्रकार है

वचन पने विवर्षी मोरो तारी प्रीति ।
 जा माग्मन हिय वीर प्रान त्रिय तहि पय वरत गभीत ।
 मत्ता मनीन मन मरगह वतु तासन नह प्रतीन ।
 पन नर कल्या न मानत मम मन रघत रीत विपमान ।
 युगन जन य क्षण तापित मन कीजिय मपति गुमीन ॥

रामय राम शरण प्रमनिधि —

स्वामी युगनाथशरण व प्रणिप्य रामवत्तभागरण प्रमनिधि का ज म सन
 १८५८ म हुआ था । यह कुन्नेवत्र व रहत चान थ । इनर रिता रामनाथ जोर माना
 रमावती थी । इनक घर का नाम धनुषधारी था । इहान रामवचनपास जी न दी ता
 नी थी । महात्मा नरहरिदास मणिराम विद्यादाम तथा कल्याणदाम व सम्पन म भी
 यह आय थ । इनक त्रिष हए थ थी म यहकाशनख ड की टीका शिवसहिता की
 टाका सग्यातिबुचनपाय की टीका जानरीस्तवराज की टीका मुदरमणि सदन
 की टाका रामनवरत्न की टाका ध्यानमजरी की टाका रहस्यत्रय की टीका
 तत्वत्रय की टाका शि गपत्री की टीका रामपटन त्री टीका विनयकुमुमाजलि की
 टीका मुत्तमा वारह खनी की टीका रामस्तवराज के श्री हरिदास कृत भाष्य की
 टीका रमातापिनी उपनिषद व श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका मुख्य है । इनके
 काय का एक उदाहरण इस प्रकार है

सखिन सिगामनि चत्कल ताहि विनवी वर जार ।
 रसमय गुडि दह मोहि वरणी रहस हिनोर ।
 रस वडिनि टीका यह रसिनन स्वाद रसान ।
 हाय जात बिग्यात अनि में तो ही तव वान ।

वजनाथ पूषवशी—

श्री वजनाथ पूषवशी का ज म सन १८८ म हुआ था । यह बाराबकी जिन
 व निवासी थ । इनक पिता का नाम हीरानथ था । इ हीन जपन चाचा फकीरराम स
 दीया नी थी जिनर गुण मत्तात्मा उष्णवदाम थ । वजनाथ जी क थ थी म गीतावती
 की टीका कायवत्तम तविनावना की टीका रामचरितमानस की टीका 'राम
 सतगया भाव प्रकाशिका रामसिया सयापपदावती जादि है । इनक काय का एक
 उदाहरण इस प्रकार है

मोरी नद मुधि माधुरी पाणि तग मुञ्च २ चकोर मुनता ।
 सौम्य चित चित चारि लिखो मुधि वजनुनाथ रही मुनगता ॥
 ज्या मखिया मधु जाइ घम्या मन हाथ नहा मुण्ड किमि बना ।
 मूरति श्यामन गौर लला की ख्यान बन प बखान बनना ॥

जानकी प्रसाद 'रसिकविहारी —

स्वामी जानकी प्रसाद रसिकविहारा का जन्म मग १८४६ म हुआ था । वह
 पासी क निवासी थे । उनके पिता का नाम श्रीर रा । इनके गुरु महंत प्यारराम थ ।
 इनके लिखे हुए ग्रंथा म काव्य सुधाकर मानम प्रन , नामचोषी मुमति पचीमी
 आनन्दरति पावस विनाद, 'सुयण कथ्य ऋतुरम, नह मुन्री रम कोमुनी
 विपरीत विलास 'इशक जजायव वजरग बत्तामी विरह विवाकर प्रथ प्रभाकर
 कानून स्टाम्प कानून जाप्त अजी सतरज विना' नवन चरित पञ्चतु
 विनाग राग चत्रावली' मादमुकर कल्पतरु कवित्त दरिभावन रामरसायन
 कवित्त वणविलास आदि हैं । इनके काव्य का एर उपाहरण म प्रसार है

मुप मुन्दर बन प्रमा विराजहा ।

विमल सरजू तट अधि क छवि छाजहा ॥

भूमि सुवि सुकि पवन जावा तत हैं ।

वरन मन पनघार अति छवि तत है ॥

बनावास—

श्री बनावास का जन्म मग १८२१ म हुआ था । वह गाजा जिन क निवासी थ ।
 उनके पिता का नाम गुणत सिंह था । इनके महात्मा लक्ष्मणन स ग ता था ।
 इनकी मंत्र परमहंस सिपावल्तभारण स भा हुई थी । इनके लिखे हुए ग्रंथा म
 अजपत्रिका नामनिरूपण रामचर्याग मुसखरिपत्रन विवकमुक्तावता
 रामछा गरजपत्री माहिनी अण्ड अनुरागविवरन रामायण पद्या मात्रा
 मुक्तावती कबहरा अरिल कबहरा पूतता काह्य दुर्गतया कबहरा
 चौदाई खडन गड विाप विनाम आत्मसाध नाममुक्तावता अनुगण
 रत्नावती प्रह्लादगम विज्ञानमुक्तावता त वप्रकाय वान्त विज्ञानबाध
 वान्त, गतागत वान्त अनिर्वच्य वान्त स्वरूपान्त वान्त आरागत
 वान्त अनुभवानन्द वान्त वान्त वपचा प्रह्लादनगर प्रह्लादन तर निरूपण
 प्रह्लादन पानमुक्तावता प्रह्लादन विज्ञानउतासा प्रह्लादन मानि पुण्ड्रि प्रह्लादन
 परमात्मबाध प्रह्लादन परानक्ति परतु, गुडवाध वान्त इन्द्र वनगार स्वाराति
 सहस्रनाम, मकाराति सहस्रनाम बजरगाविरम उनवदबाध रामायण विम्वरण
 छन्दार साराणावता नाम परतु नाम परतु मग्रह वादन मुण्डमु छावता
 गुरमहात्म्य सतमुमिरता सनस्यावता समस्या विना 'मूलनप तासा विवतु
 मिरता अनुमन्त्र विवत राग वरात्रय तत्र प्रपचता न्हता पचता शोषता

पचदशो दाम दुनाई, अज पत्ता आति न ताम उतापरीय है। इत गाय्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

आसन है मतोप लग्न पर रामघाट न तार है।
 आप न आव ताको पाय करत नभी नहीं पार है ॥
 अब तो बाग़गाह नव नारी जुगनमाधरी तार है।
 बनादास सियराम भरास अवधपुरी न बाँस है ॥

शोतमणि—

स्वामी शोतमणि जी का जन्म मवन् १८७७ म हुआ था। वह कुमायूत्र न निवासी थे। उनके पिता का मुधीरपत जीर माना का मुभंग देवी ताम था। नरा घर का नाम हपपत था। पयहारीजी स इहान थी ॥ ती थी जिहान नरा नाम सीतारामनास रखा था। रामानन्द दास न भी इहान उपन्य ग्रहण किया था। इनके ग्रथा म कनकभवन महात्म्य सम्बध प्रकाश श्रीअवध प्रयाग पत्तावती सग्रह पावस बणन पचीकरण विनयपत्रिका रसभन दाहावती रत्नमजरी रामकर मुद्रिका स परम तोहा सधरन दण मियावरनाम मणिमाना नन्दारकल्प बदिक् कवितावती हारी पान भूमिना सियाकर मुद्रिका विनक गुच्छा आदि का उत्तप्य किया जाता है। इनके काय्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

सखा छवीन नाडिन छन फन छन छाय।
 छिप रहत हो सावर सीतमनी मन चाय ॥
 रहन सभारत बित्त को सभरन नाही भीत।
 शीतमनी मत दीजिये दरस दरन भर नीत ॥

सरयू दास—

महात्मा शीतमणि जी के शिष्य सरयूनास सुधामुखी थे। इनके लिखे हुए ग्रथा म पदावती सबसारोपदेश रसिववस्तुप्रकाश तथा भक्तिनामावली है। इनके काय्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

बदो श्री सियाराम पद सकल जान न धाम।
 भक्ति सहचरी पाइय जाहि कृपा अभिराम ॥
 बिपई को मन ना लग जिहि माना जग सार।
 जान भक्ति बराम्य युत सो नर करहि विचार ॥

सीतारामशरण रामरस रगमणि—

स्वामी सीतारामशरण रामरसरगमणि का जन्म सवत १९१६ म हुआ था। इनके पिता का नाम अवधविशार प्रसाद जीर माता का जगरामी देवी था। इन्होंने कामदेवमणि जी स दीक्षा ग्रहण की थी। इनके लिखे हुए ग्रथा म श्रीरामस्तवराज टीका श्रीसीताराम मानसीसबा श्री हनुमत यमन-सरमिणी सरयूतरग नहरी

श्रीसाताराम नाममञ्जरा श्रीरामप्रम पञ्चरत्न हाताविलास' श्रीसाताराम नखगिञ्ज
गाथा बारहवा जघ्वाय भाषा टाका शारामप्रम परिवषा श्रीरामायण बारहउडी
शारामनाका विनास श्रीरामप्रम वन्दना', ध्यानमञ्जरी टीका 'शारामानन्द या
वना शायुगवज्रम बघाई बारहमासा महाम्म शारामनीतासवाद श्रीसाताराम
प्रम पञ्चरत्ना, साताराम शोभावनी श्रीसाताराम पूजाविनास श्रीसाताराम
मुख विनास या जानकी भागवती शारामजानकी विनास भाषा रामरत्ना
स्तात्र श्रीसाताराम नाममञ्जरा, 'या नामा नो हृत्त भवतमाल की टीका' आदि प्रमुञ्ज
है। इनके नाम का एक उदाहरण इस प्रकार है

पावस म रसराति नुप्राति पग सजि रामसिवा सम तूले ।
पावस पान पवावत पावत हाकि बयारि परस्पर फूलें ॥
दाऊ पुहु सुपमा तदि क रसरा मनी अपनी मुधि मूलें ।
पाव क पावन नून नया लसि बाव बिनाचन तावन झूलें ।

सियालालचरण प्रमलता —

स्वामी सियालालचरण 'प्रमलता का जन्म सन १८७१ म हुआ था। यह स्वामि
पर क निवासी थे। इनके पिता मोक्षीराम थे। इनका पर का नाम बालाराम था।
दहान बरबरास नामक नरत भक्ति की प्ररणा ग्रहण की थी। इनके लिए हुए
प्रथम म प्रथम उपासना रहस्य प्रमलता पदावती चतुर्थ चालीसा सीताराम
रहस्य नाम रहस्यत्रयो नामउत्सव सिद्धान्त' जानकी स्तुति पदश्रुति विमल
विहार सीताराम नामन्यवान साताराम नाम जापक महात्म्य पान पचासा'
मिथिना विभूति प्रतापिता धरा य प्रबाधक बहुतरी हित्तापदेन गतक' प्रमलता
बाग्यगी' नाम उम्ब य बहुतरी नाम उभव प्रकाश चालीसा' 'जानकी विनय
नामादि नाम उम्ब उपासना सत्रपुत्र पञ्चय प्रबाधिका सन्त प्रसादा महात्म्य'
अन्य गत निश्रान्तमधि उपाय जपन सिद्धान्त' पाठा भक्ति, सन्तमहिमा'
पञ्च पटिका स्वप्नसार 'अप्यमम जानकी बघाई सारसिद्धान्त प्रकाश,
नित्य प्राप्ता विन्वविनास बासिका आदि है। इनके नाम का एक उदाहरण इस
प्रकार है

हाता प्रवत राम उिया जारा ।

इत उिय सासुया बहु रात्र रपुवर सा सुपन जारा ॥

कानन बन मिथिनापुर माहा धूम मची अत्रि पदुओरी ।

बसर रा साव पनार बहन ता पारी पाय ॥

अधिर गुनात कुमकुमनि भारत रिचकारिन ठनु सरबारी ।

प्रमलता मुर नयन मुक्ति मन बरपत मुमन मुभरि क्षारा ।

भग्य कवि—

भक्तिगुण राम-नाम्य का परम्परा क अन्तगन उपभुक्त कविता क अतिरिक्त
अथ भा अनेक कविता न सांगान गिया है। इनमें रामायण उपनीया का नाम भा

मधुरअली दपति की पटतर तयि न परा ताउ जात ॥

(हनुमानारण मधुरअली)

चित ले गयो चोराय जु फा म लगत ।

हम जानी के कृपासिधु है तब उना भई प्रीति भगत ।

बिरही जन हिय दुष उपजावत करत नय नय अजब गगत ।

प्रीतिनता प्रीतम बदरदी छाड हम नित गया चगत ॥

(जानकीवरारण प्रीतिनता)

हौं दासी मिथिनस ननी की ।

प्रिय प्यारी सनेह मुख सरि मह बिकसन चहो नित प्रम वगत नी ।

श्री कौसिना सुवन सुदर लग बिहरन प्यारी मुमन अनी की ॥

यह रस स्वाद मगन रही निसिन्नि जानी नहि कष्ट मुगति भनी नी ।

जम ज म बेरी भयो चाहत यहै साध उर प्रमअली की ॥

(सियासरण मधुकरिया प्रमअली)

हो दिनदार यार अब पहों ।

जाक बिन छन पन न परनु है ताके बिना कस जनम गवहो ॥

अग अग लखि मधुर मनोहर द्व भज पकरि अक अब नी ।

कामदमणि यह सोच रनि दिन कस क जान द माहि समहो ॥

(कामदमणि)

अवअश किशोर रच होरी मिथिना पुर की सब गारी ।

नव समुरार नवन नव नेही नव नागर नवगत गारी ॥

सिद्धि बुवरि सरहज सखियन न रग गुगत भरे शोरी ।

कर छन लपट गहे रघन दन भोल कपोतन मन रारा ॥

कचन कवरि करी मन भाई पीताम्बर नीना छारी । (काचनबुवरि)

उपयुक्त रामभक्त कविया के अतिरिक्त इस परम्परा में अन्य भी अनेक महात्मा हुए हैं जिन्होंने इस प्रवृत्ति के विकास में योगदान दिया है। इनमें रामचरित तथा गणेशदेव जीना के रचयिता मधुरअली हनुमान चरित के रचयिता सुदरदास रामायण महानाटक के रचयिता प्राणचंद चौहान गुणराम रामा के रचयिता माधव दास चारण हनुमन्नाटक के रचयिता हृदयराम हनुमानाष्टक के रचयिता मानदास भाषा रामायण के रचयिता कपूरचंद त्रययोगवाशिष्ठ के रचयिता कृष्ण जनक पचीसी के रचयिता मदन दशरथ के रचयिता मुषटव मित्र अवधविनास के

रचयिता लालदास, रामचरित तथा अल्यापूव प्रमग क रचयिता बारहूठ नरहरदास
 रायायण क रचयिता यामनास, जोमरामायण के रचयिता जोगराम रामायण तथा
 हनुमत पचीसी क रचयिता भगवत सिंह 'रघुवशदीपक तथा कवितावली क रचयिता
 सहजराम जुगलनखशिख क रचयिता पचम मिह हनुमानजी की स्तुति क रचयिता
 हरिसवरु रामविनास रामायण क रचयिता सतनाथ वजीवन रामाश्वमेध' के
 रचयिता मधुसूदन, हनुमत पचीसी के रचयिता इच्छाराम हनुनाटक क रचयिता
 मनजू सत्योपाख्यान क रचयिता ललकदास रामचंद्र चरित क रचयिता शिवमिह,
 'अनुमान पचक, हनुमान पचीसी नदमणशनक तथा हनुमत नखशिख क रचयिता
 छुमान रामरहस्य तथा रसजुज प्रथ क रचयिता सदरि बुवर रामचरित वक्त
 प्रकाश' रघुराज घना री रामगीतमात्रा क रचयिता क्षमकरण मित्र रामचरित
 मानस की टीका क रचयिता हरिचरणनास रामाश्वमेध क रचयिता हरिसह्यायगिरि
 'राम रावण युद्ध के रचयिता मून कवितावली के रचयिता परमश्वरीदास वाल्मीकि
 रामायण, शंकाप्रकाश तथा हनुमतपचीसी क रचयिता गणेश बाननाड रामायण
 के रचयिता देवीदास कायस्थ रामगुणोदय क रचयिता घनीराम हनुमत बानचरित
 क रचयिता ब्रजनान 'मुष्टिदानात्म तथा कौशजपय क रचयिता ह्दप्रतापमिह
 सीताराम गुणाणव के रचयिता गोकुलनाथ प्रमप्रधाना क रचयिता जानकी चरण
 'रामायण शृंगार क रचयिता शिववठाराम अल्याम क रचयिता रामगोपात,
 'रामचंद्र का नखशिख के रचयिता रूपसहाय रामायण क रचयिता सीताराम
 रामचंद्र विनास आल्हात रामायण अध्यात्म रामायण ह्दक रामायण सीता
 स्वयंवर रामविवाह घड रामायण मुमिरनी तथा मिथिला घड क रचयिता
 नवामिह कायस्थ रामरहस्य रामशंभरण क रचयिता भगवतदास रामानुजी
 जानकी पचीसी क रचयिता रामनाथ अदभुत रामायण रामक्यामत वाल्मीकि
 रामायण तथा श्रीरामस्तोत्र क रचयिता गिरिधर उ रामायण मूचनिका क रच
 यिता रक्षिक गावि रामशंभर प्रधान नाति तथा धनुपनाथ रहस्य क रचयिता
 रामनाथ प्रधान चित्ररूप महादेव क रचयिता कृपााराम रामस्वर्गांगहण क रचयिता
 वाननास रामाष्टक क रचयिता मानारम्भ युगन नगनिध क रचयिता प्रतापसार्हि
 भावनामन का मिनी क रचयिता गुणमजरी रपनापतिहार अवधमिशर
 माहि य मुधासागर तथा रागरत्नान्वनी क रचयिता रत्नार दूरदूराय दाहावती
 वनक रामशहावती रामरहस्य पूवाड तथा रामरहस्य उत्तराड क रचयिता
 रत्नारि चित्ररूप महारमय क रचयिता मोहन, तथा रामायण क रचयिता विद्या
 रथनाथ टीका नेह प्रगत क रचयिता वनकसाहिता चरण रामरत्न मजरी
 युगन मजरी तथा भवप्रामामत का बिना क रचयिता त्रियासुधा निरमन सिद्धांत
 वार गल्पनिमहात्म्य तथा अध्यात्म रामायण क रचयिता किंकारनाम, रामा
 श्वमेध भाषा क रचयिता हरिनाथ सहाय रामायण क रचयिता समरनाथ जानकी
 पचीसी क रचयिता रामनाथ तुलसी चित्रामणि क रचयिता हरिवन वचनति

नानोपदेश ने रचयिता सिधारासशरण गिबारासभरण गि ता 'प्रमरत्नाकर' तथा प्रताप रत्नाकर व रचयिता लछिराम रामायण शतक तथा रामरत्नावली व रचयिता हरिवंश गि रामरत्नावली व रचयिता नरमण राममंत्र रम्य जानकी जी का मंगलारण ने रचयिता रघुवर शरण जानका मह्यनाम रचयिता श्री निवान रामनवरत्न वि तय व रचयिता जानकीप्रमाण (प्रथम) रामायण महात्म्य तथा रामगीता व रचयिता गोपातन्नाम रचित प्रिना व रचयिता न्यानिधि रामरत्नाकर रामनीना प्रमाण अनुमन भूषण तुन्मी भूषण तथा मानस भूषण व रचयिता सरदार कवि वा मीरि रामायण भाषा व रचयिता छत्र धारी रामायण तथा रामविनाम व रचयिता ईश्वरी प्रमाण रामायण व रचयिता गामतीदास भक्तिप्रियास मसन विवक मानस री गीतागति टीका व रचयिता बाबा हरिदास रसिक प्रमाण नक्तमान का भुवाधिनी टीका व रचयिता वागुव्यास रामजम व रचयिता मूरजदास रामाश्रमज व रचयिता माहन्यास जन्मत रामायण भाषा व रचयिता गोकुलप्रमाण प्रज नभिनसार सिद्धांत व रचयिता राम वन्दन शरण रामनाम तत्वबोधिनी व रचयिता रामन्याय रामभक्ति प्रमाणिका व रचयिता जानकीप्रसाद (द्वितीय) महारामायण व रचयिता भगवाननाम छत्री मन्तमन रजनी व रचयिता प्रमसथी (त्रितीय) हनुमान पत्र के रचयिता नालखवि रामायण रामानुरागावली व रचयिता वनेश्वर पदावली के रचयिता श्यामसख वाणी सिद्धांत विचार तथा नक्तनामावली के रचयिता ध्रुवदास मानस शता वरी के रचयिता बालन पाठक जवद विनास रामायण के रचयिता इद्रजीत जन्मत रामायण व रचयिता लानमणि गीत रामायण के रचयिता महावीरदास मिथिला महात्म्य के रचयिता चतुष्टय रामचंद्र नखत्रिज के रचयिता राघवनास सीताराम विवाह सग्रह व रचयिता श्यामनाथ प्रमप्रकाश के रचयिता गौरीशंकर विजय राघव खड के रचयिता वदीनी दीक्षित साता काड रामायण के रचयिता समर सिंह रामरहस्य रामायण व रचयिता पूषपुरनख रामतत्व बोधिनी के रचयिता शिवप्रकाश सिंह रामायण कवित्त के रचयिता शंकर त्रिपाठी राम नखशिख व रचयिता मुनिदान माधवमपुर रामायण के रचयिता माधव नख बाल्मीकि रामायण भाषा के रचयिता मेशदत्त सम्ब धन्त्व भास्कर के रचयिता सीताराम प्रवाद्याचार्य रहस्य तत्व भास्कर के रचयिता पद्मनाभाचार्य सधिपन उपासना काड के रचयिता मानन्मणि रामचंद्र की धारामासी व रचयिता छेालान परशुराम मवाण के रचयिता काशराम रघुनाथ शतक के रचयिता मुन्तान जानकी रामचरित नाटक व रचयिता हरीराम रामचरित दावली के रचयिता युगनप्रसाद चौध सियानान समय रस वद्विनी तथा कवित्तनाम के रचयिता अनी सियारसिक युगन सने विना तथा प्रमचंद्रिका व रचयिता रसिक वन्दन शरण रामजम व रचयिता स्वयप्रकाश रामस्तुति विाप्तिनार नक्तन विनप्तिसार तथा रामपचाशिका व रचयिता गुमानी पत सरजू जष्टक व रचयिता रामकिशोर

रास अब विलास के रचयिता विष्णुप्रसाद चरित्रकार रामप्रिया विलास के रचयिता रामप्रिया हैं।

महत्व—

इस प्रकार से भक्तियुगीन राज्य के जनान राम तथा का एक नुबिन्तत परम्परा मिनती है। जसा कि इन परम्परा के मुख्य पापका के उपयुक्त परिवेश से स्पष्ट हो जाता है। यह काव्य द्वारा मुख्य रूप से मना। माधुर्य नाम्य मात्र तथा अन्य जनक रूपा में राम भक्ति की निरूपक है। इस नाम्य प्रकृति पर प्राचीन युग में लिखे गये सङ्गृत तथा अन्य भाषाया के साहित्य का भी व्यापक प्रभाव है। यह इसका वचारित प्राचीनता का भी सातन करता है। इस प्रकृति के प्रसार में अनन्य कविया न योग इन लिया जिनमें गास्वामा तुलसीदास जय महान भक्तकवि भी हैं। रामकान्य में कयात्मक तत्वा के नुनियोजित समावा के अतिरिक्त जाध्यात्मिक जोर गानिक शक्तिज्ञान से ना अनेक विशेषताएँ मिलती हैं। रामचन्द्र का कविया न परब्रह्म परमेश्वर ही माना है जो चार रूपा में जयाध्या में जवनीय रूप में। राम के चरित्र में शान शक्ति और सौन्दर्य का जो अद्भुत सम्मेलन भक्तकविया न निर्दिष्ट किया वह ब्रह्मस्वरूप ही है। जिस प्रकार से प्रकृति और पुण्य का सत्ता होता है उसी प्रकार से सीता ना परमपुरुष राम से अपेक्षक उहा का शक्ति के एक रूप में मान्य की गयी है। राम और सीता दाना ही एक तत्व हीनर विराट जागार स्वरूप हैं। तुलसीदास जान साना और राम की वन्दना करते हुए उनका अन्तता के विषय में यह किया है कि जिस प्रकार से यानी और जय में तथा जन और नहर में पयकाम नहा होता उसी प्रकार से सीता और राम भी एक ही हैं। राम भक्त कविया के अतिरिक्त रूप में भक्त कविया न भी राम तथा का समावा अपन काव्य में किया है। मूरदास न ना अपन मूरदासर में राम चरित्र का गान किया है। उतना एक ही पद्य में उतना राम का भक्तिगान प्रस्तुत किया है। उगुण भक्ति के जीवित का निर्माण भी मूरदास न किया है। उगुण भक्ति इसलिये समावा मना के विना बाधक रूप है क्योंकि निगुण अथवा जनन्त वाग उल्लेख नहीं किया जा सकता उतना स्पष्ट रखा गुण शक्ति अथवा तत्त्व से भी समावा नही जा सकता। इसलिये ज्ञाना में भक्त उगुण रूप का जायस चालता है। श्रीमन्भावना के नवम् स्वरूप में मूरदास न रामतथा का गान में वान किया है। मूरदास न राम और उतना नादवा का गतिगान और सीता का जनन्त काय बताया है। वे चारा कणार और मनु ज्ञाना हाव हुए धन जन और माता की निवास भूमि हैं। तुलसीदास न ना राम तथा के जनन्त जाध्यात्मिक और गानिक तत्वा का निरूपण किया है। वस्य का उतना जय जय अरुण अविनागा निर्दिष्टार मायारहित और जनन्त माना है। उगुण शक्तिज्ञान में उतने उतनी कल्पना ही चरानन्द रूप में का है। उतने स्पष्ट यह घोषित किया है कि निगुण और उगुण में काद अंतर नही है। निगुण स्वरूप ही धन मानता से

मुक्त भक्ति के कारण सगुण बन जाता है। टीक उसी प्रकार जिन प्रकार में जन शक्त के कारण हिम बन जाता है। सगुण रूप की उपासना का पुनर्गीत में अनुभव किया। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के परित्र में उद्धार विमल और सगुण शान की निहित बनाते हुए उन्हें विष्णु का अवतार बताया है। राम के नाम की भी उद्धारने असाधारण महिमा प्रतिपादित की। ब्रह्म की शक्ति के रूप में माया का भी विवेचन तुनसीसास न किया। इसी प्रकार में जीव मुक्ति भक्ति तथा पात धर्म का निरूपण भी उद्धार राम कथा के विभिन्न सार्वभौम किया है। इस प्रकार में यह स्पष्ट हो जाता है कि राम का यह परम्परा न केवल भारतीय साहित्य में बल्कि विदेशी साहित्य में भी अत्यधिक प्रचलित है। उसका प्रकार अतीत युग में महत्त्वा वर्षा तक है और वर्तमान काल तक वह अजय रूप में प्रवाहनीय भिन्नता है।

भक्ति युगीन कृष्ण-काव्य की प्रवृत्ति

हिन्दी साहित्य में कृष्ण काव्य की परम्परा मुग़लकाल से विकासमान मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कृष्ण कथा का वर्णन जयदेव ने अत्यन्त सरस रूप में किया था। जयदेव ने राधाकृष्ण का नीला-गान मस्कृत भाषा में किया यद्यपि उनके लिए कुछ पद्य हिन्दी में भी उपलब्ध हैं। उनके प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ 'गीत-गाविन्द' का परवर्ती कृष्ण काव्य पर उल्लेखनीय प्रभाव बताया जाता है। विद्यापति ने भी इसका प्रसार किया। उन्हीं राधा और कृष्ण के प्रेम के विविध पक्षों का आधार बनाकर काव्य याचना की। विद्यापति के काव्य में शृंगारिकता की प्रधानता है। राधा के मृगच्छि बचन रूप वर्णन तथा उनका प्रति कृष्ण का अनुराग चित्रण विद्यापति ने अत्यन्त भावामक रूप में किया है। कहा जाता है कि विद्यापति का कृष्ण-काव्य रचना अधिक चारित्र्य या चिन्तनय मूलक तथा उनके शिष्याण इस अत्यन्त भाव विभार हाकर गाते थे और कथा कथा नावातिरक म चतनाविहान तक हो जाते थे। उनके अनुयायी ब्रज प्रान्त में भी रहते थे। इसलिए यह भी कहा जाता है कि परवर्ती कृष्ण-काव्य पर उनका व्यापक प्रभाव पड़ा था। प्रसिद्ध मठ नामदेव ने भी कृष्ण काव्य में विचार में योग दिया। इन क्रिया के अतिरिक्त अन्य भी जनक कवि हुए हैं जिन्होंने कृष्ण काव्य का परम्परा में विकास में योग दिया है। इसी सन्दर्भ में भागवत भाषा का जयदेव के अर्थ में उल्लेख करते हैं कि तदा मुत्तमत्तक के रचयिता श्री अष्टभा है। भक्त का विद्या हुई मुत्तमत्तक निम्बार्क सम्प्रदाय में ब्रज भाषा की प्रथम रचना के रूप में मान्य है। इन जति बंगाल भा कहे हैं। सो दोहा में किया गयी दस कृति में सिद्धांत मुत्त ब्रज भाषा मुत्त उवा-मुत्त सहज मुख नुरत मुत्त और उवाह मुत्त का बान है। इसमें निम्बार्क सिद्धांत और उद्योगी उपासना-मन्त्रि का सङ्गतिरूप का स्पष्ट दृष्टा है। श्री भक्त ने मुत्तमत्त राधा कृष्ण की लीला का सुम्न बचन किया है। इस रचना काव्य के विषय में विज्ञाना में मजबूत है। यह मानहवा 'गा' की रचना अनुमानित था जाता है। इन क्रिया के परवान इस परम्परा में अमीर अमरा का नाम भी उचित विद्या या सुकता है। यह अर्थान के पुत्र थे। इनके पुत्र

चमक या के आक्रमण के कारण बनबन र रा य रात म भारा म बग गय थ । यमरा मुषयत अरबी पारसी के बवि थ और उारी प्राय सभी ररनाएँ इ हीं भाषाआ म उपन घ होती है । हिंी म उ हान बेयन कुछ स्त्र प्ता और पक्षिया ती हा ररना की है । त्रज भाषा और छडी बाती का मिश्रित रूप यमरा व स्त्र काव्य म भिन्ता है । छसरो की पहेलिया मूर क दृष्टिभूट प । री जटितता त्रिण हूण है ।

वृष्ण-काव्य का त्रज भाषा म अष्टांग व प्रसिद्ध बविया द्वारा प्रसार हान व समय अयवा उसक पून जनक धामिन सम्प्रदाय प्रवर्तित व त्रिनर अनुगामी इम प्ररति पर काव्य रचना कर रह थ । इनम विष्णुस्वामी-सम्प्रदाय भी एक है जिसन प्रवतरु आचाय विष्णु स्वामी व । विष्णु स्वामी व सिद्धान्त अ तवाती विचारधारा स पयाप्त साम्य रखते है । आचाय विष्णुस्वामी भक्ति का मुक्ति की तुलना म अधिव महत्व प्रदान करते व । वेद तलावत विधान वरान साध्य-योग तथा वर्णाश्रम धम आदि क अन्तगत निदिष्ट सारा विधान उहान भक्ति व माधन व रूप म ही माय किया है । कहा जाता है कि आचाय विष्णुस्वामी व पश्चात त्स सम्प्रदाय म सान से आचाय हुए थे । इनम एक आचाय बिवमगन हुए व त्रिनर समकालीन गवराचाय तथा कुमारिल भट्ट जाति व । अष्टछाप व वल्लभाचाय पर भी इनके सिद्धांता का पयाप्त प्रभाव बताया जाता है । इस सम्प्रदाय व अंतिम स्वामी आचाय व्यामश्वर बताय जात हैं । इनक जतिरिक्त राजगापाल विष्णु स्वामी का भी उल्लेख भिन्ता है । कुछ विद्वाना का यह मत है कि माधवाचाय तथा मायनाचाय के गुरू विद्याकर का ही एन नाम विष्णु स्वामी था । इस सम्प्रदाय क अय समवका म नान्तव नामन्व वशव त्रिनो चन हीरागत तथा श्रीराम जादि बताय जात है । त्सन सान ही वारकरी सम्प्रदाय का नाम भी उल्लेखनीय है जिस पर विष्णुस्वामी सम्प्रदाय व सिद्धांता का पयाप्त प्रभाव भिन्ता है । निम्बाक सम्प्रदाय व प्रवतरु निम्बाकाचाय जी व त्रिनका समय वारहवा शतांता अनुमानित किया जाना है । निम्बादित्य निम्बमास्कर तथा नियमानंदाचाय आदि इनक अय नाम भी भिन्त है । कुछ लोग इ ह और मास्कराचाय जी को एक ही व्यक्ति बतात है । निम्बाकाचाय जी न वदात्तपारिजात शौरभ तथा दनशतोत्री नामक ग्रंथा म अपन मत का विवचन किया है । उपास्य का स्वरूप उपासक का स्वरूप कृपाजन भक्तिरस तथा पद प्राप्ति आदि विषया क अतगत ब्रह्म जीव जगत मोक्ष तथा माण व साधना जादि का विवचन इस सम्प्रदाय म हुआ है । निम्बाक मत क अनुसार शिवृष्ण ही परमब्रह्म है । त्स सम्प्रदाय को सनक सम्प्रदाय तथा त्स सम्प्रदाय भी कहा जाता है । माध्व सम्प्रदाय क प्रवतरु माधवाचाय जी व त्रि ह आनन्तीय तथा पूनपन भी कहा जाता ह । माधवाचाय जी न मायावाद तथा त्तवात् व सिद्धांता का खणन करत त्त मत का पोषण किया । इस सम्प्रदाय म परमात्मा का अन्त और अधीम गुणा स युक्त माना गया है । परमात्मा आठ प्रकार क वायकर्ता है जा मृष्टि स्थिति सहार नियम आवरण अथवा अज्ञान, बोधन बधन

तथा माय है। प्रकृति जीव इन्द्रियाँ माया ज्ञानि का भा निरूपण इस सम्प्रदाय में हुआ है। चतुर्थ सम्प्रदाय का प्रवर्तन चतुर्थ महाप्रभ ने किया था जिनका समय उन्नीसवाँ शताब्दी माना जाता है। इनके शिष्या में नित्यानन्द जोर अद्वैताचार्य प्रमुख थे। रूप गास्वामी सनातन गाम्वामी तथा जीव गाम्वामी नामके इनके शिष्या का उल्लेख भी भक्तमान में मिलता है। जीवगाम्वामी गापाल भद्र इश्वरपुरी गाम्वामी माधवद्रपुरी गाम्वामी आदि का उल्लेख भी श्री सनातन में किया जाता है। इन सम्प्रदाय के अन्तर्गत श्री रूपगास्वामी ने भक्तिरत्नामन शिष्य 'जगदन्तरीनमणि तथा तद्यु भागवतामृत आदि ग्रन्थों में भक्ति की व्याख्या में विवेचना की है। सनातन गाम्वामी ने राम-भागवत दोनों ग्रन्थों का टीका तथा 'वह्नभाष्यनाम' टीका ग्रन्थों की रचना की है। जीव गाम्वामी ने मङ्गल ग्रन्थों की टीका का अनिरीकृत पत्रमन्त्र एवं गापाल चपू आदि ग्रन्थ लिखे। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत गापाल भद्र गाम्वामी के शिष्य श्री निवासाचार्य नामक हैं। जगदन्तरीन नामक विद्याभूषण ने 'गाम्वामी भाष्य' की रचना की। चतुर्थ सम्प्रदाय के अनुसार परब्रह्म के तीन रूप हैं स्वयं रूप तदात्म रूप एवं जावक रूप। परब्रह्म स्वयं रूप शीघ्र ही हाँक जा 'चतुर्थ सिद्ध है। इस सम्प्रदाय में जावक का अर्थ तुल्य कहा गया है। यद्यपि वह माया ज्ञानि और स्वरूप ज्ञानि के मध्य में है। जय जाध्यात्मिक विषयों के विषय में भी इसी प्रकार उस मत के पक्ष में सिद्धान्त है।

अनुराग था। सोनहू वर की अवस्था में इतना विवाह प्रतिमणी ही संभूत था। गहस्य आश्रम में रहते हुए भी यह अपना अधिपति नामय श्रवणघटा मन्थित करत थे। मवत १५६० में यह तीव्र यात्रा करत गगनूत्पन्न पदुः। वरि पर २००० अपने सिद्धांतों का प्रचार किया। इनका विग्रह द्वाय चार प्रयत्न उपर्युक्त हैं जो राधासुधा निधि यमुनाष्टक हितचोरासी तथा रण्य वाणा है। राधासुधा निधि ग्रन्थ मसूत भाषा में लिखा गया है। इसमें २७० श्लोकों में अतम रचयिता न राधा जी की वरना उपासना प्रशस्ति तथा पूजा मति मोय जाति वा वणन किया है। इस ग्रन्थ पर आग चतुर्वर अनेक विद्याना न टीकाओं और यात्राओं प्रस्तुत की। इनमें कृष्णचंद्र तुनसीदास मतदान वरानास नगणम जी स्त्रिय हरिनाथ यास लोकनाथ नूतीलान स्वामिनीकरण मनाहर बलन। टृपावान साडलीलान युगवल्लभ तथा मोनानाथ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यमुनाष्टक ग्रन्थ यमुना की वदना में लिखा गया है। यह एक प्रशस्त काव्य है जिसमें आठ श्लोक हैं। हितचोरासी चौरासी पद्यों का ग्रन्थ है। राधावल्लभ सम्प्रदाय के मन्दातिर निरूपण की दृष्टि से इस ग्रन्थ का बहुत अधिक महत्व है। इसी ग्रन्थ का हरिवंश चौरासी तथा हितचोरासीधनी आदि नामा सं भी उल्लिखित किया जाता है। इस ग्रन्थ की भी अनेक टीकाएं मद्य और पद्य में की गयी हैं। इनमें प्रभूपणवान रमिन लान सुखलान प्रमदास हितधरनीधरदास लोकनाथ वरिणास, चरान मनाहर बलनम रतनदास कमन कुजरि हितामी वरानास टृपावान तथा नाडिनीनाम जाति की टीकाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। स्कट वाणी में हितहरिवंश की फरकर रचनाएं मगहीत हैं। यह सबया छप्पय कुलिया तथा दोहा जाति छंटा में लिखी गयी हैं। स्वामी हितहरिवंश के काव्य में कुछ उदाहरण यहाँ पर प्रस्तुत किये जा रहे हैं

जोई जोई प्यारी कर सोई मोहि भाव
भाव मोई जोई सोई साई कर प्यारे ॥

मोको ती भावती ठौर प्यारे के नननि म
प्यारो भयो चाहै मेरे नननि के तारे ॥

मरे तन मन प्रानहू ते प्रीतम प्रिय
अपने कोटिक प्रान प्रीतम मासा हारे ॥

हितहरिवंश हस हसिनी सावन गौर
कहौ कौन कर जन तरगिनि यारे ॥

प्रीति न काहू की कानि बिचार ।

भारम अपमारण बिधजित मन को अनुसरत निवार ॥

ज्यों सरिता सावन जन उमगत सनमुत्र सिंधु मिधार ।
ज्यों नाटहि मन दिय करगनि प्रकट पारधी मार ॥
हितहरिवश हिलग सारग ज्यों शलभ शरीरहि जार ।
नाइक निपुन नवल माहन विनु कौन अपनपो हार ॥

आज निकज मज म सतत नवलकिंगार नवीन किंगारी ।
अति अनुपम अनुराग परनपर मुनि अभूत भूतन पर जोरी ॥
विदुष फटिष विविध निमिन घर नव रूपूर परान न धारी ।
कामन किसनय प्रयन सुपशन तारर श्याम निवाशन गारा ॥
मियुन होन परिहास परायन पीन कपात वमन पर गारी ।
गौर श्याम भुज कनह मनोहर नीवी बघन माचत डारी ॥
हरि उर मुकुर विनोकि अपनगी विरम विरन मानयुत भारी ।
चिबुरु मुसाह प्रलाइ प्रवाधन पिय प्रतिविय जनाय निहोरी ॥
नति नति बचनमत मुनि तुनि ललितानिक दयत दुरि चारी ।
हित हरिवश करत करधूनन प्रणयकोप मानावलि तोरी ॥

तात भया मरी ना कृष्ण गुण मचु ।
कुरितत बाण विवारहि परधन मुनु मित्र मर परनिय रचु ॥
मणिगण पूज बजपति छात हिनहरिवज करि गदि रचु ।
पाव जान जगत म सब जन करी कुरित बनिगुण टव ॥
इह परनाक सकल मुख पावन मरी ना कृष्ण गुण मचु ॥

रामोदरदास संवकजी —

रामोदरदास संवकजी का जन्म मन्सूर शहर में हुआ था। इनका जीवन चरित्र कविपदम भगवतमुक्ति उत्तमशिक्ष तथा प्रियाशिक्ष आदि न विस्मर्य विवरण प्रस्तुत किया है। यह बाल्यावस्था में ही भगवत भक्ति रु प्रति अनुराग था। गान्धामो हितहरिवज का नाम सुनकर इन्होंने उह ही अपना गुरु बनाने का संकल्प किया। कहा जाता है कि स्वप्न में इन्होंने गुरु कल्पन किया और उनका शोभा प्राप्त की। तबसे बाणा उनकी प्रसिद्ध कृति है जो मोनह प्रकरणों में विभाजित है। इस ग्रंथ में इन्होंने गान्धामो भक्ति भावना और सिद्धांतों का प्रभावकारी रूप में निरूपण किया है। इसमें संस्कृत एवं भाषा बदलकरी तथा अरबी आदि भी शामिल हैं। यह हितहरिवज का सम्प्रदाय में सर्वनिष्ठ अनुयायी रूप में प्रसिद्ध है। इनका जन्म इन्होंने अपना धार्मिक भावनाओं का सहज अभि रचित का है। इनका जन्मदिन मन्सूर १६०८ में हुआ था। इनका काव्य का कुछ उदाहरण इस प्रकार है

जब जय होत धम की हानि तबन्तर तनु धरि गन त आरि
जानि और दूरी नहा ।

जा रस रीति समनत दूरि गा राय बिरय रही भरि पूर ।
भूरि समीप न कहि २८ ।

दश ज मै अवतार मय भजि तहान्तहा मन नमान जाई ।
गाकुननाय महा राज बनव सीला जनन न चित घटाई ॥
एकहि राति प्रतीनि बध्यो मन माहो उप हरिवग बजाई ।
जा हरिवग तजो भजो जोरहिता माहि ना हरिवग टुहाई ॥

विपिन नितत रसिन रम रासि ।

दपनि जति जानत बस प्रममत्त निशक ग्रीडत ।
चचन कडन कर चरण मन तान रतिरग ग्रीडन ॥
नटवत पट चटनिनि चक्क नटवत नट मृटहास ।
पटवत पद उघटन शबन नटवत नरति विनास ॥

हरिराम यास—

श्री मास्वामी हरिराम याम आरछा नरेश मधुकर गह व गुरु व । उनके जीवन क सन्दर्भ म जा विवरण उपलब्ध हाता है उसक विषय म विविध विज्ञाना के भिन्न भिन्न विचार है । उनका ज म स्थान टीकमगढ़ राज्य माना जाता है । इनका जन्म सवत १५४८ अनुमानित किया जाता है । इनक पिता समोहन पुत्र थे । बाल्या बस्था म ही इन जनक धम प्रथा का पारायण करन भक्ति क प्रति अनुराग प्रकट किया था । उनकी पत्नी का नाम गोपी था । जनक विद्याता ने उनके दीक्षा गुरु के विषय म विभिन्न स्वामिया के नाम त्रिय हैं । यास जी क भक्ति सिद्धांता म राधा बल्लभ सम्प्रदाय क साधना पक्ष की प्रधानता है । यास जी ने दार्शनिक मत विवाद की तुलना म भक्ति भावना की सहज अभिपक्ति पर अधिक बल दिया है । व दावन पट्ट चकर उद्धान हिनहरिवंश स दी ता ग्रहण करन क पश्चात अपन आराध्य का मन्दिर बनवाकर उसम मूर्ति प्रतिष्ठित की थी । श्री हरिराम यास के निधुन दुए प्रथा मे यास वाणी रागमाता एन नवरत्न जीर स्वधम पद्धति का उल्लेख किया जाता है । व्यास वाणी म कवि न राधाकृष्ण की निकुंज तीता का माधुय भक्ति के सन्दर्भ म बणन किया है । एगम ऋतु बणन टुगार वणन और सौंदर्य वणन भी समाविष्ट है । उनक जय दोना ग्रंथ प्रकाशित नहीं है । श्री हरिराम यास का स्वगवास सवत १६५५ से १६५५ क मध्य म था था । यास जी क काय के कुछ उपाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रहे है

श्री राधावल्लभ तुम मरे हित ।

और सब स्वारथ क मगा पुर चौपरी २ पावन पित ॥

यह मे जानि सबनि सौ तारा तुम सौ जारी द चरनन चित ॥

इतनी आस मास की पुजवहु ज्या चातक पावन पावस रित ॥

— — —

1 अब न जोर कछु करन रहन है वन्दावन ।

हानी हाय सा हाय किनि तिन तिन आयु घन्ति नूठ तन ॥

मिनिहै हित ननिनातिक दायी राम न गावत मुनि मन ॥

— — —

सदा वन्दावन सबकी आनि ।

रस निधि मुग्धनिधि जहा बिराजन नित्य जनन्त अनानि ॥

गौर रमाम का सरन हरन टुघ बदमूत्र मनानि ॥

मुक पिय बकी काक कुरग कपात मृगज सुनवादि ॥

कीट पतय बिहग मिह रुपि तहा साहूत जनकाणि ॥

तरु तन गुल्म कल्पतरु कामधनु गा उप घमादि ॥

माहन की बनसा त प्रकटित अश कना कपिनानि ॥

गापिक का निन नम प्रम पण परज जन कमनानि ॥

— — —

आस बनक अरु कामिना य गावा तरवारि ।

निकस है हरि भजन की बीचहि तान मारि ॥

आउ बनक अरु कामिनी तजिय नजिय दूर ।

हरि सौ अन्तर पारिहै मुग्ध २ जहै धूरि ॥

चतुर्भुजदास—

राधावल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी स्वामी चतुर्भुजास्य बल्ल्यास क कवि चतुर्भुज दास स भिन थ । चतुर्भुजदास श्री का जन्म १५०४ व लगभग १५५० था । इनका जीवन की अनेक चामत्कारिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है । इनका एक प्रथम शास्त्राचार्य गायक स प्रसिद्ध है । यह प्रथम शास्त्र नाया स विद्या गया है । उन कवि न पि ता मन्त्र गुमात्र-या घम विचार-या मउ प्रताप-या पि ता-सार-या हितोप-या पवित्रपावन-या माहिना-यत्र अनय भजन या गथा तु प्रनाय-या मगतसार-या तथा विमुग्ध मुग्ध भजन या पर विचार किया है । इन चतुर्भुजास्य या न ममार क माह माया आनि प्रचा उ वायन का मुनिउ का प्ररुण दकर हृण भक्ति वा अनु मानन किया है । शिवाय क अन्तगत कवि न प्राचान यगा प्रम घम क अनुगार विविध वर्ण क यनगत कल्या और भाचरना का व्याख्या का है । शाय क अन्तगत कवि न

विभिन्न पौराणिक सादृश्यों का आधार पर भक्ति का महत्व बताया है। तुरीय अंतर्गत विभिन्न मुनिजन के उपायों का आधार पर सत्संग की महिमा वर्णित है। पञ्चम अंतर्गत गुरु शिष्य के पारस्परिक सम्बन्ध गुरु का महत्व गुरु की याग्या शिष्य के बतलाया जादि का वर्णन है। षष्ठ के अंतर्गत जीव का द्रव्य समारम्भ का उपाय मानिया मन्त्रमण तथा जन्म मरण आदि में मुक्ति के उपाय वर्णित हैं। सप्तम अंतर्गत ब्रह्मण के पतितपावन स्वरूप का वर्णन है। अष्टम अंतर्गत माया का ध्यापन प्रभाव और शक्ति की वर्णित किया गया है। नवम अंतर्गत विदुष भक्ति भावना का अनुमान किया गया है। दशम के अंतर्गत राधा की महिमा वर्णित की गया है। अज्ञान के अन्तर्गत साम्प्रदायिक भक्ति का भेदातिशय निरूपण किया गया है तथा इन्द्राण के अन्तर्गत भक्ति के धर्म आदि की विवचना है। श्री चतुर्भुजदास का काव्य के कुछ अर्थ उदाहरणों के नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

मुख की मुख जर मोद माद रसनी रम एवत कीनी हरि जू ।
 तुषानुषा की गुन की गुन ताकी ज सार मयि नीनी हरि ज ॥
 ता सार की साधि सबस त्रियो पुनि ज माधुरी नीनी हरि जू ।
 तव निव आनंद प्रम मित्र क रचि की रचि जिन कीनी हरि ज ॥
 प्रम लच्छना नाम तामु मुख सवन मग प्रहारी हरि जू ।

दुःख भंजन पायी सुराय करि । गुरु धरत हरिनाम नाव करि ॥
 सखी कुमति अति तप्या विषया जिहि तिहि गति गहि आन हा हरि ।
 एकनि भरन भवन न पठत मोह सज सग सोय हा हरि ।
 नाम त्रोध चर चोर सिख के जान रतन धन पाव हा हरि ॥

अबही आन विचारिय जू ।
 पुत्र कनक सजन मुपने सो जाग त कलु न निहारिय जू ॥
 नाना मुसनु विष मुख भगत भक्ति न कवड समारिय जू ।
 मुदतन की फन नहया जमरपद तही न न गहि डारिय ज ॥
 जाकी बिरत पतितपावन है मो कस निमित्त रिहारिय ज ।
 चक्रमज मुरनीधरन जनन विनु मनुवा जनम हारिय जू ॥

ध्रुवदास—

स्वामी ध्रुवदास का जन्म सबसे १६३ के लगभग हुआ था। इनके पिता का नाम श्यामलाल था और इनके पितामह बटिन्ददास थे। कहा जाता है कि इन्होंने स्वप्न में हितहरिश्चय का गुरु मानकर उनसे शैक्षा ग्रहण की थी परन्तु गोपीनाथ जी से भी इन्होंने विधिपूर्वक दीक्षा प्राप्त की थी। बाल्यावस्था में ही इनके हृदय में भगवत् भक्ति के प्रति अनुराग था। अनेक वर्ष की आयु में ही यह ब्रह्मचर्य में आकर रहने

लग ५। ध्रुवशास जी व लिय हुए प्रथा म जाव शा नीला, मन सिना लीला
 ध्यान हुनास नीला बहू बावन पुराण की भाषानीना प्रीति चौबनीलीना
 भजनाष्टक लीना भजन सत लीला मन शृगार लीना सभामडन लीना रस
 हीरावला लीला प्रभावनी लीना 'रहस्य मजरी लीला रति मजरी लीला बन
 बिहार लीला रसबिहार नीना रग बिनोद नीना रहस्यलता नीना अनुराग
 लता नीना, रसान नीना जगल ध्यान लीला माननीला वचक चान लीना
 बनावन सननीना भक्तनामावली नीला' सिद्धांत विचार लीना ज्ञानदाष्टक
 लीना भजन कुडिया नीना भजन शृगार सन नीला हित शृगार नीला रस
 मुस्तावनी लीना रस रतनावली नीना, प्रियाजी नामावली लीला मुख मजरी
 लीना नहमजरी नीना रगबिहार लीला रग इलाम लीला आनन्दशा बिनो
 नीला ज्ञानद लता लीना प्रमथा लीला बजनीला, नत्यविलास लीना दान
 लीना' जादि का उल्लेख किया जाता है। अपन भक्तनामावली नामक ग्रंथ म
 ध्रुवशासजी न बिभिन्न भक्ता व नामो का उल्लेख किया है। इनम स गोस्वामी हिनहरि
 रग व अतिरिक्त गास्वामी वनचंद्र गास्वामी श्री कृष्ण चंद्र गास्वामी गोपीनाथ
 गास्वामी माहनचंद्र गोस्वामी गुरुरवर जयश्व श्रीधर स्वामी स्वामी हरिशासजी
 श्री विठ्ठलनाथ श्री कृष्ण चतुर्व श्री रूपगोस्वामी श्री सनातन गास्वामी श्री जीव
 गास्वामी श्री रघुनाथशास, कृष्णनाम, प्रवाधानन्द सरस्वती, श्री गापात्रभट्ट घमडी
 घमडश्व श्री भट्ट श्री गदाधर भट्ट श्री नाथ भट्ट श्री गाविंद स्वामी श्री गग
 स्वामी श्री गिरधर स्वामी श्री विठ्ठल विठ्ठल श्री ब्रिहारीशासजी श्री व्यासजी श्री
 सबरुजा श्री नरवाहन चतुर्भशास वणवशास परमान शास शास बावकृष्ण
 श्याम नाहरमन माहनशास बीठनदास मुन्दरदास नही नागरीदास नागर चिन्ता
 मणि चतुरदास हरिशास नानदास सरन नागरीशास परमानन्दन, माधव मुदिन
 मूरज शि, व शाण चरासन, रायवशास मीराबाई शा यमुना कुम्भशास
 कृष्णशास जसयन हरिशास नूबर गावि शास परमान दशास अष्टार मूरदास
 अष्टार माधव शा राम शा बरसानिया मूरशास मदन माहन सनाजी नामशुभा
 पीपाशा घशा शास शास माया शा ब्राजी वि इमन रामान शा हरिशास
 अष्टार स्वामी भद्र शाशा बाबा, नरसीजी भाशि व नाम भा है। ध्रुवदास व
 पाथ्य म कनात्मना शा गाहूत अधिक भिनी है। उ दान नित्य बिहार और निरु
 नीना व साय शय नावन प्रम व स्वरूप का भा बन किया है। उनका कान्य क कुछ
 उल्लेखन इन प्रकार है

यह जागा धरि चित्त म कहत यवामति मोर ।
 बुलावत मुख रग का काहुन पाया और ॥
 दुख दुखना गय निनी बनावन निर मोन ।
 नवन राधिका इना बिनु कहियो ना बोन ॥

बन्दाबत दुतिपत्त की उपमा का रछ नाहि ।
कोटि कोटि बकट हू नहि सम बह न जाहि ॥

फूनि फूनि रहे सब पूर फनवारी म न
रीणि रीणि छवि जाइ पाइनि म परा है ।
नाडिनी नवली अरवनी गुण महज ही
निवसि निरुज त अनूप भाति घरी है ।
नखसिख भूपन नावण्य ही व जगमग
दीठ सौ छवत मुकुमार ताहू डरी है ।
हित ध्रुव मुक्ति हरत विवाइ रहे
दामिनी की दुति जहोरन हरी है ॥

प्रम मत्न का मुख जहा सहज प्रम सिगार ।
आदि मध्य अवसान इत इक रस विमन विहार ॥
प्रमी बिचुरत ताहि बहू मिल्यो न सा पुनि आहि ।
नौन एक रस प्रम का कहि न सकत ध्रुव ताहि ॥
जग जग सब लान व चकत प्रिया की जोर ।
सहज प्रम का ढर परयो बध नह की डोर ॥

नही नागरीदास—

स्वामी नहि नागरीदास दुदनपण व निवासो थे । चतुभजदामजी स सत्तग हान पर यह वृ दावन आवर बस गय । इनका जन्म सबत १५८० क लगभग अनुमानित किया जाता है । इनके जीवन तथा भक्ति व सम्बन्ध म अनक किवत्तिया भी प्रचलित है । इ हान सिद्धा त दोहावनी पदावनी तथा रस पदावनी नामक ग्रंथा म अपने पत्र संगहीत किय है ।

इनका वाच्य म प्रम और भक्ति के क्षेत्र म जन यता पर सबसे अधिक गौरव दिया गया है । का वचना की दृष्टि स भी भाषा शरी रस छद अनकार आदि का परमाजित स्वरूप इनका वाच्य म मिनता है । ऋतु वणन क भी कुछ प्रसंग अच्छ बन पत्र है । इनका वाच्य व कुछ उदाहरण इस प्रकार है

सदा सोच म मन रहै परी जाय जिय वाधि ।
वह चितवन वछ जोर है प्रम जु बीधी आधि ॥
प्रम गह्यो ज्या जामु की ताहि न और सुहाइ ।
तिनही तन खाजत फिर जग बहै सानगी वाइ ॥

बिना कृपा राधा रानी व क्याव सुग्न हिन जू की पाव ।
जाका नाम मुनत परवस ह्य म्याम सहिन म्यामा उर आव ॥
दपति रूप रसासव पीव घमों घम बिन जोर न भावै ।
नागरीदास श्री व्यास मुवन बन नित्यबिहार औरनि दरसाय ॥

प्रम पपीहा की बलि हों री ।

रटत रहत मरौ मुभग सावरा इफटव तरा सोरी ।
मगन भयो तन मन गुन गाव परा है रूप उर जोरा ॥
नागरी छिनक परी है कमें ता बिनकन यहि धोरा ।
तनों धवन मुनत आतुर हव नरा अना मग होरी ॥
नागरीदास मिति प्रीनम सा लतानवित उह भोरी ॥

कल्याण पुजारी—

गोस्वामी कल्याण पुजारा बनचद्रजी व विष्य व । इनका जन्म मवत १६०० व
उगमग हुआ था । इनकी भक्ति म भी जनयता उवस उडा विपता है । इनक
जीवन और भक्ति म सम्बन्धित जनक विचरितिया प्रचरित है जा इनक मटव का
परिचय दना है । इनक भगवत भक्ति म एकनिष्ठता पर वन रिया है क्याकि इनक
विचार स ववन निष्काम मन हा विगुड भक्ति म परिपूरा ता सजता है । इनक काव्य
का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

माहि साग्य दति सामु नद बहू वाग-वार
सावर न गटा तन जिति न निहार री ।
आधि मूनि मूनि कहौ कहा तौ तनी रा माइ
बहा आव जात नाम बाननि न मार री ।
कचहू बजाव वन कचहू नचाव नन
मदु मुषिनाय पदि माहनी उा डार ग ।
मनु तो कल्याण एक साइ हरि हाप परयो
हाना हा तु भई गइवान फर पार ग ॥

भगवानदास जनदप्रती—

श्री जन द अना बासावम्पा उ हा नार उ विरलत ह कर भगवत चरणा म
अनुरक्ति रगन नग य । म्यन्त न द हू गाव मा गाविण नाव व नान ग य । बा
म यह वनावन आकर बउ ग य थ । अनक मद्राग्य म गित नान न सम्बन्ध म अनक
विचरि यो प्रचरित है । कहा जाता है कि जब इनका राधादास क जनक
तब उदा न आगे छ द हान अना नाम भगवतगाउ उ वन कर जनदप्रती य
किया था ।

जनदप्रती व निज गुण छ पा का ग ल्या उ बनाया जाता है वा स्वयं बिनाउ
(मदवार्ता) जाब प्रकार मन बिनता गता आता प्रकृति से हरिविष्णु

वृन्दवान वास चरण प्रताप नीला श्रीग्रीवा सर घन प्रतिविम्ब नीला श्री
 लाडिनी जू की नामावली श्री तावजू की नामावली व तावत रत्नधात्री नीला
 बशी विलास नीला परिचर्या विलास नीला यत् श्रुतु लोना धवन नीला
 रहसि बचन विनास नीला गुनात विनास नीला मगन विनास ताता रत
 विनास लीला, स्नान विनास नीला गिगार विनास ताता राजभाग नीला
 उत्थापन समय विनास सध्या समय विनास शयन समय विनास वान श्रुतु
 लीला श्रीधम श्रुतु नीला पावस श्रुतु नीला गरु श्रुतु नीला मिगिर श्रुतु
 नीला ह्म श्रुतु नीला कन रचना विनास गिन राग ताभा विनास यत्
 चित्र महाशीतल विनोद विनास चण घन विनास जननीला विनास नीला
 जलविहार लीला चरन अष्टक नवन जुगन विनास नीला यात् विनास ताता
 चौपर खन नीला शनरज घन विनास धननीला घन नीला गैर घन नीला
 भडडू खन विनास नीला आख मिचौनी खन (जगुण) वनन विनास राम
 विनास विरह विनास मगन विनास नीला छवि चद्रावती लीला मत्राग
 विनास नज्जा विनास मान विनास दान विनोद नीला रूप विनास मवा
 विनास छवि नता विनास नीला नविता नता विनास नीला मादरी नता विनास
 नीला रवमी नता विनास नीला तावण्य प्रभा विनास नीला रचन नता
 विलास चन्द्रलता नीला मदुता विनास नीला मुकमारिता की सीमा मोहनता
 की सीमा नवन विनास नीला विमन विनास नीला सौरभ विनास लीला चानुप
 विलास नीला भोरता विनास लीला नन्न विनास नीला दरस विनास नीला
 आदि हैं।

उनके कायम सिद्धांत निरूपण नित्य विहार रास नीला वन्दान मन्मा
 पट श्रुतु वणन नखसिख-वणन आदि के कलात्मक प्रसंग मिलते हैं। इनका कायम का
 एक उदाहरण इस प्रकार है

बदन चद की माधरी निरखत नवन किशोर।
 पान करत छवि की सुधा तपित न होत चकोर ॥
 पग तन कन की मादरी नवन विमन चमकत।
 तिनम मुदर स्याम मुख प्रतिविम्बित मकत ॥
 परसन कौ कर तरसही दरसन दग चपनाइ।
 हात् परी भज नन सौ नपट अति तरनाइ ॥

रसिकदास—

रसिकदास नाम स अनेक भक्ति कवि बल्लभाचार्य मन्प्रदय म दृष्ट है। उनमें
 से प्रथम रसिकदास मास्थामी दामोदरवर क शिष्य थे। द्वितीय रसिकदास हरिनान
 जी के शिष्य बताया जात हैं। तृतीय रसिकदास ता-नीलासि कि समयानीन थे।
 चतुर्थ रसिकदास धमदासजी के गुरुभाई थे। पंचम रसिकदास गोस्वामी धीरीधर क

सागर म्रम पहनी भक्ति प्राप्तता रती राधा रूप प्रताप रती मा परासत
 वनी राधा रूप नाम उत्तम वनी न तावत प्रम विनाग रती वृष्ण नाम रूप
 मगत वली इष्ट मित्रन उत्तटा रती हरि भक्ति भीता रीता गार विनाग मगत
 भक्ति परिचयावनी सवन जस विरदासी रमित परिषारनी मुग्धपरंपरा
 नामावनी वृष्ण चरणात्क जमुना स्तव जप्ता तुम्बनी जप्ता वन स्तुति
 सेवक वाणी स्वामिनी चरण प्रतापात्क प्रिया तान् जप्ता वाग्द मागा विहार
 वली, वृषा मनोरथ पत्निरा कुज मृदाग पत्नीमा मवरा प्रतापात्क पुष्कर
 महात्म्य करुणा (सिद्धांत) पत् अभिनाय वतीता तत्रिता प्रम कहानी दुग्ध
 जप्क हित वृषा विचार सार वनी तरुण जल्प्याम स्वामा जा रगण विह
 प्रतापात्क धीवृष्ण चरण चिह प्रतापात्क वृगारात्क मगत पारो चक्रन
 मोनाचार (त्राडितातान को) कवित्त पञ्चीमा हित कल्पना अमर गात
 पदब ध एदम पाञ्शी जोगी तीता । नन का य वा एव उपाहरण नाम प्रस्तुत
 किया जा रहा है

इच्छा कही कि भाग्यकन जिहृ हृत परया विदस ।
 हिया भयो जति गात्रो उच्यत नय ज वस ॥
 छिन उवत उछरत ज छिन प्राण विना स नेत ।
 जा दिन त सीमा तजी वदा वानन छत ॥
 तन ज भयो जति दूवरो मन दूवरो विराट ।
 डगमगानि हे नावरी अब तगाइय पात् ॥
 जरा असित यह तन भयो तीनो रोग दबाइ ।
 यह त्रजभूमि मुमर सम चनो वीन क पाइ ॥

हरिदास रसिक —

स्वामी हरिदास जी न वृष्ण भक्ति परम्परा म एव पथक सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया
 जिम हरिदासी सम्प्रदाय अथवा सखी सम्प्रदाय कहत है । उन्होन राधा वृष्ण की युगन
 उपासना क धात्र म सखी भाव को प्रधान रखा । इनर जीवन क विषय म जनक विव
 दसियाँ प्रचलित है जा इनर महत्व का द्योतन कराती है । कहा जाता है कि उच्च
 कानि क कवि जोर मक्त होने क साथ साथ यह एक महान संगीतज्ञ भी थे जिनकी
 संगीत कता का मान अकबर भी करता था । प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन ही थे वा शिष्य
 थे । नक सम्प्रदाय म इनक अतिरिक्त विटठनविपुन विहारनीदास सरसदव
 नरहरिदेव रसिकजी तथा त्रितत्रिशाही जादि अ य गुरजा के नाम भी उल्लिखित
 किय जात है । हरिदासजी के निरख अथवा म साधारण सिद्धांत जोर राम के पद
 नामक प्रसिद्ध है । इनम स प्रथम म गास्वामी जी न अपन सम्प्रदाय न सिद्धांतो का
 निरूपण किया और अंतीय म भावपूण पदा को स्रष्टीत किया है ।

वल्हभाचाय—

कृष्ण नाम की परम्परा में महाप्रभु वल्हभाचाय का नाम विज्ञाप रूप में महत्वपूर्ण है। इनके पूर्वज काकरवाड नामक गांव में रहने वाले राजा थे। वल्हभाचाय जी के पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट था। इनकी माता इन्दुमती थी। वल्हभाचाय का जन्म संवत् ११३५ में हुआ था। इनकी शिक्षा का काम भी इनके ही हाथ में रहा। ग्यारह वर्ष की उम्र में ही इन्होंने शास्त्र ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अपने पिता के देहावसान के पश्चात् इन्होंने भारत के विभिन्न छेडा की अनेक बार यात्राएं की और शास्त्रों में प्रसिद्धि प्राप्त की। कहा जाता है कि विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय ने एक बार शास्त्रों का जायजत किया था तब भी वल्हभाचाय जी ने अपने प्रकांड पांडित्य का परिचय दिया। इसलिए इन्हें विष्णु सम्प्रदाय का जाचाय घोषित करके राजा कृष्णदेवराय द्वारा कनकामिषिक्त किया गया। इन्होंने मद्युरा की ओर यात्रा की अनेक यात्राएं की थीं। कहा जाता है कि संवत् १५६८ में उन्होंने श्रीनाथ जी का मंदिर बनवाया था। उनकी प्ररणा में संवत् १५५६ में पूरनमल छेडा में श्रीनाथ जी का एक विशाल मंदिर भी बनवाया था। वल्हभाचाय जी ने विवाह भी किया था और उनकी पत्नी का नाम महान्ता था। उनके पुत्र गोपालनाथ तथा विठ्ठलनाथ थे। वल्हभाचाय जी ने वल्हभा उम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। वल्हभा उम्प्रदाय में उनकी यात्रा पुष्पिन्सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुई जिसका मूल दार्शनिक सिद्धांत 'शुद्धांतवाद' कहलाता है। वल्हभाचाय जी के निष्ठा में ८४ का जीवन विवरण चौरास्ता वल्हवन का वाता में उपलब्ध होता है। उनमें प्रमुख ग्रंथों में वल्हभा उम्प्रदाय का मूल नाम अथवा अर्थनाम मूल नाम प्रकरणानि भागवत टीका अथवा भाष्य टीकादिना पाठ्य ग्रंथ (पुष्पाद्यक वाचबाध सिद्धान्त मुननाथजी पुष्पाप्रवाह धर्मांग भू नवरत्न सिद्धान्त रहस्य, अतःकरण प्रवाध विवक धर्मांग वल्हभा उम्प्रदाय चतुर्नामा भक्ति विधिना अथवा पंचपद संपादनाय निराध नाप संपादन) पद्मनाभम्बन गितांगनाथ मधुराद्यक वाचबाध प्रभात पुष्पाद्यक सहस्रनाम त्रिविधि नामावली उपलब्ध विवरण आदि हैं।

वल्हभाचाय जी ने अपने सम्प्रदाय में परम ब्रह्म में ही उनका धर्म का निश्चित स्वरूप रखा है। उनके मतानुसार ब्रह्म अमय अर्थात् अपने ही रूप में ही रहने वाला होता है। अतः वल्हभा उम्प्रदाय नामक सम्प्रदाय का अर्थ भी श्रीनाथ और निराध भाष्य भी वह स्वयं ही करता रहता है। वल्हभा उम्प्रदाय में कृष्ण का ही परम गुरु स्वीकार किया गया है तबनाम गुरु ही है। वल्हभाचाय जी का स्वयंवाचक मन्त्र १५८७ में रखा था।

गोपालनाथ—

गोपालनाथ जी का जन्म संवत् १५६८ में हुआ था। महाप्रभु वल्हभाचाय जी के पश्चात् उनके अष्ट पुत्र गोपालनाथ इनके उत्तराधिकारी हैं। गोपालनाथ जी ने अपने

सिद्धांत का कुछ समय तक प्रचार किया परंतु उत्तर प्रदेश में प्रख्यातम का निधन उही के जीवन कायम हुआ गया था। परंपरागत कविता का प्रचार सतत मत्स्यनामा तथा तन्मी था। इनके पश्चात् सवत १५६५ म २८ वर्ष की उमिर अवस्था म गोपीनाथ जी का भी देहांत हुआ गया।

गोपीनाथ जी ने अपने सम्प्रदाय का धर्म भाषा का प्रचार मुख्यत मुजगात प्राप्त किया था। गोपीनाथ जी का एक पुत्र माधवजीपिता नाम म उन्निमित्त किया जाता है। गोपीनाथ जी का यति चारुणक म हुआ गया था जाय था। माधव यह अपनी गद्दी पर अधिक समय तक रह मर जीर म इन मुद्दर माता का यास करके पुष्टि सिद्धांत का प्रचार किया।

बिटठलनाथ—

श्री बिटठलनाथ जी का जन्म सवत १७३२ म हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ही सा बाली म हुई थी। इनकी प्रथम पत्नी का नाम कमिणी था। इस विवाह म इनके छ पुत्र हुए जिनम सवत १५८३ म गिरधर जी सवत १५८८ म गाविल्लरामजी सवत १६०६ म बालकृष्णजी सवत १६०८ म गोकुलनाथ सा सवत १६११ म रघुनाथ जी तथा सवत १६१५ म यदुनाथजी हुए थे। सवत १६१६ म उनका पत्नी का मरतु हुआ गया। कहा जाता है कि सवत १६२४ म गंगा तुंगोती के जाग्रह म उनका दूसरा विवाह हुआ। उनकी दूसरी पत्नी का नाम पद्मावती था। इस विवाह म सवत १६२८ म उनका धनश्याम नामक पुत्र का जन्म हुआ। उनका साता पुत्रा न तिन जागे चत्तकर सात पवन भद्रिया की स्थापना हुई। गास्वामी बिटठलनाथ जा न तिन एक प्रमुख ग्रंथ म विमल निबंध प्रकाश टारा जणभाष्य का अंतिम उप अध्याय सुवादिना की पूर्ति और लिपिणी मन्त जल मन्त हनु मन्त निषय पाठशाला पर टाका विनक्ति तुंगार रस मन्त निषय ग्रंथ स्पष्ट स्तान्त तथा टीका जादि है। गास्वामी बिटठलनाथ जी की मन्त परम्परा म जनक मन्त तथा शिष्य एक जिनम २५२ प्रमुख थे। इनके सम्बन्ध म विस्तृत विवरण २५२ बण्णवा की वाता म मिलता है। गास्वामी बिटठलनाथ का एक मत्स्यपूण काय अष्टछाप का स्थापना था। यह जाटा कवि तथा मन्त अष्टसखा भी कह जात व। इनम चार महाप्रभ बलभावाय के शिष्य व जीर चार गोस्वामी बिटठलनाथ के शिष्य व। बलभावायजा के शिष्या म कुम्भनदास मूरदास परमानन्द दास तथा कृष्णदास व जीर बिटठलनाथजी के शिष्या म गावि स्वामी नन्ददास टीन स्वामी तथा चतुर्भुज दास व। बिटठलनाथ जा न अपने साता पुत्रो के तिन सप्तह अववा सधनीठ की स्थापना की। उनका स्वगवास सवत १६४२ म हुआ।

गोकुलनाथ—

गास्वामी गोकुलनाथ का जन्म सवत १६०८ म हुआ था। यह गास्वामी बिटठलनाथ जी के चौथे पुत्र थे। इहान बलन सम्प्रदाय के पुष्टि माग का प्रचार

किया। या गाम्बामा बितठनाय जा क परवान उनक ज्येष्ठ पुत्र गिरधर जा प्रमुख
 आचार्य हुए थ परन्तु सम्प्रदाय क मम का समपन वान जाना क रूप म गानुनाय
 जी ही विवात थ। वाता-साहिय क प्रवचनकता का अय भा इहा का है। इनका
 स्वगवास सवन १६८७ म हुआ था। इनक अतिरिक्त बितठनाय जी क दूसर पुत्र गाविद
 राय क वंशजा म कल्याणराय तथा हरिराय नभा इस सम्प्रदाय क मद्दानिक प्रचार
 काय म योग दिया। हरिरायश्री न रसिकराय हरिधन तथा हरिदास नाम स भी ग्रंथ
 रचना का थी। बल्लभ-सम्प्रदाय क मद्दानिक पंथ की व्याख्या तथा प्रचार का दष्टि
 स इन सता क नाम विंगण रूप न उल्लिखित किय जात हैं।

कुम्भनदास—

अष्टछाप क आठ कविया म कुम्भनदास सबप्रथम थ जिहान बल्लभाचार्य जा
 स दीक्षा ग्रहण का थी। इनका जन्म सवन १५२५ म हुआ था। चौरासी ब्रह्मण की
 वाता तथा अष्टसप्तान का वाता म इनक जावन स सम्बन्धित विवरण उपलब्ध है।
 कुम्भनदास जा क जावन ज्ञान म जकबर जोर मानसिंह स उनका भेट हुई थी। वह
 जाति क क्षत्रिय थ। सवन १५५५ म उहान बल्लभाचार्य जा उ शी ता ग्रहण का थी।
 इनक पुत्र चतुर्भुजदास थ जा अष्टछाप म दाखिल हुए थ। इनक जावन का साक्षा
 और सरसता क सम्बन्ध म जनक किवन्तिया प्रचलित हैं। सवन १५६० म कुम्भनदास
 की मृत्यु हुई था। कुम्भनदास क विषय गुण पद रागकल्पद्रुम तथा रागरत्नाकर आदि
 ग्रंथा म मगलान हैं। उहान सवा उत्तम कृष्ण जन्म रागा धमज नाता ज्ञान मान,
 मुरवा विरह आदि विषया स सम्बन्धित पदा का रचना का है। कुम्भनदास शायक स
 भा प्रकाशित ग्रंथ म इनक पद उल्लेखित है। कुम्भनदास क काव्य क कुछ उदाहरण
 नीच प्रस्तुत किय जा रह है

आई रितु बहु निशि पून द्रुम वानन
 काकिना समूह मिति गावत बधतहि ।
 मधप तु ज्वरत मिन म्रप मुर
 भया है हुनास उन मन उनव जतहि ॥
 मुग्ध रसिक जन उमगि भर है
 नहि पावत मनमय मुद्र जतहि ।
 कुम्भनदास स्वामिना बनि चनि
 यह समए मिति गिरधर नव कतहि ॥

राज बित्तास रग भरि नाचत नवनकिमार नवनकिशारी ।
 एकहि वस रूप मम एकहि गिरधर म्याम राधिका पाग ॥
 नव पद पीठ अदन नव भूषन नव किङ्किनि अनि कटि धाग ।
 सकस सिधार अनूप बिराजत जाना जिन्नुवन बाध ॥

तान मान बधान सप्त गुर विघाता रनी हे गुप्तर जागे ।
कुभनदास प्रभु गोबधन घर गुराणि बनि बारी गारी ॥

सग्यो री जिनि वा सरावर जाहि ।

अपन रस को तजि चक्रवाका बिलरि चरति मुग्र चाहि ॥
सबुचत कमन अकान पाइ व अनि भ्याभुन दुग्र चाहि ।
तेरे सहज आनि यहै गति यह अपराध बहि चाहि ॥
यह अद्भुत सरि रच्यो विघाता गरस रूप अनुगाहि ।
बभनदास प्रभु गिरधर सागर अग्रत उमगत साहि ॥

सरद सरावर मुभग जग म बदन कमन चार फूल्यो री माई ।
ता ऊपर बठ जुगन छजन मत्त भय भाना करत नराई ॥
कचित वेस मुदस सखी री मधपन की माता जुरि जाई ।
कुभनदास प्रभु गिरवरधरन पावन हे गुरनिन मुग्रनाइ ॥

'मूरदास'—

भक्तियुगीन कृष्ण का य की परम्परा में नवन महान यागदान मूरदास जी का है । मूरदास जी का जन्म जाति के विषय में जन साध्य तथा वाल्मसाय का आधार पर अनुमान लगाया जाता है । उनका जन्म मगन १५५ म ब्राह्मण बताया जाता है । चौरासी वर्षणवन की बर्ता का आधार पर उनका जीवन का सम्बन्ध में पर्याप्त विवरण उपलब्ध हुआ जाता है । भावप्रकाश नाम की टीका तथा बलभक्तिविजय नामक ग्रन्थ का आधार पर भी उनका जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाएँ पात हाती है । कुछ किंवदन्तियाँ भक्तमान की टीका भक्तविनायक भक्तनामावली तथा पदप्रसंग माना आदि से भी ज्ञात हाती है । मूरदास जी की बालशाह अकबर से भेट का उल्लेख भी किया जाता है । इनका जन्म के सम्बन्ध में भावप्रकाश में जो विवरण मिलता है उसके आधार पर यह कहा जाता है कि उनका जन्म दिवस की विवरणों सीही नामक ग्राम में हुआ था । यह जाति का सारस्वत ब्राह्मण था । यह जमाध था । बाल्यावस्था में ही यह घर से अलग एक तानाब क किनारे रहने लग था । सगुन बताने तथा समीत में प्रवीण होने का कारण इनका अनेक भक्त और सबक बन गये । जठारह वष की अवस्था में यह जीवन से विरक्त होकर मयरा चन गये और फिर यमुना क किनार गऊ घाट पर रहने लग । यहा पर उनकी महाप्रभ बलभवाचय से भेट हुई थी । बलभवाचय ने उह पुष्टि माग में दीक्षित किया था । बलभवाचय से ही श्रीमदभागवत विषयक ज्ञान प्राप्त करके मूरदास ने कृष्ण नामा सम्बन्धी पद्या की मूरसागर क रूप में रचना की । मूरसागर क अतिरिक्त उनकी कुछ रचनाओं का पद्यक से भी उल्लेख किया जाता है ।

तबहिं श्याम दूब जुड़ि उपार्ई आपुन रह छपार्ई ।
 तब टाढ़ ज सघा सग न तितवी तिय बाजारई ।
 बठारे ग्वानन की अमतर आपुन फिर फिर दगल ।
 बडी बार भई कोऊन आई मूर श्याम मन मयल ॥

रास तीता का महत्व जीवन और आध्यात्मिक सद्मम है। श्रीमद्भागवत में भी इसका वर्णन मिलता है। मूर न इमका जा रूप प्रस्तुत किया है उगम कृष्ण का वशी वादन गापिया का आगमन कृष्ण गोपी-सखा रास गापिया का मय कृष्ण का राधा सहित अंतर्धान होना गापिया का विरह राधा से मिलन तथा पुन कृष्ण का प्रकट होना आदि प्रसंग है। मूरदास की वशी रास तीता में सद्मम आध्यात्मिक स्तर पर जीवा का आवाहन करनी है। उसमें उगम का चित्रण परब्रह्म परमेश्वर का अर्थ म किया गया है। रास की भावना और आध्यात्मिकता का सद्मम मगर का यह पद दृष्टव्य है

रास रस रीति बरन नहिं आव ।

कहा वसी बुद्धि कहीं वह मन लौ कहीं रह चित्त भ्रम भूताव ।
 जो कही कौन मने अगम जो कृपा बिन नहिं या रसहिं पाव ।
 भाव सो भज बिन भाव म ए नही भाव ही माहि भाव यह बसाव ।
 यहै निज मत्र यह ज्ञान यह ध्यान है दरस दम्पति भवन सार गाऊँ ।
 इहै माग्यो बार बार प्रभ मूर के नन दोउ रहै अरु नित्य नर देह पाऊँ ॥

मूर का प म र धा का चित्रण विशिष्टता रखता है। राधा का मान में सम्बन्धित जो प्रसंग मूरदास ने चित्रित किये हैं उनसे भी उनकी मौनिक कल्पना प्रकट होती है। राधा के मान का विभिन्न प्रसंग पृथक् पृथक् सद्ममों में वर्णित किये गये हैं। राधा कृष्ण का आरम्भिक परिचय मूरदास ने मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता में किया है। राधा का साथ ही गोपिया की भी चर्चा की जा सकती है जिनके विषय में अनेक प्रसंग मूरदास ने विभिन्न तीताओं में प्रस्तुत किये हैं। भ्रमरगीत में गोपियों का प्रेम और भक्ति की अनन्यता का परिचय मिलता है। इस प्रसंग में एक पद उदाहरण के लिए यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

सुने है श्याम मधुपुरी जात ।

सकुचति कहि न सकत काहू सो गुप्त हृदय की बात ।
 शक्ति बचन अनागत काऊ ज गई अचरात ।
 नील न पर गटे नहिं रजनी कब उठि देखी प्रात ।
 नदनदन तो ऐस त्राग ज्यो जल पुरइन पात ।
 सूर श्याम मग से बिछरत है कब एहै कुशलात ॥

मूरदास ने सगुण पद्धति की स्वीकारा या क्योंकि उनका विचार है वह निगण की तुलना में अधिक बोधगम्य है

अवगति गति कछ कहत न आव ।

ज्यों मृग माठ पत्र की रस जतरगत ही भाव ।
 परम स्वात्न सबही मु निरतर जमित ताप उपजाव ।
 मन बानी की अगम जगाचर, सा जान जा पाव ।
 रूप रेख गुन जाति बुाति विनु निरावब कित धाव ।
 सब द्विधि अगम द्विचारिद्वि तात मूर सगुन पत् गाव ।

कृष्ण भक्ति में सम्बन्धित प्रसंगा में मूर्त्तिसुत जनन प्रभावशाली रूपक बाध है जो जीव और ब्रह्म के पृथक्त्व से जीव के बलशक्त का व्यक्त करने वाला है। मूर का विचार है कि भगवान की नीचा का रहस्य यही है कि वह भक्त के लिए ही अवतार धारण करते हैं

भक्त हतु अवतार धरया ।

धम कम क बस म नाहा याग जग्य मन म न करया ।
 दीन गुहारि मुनी श्रवणनि भरि गत्र बचन मुनि हृत्प उडयो ।
 भाव अधीन रही सबहा क और न काहू नक डरौ ।
 ब्रह्मा कीट बादि ली यापक सबका मुख न दुखहि हरौ ।
 मूर ध्याम तब कहा प्रगट ही जहाँ भाव तह त न टरौ ॥

ब्रह्म के सगुण रूप की उपासना करते हुए मूर ने ईश्वर के प्रति अनन्यता के भाव का समर्थन किया है। भक्त की ओर से यह अनन्यता हान पर उक्त भगवान का अनुकंपा प्राप्त होती है। मूर्त्तिसुत ने जपन विनय और भक्ति के पन्थ में भगवान की भक्तवत्सलता का वर्णन करते हुए निरतर भगवत भक्ति की ही कामना की है जो मुक्ति का बाध नहीं जा सकती है। मूर्त्तिसुत की सगुण भक्ति मुख्यतः नाम कीतन पुरुष भक्ति लीला पान, निरत्य कम भगवान का रूप स्मरण भगवान के प्रति पाति प्रीति प्रेम अनुकंपा कांता या मधुरा भगवतरति भाव जाति हैं।

ज्ञानि भक्ति में मूर ने वराह्य भावना का प्राधान्य इंगित किया है। यह वराह्य सांसारिक वस्तुजा के प्रति है। भावान के प्रति यह भागात्मक प्रति है। मूर सागर में दास्य भक्ति के भा अनक पत् भित्त हैं। सध्य भक्ति की उत्तम प्रधानता है क्योंकि इसमें गायसग्राहा और कृष्ण का सम्बन्ध है। वात्सल्य और मूर भक्ति के भी अनक उपाहरण भित्त जाति हैं। मूर ने इस सम्बन्ध प्रसंग के माध्यम से कृष्ण का परब्रह्म परमेश्वर के रूप में राधा का उनकी भक्ति या प्रकृति के रूप में गायिया का जीवात्मा का रूप में मरता का गायमाया के रूप में रास का जाय के ब्रह्म में तब हान के रूप में चित्रित किया है। मूर्त्तिसुत ने कृष्ण का जिनकी भी नानाभावा का वर्णन किया है उन सब में यही रूप का आधारभूत रूप में विद्यमान है। मूर के अनुसार कृष्ण परब्रह्म पूरा ब्रह्म या पूरा पुण्यात्म है। यह भक्त के लिए अवतार तन है। यह चित्र जानने गुना में युक्त हाकर वह मूर्त्त अवतार और भयरे हा रहत है। उनका यह भाव है कि ब्रह्म आनन्द के लिए भीता करता है और उसा से ज्ञानात्मा की सृष्टि

होती है। वल्लभ सम्प्रदाय में माधव ने लिए कमयोग पापाय और भक्ति पायता ॥
वाही महत्व स्वीकारा गया है। माया जीवा को भक्ति कराती है जिसमें मरि की
दारुण याचना मूर व इस पत्र में मिलती है

अब मैं नाच्यो बहुत गुणान ।

काम प्राध को पहिरि तोनना नठ विषय री मान ।

मत्स्योद को नपुर बाजत निपा मर रगाय ।

मरम भय मन भयो पयावज चतत कुमगत चान ।

तप्या नाद करत घट भीतर नाना विधि र तात ।

माया की बटि पया बाधयो तोम तिनक दिया भात ।

काटिक कन काछि दखराई जन वन मुनि नहि वात ।

सरदास की सब अविद्या दूरि करा नानान ॥

मूरदास के असाधारण मत्त्व का सबसे बड़ा कारण उनका वात्सल्य वणन है ।

हिंदी-साहित्य के काल में मूरदास का वात्सल्य वणन जपूज और विनिष्ट है। उनका
पूर्ववर्ती और परवर्ती किसी भी व्यक्ति ने वात्सल्य भावना का इतना समझपनी और
प्रभावशाली चित्रण नहीं किया है। वात्सल्य रस का जानबूझकर मूरदास ने जपन का य
में श्रीकृष्ण का परब्रह्म मानकर उनकी नीलाभा के माध्यम में किया है। कृष्ण का
बान रूप सो दय उनकी शिशु मुनम कीलाए उनका तोनन वाताताप प्रमग उनका सहज
कोतूहन से भर हुए मुख दुख के प्रमग उनके धार्मिक सम्कार और मसार की प्रत्येक
वस्तु के प्रति उनकी सहज जिनासा जादि का भी वणन मरनाम ने विस्तार से किया
है। यह वणन मत्र रूप में श्रीभदभागवत पर आधारित अवश्य है परन्तु उसकी तुलना
में मूरसागर में इसका विस्तार वही अधिक है। तही पर यह वणन जस्यत
स्वाभाविक और सरल जभि यजनाभा से परिपूण है और कही पर उमम जातकारिकता
और चामतकारिकता का समावेश है। जहाँ जहाँ मूरदास ने कृष्ण की अतीविक शक्ति
का परिचय दिया है वहा पर भी उनकी नीलाए सामा य वातका के समान ही चित्रित
की है। मूरसागर वणित कृष्ण की बान छवि का एक उत्साहरण म प्रकार है

हरि ज की बान छवि कही चरनि ।

सकल मुख की सोद कोटि मनोज सोभा हरनि ।

मजु मचक मदुन तनु अनुहरत भूषन भरनि ।

मनहु मुभग सिंगार मुरतरु करयो अम्भुत करनि ।

नसत कर प्रतिबिम्ब मनि आगन घटस्वनि चरनि ।

जतज सपुट मुभग छवि भरि नेति उर जनु धरनि ।

पु यपन अनुभवति सुतहि विनीकि क न र धरनि ।

मर प्रम की बसी उर जिनकनि नित नरखरनि ।

सक्षय में भक्तियुगीन कृष्ण का यकी परम्परा में मूरदास का रचन सबसे अच्छ है।

उ लेन श्रीमद्भागवत के आधार पर मूरसागर की रचना करके उसमें श्रीकृष्ण की

गीता का गान किया है। मूर का विनय भावना तथा भक्ति-भावना के साथ-साथ यह साक्षात्काम्य कथा का कृष्ण का चरित्र भी महत्व रखता है। वपना-मकता का इस काव्य में विना रूप में समावेश हुआ है। विविध कानि वपन वात वपन रूप वपन नार वपन उख वपन आदि के साथ-साथ इसमें प्रकृति-वाचन प्रभाव-वपन वपा-वपन वमत वपन गण वपन तथा यमुना-वाचन आदि के प्रभाव भी समाविष्ट हैं। मूरसास के विनय और भक्ति के पत्रों में गीत रखे तथा कृष्ण का वात-नीला एवं रस वाता के वपन में वात्सल्य और गृहार रसा का प्रधानता है। जय रस भी स्वान्मान पर समाविष्ट हुए हैं। मूर के स्वयं प्रसंगिक और अस्वाभाव्य रूप में ही मिनत है। जालकारिकता का चरित्र भी रूप में समावेश का प्रयास मूरसास ने विना रूप में किया है। जय अवतार अवधान रूप में प्रयुक्त हुए हैं। भ्रमरागत आदि के प्रसंग में मूर ने नती स सम्बन्धित जनक पर यह आत्मबत मानकर लिखे हैं। मूरता के सम्बन्ध में भी मूर ने बहुत उपाय लिखे हैं। इनके माध्यम से मूरसास ने भगवत प्रेम का अनन्यता का अभिव्यक्ति का है। कृष्ण की वाता माग माया के रूप में वपित हुए हैं। उनका ध्वनि वाच मात्र के रूप में भावने प्रेम का स्वरूप करने वाली है। निगुण और सगुण से सम्बन्धित पर उख के प्रसंग में मिनत है। इस प्रकार से मूरसास ने जपन इच्छा धाकृष्ण का पून पुण्यात्तम मानकर उनके निगुण और सगुण शाना रूप बनाये हैं। मूर उतर में जा कुछ भा है, चाह वह वाच रूप में ही चाह जगत रूप में और साह नगुण देवता रूप में वह सब उही परब्रह्म का जा है। परब्रह्म के रूप में जपना आदि मूर गति राधा के साथ विहार करने है। मूर ने ब्रह्म प्रकृति और पुण्य का इस प्रकार से जड़तता स्वाकार का है। जपन इच्छा धाकृष्ण के प्रति मूर ने जन के भक्ति भाव अभिव्यक्ति करने हुए उनके गुणवतारा में भी जागध प्रसा व्यक्ति का है। मूर के विचार उख से उभा स्वता तथा भक्ति माग कृष्ण प्रेम का प्राप्ति का माधन है। मूर उभा प्रसंगा में सम्बन्धित पर मूरसास में प्रचर रूप में जपन में ही है बिनका उख ऊपर भा किया जा चका है।

परमानन्द दास—

धा परमानन्द साह का जन्म मवत् १९२० में और मृत्यु जवत् १९६१ में हुई था। उनका जन्म-स्थान कन्नौज था। वह एक निम्न कायक के शास्त्रज्ञ पुत्र में जन्मे थे। कहा जाता है कि इनके जन्म के दिन इनके माता पिता का कर्ण उखाल घन राम हान के कारण था परमानन्द साह उता का मुकदमे नती नाम परमानन्द रखा गया। साह में वह उख घन जपन हा गया तब यह साविका के उख उख चन मने। इनका प्रारम्भिक शिक्षा कन्नौज में हुई थी। सा परम्परा उहा भवतभक्ति के प्रति उनका रचि था। एक बार स्वने में प्रसंगा पाकर परे महारम ब-नभावाय के दान करने गए वहीं उख नदु गीता का। परमानन्द साह का विद्या हुई कृषिमा में साह गीता धुव चरित्र परमानन्द साह का रूप बन्धन

है। भगवान् क प्रति सत्य भाव से दान उारी बात रोडा गोराग्न प्रमग तथा वृष्ण का सघाजा व साव आमा प्रमा वनिा रिया है। बाव तीत व कुछ प भी इहान निय है जिनम हान आत्मात्माग तथा य भारता ता अधिध्यवित री है और भगवान् से कुजुडि काम रोध आ विवारा का हरण करत अपनी भक्ति का अनुपह प्रदान करने की वितती री है। व उभाचारो री दान हरि रूप म रना का है। इनके काय म कत्मात्मकता और गवनानुभूति का प्राधाय मितता है। कृष्णस अधिकारी व काय व कुछ उगाहण स प्रार है

निवृज म वनु मधुर वन गाव ।

सप्त सुरन म रसिहराय पिय रमिति ताय तुताय ॥
सरद च रजनी म रजिन मनम माह वदाय ।
औपर तान मान सपूरन सगीन गुर उपजाय ॥
व दा विपिन विविध तुमुमावति मधय वमन उरगाय ।
वाकिल मार चकार सार मुक मगत स गुनाय ॥
मुदर मुभग मुख जमुना तट रसिकन का जिय भाय ।
कृष्णदास गिरधर मुख सागर भाष व माई पाव ॥

नीकी माहि नाम्यो मी गिरधर गाव ।

ततयइ ततयई ततयई ततयइ भरव राग मिति गुरनी वजाय ॥
नाचत नप वृषभान नन्नी जीधर गति तरग उपजाव ।
नूपर रनित कुनित मनि कवन जुवति जूथ रस रासि बजाव ॥
मुरति दन मनु मत्त मधुप कुन एक ताव सब व जिय भाव ॥
गिरधर पिय प्यारी क प रज कृष्णनाम योछावरि पाव ॥

जगत्पाव मन माह नियो र ।

घर अगना मोह कछु ना भाव नाक नाज सब छा दिवो र ।
नीन चक्र पर ध्वजा बिराज परसत ही आन द भयो र ॥
सावरी मूरत रज नपटानी नान दुसाना आठ नियो र ।
मी वलभद्र सहादरा सगहि कृष्णनाम बनिहार किया रे ॥

गोवि व स्वामी—

गोवि स्वामी का ज म गवत १२६२ तथा मत्यु सबत १६२२ म हुई थी। मह भरतपुर क आनतरी गाव क निवासी थ। जाति के यह सनाढ्य ब्राह्मण थे यद्यपि उनके म ता पिता क वश और परिवार क विषय म अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा क विषय म भी कोई विषय विवरण उपलब्ध नहीं होता है परन्तु काय और संगीत शास्त्र का यह उच्च काठि का ज्ञान रखन थ। सबत १५८२

म यह गातुन आय जोर गाम्बामा विद्वतनायत्री म दा ता उकर सम्प्रदाय न सम्मिन्तित हा गय । इनकी बहिन कानवाइ ना कहा क साय सम्प्रदाय न सम्मिन्तित हुइ था । मगीत गाम्ब क यह इतन बर अधिकाग य क्रि तानसन ना इनका गिष्य बन गया था । इहानि भावान क प्रति जनय भाव स भक्ति का । इनक भाव विमुग्ध पना पर ताय मुग्ध रहत थ । कहा जाता है कि एक रात्र जकबर बाग्गाह ना वष बानकर इनका गायन सुनन आय थ ।

इनक विश्व दृग् स्पष्ट पना हा अपनय हान है । इनक बान्य न जात की उत्पत्ति जगत तथा इश्वर क साय उनक सम्बन्ध बाणि क सम्बन्ध न काइ स्वतन्त्र ताननिक विचार नहा मिलत । इहानि अपन एक पना म माता का विषय विष सागर क रूप म बणित किया है । इसम उहान यमुना म काम जात प्राणि जनान क अधकार तथा दहिक शक्ति और भोक्ति तापा न मुक्ति का प्रादना का है । इनक पना म अविद्या अथवा विद्या भाषा का भा उग्र रूप म विवचन नहा मिलता जसा कि इस सम्प्रदाय क अन्य कविया म । इहानि प्रम भक्ति का महिमा बतूत अधिक बनाया है । इनका वि वान है कि प्रम भक्ति स हा भगवन् प्राप्ति हाती है । प्रम भक्ति का वह स्थिति जन्तिम है जब भक्त कवन भगवन-नवा का ही प्रधान समन कर उरख परिपालन करेता है । गतारा गाताहुन मायनचारा तथा पातना प्राणि क पना यह विचार स स ताया करत थ । इ हान कृष्ण की भक्ति ताम्य भाव न नहा का था । हान का बान गता गावाग्ण मायनचारा प्राणि का जा बपन इहानि प्रस्तुत किया है वह तनी मय भक्ति भावना का परिचायक है । बावन्ताना क जा पना हान विश्व है व तना व सत्य भाव व भक्ति का नू सिद्ध करत । इनक गृ गागिक पना म गागिया हा स्वभाषा भाव उ हा चित्रण मिलता है । गाविन् स्वामी क पना म गुण क प्रति ईश्वर भाव था मिलता है । गाविन् स्वाना क काव्य क कुछ उदाहरण नाथ प्रस्तुत किए जा रह है

कहा कर बकगृह जाय ।

जहै कहि कूरु उता जनि काहिन मरु नुाध न वाव बहोर ॥
 नहि बरा मुनिमव यवनन बउा धुन कृष्ण न मूरुन अघर ताप ॥
 सारउ हस मार नहि बानत तं की बउिरी कीन मुहाय ॥
 नहा बरा बर व तावन बाधिन गाता नर प्रसाग माय ॥
 गाविन् प्रभ गापा चरनन का बर रज तत्रि वहा जाय बतप ॥

नात्र ययी अति बन गिगिधरन ।

निरति मयन विपकेत भद्र जाना विपिन नर गति चरन ॥
 कृष्णभा पाय त कि रूा जाय गि हरित चाइ जवनत करन ।
 गिष्यार डाइ विर नाशन ईशमा अत मर धरन ॥
 चरक हृमुम मान ह चरबचित अह अति उवि पाठ चरना चरहरन ।

गाविद प्रभ चित्त चारयो चिर्त करि ईपद ह्यम प्रियाती प्रतित मनरुन ॥

रदम गति का ह तुनावत गया ।

मोहन मुरली तो सब गुनत ही जली तहो ग उठि धया ॥

आव आवहु सखा विमिटि सब पाई है इठया ।

गाविद प्रभ बनदाऊ मा रहन नाग जत्र पर ती बग या ॥

नन्दास—

नन्दास नाम जन्म सन्त १५७० तथा मृत्यु सन्त १६४० म हुई ॥ यह गुरुरक्षत्र क रामपुर गाव म जन्मे ५ । जाति के मनास्य ब्राह्मण थ । इनका पिता जीराम और चाचा आत्माराम थ । इनके सग भाई चन्दास थ और रचर भाई पुनगीनाग । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नरहरि पंडित द्वारा हुई थी । एक बार यह एक साधु सन ५ साय मथरा पहुचे । वहा से यह गाकुन आय । गोत्र न म विटठननाथ जी व उत्पन्न थ इह शाति मित्री और उही म इहाने सन्त १६०० म दीक्षा ग्रहण की । नन्दासजी क प्रथम जनेनाथ मजरी अथवा अनेकाथ नाममाना अथवा अनयावभाषा मान मजरी अथवा नाममजरी अथवा नाममाना अथवा नामार्चनामणिमाना रसमजरी रूपमजरी विरहमजरी श्याम सगाई मुग्धाभा चरित्र हविमणी मगन भ्रमर गीत रास पचाध्याया सिद्धांत पचाध्यायी तथा दशमस्कन्धभाषा आदि है ।

नन्दासजी बल्लभ सम्प्रदाय क अनुसार जन्त ब्रह्म क समवय थ जोर कृष्ण का ही परब्रह्म मन्ते थ जा गावल अथवा गानोरु म रस रूप म पीना करत रहत है । उ हाने कृष्ण क अपार रूप गण जोर कम बताय है । सत्त्वि की रचयिता माया रूपी शक्ति भी कृष्ण का अनुगामिनी है जो ससार का भ्रमन पानन और सहार करती है । कृष्ण एवम बीय यज्ञ श्री नान और वराग्य पट गणो स सप न होकर समय ममय पर अवतार धारण करते है । वह अज म है और अन त ह्य ह । उ हाने कृष्ण का परमपुरुष के रूप म समस्त जन् चेतन का कारण बत या है । अध्यतन प्रत सारा ममार उ ही का रूप है जोर कान का विस्तार उ ही की पीना का विस्तार है । वह सब यापी और ज तर्क्या है । नन्दास ने समस्त जड और चतन सत्त्वि के मन म एक ही शुद्ध तत्व स्वीकार किया है जो परब्रह्म श्रीकृष्ण रूप है । उ हाने अविद्या माया क प्रभावित नसार का सारहीन बनाया है । माया का बगन करने का उ हाने उमका एक रूप वह बताया है जो ब्रह्म की जाति शक्ति स्वरूपा है । यह माया सत्त्वि का सजन पानन जोर सहार करती है । उसका दूसरा रूप वह है जो समस्त ससार का विमाहित बिय रहना है । जब अविद्या माया का पयक कर लिया जाता है ता प्रवृत्ति माया का माध्यम रूपी दाण भी हटा लिया जाता है तब ब्रह्म के शुभ्र गण ही दशित हाते है । जब ससार की माया क दुख स जीव छूट जाता है तब प्रम भक्ति की परम आनन्द की अनुभूति हाती है ।

काव्य कला की उत्कृष्टता की शक्ति ने नान्यथा का मान अल्पशायक के कविया
 म नान्यथासु न पश्चान् सर्वप्रमुख है। उन्होंने अपने स्वमन्त्रण नामक ग्रन्थ में नाविका
 भण्डावत का भाव हुआ कि तथा स्त्री भण्डावत का वान किया है। यह कृति नान्यथासु न
 भानु कवि विद्वित नक्षत्र ग्रन्थ स्वमन्त्ररी के जागार पर किया है। यह रचना उनके
 काव्य शास्त्राय नाम और जाचामव का भा परिचय रना है। अनन्तर मन्त्रण म कवि
 न शान्ति विचारधारा का प्रकट किया है जिसका पम्बद्ध मुद्रा उत है। इसमें
 उन्होंने कृष्ण भक्ति के उद्देश्य कृष्ण का नाम महिमा भावन मन्त्रण का कामना मान
 सिद्ध विचारों के परिचाय जादि का उद्देश्य किया है। मान मन्त्ररी और नाममात्रा
 म कवि न राधा के मन का प्रसंग वर्णन किया है। शान्ति रूप में उन्होंने शान्त
 भाववत् के आधार पर विद्वित विषय वर्णन किया है। शान्ति नाम का कवि न
 इन्द्रपुत्रा के अवसर पर कृष्ण के चरित्र का एक ज्योतिषिक पन्ना का वर्णन किया है।
 मुत्तमान्त्रि नामक कृति की प्रेरणा भी शान्तभाववत् का है। यह एक उत्कृष्ट
 नाकद्रिय काव्य है। विरह मन्त्ररी म कवि न एक ब्रह्मवादा का विचारधारा का
 भावात्मक चित्रण किया है। स्वमन्त्ररी एक तप आश्रित है जिसमें स्वमन्त्ररी के
 ज्योतिषिक प्रेम का परिचाय और कृष्ण के प्रति प्रेम भाव का वर्णन है। इसका जाघार
 पर नान्यथासु न अपने आध्यात्मिक विचारों का भा प्रकट किया है। दक्षिणामण्ड
 की कथा भी शान्तभाववत् के दामम्बद्ध से ला गया है जिसमें राजा भास्कर की
 स्ववती कथा शक्तिमत्ता का हरण और कृष्ण न विवाह वर्णन है। रासवचाध्यायी
 म नान्यथासु न अपनी आध्यात्मिक विचारधारा और ज्योतिषिक कृत्तर का भावना
 अभिव्यक्त की है। इसमें उन्होंने आध्यात्मिक शक्ति में कृष्ण का परब्रह्म और
 गाविया का उनका जगत्की आत्मा माना है। प्रमत्तान् म गावा विरह तथा
 उद्वेग मवात् का वर्णन हुआ है। सुगुण और निगुण भवनाओं की विवचना इसमें
 विस्तार से की है। नान्यथासु के अन्य ग्रन्थों में गुणभक्तिमा समुनान्त्रुति वान रूप
 पालना शान्ति पत्रधर्त हिन्दुत्वा शान्ति शान्ताना राधा कृष्ण रूप-वर्णन
 तथा उत्सव-वर्णन आदि के प्रसंग हैं। नान्यथासु के काव्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

राम कृष्ण कल्पित उठि मार ।

अथ इस के धनुष धर है म उर माउन वार ॥

उनके छत्र चकर सिंहासन भक्त स्रष्ट हन मठमन वार ।

इतक नहुन मुहुट पात्राम्बर नित गावन म नद विहार ॥

उम सागर म विना तराई इन राकरी गिरि नथ का वार ।

नान्यथासु प्रभु सब नत्रि भक्तिई अथ निरघटि च चार ॥

गुण शान्त पारन मून ।

श्री मरे लान मनाहर मुन्त्र कहि कहि मपुगी बाना ॥

माधन मिश्री और मिश्री दूध मलाई जा।।
छगन मगन तुम करदु रनऊ भरे रात्र गुण गा।।
जननि बचन मुनि नुरत उठ हरि रहा बा।। रागनी।
नन्दाम ती ही बनिहारी जगुमति मन हरपाना।।

जो गिरि रुच तो बसो श्री गोवधन ग्राम रु।। ता यगो १ गाम।
नगर रुच ता बसो श्री मधुपुरी साभा सागर अति अनिराम।।
मरिता रुच ता बसो श्री यमुना तः सात मारण पूरन राम।
नददाम काननहि रुच ता यगो भूमि रणयन धाम।।

छीत स्वामी—

छीत स्वामी का जन्म मवा ११७२ और मरु मरुत ११८२ म हुई थी। इत्या
ज म स्थान मरुता था। उनके माता पिता जयवा परिवार क विषय म रा उल्लेख
नही मिलता। बचन सम्प्रदाय म स्थाित हान क पून य० मायन विद्या क पाता य।
गोस्वामी विद्वाननाम जान इह दीक्षा ती थी। इनके तिम ह्य स्फुट पत्नी उपन ध
होत हैं जा विभिन्न सग्रहा म सग्रहीत हैं। इनक काव्य क कुण रणहरण इत
प्रकार है

मरी जखियन क भूपन गिरिधारी।
बनि बनि जाउ छीनी छवि पर अनि जानु मुखकारा।।
परम उगार चतुर चिंतामनि ररन परम दुष्टारा।
अतुन मुभाव तनक तुनमा रन मानन मवा मारी।।
छीतस्वामी गिरिधरन बिसः जस गावत है कुनारी।।
कहा वरन गन गाव नाथ क श्री विदुन हृदय विहारी।।

ज बमुख किय पूरन तप तइ फन फरित श्री विद्वान भेव।
ज गापान इन गोबल म सोई जय गति बम निज गह।।
ज क गाप बध ही ब्रज म सो जब वः मृचा मः यह।
छीतस्वामी गिरिधरन की विद्वान तेई एई एइ तः कछ न सदेह।।

चतुमजदास—

चतुमजदास का जन्म सवत ११७१ और मरु ११४२ म हुई था। यह गोवधन
के निरुत्कर्ती जमुनावता नामक ग्राम क निवासी थ। यह जाति क क्षत्रिय थ और इनक
पिता अरु छाप क कवि कम्भननाम थ। इ हाने अपन पिता स वायावस्था म हो का य
और सगीत की शिक्षा प्रा न की थी। भगवत भक्ति की ओर भा इनकी रुचि थी। अष्ट
छाप म यह भी अपन पिता के साथ सम्मिलित किय गये थ। इनक एत पुत्र ना उल्लेख
मिलता है जिसका नाम रागीनाथ था। इनकी भक्ति भावना अन थ था और उसी म

यह उपाय तब रहत है। तब एक पत्नी के कुछ मरहटा का उल्लेख किया जाता है
 त्रिनम चतुर्भुज कातन मरहट कातनावत। तथा गानताता है। तबक जतिरिक्त
 इनका तिता दूरे मनुमानता तथा भी न प्रताप पापक स अय कृत्रिया का ना उल्लेख
 मिलता है त्रिनका प्रानाधिकता मन्त्रि है। चतुर्भुज कात व काय के कुछ उल्लेख
 इस प्रसाह है

माइ तन उरु जा मर तां भाव ।
 त्रि माउन वायुना उडाता ना मुन व वरुं बाकी त्रिनती जाव ॥
 पतना चूनत नन उव जागध्नी जउन जतन कारि घट्टजन घाव ।
 उरवत ताहि उरगा जं मर नातर गाविं या या वतन सिजाय ॥
 यह अनिताप तन त्रिन प्रति वन नगो माहन धनु चराव ।
 चतुर्भुज प्रन गिठिघरत वात का निरखि निरखि उरनन सिगाव ॥

प्याय नर दावा मति न वन पाय मुदान ।
 मुनि परापर उन गति म मुगति
 प गति राज गिरघरन मुन तिघान ॥
 मरुत मुरता प्रति सा निन सप्ट तुर
 राव री भात गाव और तात वपान ।
 चतुर्भुज प्रन स्वाम स्वामा वा तन्ति त्रि
 मात या मी उर यदिव दान विनात ॥

मीराबाह-

मस्तिशुगीन दृष्ट राघ्य का परम्परा म मागबाह का नाम ना विपय रूप उ
 उल्लेखनाय है। तबक पत्नी का प्रचार त्रिपिन नास्वाय म्पु पर है। यह राजापाल का
 रहत वाता था। तबक जावन न म्पुगित्त विभिन्न परदाजा तथा उरगा निषिया क
 विषय म विभिन्न विनात म परम्पराक वनन है। मारा का जावन अचरु टुमय
 था। बात्वाव था म हा उरगा माताजा मनु टा गया था। तबक तितानह दूरा न
 उरगा पावन पापत रिता था। दूरा न उदावमान के पाचा उरगा पुत्र बागमन्व न
 मारा का विवाह नात्राज म गग रिता। कछ हा वग उ वात वरु विउबा टा गया।
 तबक पिता म्पुगित्त ना एक मुद्र म बार त्रि का गाय था तथा उरगा म्पुगित्त गाय
 छाया का ना उदावमान था था। उरगा पत्नी नात्राज के छा माइ म्पुगित्त का
 म तु तां पर मसाह हा म्पुगित्त तबक मीरा बाह विषया उरगा के पाप म जा
 गया। माग का नति भावना और म्पुगिता राया का अय व ना म्पुगित्त उरगा न
 तबक बाग माग का म्पुगित्त का म्पुगित्त विषया परन्तु नात्राज का दूरा के का
 माग का काई म्पुगित्त न्ता था। म्पुगिता का पुत्र माग क विषय में भा वि म्पुगिता म
 मन्त है। कछ म्पुगित्त उरगा म्पुगित्त विषया का कछ तां म्पुगिता विषयनाय

को, कुछ लोग तुलसीदास का तथा कुछ लोग जीव गोस्वामी का उपासक हैं। भोग की कृतियां म नरसीजी से माहिरो गी। गोविं की टीका राग गाविं तारन र प मीराबाई का मन्तार गर्वा गीत राग बिहार तथा पटवर प म आदि हैं।

मीरान र य और माधय भावन भगवत् भक्ति की। इनका म रिरह का आनन्दता और माधय भावना का मार्गमन् रूप म रिरण मितता है। उनकी भावना म राजस्थानी ब्रज और गुजराती र ता म माय पत्रावी जीर छकी बानी र षण भी मितत है। इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना मीरा पत्रावनी र नाम से विख्यात है। मीरा के काव्य के कुछ उदाहरण रस प्रकार हैं

मन र परसि हरि र तरण ।

सुभग सीतल रवन कामन त्रिविधि रवाना हरण ।

जिण चरण पहनाद परम इ र पदवी धरण ।

जिण तरण धव अटन वान राधि अपनी सरण ॥

माई री म नोया गावि दी मान ।

कोई बहै छान कोई बहै चोड लिया री बजता वान ।

काई बहै मट्ठो काइ सहधा नियो रो तरानू तीन ।

काई बहै वारो काई बहै गोरो नियो री आवी छान ।

याही क सब नाम जाणत है नियो री जांखी छान ।

मीरा क प्रभ दरशन दीयो पूरव जनम की कोन ॥

ह री म ता दरद र्वाणी होइ दरद न जाण मरो कोइ ।

घाइत की गति घाइत जाण की जिण नाई होइ ।

जौरि की गति जौहरी जाण की जिन जौहर हाइ ।

सूनी उपर सज हमारी सोवणा किस विध होइ ।

गगन मन्त प सेव पिया की किस विध मिनणा होइ ।

दरद की मारी बन बन डोनू बेद नहिं मित्या कोइ ।

मीरा की प्रभ पीर मिटगी जब र सबनिया होइ ॥

रसखान—

भक्तियुगीन कृष्ण का य की परम्परा म रसखान का नाम भी विशेष रूप से उत्सवनीय है। यह जाति क मुसलमान थ। इनका जन्म सन १६१२ तथा मृत्यु सन १६८५ म हुई थी। इनके जीवन के विषय म अनेक किंवदंतियां का प्रचार है। दो सौ बावन वर्षवन की बानी म भा इनका जीवन विवरण उपर ध है। कहा जाता है कि इ लान अपन व्याकुल वित्त की ताति क त्रिण गातुन जाकर श्रीनाथ जी क दगल किये। वहा इ हाने गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी स दीक्षा ग्रहण की। विठ्ठलनाथ जी न इ ह

अपन २०१ प्रमुख सिध्दा म न्यान लिया । इनही तिता दुद दा कृतिषा उरतव्य है
जिनन शीपक प्रम बाटिका तथा 'भुजान रसखान है । इनही रचनाया म जा उत्तम
मिचते है उसस यह मुगन बादगाह जहागीर क ममकालीन सिद्ध हात है ।

इनकी भाषा ब्रज है जोर इहाने अन काव्य म गीता, कविन और सबया छदा
का प्रयोग किया है । भावन प्रम का मामिक जोर जन यता स मुक्त रूप इनक काव्य म
उपनघ हाता है । इनक काव्य क कुछ उदाहरन इस प्रकार है

मानुष हों ता बही रसखान, बसों सग गाकुन गाव क ग्वारन ।

जो पमु हों ता कहा बमु मरा चरों निन नद की धनु मथारन ॥

१ पान्हन हों ता बही गिरि को जा बिया हरि छत्र पुरदर धारन ।

जा यग हो ता बचरा करा मिनि कातिनि कूल कब की डारन ॥

मम महस गनस तिनस मुरसहु जाहि निरतर गाव ।

जाहि अनाज जनत अयड अछर अभद मुअ बनार ॥

नारन म तुक व्यास रन पत्रि हार नऊ पुनि पार न पाव ।

ताहि जौर का छाहरिया छछिया भर छाछ प नाच नचाव ॥

नरोत्तम दास—

नरोत्तमदास जा क जीवन क विषय म जो विवरण उपनघ है उसक आधार
पर यह सानापुर क निवासा सिद्ध हात है । उपनघ प्रमाणा क आधार पर यह सिद्ध
हाता है कि यह नवन १६०२ म जाचित य । जानि क यह ग्राह्यन य । इनक प्र या म
मुत्तमा चरित ध्रुव चरित तथा विचारमाना का उरख किया जाता है । इनम
स 'मुत्तमाचरित अपना मामिकता जोर भावाभिष्यवना क कारण इनकी काति
का मुन्न कारण रहा है । इनक काव्य का एक उदाहन इस प्रकार है

काउ बिहान बिवाइन साभण कक जान भर पग जाण ।

हाय महादुष पाण सया, तुम ब्राण इन न कित तिन घाण ॥

दयि मुत्तमा की जान ग्या करना करिक कनानिधि राए ।

पानी परान का हाय तुया नहि ननन क जन सा पग धाण ॥

महाब—

भक्तिगुणीन कृष्ण-काव्य का परंपरा म उपयुक्त कविता क जनिरिक्त जय भा
अनक कवि का बिहान कृष्ण का परब्रह्म मानकर उनही भक्ति-मन्व गी काव्य का
रचना का । इनम मूरगाउ मन्न माहन शोभन अनवना भगवत रविक नाचनान
तथा नरहर गाउ बाणि कविता क नाम उ उद्ययाय है । असा कि ऊर मल्ल किया जा
चका है कृष्ण भक्ति काव्य परंपरा जयउ समझ है । प्राचीनता का कृष्ण भा
इसका प्रकार लामा गी हकार यर पूर नर माना जाता है । महाभारत म हा कृष्ण
काव्य क रूप म मा य किय गय है । उरनिप १ म कृष्ण का बिष्णु भा बताया गया है ।

अतगत पद्यरोपी नामक ग्राम में हुआ था। उसी प्रसंगीभूत निता मंगल भाषा में हुई थी। उसी मृत्यु मवत् १६६७ में हुई थी। उनका विषय गुण प्रयास में रचित मंगल छाप्य नीति और रचित मंगल आदि है। नाम वरि १ गीता मंगल राधा कृष्ण गोपी विरह बारहमासा कृष्ण नीता उदा रूप उपासना माध माध नीति और उपदेश विषय पर भी विषय है। नरहरि की रचनाओं में से कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत की जा रही है

कहै लोह गुन बनन बान पडवनि गटउ बनु ।
माहि न, समय सभो न भनरि भानउ गिरजाप्रनु ॥
तोहि विठठ तर धुपति हो जा हत्यह जरि दावन ।
गुन सत्प ज कहै उर है उरध्वहु जिन रावन ॥
तप जहि न नेउ जय पतु हठि कन्ति कुट ताहि रि मउ ।
रहु भरम माचि तेहि घरनि तर सो हो समत्य वहु रहि डरउ ॥

जाति भन छल नाऊ तन निररहि नत्थि अब ।
सिमु कुमार जजा विस्य चढत चढउ पिताव मय ॥
अगिति परत वहु कनुप रहीं बनि बसन मचि मुप ।
अरु मटो बचन नरम्मु मुपद मुम्मी सा साहि मुप ॥
मुभ सगुन चहै नर नपति माहि तनु नाउ असगुन कहत ।
जानहि न निपट हारो जितो सो बादि बाहु रहि गुन गुनन ॥

तजा कहै न मगिए भूप कहै तू मगू ।
इह जगरो अति कठिन है नरहरि बन न सगू ॥
नरहरि बने न सगू नगु नाहा ऐहि मीतन ।
नाज रहै चप च्याइ भूप जातुर अतिइ तन ॥
जहा गयो इह याउ मुनत सो भूपति भया ।
बबन नन जगतीस धरो जस रहै नया ॥

टोडरमल—

राजा टोडरमल का जन्म मवत् १५८८ में और मृत्यु मवत् १६४६ में हुई थी। यह अकबर बादशाह के प्रसिद्ध वजीरों में से था। अकबर के दरबार में जाने से पहले इन्होंने शेरशाह के समय में भी महत्वपूर्ण प्रशासकीय कार्य किया था। बंगाल के सूबेदार का पद भी इन्होंने कुछ समय तक सम्भाला था। सरकारी दफ्तरों में इन्होंने फारसी का प्रचलन अनुमानित किया था। इनके रक्त पर उपनयन हात है जिनका विषय नीति विवेचना ही है। इनके नाम का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

जार का विचार कहा गनिका का राज कहा
 गदहा का पान कहा जाधरे का आरसा ।
 निमुनी का गुन कहा दान कहा तारि का
 सवा कहा मूम की अरुण की टार मा ।
 मन्पी का मुचि कहा साच कहा तप का
 नाच को बचन कहा स्वार का पुतार मी ।
 टाडर मुकवि एन हठा ती न टार टर
 भाव कही मूषी बान भाव कही पारसी ॥

बीरबल—

राजा बारावन का जन्म मदन १२८२ में हुआ था । यह अजमेर के दरबार के प्रसिद्ध नौ रत्ना में था । इनका वास्तविक नाम ब्रह्मगुप्त ब्रह्मगुप्त अथवा ब्रह्मचरि था । यह जाति के ब्राह्मण थे । इनका जीवन के विषय में अनेक किंवदन्तियाँ का प्रचार है । इनके दो पुत्रों का भी उल्लेख मिलता है जिनमें से एक का नाम राजा तथा दूसरे का हरम राय था । इनकी एक पुत्री भी थी जो भगवत भक्ति में बहान अनुसक्ति रखती थी । बीरबल ने कृष्ण का बान लीला में यार साथ नीति विषय पर भा निर्य है । इनकी रचनाएँ स्फुट रूप में ही मिलती हैं । इनके परा में उनकी छाप ब्रह्म नाम से मिलती है । बीरबल का रचनाशौक कुछ अत्यहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

चतुरानन हूँ चतुरानन है परि पाया न भडु न उरन गाया ।

हारि हिए हरु ता पत्रक करु हारि रहै हरि हाग न आया ॥

ब्रह्म मन मुनि मोन क मन मारन नरु मना न मनाया ।

निता बडा भाग जनामति का कृताह न करताह नयाया ॥

—

बाहू क आन जाऊ सखी अपन घर बरिय लाय तहाँ रा ।

मा पति माहून त कछु पाटि है बाहू का यह उरहाय सदा री ॥

ब्रह्म भनै कोऊ कता कसौ कहत रा कहा कछु जीम गहौ रा ।

जो चिउण चित जाइ परै ता कहा इन नननि मुनि रदा रा ॥

—

न क जानन सो विपराति कर लजना पिय रग रिझार ।

काम कतान त लान कपारनि चूमन ग्याम महा सब पाव ॥

ब्रह्म मुनगरि का मुत्ता पिय लावन क गि या छवि पाव ।

मनो मरदिदु अमी निय बिटु, पकार का चान न चारा चगारै ॥

तानसन—

अजमेर तानसन अजमेर के दरबार के अत्यन्त प्रसिद्ध मण्डपिका था । इनका

जमला एसी प्रीति कर जैगी नत कराव ।
क बाला के ऊजना जम तक सिर रगू जाव ॥

मनसा ता गाहक भण नना भण दलाव ।
धनी बसत वच नही कित बिध बन जमाव ॥

रहीम—

कबिबर अ दुरहीम खानखाना अकबर त परिवार त प्रसिद्ध हो रत्ना म ग ध । यह तुकमान जानि के थ । एक पिता इतिहास प्रसिद्ध दरम यो खानखाना थ । इनका जन्म सन्वत् १६१३ म हुआ था । अरम यो त इहायसान क परनात अकबर न इनके पानन पापण की व्यवस्था की । उनकी पिताजी ता भी अकबर के ही मरण म हुई । उनकी विवाह अकबर की धाय जीजी मलमअगा का कन्या माहवानू म हुआ था । अकबर न इन्हें मिर्जा खा की उपाधि तथा पानन की मूयतारा और मारअब का पद भी प्रदान किया था । खानखाना का खिताब भा अकबर न इन्हें प्रदान किया था और इसके कुछ समय पश्चात इन्हें वकील का पद भी दिया था । अकबर की मृत्यु के पश्चात जहांगीर न भी इन्हें वही सम्मान प्रदान किया । इनका अधिराज जीवन ऐश्वर्य और वभव म व्यतीत हुआ था । परन्तु नूरजहाँ के गामन राज म इन्हें बहुत कठिन दिन देखने पडे । इन्हें अपमानित भा हाना पया । अरिज कठिनाइया न भी इन्हें बहुत तस्त किया । इनका परिचय तुलसीदास स भा हुआ बताया जाता है । इनके जीवन के सम्बन्ध म जा जय किवन्तिया उपनय हाती है व भी अनेक महत्वपूर्ण घटनाओ पर प्रकाश डालती है । रहीम का काय अनेक मप्रदा म उपनय हाता है । अरम रहिमान विनास रहिमान विनोद रहीम कवितावता रहीम रहिमान चन्द्रिका रहिमान शतक रहीमखानावनी दोहावनी नगरनाभा वरवय नायिका भेद खानखाना वृत वरवय मदनाटक खत कौतुकजातकम शृंगार सोरठा तथा रहीम काय जादिक नाम उत्तखनीय है । रहीम के काय म शृंगारिक भाव नाओ और नायिका भेद जादिक साव साव नीति नत्वो का जो निरूपण मिलता है वह एक महत्व का प्रधान कारण है । इनके काव्य के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे है

रहिमन कबहु बडन का, नाहि गव का लस ।
भार धर ससार का तऊ कहावत सस ॥

रहिमन गनी है साकरी दूजो न टहराहि ।
आजु अहै ता हरि नही हरि ता आजु न जाहि ॥

रहिमन रिस्त को छाड़ि न करी गरीबी भस ।

मीठो वाता न चलो, सब तुम्हारो दस ॥

— — —

तवही ली जोया भना दबी हाय न धाम ।

गग में रहिवा कुचिन गति उचिन न हाय रहीम ॥

— — —

कमनजन नवन की उनमानि ।

बिसरत नाहिं सया मा मन न मद मर मुमनानि ।

बमुधा की बस करी मजुरता मुघापगी बतगानि ॥

मटा रहै तिन उर बिसान न मुजुतमान यहरानि ।

नत्य समय पीठावर हू का फहर फहर पहरानि ॥

अनुत्तिन धाव आवन प्रा न आवन जावन जानि ।

अब रहीम तिन तन टरति है मयल म्याम का बानि ॥

काबिर—

इसका जन्म मयल १६ २ म हुआ था । इतरा पूरा नाम काबिरचन्द था । यह हृदयदर्शी जिनके अन्तर्गत पिहाना न निवासी थे । इनका पुत्र मध्यम इन्द्राचम था । इनका लिये हुआ कोई ग्रन्थ उपनयन नहीं होता । यमन स्वयं उचित ही भिन्नत है । इनका नाम का मुन्त्र विषय नीति विनय है जो सामान्य और व्यावहारिक भाषा के कारण प्रचलित हुए थे । इनका राज्य का एक उत्साहरण इस प्रकार है

गुन का न पूछ सोऊ जीगुन का बात पूछ

कहा भवा दर्द ? बनिवान या घरानो है ।

पोषी जो पुरान पान टट्टन म डारि न

अगुन चवान का मान टहराना है ॥

काबिर कहत याता बछ रद्वि की नाहि

अगत का राति त्रि अष मन मना है ।

धावि दयो द्विपो मय जारन या नीति नीति

। तु ना द्विगना तुगाहद द्विगना है ॥

बनारसीरास—

काबिर बनारसीरास का जन्म मयल १२४ न हुआ था । इनका पिता का नाम चरमरास था । यह चतुर्भुज जन मन्त्रिय के अनुयायी थे । इनका पुत्र का नाम भागु था । जो चतुर्भुज यह स्वयं का नामक सिद्धांत प्रभावित आकर ही मयल जन मन्त्रिय के अनुयायी बन गए । इनका जीवन का विनय विवरण इसका चरमरास का कथानक में उल्लेख हुआ है । इनके रचना के नाम मयल कथानक के अतिरिक्त

नवरस नाममाला गायक समय गार बनारसी विनायक मानवावनी जिन सहस्र नाम गूक्त मुक्तावली वम प्रकृति विधान अत्रिनायक व छ २ वरम छतीसी नाम पचीसी ध्यान बसीसी पडी व निणय पत्राशिका जगतलाना गुण्या की नामावनी मागणा विधान साधु चना मानह तिथि तरह बाशिया अध्यात्म गीत पचपद विधान माह विनाय युद्ध तथा बनारसी पदति आदि वा उल्लेख मिनता है । इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

काया सा विचार प्रीति माया ही म हार जीति
 निष्कृत रीति जग हारिन की नकरी ॥
 चगुन के जोर जसे गाह गाहि रहे भूमि
 त्योही पाय गा प न छाड टक पकरी ॥
 मोह की मरोर सो मरम का न ठोर पाव
 धाव चहु ओर या बधाव जान मररी ॥
 एसी दुरबुद्धि भूति झूठ के पराध भूति
 फूनी फिर ममना जजीरन सो जकरी ॥

रत्नावली—

रत्नावली के सम्बन्ध में जो विवदती प्रचलित है उसके अनुसार यह गोस्वामी तुनसीदास की घमपत्नी थी । यह भारद्वाज गोत्र की था । इनके विषय में यह कहा जाता है कि २ हान तुनसीदास का विरक्ति की भावना दी थी । इनका उल्लेख प्रिया दास लिखित भक्तमान की टीका तथा तुनसीचरित और गासाईचरित आदि ग्रन्थों में मिनता है । कहा जाता है कि २ होने कुछ नीतिपरक स्फट काव्य लिखा था । तुनसी के प्रति यह गय इनके गे दाह उदाहरणार्थ नाथ प्रस्तुत किया जा रहा है

राज न रागत जापका दोरे आयहु नाथ ।
 धिक धिक एस प्रम को कहा कही म नाथ ॥

जस्थि चममय दह मम तामि जसी प्राति ।
 तसी जो श्रीराम मह होति न ती भवभीति ॥

महत्त्व—

भक्ति युग में नीति काय की प्रवृत्ति का जो विकास हुआ उसका सक्षिप्त विवरण ऊपर प्रस्तुत किया गया है । यह काव्य प्रवृत्ति स्फुट रूप से पूर्ववर्ती तथा परवर्ती काय परम्पराओं में भी उपन्यस्त होती है । जसा कि ऊपर सकेत किया जा चुका है प्राचीन युग में सस्कृत साहित्य तथा और आधुनिक युग में वर्तमान काय तक में २सका समावेश विविध काय धाराओं के अन्तर्गत मिलता है । भक्ति-युग में जो नीति-काव्य लिखा गया वह अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण है । अनेक भक्त कवियों ने जहाँ एक ओर ईश्वर के सगुण और निगुण रूपा की उपासना से सम्बन्धित काय

की रचना की वहाँ दूसरा बार बहुत स गन भा कवि हूए त्रिहनि तस्य भाव स
 विरक्ति मूचक पद लिख । भक्ति युग क पश्चात राति कान म जा कवि हूए उहान भी
 इस काव्य प्रवृत्ति का प्रथम त्त हूए स्फुट रूप न नाति-पदा की रचना की । उनका
 उद्देश्य उन्नतपरक था । सामाजिक विद्रोह की स्वस्थ दिशाया की बार सकेत
 करत हूए मानव का उन्नयन इन नातिपरव कबिया का प्रधान लक्ष्य था ।

भक्ति युगीन लक्षण काव्य की प्रवृत्ति

हिंदा साहित्य के इतिहास में भक्ति युग का अतन्त्र जिज्ञ प्रवृत्तिया का परिचय पूर्व अध्यायों में दिया गया है उनमें अतिरिक्त उल्लेखों का यही प्रवृत्ति भी स्पष्ट रूप से विनासशील दिखाई देती है। भक्ति युग में जनसामान्य कवि द्वारा ज्ञान श्रुतियों का यही रचना की और उल्लेखों का प्रवृत्ति। यह काव्य प्रवृत्ति विविध रूप में रात्रि युग में ही प्रगट हुई परन्तु इसका जाविर्भाव भक्ति युग में ही हुआ गया और भक्ति युग के अनेक कवियों ने उम्र प्रशस्त किया। किन्हीं को भाषा का साहित्य में मद्रासि रूप में लक्षण ग्रन्थों का आरम्भ इस तथ्य का ध्यान होना है कि वह साहित्य कलात्मक उच्चता के धरातल का स्वरूप धरने लगा है। मन्वृत्त साहित्यशास्त्र में विविध काव्य सम्प्रदायों के अन्तर्गत निम्न साहित्य मिश्रता की रचना की गयी प्रायः उन्नीस अंशुकरण पर भक्ति युग के कुछ जावाय कवियों ने लक्षण ग्रन्थों की रचना की। आग चतुर्वर ही नियमा का आधार पर हिंदी शैली साहित्य भी रचा गया। मन्वृत्त मरस मिश्रता का आधार सिद्धांत शैली सिद्धांत यथासिद्ध सिद्धांत तथा ध्वनि सिद्धांत आदि सम्प्रदायों का मन्वृत्त परम्पराओं का उद्घाटन आधार पर हिंदी के कवियों ने भी लक्षण ग्रन्थों की रचना की। यहाँ पर सत्य में सत्य प्रवृत्ति का अन्तर्गत जान वात प्रमुख कवियों का संधिस्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

दृषाराम—

भक्ति युगीन लक्षण काव्य की प्रवृत्ति का अतन्त्र सर्वप्रथम दृषाराम का नाम उल्लेखनीय है। उनकी लिखी हुई हिततरंगिणी नामक पुस्तक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में लक्षण ग्रन्थों की परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन मानी जाती है। इसका रचना काल सन १५४१ बताया जाता है। दृषाराम के विषय में अन्य विवरण उपलब्ध नहीं है। अपनी कवि प्रवृत्ति में उनका मुख्य ध्यान नायिका के विषय का निरूपण किया है। भक्ति युग में लक्षण ग्रन्थों का प्रयोग किया है। इसके कुछ दाह उल्लेखों के बीच प्रस्तुत किया जा रहा है।

लोचन चपन बटाच्छ सर अनियारे विपभूरि ।
मनमग बधा मुनिन क नगजन सहन विभूरि ॥

— —
आज सवार ही गइ नरान हिन तान ।
कुमु कुमुनिना क भटू निरख जोरे हान ॥

— —
पति आयो परस तें ऋतु वमत को मानि ।
पमवि थमकि निज महन म रहन कर गुरानि ॥

— —
जग जग जीवन छयो नवल बधु के आज ।
तघ मिमुता त्या दगिए नार तरपन मात्र ॥

— —
मार्हि दर मोद कर अनि उरार व्या जानि ।
मा मनसा पर है सदा करो रान विधि मान ॥

— —
छिन राय छिन म हम छिन म बटू बनराइ ।
गहे मोन छिन म बंध छिन रगजन उपता ॥

बलभद्र मिथ—

बलभद्र मित्र जारछा क निवामी सनाइव ब्राह्मण का म जम थ । अन पिता का नाम वागानाथ था । यह प्रसिद्ध आचार वागभद्र क प्यठ प्राता थ । इनका जम मन १५३ ई क वासन अनुमानित किया जाता है । तथापि यथा की म परम्परा क अनुसार इनक विर दूण दा बंधा का उत्तम मित्रता है या नरपिय तथा रस विदात है । अनुमान किया जाता है कि इनका रचना काव सन १५३ म पूव का था । सन १८ म अन नरपिय की टारा म पाठ कवि न प्र तुन बरन दूण इनक विर दूण ताज ज य था का उतथ किया े अनर नाम बलभद्र व्याा रण हनुमननाथ जोर गावदन गावद टीका ह । इन य का क अतिरिक्त इनका एक रचना पूषपविचार गोपक का भा उचितिा की जाता है । बलभद्र मित्र न मुन्य म्प न नरपिय बरन ही किया है । इहात रस विरतन भा कथा का का वि रपण प्रभुत करत दूण किया है । इनक शब्द का एक उदाहरण इन प्रकार है

मरकात क मूर नधा पनत क पूव, अनि
रावत प्रभूत तमराव नय ताग है ।
मरपूत गुनशाम साभित मरग राम
काम मृग बानन न इह न कुमार है ॥

कोप की चिरत है अजगान गीत गी
 उपमा आत पाद नर सिंगार है ।
 तोरे सन्तारे गीत माध गी गुणध बाग
 गगन बतभट्ट तबबाना गे वाग ॥

मोहननाल मिथ—

मोहननाल मिथ क विषय म का प्रामाणिक जीवन विवरण उपनयन नाला होता । अनुमान दिया जाता है कि यह अरधारी न निरामा र । का विरह गुण गगन मात्र ग्रथ शृंगारसागर का उल्लस विद्या जाता है जिसका रचना गान ग १५८८ है । का ग्रथ म अत्यन्त रस और नायिका भू विषया का चित्रण दिया है । यह कृति अनुपम है ।

केशवदास—

आचार्य नेशवदास का जन्म सन १५६१ म तथा मृत्यु सन १६०१ म हुई थी । हिन्दी क विद्वाना म का तिलिया क विषय म पर्याप्त मतभू है । केशवदास न अपने एक ग्रथ कविप्रिया म अपने वंश का परिचय दिया है । उसका अनुसार का पुरजा म कुम्भवार दवान द जयन्त दिनकर गया गजाधर जयानन्द तिलिन्म भाव समा मुरान्तम या शिरोमणि हरिनाथ कृष्णदत्त काशीनाथ तथा बतभट्ट थ । इनका वंशजा म कल्याण का नाम भी इसम दिया गया है । इनका वंश क मूल पुरुष का नाम कायास बताया गया है । यह भारद्वाज गोल क ब्राह्मण थ । ओरछा के महाराज काजीन सिंह क आश्रय म यह रहते थ । वीरसिंह देव भी इनके आश्रयता बताय जात है । इनकी रचनाजा म रसिकप्रिया कविप्रिया रामचरित्रा वीरचरित अथवा वीरगमिठ देव चरित्र विद्यानगीता जहागीर जस चरिका रतनवामनी छन्दमात्रा राम अतृप्त मजरी आदि है । इनम स छन्दमात्रा का रचना गान जाता है तथा राम अतृप्त मजरी अप्राय है । कुछ जय रचनाओ का भी उल्लेख इनके नाम क स दभ म दिया जाता है जिनम जयमुनि की कथा काव्य चरित हनुमान जय गीता रसतन्त्र और अमीधूट जादि है । विद्वाना का अनुमान है यह रचनाए केशवदास की प्रामाणिक कृतियाँ नहा है ।

केशवदास जी न अपने वंशण ग्रथा म नायिका भू रस निरूपण वण वत्त विवचन मात्रा वत्त विवचन अन्वय विवचन आदि विषया का समावेश दिया है । केशवदास का विचार था कि काव्य क निष् कोमन शायरी सुन्दर छन्द याजना आवश्यकता तथा मोहकता आवश्यक है । वह सरस काव्य रचना क लिए चित्त मनन और शब्द शोधन आवश्यक समझत थ । काव्य दोषा स मुक्त रचना को वह श्रेयस्कर समझत थ । काव्य म अनेक तत्वा का समावेश आवश्यक मानत हुए भी वह अन्वय योजना की सर्वाधिक महत्व देते थ । उनका यह मत है कि यदि काव्य म ध्वनि गुण शायरी सरसता और निष्पेक्षता आदि का प्रयोग हुआ है तब भी

अलंकार विद्वान् हान पर उसका भाषा कम हो जाता है। उद्दान कविप्रिया म
 दिया भा है

अपि मुजानि मुनगा मुवरन सुस मुवन ।
 भूषण बिनु न बिराज कविता बनिता मित ॥

कव्यशास्त्र ने ब्रज भाषा में कव्य रचना का था। सम्युक्त के प्रकारों परितः ह न के
 कारण उनका भाषा में सम्युक्त रचना का अधिकता भा मिलती है। समकालीन परिचय
 और प्रभाव के कारण जहाँ पाठना जाति के शब्द भी उनका भाषा में जहाँ उद्दान
 मिलते हैं। उनका पाठ्य का परिचय उन में भा उनही भाषा सम्युक्त है। उद्दान शब्द
 अलंकार के अंतर्गत एक अलंकार है जिसे अलंकारिक अर्थ निकलते हैं और
 कहा कहा ता पाठ्य अर्थ निकलते हैं। कव्य की भाषा का उद्दान नाम काव्यशास्त्र
 से युक्त है। परंतु उसमें सरलता और कलात्मकता भा समान रूप से विद्यमान है।
 भाषा के अर्थ गुण भा उसमें उद्दान रूप से विद्यमान मिलते हैं। उस दृष्टि से उनका
 निम्नलिखित एक श्लोक है जिसमें वाक्यांश अथवा शब्दांश त्रिवाक्यांश अथवा कृपा
 नाय-नाथ अथवा गिव रचनाएँ तथा अमर सिंह का प्रामाण्य मिलती है

भावत परम हम जात गण मुनि मुद्य
 पावन गान भात बिबुध बगानिय ।
 गुण मरति धर ममर सुतहा बट्ट
 बिलि यो कता कव्यशास्त्र गानिय ।
 राज द्विजराज पर भूषण विमल कमता
 सुन प्रदान परदार प्रिय मानिय ।
 एक वाक्यांश के त्रिवाक्यांश नाथ
 नाथ कथा रानाथ के अमरसिंह जानिय ॥

उद्दाननामकी शक्ति में कव्यशास्त्र का काव्य विविधता रचना है। उनमें
 काव्य में अतिरिक्त प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया गया है वगैरे भक्ति अथवा रीति गुण
 के किसी भाषा के लिए सम्भव नहीं हो सका है। यद्यपि जनश्रुति पर कव्यशास्त्र
 की शब्दवाचना केवल प्रभाषात्मकता का मष्टि के लिए दृष्ट है परंतु फिर भी जनश्रुति
 प्रयोग के अनुसार जो कव्यशास्त्र शब्दों का प्रयोग करके रम्य अथवा कव्यशास्त्र
 प्रस्तुत किए हैं। वाक्यांश अथवा अर्थ के अनुसार भी शब्दों का प्रयोग कव्यशास्त्र
 विविधता है। गम्य शब्दों के एक उदाहरण नाम प्रस्तुत किया जा रहा है जो दृष्टि
 शब्दों में विद्यमान है और अतिरिक्त नामों तथा माध्यम के गुण विद्यमान हैं। भाषा
 गम्य का प्रयोग के लिए वाक्यांश अथवा अर्थ से युक्त यह शब्दों के अर्थ अथवा अर्थ
 प्रस्तुत किया गया है

जागिय शिखर दब दब शब्द रान शब्द
 भात भनी भूमि दब भक्त शब्द पा ।

ब्रह्मा मन म ज वण विष्णु हृदय गात्र पत्र
 रत्न हृदय रमन मित्र जगत् गीत गात्र ।
 मगत उदित रवि अनंत घुमन्ति ॥११॥
 छट छट छवि छान हात गीत गीत गात्र ।
 मानहु परतन गन प्रसन्न प्रसन्न प्रसन्न
 टोर टोर ग रितात जात भूप मार ॥

ऊपर यह सतत किया गया है कि शिवयोग का यम अन्तर्गत याजना या महान् सर्वोपरि मानत व कथारि का यम अयमनो गुण शमी पर जाधारित हात है । इस कथन का आशय यह नहीं है कि शिवयोग का यम अन्तर्गत का मत व नही स्वीकार करते व । यमक विपरीत शिवयोग का यह शिवार या कि यम नत्वा ग अन्तर्गत तब का शिवयोग और सम वय ही उत्कृष्ट का यम की रचना म ग अयम हा मरता है । शिवयोग न शिव अन्तर्गत का प्रयोग सतत अधिन किया है जो व मरतागिना उत्पन्न करने म सवाधिन सहायक हाता है । यमक परिगह्या शिवयोगाभास जाति अन्तर्गत का प्रयोग भी उहान वन्तता म किया है । उपमा रूप उ प्र ता मन्ह विभासना तथा जप शक्ति जाति अन्तर्गत भी उनका यम अधिनता न प्रयुक्त हुए हैं । नीच केशवदास द्वारा प्रयुक्त यमक अन्तर्गत का एक उदाहरण रसिकप्रिया म उद्धृत किया जा रहा है

हरित हरित हार हरत हियो हरत
 हारी हो हरिनननी हरिन वत्र नदी ।
 घन मानी व्रज पर वरसत वनमानी
 वनमानी दूरि दुष केसव वन सही ।
 हृदय वमन नन देखि क वमन नन
 हाहुगी वमनननि और हा वृहा वही ।
 आप घन घनस्याम घन ही स होत घन
 सावन न चौस घास्याम बिन क्या रही ॥

केशवदास न अपने काव्य म शृंगार तथा वार रसा को अधिन प्रत्यय किया है । रामचन्द्रिका रसिकप्रिया कविप्रिया आदि प्र वा म जहा उ हाने शृंगार क उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है वहा दूसरी ओर वीरमिह देव चरित रतनवामनी तथा रामचन्द्रिका म वीर रस क विशिष्ट उदाहरण भी उपन व होते हैं । केशव न शृंगार रस का जा वणन किया है उसका मूल आधार कृष्ण और गाविया को जानम्बन मान कर नायक नायिका किया गया प्रेम वणन है । श्याम जोर वियोग शृंगार क सभी पक्षा का चित्रण केशवदास ने किया है । रसिकप्रिया स इसका एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

सौ दिवाय दिवाय सखी इव धारन वानन आन बसाय ।
 जान का केशव वानन ते बिन ह्व हरिननन मौज सिधाय ।

लाज क साज धरइ रहै तब ननन ल मन हा सा मिनाय ।
बसो करौ अब क्या निरुपा रो हरइ हर हिय म हरि आय ॥

बार रस का चित्रण कवयज्ञान व वीरसिंह दब चरित' रत्नवामना तथा रामचंद्रिका नामक ग्रंथों में मिलता है। वीर के साथ-साथ रौद्र वीर भयानक रसा के उदाहरण भी कवयज्ञान व काव्य में मिलते हैं। नाट्य रस का प्रामाण्य भी किर्त्तिया पर मिलती है। कवयज्ञान व वीर रस-वर्णन रस परिपाक का दृष्टि से सफ़्त कहा जा सकता है। नाच वारसिंह दब चरित से भयानक रस का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है

हृव गयो बिठान बन मुगल पठाननि को
भभर भरीरियाउ सम्प्रम हिय छयो ।
मूय मुय सधनि व सरयोइ पिसाया पत्रा
गाओ गह्यो गाढ़ पाउ एकी न इत ग्यो ।
वारसिंह जानी जीति पति राजसिंह का
तुसार कसा मारआ मार कसौगस हृव गयो ।
हाथामय हयमय हसम हयियारमय
नाहमय नाधिमय भूतव सब भयो ॥

भक्तियुगीन काल काव्य की इस परम्परा में कवयज्ञान का योगदान सबसे अधिक मूल्यवान् है। वह हिन्दी का हृदय के एक प्रमुख आचार्य के रूप में विद्यमान हैं। उन्होंने ज्ञान रसिद्धि नामक ग्रंथ में नायिका भंग तथा रस निरूपण प्रस्तुत किया है। प्रियत्रु तथा प्रियत्रु की प्राप्ति करत हुए इसमें कवि ने मौनिक उदाहरण प्रस्तुत किया है। कविप्रिया में कवयज्ञान का काव्य गिता है। रामचंद्रिका में मुख्यतः राम-कथा का वर्णन है। छन्दोमात्रा व जगत उद्देश्य उद्देश्य वीर माता-पिता का विवेचन किया है। वारसिंह दब चरित में उन्होंने मुख्यतः नायक वीरदब सिंह दब का नायक चरित्र का प्रस्तुत किया है। विद्या गीता में कवि ने उत्कृष्ट व प्रमुख उदाहरण नायक व आधार पर विषय प्रस्तुत किया है। जहागीर जस चरिका में मुगल साम्राज्य का गार व एवम और वनव का वर्णन है। रत्नवामना बार काव्य है जिसमें रत्नवामन के जीवन का वर्णन है। कवयज्ञान रसिद्धि नामक कविप्रिया और छन्दोमात्रा नामक ग्रंथों में ही मुख्यतः काव्य गिताय विषय का विवेचन किया है। इन ग्रंथों का सञ्जातिक आधार प्रसिद्धि सम्पूर्ण-साहित्य रहा है। कवयज्ञान व काव्य ग्रंथों में ही मुख्यतः काव्य गिताय विषय का विवेचन किया है। इन ग्रंथों का सञ्जातिक आधार प्रसिद्धि सम्पूर्ण-साहित्य रहा है। कवयज्ञान व काव्य ग्रंथों में ही मुख्यतः काव्य गिताय विषय का विवेचन किया है। इन ग्रंथों का सञ्जातिक आधार प्रसिद्धि सम्पूर्ण-साहित्य रहा है।

कामर अमलता की रसभूमि कधी यह
गाभियत आयन के साभा के सन का ।

बाजत नगारे पा तात दा नगी तार
 शीगुरन सात भरी भूगन बजाई दे ।
 कोकिल अनाप पारी नीतघीय गधरारी
 पोत बीन धारी चागी पातर सगार है ॥
 मनिमान जगुनू मुबारन तिमिर धार
 सोमुघ चिराग पाद चपता जराई दे ।
 बावम बिसेस नए दुघ बी जनम भयो
 पावस हमार तायी विरह बघाई है ॥

सुन्दर—

कवि सुन्दर भ्वातिथर क निवासी थ । यह जाति क शास्त्रण थ । उनर ग म आदि क विषय म प्रामाणिक विवरण उपन थ नही है । यह शास्त्रहां न समकालिन बताय जाते हैं जिसन उह जपन दरवार म म्यात दर महारविराय की उपाधि प्रदान की थी । इनन निखा र्ना एक प्रसिद्ध ग्रंथ मुन्दरशृंगार शीघर म उपन थ है इस ग्रंथ म इहान शृंगार रस नायिका भू तथा नयजिघ आदि विषया न निरूपण किया है । यह ग्रंथ सन १६३१ म लिखा गया था । सुन्दरशृंगार क अनि रिक्त मुन्दर कवि र निय हुए दा जय यथा का उत्तर थ भी मिनता है जिनर नाम बारहमारी तथा ध्रुवनीता है । इनर साथ ही माव सिंहासन बनौसी गीतक एक और रचना उल्लिखित की जाती है । कवि सुन्दर की भाषा ब्रज थी जिसका प्रौढ रूप इनकी कृति म मिनता है । उहान दाहा हरिपद छन्द तथा सवया छन्दो का प्रयोग अपन काय म किया है । इनरे काय क कुछ उदाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रह है

काक गए बसन पनटि जाए बसन मु
 मरो कछ बस न रसन उर नाम हो ।
 भोहै तिरछीहै कवि मुन्दर मुजान सोहै
 कछू जनमीहै गौहै जाक रस पागे हो ॥
 परसा में पाय दूते परसो में पाय गहि
 परसो के पाय बिसि जावे अनुराग हो ।
 कौन बनिता के हो जू कौन कौन बनिता के हो मु
 कौन बनिता के बनि ताके सग जाग हो ?

प्रीतम गीनु विधी जिय गीनु वि
 भीनु नि मारु भयानक भारा ।
 पावस पावक फून वि सूत
 पुर दरचाप कि सुन्दर आरा ।
 सारी बयारि विधी तरवारि है
 बारिद बारि नि वान बियारी ।

चातक बान कि चाट चुभ चित
इन्बधू कि चकार का चाग ॥

छाहल—

भक्तियुगीन जगण काव्य का प्रवृत्ति क जन्मान कविवर छाहन का नाम भा उन्नियित किया जा सकता है। इनका लिंगा २० एकमात्र वृत्ति पचमहना गीपक म उपनय्य हाती है। इस वृत्ति का रचना कान मवत १५७२ है जता कि इस वृत्ति चापक स ही स्पष्ट है इस ग्रंथ म कविवर छाहन न पाव सत्रिया का सयात जोर वियात भावनात्रा का निरूपण प्रस्तुत किया है। २० ग्रंथ का भाषा रात्रम्याता है। पचमहना क अतिरिक्त कविवर छाहल तिया दुइ एक जय वृत्ति भा बतायी जाती है त्रिसवा गीपक बावना है। यह रचना अनुपनय्य है।

सनापति—

कविवर सनापति की जम सुम्बधा त्रियिया अवान है। इनका प्रसिद्ध वृत्ति कसित रत्नाकर गीपक म उपनय्य है त्रिसवा रचना-कान मवत १७०९ है। इनक पितामह परमराम शक्ति य। इनक पिता का नाम गाजर या। प्राण किवरण क बाघार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि यह त्रिसा बुवागहर क जन्मात अनुपाहर नामक म्यान क निवासा य।

सनापति न जपन कसित रत्नाकर नामक ग्रंथ म सयत्रयम भावावरण प्रस्तुत किया है। इसम कवि न राम चरित्र का वान विस्तार उ किया है। इसम कुछ छं वृत्त तथा गिव जाति पर भी निर्य गय है। इनक काव्य म भक्ति जोर रीति-नय का समन्वय है। इसातिण उसम जहा एक जार भाक्त बाध्याम तथा बराम्य सुम्बधी पद उपनय्य हात है बहा दूसरी जार थ गारिक काव्य क भी सम्यक उगाहरण प्राप्त हात है। मुख्य रूप म उनका काव्य प्रातकारिकता क प्रति उनका अभिमुखि का चातक है। कवि न रत्नाकर वस्तु म्भुं छं का जग्रह है। राम राम रग्वि म मम्बधिगत जा कयायें है उनम गीता स्वयंबर परमराम तत्राभग राम रावग दुइ बाति का वान है। कवि न राम क प्रति भक्ति भावना का श्रद्धा क माप स्पष्ट किया है। इस ग्रंथ की दूसरी जोर तीसरी तरगा म कवि न थ गार वान जोर श्रुत-वान प्रस्तुत किया है। नायक-नायिका भा क अन्तगत बय मधि गहिता तथा मुग्धा जाति नायिकाका का निरूपण है। सयात जोर वियात क चित्रा म प्रातकारिकता प्रधान रूप म दिवता है। प्रकृति शीत्य त्रियकर चित्रा भी राम विद्यमान है। सनापति का भाषा श्रय पा ओर उसम मम्भूननिष्ठ गलाबनी का सयात दुआ है। सनापति न मुकयत जय अनुपाग उपमा उत्तर ता यमक रूपक मुग्धा उगाहरण प्रसिद्ध मम्भुं वि-याकि परिचय ध्यनिरक तथा अतिशक्ति जाति अचारा का सयात किया है। भाव चित्रण क अन्तगत कवि न रति उताहू कथ मय तथा निर्येड बाति का निरूपण किया है। नयनिध बचन भा उनक काव्य न चामाकारिक रूप म रगित है। छं म सनापति न

कवित्त छप्पय कवित्तियां तथा दाह का प्रयोग किया है । सनापति के काव्य र तुज उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बिरह हुताग्न बरत उर ताँ रहे
 बाँध मही पर परो भूष्य न गति है ।
 सबती तुमुम हूँ त कामन मनन भग
 मून सज रत काम वनि नो बरति है ।
 प्रानपति हत गह जग न मुधार जान
 धरी है बरन तन म न सरसति है ।
 देगी चतुराई सनापति कवित्ताई की जु
 भागिनि की सरि का बिभागिनी सहनि है ॥

— —
 कौन बिरमाए वित छाए अजहूँ न जाण
 कम मुधि पाऊँ प्यार मदन गुणान की ।
 नोचन जुगन मरे ता दिन सफन ह्व है
 जा तिन बदन छवि देखी नदनान की ।
 सनापति जीवन अघार गिरिधर दिन
 और कौन हर वनि बिया मा बिहान की ।
 इननी कहत आमू बहुत फरकि उठी
 नहर नहर दग बाई ब्रज बाँध की ॥

— —
 जब आयी माह प्यारे गगत है नाह रवि
 करत न दाह जमी अब रेखियत है ।
 जानिय न जात चात कहत बिनात दिन
 छिन सो न तात तनको बिरेखियत है ।
 वनप सी राति सो ती सोए न सिराति कयोहू
 साइ सोइ जाग प न प्रीत पेखियत है ।
 सनापति मेरे जान दिन हूँ त राति भई
 दिन मरे जान सपने म देखियत है ॥

— —
 परत तुसार भयो पार पतवार रही
 पीरी सब डार सी बियोग सरसति है ।
 बाँधत न पिव सोइ मीन ह्व रही है आस
 पास निरजास नन तीर बरसति है ।

सनापति बेली बिन मून री सट्ठी माह
 मास न अकली बन बली बिलसति है ।
 बिरह तैं छीन तन भूपन बिहीन नीन
 मानन बसत बत बाज तरसति है ॥

महत्त्व—

इस प्रकार स भक्ति युगीन नक्षत्र काव्य की प्रवृत्ति व विश्वास में योग देकर उपयुक्त कवियों ने हिन्दी में दृगात्मिक काव्य की परम्परा का प्रवर्तन किया। जसा कि ऊपर सवत किया जा चुका है यह काव्य प्रवृत्ति इस युग में आरम्भ हाकर विशेष रूप से रीति युग में प्रगस्त हुई। इस युग में इस प्रवृत्ति व विश्वास में याग दान वाने जिन कवियों का मक्षिप्त परिव्यात्मक विवरण ऊपर प्रस्तुत किया गया है उनके अतिरिक्त भी अन्य अनेक कवियों ने इस विश्वास में यागदान किया। छीहल हान राम आत्म आदि कवियों ने भी अपने काव्य मृजन में इस प्रवृत्ति व विश्वास में याग दिया। परवर्ती युग में जा रीति शास्त्र लिखा गया सद्धान्तिक श्रष्टि में उमका आधार सस्टन साहित्य शास्त्र रहा परन्तु प्ररणा और परम्परा की श्रष्टि स इसी काव्य प्रवृत्ति ने उसके विकास की सम्भावनाएँ प्रस्तुत की।

अध्याय : ९

रीति युगीन शृंगार काव्य की प्रवृत्ति

हिंदी काव्य में स्वरूपगत बहिष्कृत की दृष्टि से शृंगार काव्य की परम्परा का विकास रीति काल में हुआ था जिसका प्रसार सन् १७०० से लेकर लगभग दो सताई तक हुआ है। यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से शृंगार भावना के विकास पर विचार किया जाय तो यह ज्ञान होगा कि स्कन्द मठ में इनका समावेश पूर्ववर्ती साहित्य में भी हुआ था। भारतीय साहित्य में शृंगार रस का शास्त्रीय निरूपण सङ्कृत में भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र नामक ग्रन्थ में धनञ्जय ने दशरूपक नामक ग्रन्थ में भाजन शृंगार प्रकाश नामक ग्रन्थ में विनायक साहित्यदपण नामक ग्रन्थ में तथा जगन्नाथ ने रसगगाधर नामक ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। शृंगार वर्णन के विभिन्न रूप प्राचीन भारतीय साहित्य में भी उपलब्ध हैं। बहिन साहित्य के अतगत 'शृंगार' तथा 'अनववेश' में इसका प्रयोग उपलब्ध होता है। वाल्मीकि की रामायण में तथा यास के महाभारत में भी शृंगार निरूपण मिलता है। सङ्कृत साहित्य में मञ्जरिक मानती माधुर दशकुमार चरित बादम्बरी आदि ग्रन्थों में भी शृंगार भावना के विविध रूप चित्रित किये गये हैं। सिद्ध साहित्य के अतगत साहित्य में भी शृंगार भावनाओं का निरूपण है। श्रीमद्भागवत में भी राधा कृष्ण को आधार बनाकर शृंगार तत्त्व का समावेश किया गया है। हिंदी साहित्य में बीरगाथा काल भक्ति काल तथा रीति काल में शृंगार भावना का विकास हुआ। विद्यापति और जयदेव ने अपने काव्य में शृंगार को ही मुख्य आधार बनाया। प्रमाख्याननात्मक काव्य में भी शृंगार तत्त्वों का समावेश है। कृष्ण काव्य के अतगत भी शृंगार भावना का विकास हुआ। सत काव्य परम्परा में ब्रह्म और जीव को आधार बनाकर नैतिक आध्यात्मिक स्तर पर विप्रनभ शृंगार का चित्रण किया गया। राम काव्य परम्परा में भी शृंगार के सयोग और वियोग पर विचित्र रूप। उद्युक्त पृष्ठभूमि में हिंदी साहित्य के इतिहास में रीति युगीन शृंगार काव्य की परम्परा का आविर्भाव हुआ। यह समय ऐतिहासिक दृष्टि से सांस्कृतिक समृद्धि का युग था। इसलिए अनुकूल परिस्थितियों में इसका सम्यक् रूप में विकास हुआ। बीरगाथा काल तथा भक्ति काल में हिंदी कविता का जो स्वरूप विकसित हुआ था उसकी कलात्मक उन्नति का धरातल असदिग्ध था। इसलिए रीति युग में काव्य

समृद्धि के धर्म प्रयत्न किया गया। नाच इस प्रवृत्ति के विकास में योगदान करने वाला प्रमुख कवियों का सज्जित परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

चिंतामणि—

रीति युगान् शृंगार-काव्य का परम्परा के अंतर्गत आचार्य चिंतामणि त्रिपाठी का नाम उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन् १६०८ में हुआ था। इनके तीन अन्य भाइयों में भूपण तथा मतिराम प्रसिद्ध कवि थे जन्मानुसार काव्य रचना नहीं करते थे। इनका जन्म-स्थान कानपुर जिले के अन्तर्गत तिकुवापुर नामक स्थान बताया जाता है। इनके पिता रत्नाकर त्रिपाठी थे। यह साहस्रश्लोकादि सातका जननी जहम्म मकरभाह आदि के आश्रय में रहे थे। इनके लिखे हुए प्रामाणिक ग्रन्थों में काव्य विवेक कविकुलकल्पतरु काव्य प्रकाश रामायण छविचारविंगत तथा रसमञ्जरी आदि हैं। इनके अतिरिक्त इनके तीन अन्य ग्रंथ भी उल्लिखित किए जाते हैं जिनके शायक कविकल्पतरु 'पिगल' तथा शृंगारमञ्जरी हैं।

चिंतामणि के काव्यशास्त्र विषयक ग्रंथों में उनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार कविकुलकल्पतरु नामक ग्रंथ है। यह ग्रंथ उनके आचार्यत्व का सम्पूर्ण परिचय देने में समर्थ है। चिंतामणि ने काल की भाँति समृद्धि के नाम से तथा शब्दों आदि आचार्यों की उद्धान्तिक परम्परा का अनुगमन करके मम्मट और विद्वानाथ आदि आचार्यों का वैचारिक अनुगमन किया। अपने कविकुलकल्पतरु नामक ग्रंथ में चिंतामणि ने काव्य उच्च शैली का बताया है जो गुण और अन्वय में युक्त और शायद रहित है। काव्य-शुद्धि का रूपक बाधत हुए चिंतामणि ने शब्द और अर्थ का स्वरूप जाना के निश्चित धर्म उपमा आदि अन्वयों का गणना रूप शरीर के आभाकारक धर्म रीति का मानव स्वरूप और यति का मानव यति के समान उल्लिखित किया है। चिंतामणि के विचार से काव्य के लक्ष्य हैं जा गद्य और पद्य के नामों से जाना जाना है। चिंतामणि ने अपने कविकुलकल्पतरु नामक ग्रंथ में पद्य प्रकरण में शायद निरूपण के अन्तर्गत शब्द शक्ति का बताया है। उन्होंने तीन प्रकार के अर्थ काव्य में पद्य और व्यंग्य बताया है। ध्वनि का व्याख्या करते हुए चिंतामणि ने निष्ठा है कि वाक्य और पद्य अर्थ से भिन्न अर्थ का प्रतीति का नाम ध्वनि है। ध्वनि के अभिव्यक्ति वाक्य तथा विविध वाक्यों नामक लक्षण चिंतामणि ने बताया है। चिंतामणि का रस विवेचन मम्मट के ग्रंथ का प्रमाण पर आधारित है। नायक-नायिका के प्रथम सा समावेश में चिंतामणि ने अपने कविकुलकल्पतरु नामक ग्रंथ में किया है। यह विधान विश्वनाथ और धनञ्जय के सिद्धांता पर आधारित है। चिंतामणि ने बताया है कि नायक धर्म धर्म और विषय में परिपूर्ण होता है और नायिका कला प्रदान विनाशना तथा गुणरत्ना की धारणा होती है। चिंतामणि ने कविकुलकल्पतरु के श्लोक प्रकरण में मम्मट निश्चित काव्यप्रकाश के आधार पर काव्य दाया का निरूपण किया है। उन्नायक के लक्ष्य और शायक प्रकरण में चिंतामणि ने अन्वय निरूपण प्रस्तुत किया है। इस

प्रकार न हि ी रीति युग क सारप्रथम आनाम कवि विनामनि ने नाम्य नाम्य न मग
भग सभी पशा का विशरण अपन का म प्रस्तुत किया है। उनका नाम्य न कुछ
उत्पाहरण नी न प्रस्तुत किया जा रहे है

राधा ज व अम सग दानि त्या र्गिर बागु
गुनाबन न रग दानि सोरमनि मा भरी ।
चितहि चरावनि मु कानिन न बना लगी
वानन चितोत प्रम म न री मतो तिरा ।
चित्तामनि मा ही ह रगान मार कुजनि म
अनि न पजन मु मानो मुनिआ रीरी ।
बात के बीच सलनाई जाइ निमिर म
माय मुनी पनमी म ज्या यमत री सिरा ॥

कसरि वारहि वार उताग्न
कसरि जग उगावनि लागे ।
आई ह नननि चचनता
दग अचन वाम छपावनि तागी ।
दूलह क अवनाकन वा वा
अगनि धरायन जावनि तागी ।
घोस दा तीनक त यनिया
मनभावन की मनभावन लागे ॥

देख न क्या मुख मानि घनो मन
जा मुख मान की सार भयो है ।
सावरी मुतर जा निगरी
ब्रज नारिन का रित चार नयो है ।
आपुने जाइ अटा म भट
घनघार घगन को मार भयो है ।
न न बिसार सराय की आर
मु ता मुख च न चकार भयो है ॥

का महा मू न छबनी न जगन
जाय परयो ज्या ससारी बहीर मै ।
ठान अठान अधीन जा आपत
ताहि का भानि सन पुनि तीर मै ।

जावन पूर बिलासत रम

उठ मन माद उमग समीर मैं ।

मन उरोज त कूदि परया मनु

जाइ प्रभा नहि भीर भीर म ।

बिहारी लाल—

रीति युगीन शृंगार काव्य में बिहारी का नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है। उनका जन्म सन १५१५ हुआ था। वह ग्वातिपर क निवासी थे। उनके पिता का नाम कचबराय था। इनके कोई सन्तान न होने के कारण दत्तान जयन भटात्र निरजन का गाद ल लिया था। बताया जाता है कि यह आचार्य वागशास से काव्य शिक्षा ग्रहण करते थे और आरछा में रहकर ही इन्होंने भाषा और साहित्य का अध्ययन किया था। जदुरहीम खानखाना के सम्पर्क में इनका रहना भी अनुमानित किया जाता है। इन्होंने मस्वृत प्राकृत उदू तथा फारसी का अध्ययन किया था। दिल्ली जाकर जाधपुर, बूंदी आदि अनेक रियासतों से इनका सम्मान मिला था। परन्तु सबसे अधिक जयपुर के महाराज जयसिंह तथा उनकी पत्नी अनंतकुमारी द्वारा यह प्राप्त किया गया था। जयपुर के राजकुमार रामसिंह का विचारमग संस्कार भी इन्होंने ही सम्पन्न किया था और यह दरबार के राजकवि बनाये गये थे।

इनकी निम्नी हुई एकमात्र रचना सनगया मिनती है। इस ग्रंथ में इनके निम्ने हुए ७१३ दाह तथा सारठ सप्रहीन हैं। इनके विषय में कुछ एकद कवित्त भी उपलब्ध होते हैं। इस ग्रंथ में इन्होंने समात्र राजनीति घम आतिथ वचक दशन गचित लोकज्ञान, शास्त्र ज्ञान काव्य ज्ञान रीति शृंगार प्रेम नयनिष्ठ भक्ति आदि सभी विषयों का निरूपण किया है। बिहारी का वाच्य उनकी कतामक मुद्रवि और रसात्मक वक्ति का परिचायक है। यद्यपि वह एक आश्रित कवि थे परन्तु उन्होंने अनेक दाहा में कट यथाय का स्पष्ट परिचय किया है। विषय भूत अनुसार यानि बिहारी सतसद का विलक्षण किया जाय तो उसमें नारी-मौल्य नारी रणत्रा प्रमानुभूतिया मवाग विरह प्रहृति, नायिका भूत शृंगार भक्ति नीति दान तथा आतिथ आनि विषयों के साथ-साथ महाराज जयसिंह से सम्बन्धित भी सारे दाह सम्मिलित हैं। लगभग ६०० गाने शृंगार रस से सम्बन्ध रखते हैं। इसलिये ये मुख्यतः शृंगारिक कवि ही कहे जा सकते हैं। बिहारी ने राधा कृष्ण का आश्रय बनाकर प्रेम भावना की अभिव्यक्ति की। उन्होंने प्रमानुभूति का जीवन का सबसे बड़ा धर्म माना हुआ उनका महानता सिद्ध की है

गिरित ऊध रसिक मन नूह जहाँ हवा ।

बड़े गंगा समु नरनु का प्रेम पयाधि पगाह ॥

जान मुगति शिव मितन का धूरि मुद्रति मह शान ।

जा रहिय सग सजा ता घरा ररु हू बीर ॥

पर पाये रर राहर गर पर रर गग ।

गुप्ती पया पुत्रुमि मग हें गुप्ती विरग ॥

बिहारी ने अपने काय में शृंगार निरूपण करके गुण नायिका के साथ का चित्रण उससे विभिन्न बनाता चित्रण नायिका की विभिन्न अवस्थाओं का उल्लेख करता चित्रण किया है। नयनविशेषण द्वारा भाव चित्रण तथा मुद्राओं का चित्रण भी इसमें के अंतर्गत किया गया है। यह चित्रण परम्परानुगत होने द्वारा भी मौलिकता में परिपूर्ण है। कुछ स्थानों पर बिहारी ने नायिका के गुणों को भी चित्रण कर दिया है। उसके पृथक्-पृथक् अंगों का चित्रण सरक रूप व्यंजना द्वारा भी है। नायिका के निरूपण प्रस्तुत करते हुए बिहारी ने स्वस्वभाव परीक्षा आदि के अंतर्गत प्रस्तुत किया है। बिहारी का नायिका भ्रम-वर्णन मुख्यतः परम्परानुगत ही कहा जा सकता है। शरीर के रूप में बिहारी ने प्रकृति-वर्णन करते हुए वसंत शीतल तथा शरदः ऋतु तथा शिबिर आदि का वर्णन किया है। विरह वर्णना तथा भाव उल्लेखों का चित्रण भी उनका काय में हुआ है। नीचे इन विषयों से सम्बंधित कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं

छिनुक चरति ठठुक्कि छिनुकु भज प्रीतम गन डारि ।

चंग जटा देखति घटा बिजु छग सो नारि ॥

अग-अग छवि की उपट उपटति जाति अछोह ।

खरी पातरीऊ तऊ नग भरी सो देह ॥

विसखी नख खरी खरी भरी जतख बराग ।

मृगनी सनन भज लखि बनी के दाग ॥

वान बहा नानी भई नोइन कोइनु माह ।

नान तुम्हारे दगनु की परी दगनु में छाह ॥

भो यह एमा ई समो जहा सुखद दुख दत ।

चत चान की चादनी डारति किए अचेत ॥

बिहारी ने जो शृंगार काय लिखा है वह विविध अन्वयों के उदाहरणों के रूप में नहीं रचा गया है। फिर भी उनका काय में लक्षणा के अनुरूप ही अलंकार के उदाहरण मिलते हैं। बिहारी के विचार से काय में अन्वय का समावेश अवगौरव में सहायक होना चाहिए। उनकी सतसई में रस योजना का भी सम्यक् निरूपण है। ध्वनि के भी उपयुक्त उदाहरण विविध भेदों के अनुसार उनकी रचनाओं में मिलते हैं।

भाव पक्ष के अंतगत बिहारी न शृंगार का अभिप्रेक्षण ही की है। जसा कि ऊपर मरुत क्रिया गया है, शृंगार रस के सभा पक्ष बिहारी न काव्य में निरूपित हुए हैं। बिहारी न गुड ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। अथ प्राथमिक भाषाओं के भी प्रभाव उनकी भाषा पर यत्न-यत्न मिलत हैं। यमक अनुप्रास वीरगा जाति अलंकारों का सामंजस्य प्रयोग भी उनके काव्य में हुआ है। निष्कष रूप में यह कहा जा सकता है कि रीतियुगीन शृंगार-काव्य का परम्परा में बिहारा का स्थान बतल ऊचा है। उनकी सतसई की परम्परा में ही शृंगार पर अनेक सतसईया लिखा गया त्रिनम मतिराम सतसई शृंगार सतसई विराम सतसई आदि विराम रूप में उल्लेख है। इनकी गीतों में बहुत अधिक लिखी गयी। कहा जाता है कि त्रिनी गीतों में बिहारा के इन ग्रंथों पर लिखी गयीं उनकी कितनी अथ शब्दों का नही लिखी गयीं। बिहारी-सतसई की कितनी सतसई फारसी गुजराती तथा उर्दू आदि भाषाओं में लगभग ६० से अधिक टीकाएँ लिखी गयीं बतायी जाती हैं। यह तथ्य भी बिहारा के महत्त्व का द्योतक है। बिहारी के काव्य में कुछ उदाहरण नीचे उदाहरणों प्रस्तुत किये जा रहे हैं

मरी भव बाधा हरी राधा नागरि सा ॥

जा तन की पाइ पर स्वामु हरित तुनि हाइ ॥

या अनुरागी चित्त की गति समुद्र नहि काइ ॥

ना-या बूढ स्वाम रग त्या त्या उ-जनु हो ॥

अग अग नग जगमगत, दीपसिखा सी दह ॥

लिया बगल हू रहे बडो उ-चागे नह ॥

अनिवार दीरघ दगनु कितो न नरनि समान ॥

बह नितवनि जोरै कछु जिहि यस हान गुनान ॥

मटपगति म ससिमुखा धूप पर नाहि ॥

पावक तर सी समनि क गद पराग पाहि ॥

महु धावति एरी घसति हयति अनगवति तार ॥

घसति न दूरीबर नयनि काहिनी के नीर ॥

नासा मारि नचा ज करी कस की सी ॥

काइ सी कमकति हिय गयो कानी मोह ॥

पिय के ध्यान गहा गहा रदा बक्ष गू नाहि ॥

भानु बाबु हा बारसी नखि रामनि गिनवारि ॥

मतिराम—

कविबर मतिराम का नाम रीति काव्य में प्रमुख रचिया में दिया जाता है। वह चिंतामणि और भूषण का भाई था। निम्ना काशीपुर का जन्म हुआ। निम्नापुर नाम स्थान में उनका जन्म मगवा १६७४ में हुआ था। उनकी जाति काशीपुर की महराज भात सिंह था। यही काशी का नाम म रहत का ही इहान था। मतिराम का नाम प्रथम की रचना की गी। इस प्रथम का अतिरिक्त इहान का नाम रमराज काशिय सार काधण शृंगार तथा मतिराम सतसई आदि प्रथम भी रिये। काशिय नाम का प्रथम महाराज शम्भनाथ सोनकी को समर्पित रिया गया है। इन प्रथम का रमराज और रचित का नाम रस और अन्तार का मंडातिर विरचन और मरम काहरण का कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है। मतिराम का काव्य की विशेषता का मरम का स्वाभाविकता मौलिकता सरलता एवं जानुप्रतिरना का है। उनकी भाषा काशी का भाषा अभि यजना सोष्ठव विद्यमान है। अपने काव्य में इहान शुद्ध काशी भाषा का प्रयोग किया है। माधुय और प्रसाद गुण उनकी भाषा में स्वाभाविक रूप से विद्यमान मिलते हैं। उपमा उत्प्राधा रूप का दीपक दृष्टात व्यतिरेक अपभ्रुति तथा अनिगयाक्ति आदि अन्कार उनके काव्य में बहुता से समाविष्ट हुए हैं। शृंगार रस का साथ साथ अन्य रसा का परिपाक भी उनके काव्य में मिलता है। छंद योजना का धर्म में उहाने दोहा कवित्त और सबदा का प्रयोग अधिकता से किया है। प्रकृति का चित्र तथा ऋतु-वर्णन भी उनके काव्य में उपलब्ध हैं। मतिराम का काव्य का कुछ काहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

बारन सफन एक रोरी ही की आड पर
 हा हा न पहरि आभरन और जग म ।
 कवि 'मतिराम जस तीछन कटाछ तेरे
 ऐसे कहा सर है अनग क निखग म ॥
 सहज मुरुप मुघराई रीझो मन मरो
 डोलत है तेरी अदभुत की तरग म ।
 सत सारी ही सौ सब सौते रगी स्याम रग
 सत सारी सौ रग स्याम लाज रग म ॥

—
 —
 प्राण पिया मन भावन सग
 अनग तरगनि रग पसारे ।
 सारी निम्ना मतिराम मनोहर
 केनि का पुज हजार उघारे ॥
 होत प्रभात चलो चह प्रीतम
 मुदरि का हिय म दुख भार ॥

चद सा जानन नीप सी दापति

स्वान सराज व नन निहार ॥

सवन सिगार साज रग व सहतिन कों

मुत्रि मितन चती जानन व वद का ।

कवि मतिराम मा करति मनारगनि

पचा परवज प न प्यार नद नद की ॥

नह त लगी है न्ह गहन न्हत

गह बाग का बिनाहि तुम वतिन क वद का ।

चन का दसत तव आया मुय चन जब

चन ताप्या हसन तिया क मुञ्चद का ॥

कमन मुखनि कुवलय गानि कुमु मपुर मुखव्यानि ।

लखो तान ऊपर मन्त कमनाकर मुत्रगानि ॥

जधर रा बसरि मुक्न मानिक बानिक तत ।

हसत बान दापति बरि हाति हार छवि सत ॥

नयतावति नय इदु मुञ्च तनु त्रुति नीप बनूप ।

हाति निवा नदनाय मत तत्र निहारा रूप ॥

जानति सीति अनाति है जानति उया तुनाति ।

गुत्रन जानत तान है, प्रातम जानत प्रात ॥

कुत्तपति—

आचार्य कुत्तपति मित्र का रचना-काल सन १९२७ मे १९८० तक अनुमानित किया जाता है। इनके पिता का नाम रामराम मित्र था। यह आचार्य के निवास था। महाकवि बिहारीदास इनके नामा कर्ता जाते हैं। कन्नडराय इनके नामा ५। कुछ समय तक विष्णुत्रिह नामक कविता ज्ञानत व आचार्य मे रचने छ परन्तु यह महाकाव्य रामत्रिह के आचार्य मे रहे। इनका रचना का मुख्य कारण इनका रत रहस्य नामक ग्रन्थ है जिसकी रचना उन १ ७० मे २२ था। उनका अतिरिक्त इनके विषय हुए अन्य ग्रन्थो मे आचार्य के गुण का उल्लेख अर्थात् तथा अक्षय मार आदि विविध विषय जाते हैं। कुछ विद्वान् गुणा भक्ति चरित्रा उपा गुण सम रहस्य का भा भा का मानते हैं।

आचार्य कविति न बनने रत रहस्य नामक ग्रन्थ मे काव्य कथन ५९ उपाय मध्यम और अथम मान है। उद्दान का व क गुणा का निरूपण करत आचार्य विद्वान्

तथा अभ्यास को वाध्य रत्ता का कारण बताया है। उद्भास्य गति जान व प्राप्ति तुरित-नाग धानुप जगत तसा गवा का रस म करता आदि वाध्य व प्रयाजन बताया है। शब्द शक्ति निरूपण करते हुए कल्पिता व शब्द और ज्ञा का वाध्य का शरीर बताया है। उद्भास्य अभिधा तणा भजनता तथा तास्य गति का कारण शब्द शक्ति का रूप म माय किया है। कल्पिता व धानि ता वाध्य पुण्य का जीव शब्द का शरीर माध्य आदि गुणा का गुण जनकारा ना भूषण और वाय्य तापा का दूषण बताया है। कल्पिता न रस विचरन व प्रमग म विभाव अनुभाव सचारी भाव स्थायी भाव आदि को चार भागा व रूप म माय किया है। इनम म विभाव अनुभाव और सचारी भाव को उद्भास्य रसाभिव्यक्ति ता माध्य माना है। कल्पिता व वाध्य दोष उसको बताया है जहा उसम कविता विरम हा जाती है। कल्पिता न अन्वकार निरूपण करते हुए लिखा है कि अन्वकार शब्दाय रूपी शरीर का आभूषण है। इस प्रकार स कल्पिता व वाय्य म आशयत्व और कविता का अनुपम मयाग मितता है। उनक वाध्य व कछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

माहन के अभिधाप सी अस

उम बय व सम रूप बया है।

रूप समान तुनाई विराट

तुनाई सा जी म मुजान पया है।

जसी मुजानता तसा विचार व

कृष्णकमार सा नह तना है।

नह सम न तहै मुखराज

सु राध को जीवन धय बयो है ॥

तोचन तजाहै साहै होत न सखीन हू सा

बातन म बीजत अनूप सुरभग की।

मन मन आनद मगन हूय विहसति

याही तें सहनी न सुहात कोऊ सग की।

दगमगी उगे पन सपति सपकि तग

कह देत गति तन पत्व अनग की।

आधी और जाभा आज नई है बदल पर

जगर मगर जाति होति अग अग की ॥

कनति है कोई तपटेगी बन चातुरी सा

फूत पांचा बातन जाग दख मैन भाग म।

फूत है पञ्ज विचित्र चित्र चद दधि

उपवन जाव सब हाउ अनुयाग म ।
 बगि बनि जाला नभ छाय रहा लाला
 टुमराजा हू बिरात्री लखि सपति मुहा म ।
 बिनहि बसन्त रति कत मयमत हाउ
 तग मुत्र दउने बसत हाउ बाग म ॥

मुद्रदब मिश्र—

कविवर मुद्रदब मिश्र जिना फरुखाबाद क अन्तार कम्मिला नामक स्थान क निवासा थ । जात्रि क यह कायकुत्र ब्राह्मण थ । इनका रचना-काल सन १६३३ स १७०० तक बताया जाता है । इनक काव्य गुरू काशी निवासा कबा ब्राह्मण सरस्वती थ । इहान बसापर क राजा भावतराय शाचा, डाडिया घर क राव मन्त सिंह, अमरा क राजा हिमत्र सिंह तथा ओराजब क नवा फारिन अना जादि स विाष मान-सुम्नान प्राप्त किया था । जवन क अन्तिम काल म यह मुगरमज्ज क राजा दबीरिह क बान्धव म रहन तग थ । कहा जाता है कि इन्ह राजा राजसिंह गौड़ न कविराज का उपाधि दा था । कुछ विद्वानों का अनुमान है कि यह उपाधि इन्ह अनहवार या द्वारा प्राप्त का गया था । बाचाप मुद्रदब मिश्र क निम्न हुए कथा म अध्यात्म प्रकाश फारिन अना प्रकाश 'नगनिख' मगन रसायन 'ज्ञान प्रकाश', रस रत्नाकर' निम्न छ' विचार विगत वत्त विचार तथा अनिवाचनसार आदि हैं । इनन कवि न रस और छ' विवचन विाष विस्तार क साप प्रस्तुत किया है । इनक काव्य क कुछ उदाहरण नाच प्रस्तुत किया जा रह है

ना कछ कौहा बचानक चाट सु,
 आट सगं न सकी क दुकून है ।
 दह कप नुह पारी परा सा कह या नहि,
 सु लू गया हिय भून है ।
 मास नराज न आनि लम्बा
 अगिराज जहा उचक्या भुजभूल है ।
 कीन है क्वात धतार अनाइ
 निमक द एन बनपत भून है ॥

पूनि रह बनबाा सरे नधि,
 पूनि पूनि गया मन मरा ।
 पूनि हा का बिठावना कै
 गहना किया पूनि हा का धररा ।
 नाच पनाचन न पर बाट ठे
 मन प्रसाद किया धन धरा ।

ऐसेहि फल पत्राद् पत्राद्
भयो घृणुराज ता मातु ररा ॥

देव—

महाकवि देव का पूरा नाम अज्ञात था। दाराज म म् १६७३ म अनुमानित किया जाता है। इहान भवानीरत्न चष्य च जात्रय म रहार भवानी विलास नामक प्रथ की रचना की थी। औरग म् १ पुत्र जात्रयगाह र संग्राम म भा यह रह य। फफू व राजा कुशव सिंह र जात्रय म र्हा प्रमत्तरग नामक प्रथ की रचना की थी जो कुशवविनास शीषक स भी उत्तिथित का जाता है। एक प्रमुख आश्रयगता भागीलान ध जि हान नका ताय्य रूप्य रर सम्मानित किया था। स्व न अपना प्रसिद्ध प्रथ रम विनास उ ही का समाप्त किया था। जप उद्यत मिह नामक आश्रयदाता का स्व न प्रम र्तिरवा नामक प्र र समर्पित किया है। इसी प्रकार स मुजान मणि को उहान मुजान विनास नामक प्र य भेंट किया था। मुमिन विनो नामक प्रथ म स्व न जपन हिमातुना यो नामक आश्रयगता का भी परिषय किया है। कहा जाता है कि स्व न जितम जात्रय ता जतर जती यो ध जिनरा उ हान अपना मुखसागरतरग नामक स्व समर्पित किया था। स्व न निम द्वा अ य प्रमुख प्र था म भाव विनास रसान द तहरी का य रसायन विगत जष्टयाम प्रमदीपिका राधिका विनास मुदरी सि दूर राग रत्नाकर दव चरित जाति विनास वा विलाम पावन विनास दव छातर प्रम दान शिवाष्टक आदि है।

महाकवि देव ने शृंगार का रसरज मानकर स्व अपने काव्य म सर्वापरि स्वान दिया है। उनके सभी काय प्र था म शृंगार रस के भेद तथो क रूप म विद्यमान है। भाव विनास म दव न शृंगार रस का मह व एउ उसर अगा का वणन करत हुए नायक नायिका भेद प्रस्तुत किया है। भवानी विलास म र्हा शृंगारतर रसा का भी समावेश किया है। का य रसायन अथवा रसायन म रसरज शृंगार का विस्तृत वणन है। रस विनास का प्रधान विषय नायिका भ है। मुख सागर तरग नायिका भेद विषयक अयतम वृत्तिया म है। मुजान विनास म स्व न ऋतु वणन क प्रभावशाली प्रसंग प्रस्तुत किय है। प्रम चरित्रका तथा देव शतक म कवि ने प्रम भावना की अभि यजना की है। दव चरित म शृण्व नकिन क अनुराग और विरागमय चित्र मित्रत है। भाव विनास तथा का य रसायन नामक प्रथा म दव न रस अत्रकार शब्द शक्ति रीति तथा छ म् जाति का विवचन किया है। इस प्रकार स देव क काय म उनके युग की सभी का य शास्त्रीय तथा शृंगारिक प्रवृत्तिया समाविष्ट है। देव का आचार्यत्व और कवित्व दोनों ही उनकी ऊंची प्रतिभा के द्योतक है। उनके काय क कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जा रह है

पायनि नूपुर मजु वज

कटि किचिन के वुनि की मधुराई ।

सावर जग तम पट पात
 हिय दूखम बनमाल गुहाई ।
 माय किरौट बड तग तचन
 मन्त हसी मुत्र चण जुहाइ ।
 ज जग मन्दि दीपक गुन्त
 श्री प्रब्रह्मह तब जुहाइ ॥

दब मै सीम बसाया सनहन
 धान मगमद बिदु क भाण्या ।
 वचुका म चुपरया करि चावा
 तगाय लियो उर सा अभिनाण्या ।
 व मग्रनून गुह गहन
 रस मूरतिवत सिगार र चाण्या ।
 सावर तान को मावरो रूप
 मै मननि का कजरा करि गाण्या ॥

रोसि रासि रहसि रहसि हसि तसि उट
 साम भरि आसू भरि कण्ठ तइ दइ ।
 चोकि चोकि चकि चकि जोचरि उचकि दव
 जकि जकि वकि वरि परत बइ बई ।
 टुटून को रूप गुन दाऊ बरना फिर
 पर न विरात रासि नह की नइ नई ।
 माहि माहि माहन को मन भया राधा मय
 राधा मन माहि माहि माहन मइ मइ ।

जो न जीन प्रम तब काज जननम,
 कज मुग्र पन तब मत्रम बिमघिय ।
 आस नहा पो की तब आसन हा बाजिन
 सासन क सासन का मूत्र पत्रि पाग्रय ।
 नग्र तें पिग्रा लो सब स्वाम मइ बाम मई,
 बाहिर लो नाउर न दूखी तब त्रिग्रा ।
 जात करि मित्रें जा बिबाग हाय बाउन
 जसा न हरि हाय तब ध्यान धरि त्रिग्रा ॥

धई पारि-पारि त बघाइ दिय आसन का
 मुनि वारि-वारि तग भासिनि भवति है ।

मारि मारि बरन निहारती बिहार भूमि
 पारि पोरि आन परी सी उपरति है ।
 देव वर जारि जोरि बदत गुरन
 गुरु नागनि व सारि मारि पावन परति है ।
 तारि तारि मान पूर मोतिन का धोक
 निवछावरि का छारि छारि भूपन धरति है ॥

राजत राजत गन रष्यो वनि कयलाम
 सान मनि सिधर गुमरहि समारै ।
 रग रग अगन अगन रग महन
 उन्ति रग राध रति रभा का निरा र ।
 भाति भाति कोरनि अमद चन्दाति पाति
 चद का दरस दव बरसति बादर ।
 बरनि सापाननि ऊपर रह्यो भू पर का
 चारिहू तरफ पहराती रस चादर ॥

मुरति मिश्र—

मुरति मिश्र का जन्म सन १६८३ में हुआ था। यह जागरण निवासी था। इनका पिता का नाम सिंहमनि था। इन्होंने गणेशजी से काव्य शिक्षा ग्रहण की थी। इनका शिष्यो में शिवदास जीर अलीमुद्दीन तथा प्रीतम आदि थे। यह अनेक योग कथा यात्रय में रहें थे जिनमें दिल्ली के बान्शाह मुहम्मद शाह जोधपुर के दीवान अमरसिंह बीकानेर के राजा जोरावर सिंह तथा नसिरुल्लाहका के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें काव्य सिद्धांत अन्कार माना रसमाना सरस रस रसप्राहक चन्द्रिका रस रत्नाकर शृंगार सार रसरत्नमाना नयशिख प्रबोध चन्द्रोदय नाटक भक्तविन्दोद बतान पञ्चीसी रास नीला तथा दान नीला आदि हैं।

काव्य सिद्धांत शीपक ग्रन्थ में लखकान काव्यशास्त्र के विविध पक्षा का सम्बन्ध निरूपण किया है। कवि शिक्षा का समावेश भी इस ग्रन्थ में लखकाने कर दिया है। अन्य ग्रन्थों में अन्कार रस शृंगार तथा नयशिख आदि से सम्बन्धित विवचन किया है। भक्तमान आदि ग्रन्थों की रचना में साथ साथ उन्होंने बिहारी सतसई की एक टीका अमरचन्द्रिका शीपक से की। शिवदास की कविप्रिया तथा रसिकप्रिया नामक कृतियों पर भी इन्होंने टीकाएँ लिखीं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तेरे य कपाल बाल अति ही रसान

मन जिनकी मलाई उपमा बिचारियत ।

बाजू न समान जाहि कोज उपमान
 अरु बापुर मधुक्न की दह डारियत है ।
 नकु दरपन समता वा चाह करा कहू
 भरा अपराधी ऐसा चित्त धारियत है ।
 मूरति सायाही तें जगत बीच बाजूहू तो
 उनक बदन पर छार डारियत है ॥

श्रीपति—

श्रीपति कालपी न निवासी थ । जाति क यह कायकुत्र ग्रहण थे । इनके विषय हण प्रमुख प्रथम काव्य सराज कविकल्पद्रुम रम उागर, अनुप्रास विनाम विग्रम विनाम सरोज कलिका तथा जलहार गंगा जादिक नाम उल्लेखनीय है । इन प्रथम काव्य शास्त्र के विविध पद्या का विवचन किया गया है । इनके विचार पर आचार्य नेणवत्यात का पर्याप्त प्रभाव था । परवर्ती आचार्यों में इन्होंने भिन्नरीदास धारि का बहुत प्रभावित किया है । स्वाभाविक अभिप्रेरणा-मोक्ष्य न इनके काव्य को रसात्मक प्रोढ़ता प्रदान की है । इनके काव्य न कुछ आह्वरण नीव प्रम्पुन विषय आ रहे हैं

कत बिन भावत सत्न ना सजनि
 मोष बिरह प्रयन मनमत काव्यो बाण क ।
 'श्रीपति कलील मान कोकिल अमान
 छान मोन गाँठ ताप गोन राख आण जाड क ।
 टहरि हहरि हिय, बहरि कहरि करि
 धहरि धहरि गिन बीत जिय गाड क ।
 नहरि लहरि बिन्दु फूरि फहरि आण
 पहरि पहरि उठे बादर अगाड क ॥

पापरी की घुमटि अमडि चार तूनरी की
 पावन मचूरु मधपन बरजारे की ।
 भदुटी बिहट फूी अगरे कपोतन प
 बही बडा आगिन म छबि पाव डार क ।
 तरवन तरन जगजु जरवान जान
 स्वजन गिनत बनिन मुग्य मार की ।
 भूलन न भागिनी का गावन गुमान भरा
 गावा म धारति मचावन हिहार रा ॥

मिथाराशास—

राजिगुणोत गृहणर काव्य की परस्पराम आचार्य मिथाराशास का नाम वि-प

रूप में उत्पन्न होता है। यह प्रमाणिक रूप से राजा पृथ्वीपतिगिह के छान् भाई द्वि सुप्रतिगिह के आश्रय में रहते हैं। इनकी पिता शृंगारनाथ तथा प्रमाणिक राम गण हैं। इनका इनका भाई था। इनका पुत्र का नाम अवधस मान तथा पौत्र का गौरीशंकर मान था। इनकी जन्म तिथि आदि के विषय में कोई प्रमाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि शृंगारनाथ का जन्म १७२१ तक करके १७५१ था। इन्होंने जन्म के चारों तरफ ही जिनम रमारांग नाम प्रकाश छन्दोग्य विगत बाध्य निणय शृंगार निणय विष्णु पुराण भाषा शतरजशतिका छन्दप्रकाश बागवद्गीता राग निणय ब्रजमहात्म्य चरित्रिका पद पारक्या वण निणय तथा रघुनाथ नाटक आदि हैं। यह सब का मत कुछ की प्रामाणिकता सदिग्ध है। विद्वानों का अनुमान है कि उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर भिखारीदास जी के लिखे हुए कवन सान ग्रन्थ प्रमाणिक नहीं माने जा सकते हैं। बाध्य निणय, शृंगार निणय छन्दोग्य विगत विष्णु पुराण भाषा रससारांग अमरनाम अथवा शब्दनाम प्रकाश तथा शतरजशतिका हैं।

भिखारीदास ने अपने इन ग्रन्थों में रससारांग के अन्तर्गत शृंगार रस विवचन काय निणय के अन्तर्गत ध्वनि रस अन्वय गुणीभूत व्यंग्य गुण लोप विवचन तथा छन्दोग्य विगत के अन्तर्गत छन्दशास्त्र का विवचन प्रस्तुत किया है। इनमें भिखारीदास का आचार्य रूप तथा स्पष्ट है ही साथ ही उनकी कवित्वशक्ति भी स्पष्ट है। इनकी भाषा अत्यन्त परिमार्जित थी। शृंगार वणन में इन्होंने कलात्मकता के साथ साथ मर्यादा का भी विचार रखा है। रसात्मक दृष्टि से भी इनका काव्य उच्च स्तर का है। नक काय के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

है रति का सुखदायक माहन
या मकरावृत्त कुडन साज ।
चित्रित फूलन को धनुवान
तया मनभार की पाति को भ्राज ।
सुध्र स्वरूपन में मनो एक
विवेक हन तिय सन समाज ।
दास ज आज बने ब्रज में
ब्रजराज सदह अह बिराज ॥

आनन है अरविन न फूल
अतीगन नून कहा मन्त्रात हो ।
कीर तुम्ह कहा बाय नगी
क्रम बिम्ब के आठन को नलचात हो ।
दास जू यानी न बनी बनाव है

पापी कलापी कहा इतरात हो ।
 वीरती बाल न बाजती वीर
 कहा सिंगरे मग परत जात हो ॥

बातें स्यामा स्याम को न कसी अब आती
 स्वाम स्यामा तकि भाज स्याना स्यामा सा जना रहै ।
 अब तो लखाई कर स्यामा को बदन स्याम,
 स्याम क बदन लागी स्यामा की टकी रहै ।
 दास अब स्यामा क नुमाय मर छात स्याम
 स्यामा स्याम साभन क आमव छवी रहै ।
 स्यामा क बिनाचन क है री स्याम तार जरु
 स्यामा स्याम नाचन की ताहित तबीर है ॥

भूपति—

कविवर भूपति का पूरा नाम गुप्त सिंह था । यह अमठा क राजा था । यह एक उच्च काश्मिरी कवि काव्य शास्त्री तथा कविता क आध्यक्षता था । प्रसिद्ध कवि उष्य नाथ कवी इन्द्र हीन का आश्रय में रहते थे । इनका रचना काल सन १७३५ के लगभग अनुमानित किया जाता है । इन्होंने कुछ शृंगारपरक दाहा की रचना की है जिनका एक संग्रह सतसई शीघ्र से उपलब्ध है । सतसई क अतिरिक्त उनका त्रिषट्पट्टी प्रथम और उर्ध्व त्रिषट्पित्त किया जाते हैं जो कटाभूषण तथा रस रत्नाकर हैं । इनकी वीरता क अनेक प्रसंग भी प्रचलित है जिनका बचन इन्होंने स्वयं भी अपने काव्य में किया है । इनके त्रिषट्पट्टी दाहा उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

घूषट्ट पट्ट की जाड हृषति जय बहू दार ।
 सति मडनत कवति छनि जनु विभूष की धार ॥

भए रघात रघात है भर पुष्प मकर ।
 मान सान तारत नुरत भमत भुमर मर मर ॥

तोषमणि—

कविवर तोषमणि क जीवन काल क विषय में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है । यह सिद्धोक्त क निवासा था । इनके पिता चतुर्भद्र कुशन था । इनके त्रिषट्पट्टी सान प्रथम उर्ध्व त्रिषट्पित्त किया जा रहा है जो पुष्पनिधि, विनयनलक तथा नरतिष्य है । इनकी भाषा बहुत परिमार्जित और तोष्यपुष्प था । काव्य प्रतिभा और गान्धर्व ज्ञान के समबलन इनका कविता का उच्च काश्मिरी कलात्मकता प्रदान की था । आजका रिकजा तथा रगतमहात्मा इनके काव्य क मुख्य पुरा है । इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

भूपन भूषिता भूपन हात प्रवान महारज न टधि छ द ।

पूरी अनन्त पारत तें अहि म परमारथ स्वारथ पाई ।
ओ उक्त मुक्ता उतही कवि ताप ज्ञान धरी चतुराई ।
होत सब गुण की जनिता बनि जावति जो बनिता कबताई ॥

सोमनाथ—

आचार्य सामनाथ न ज म चार तथा ज म स्वाय न विषय म प्रामाणिक विवरण उपरुध नहा है । यह अनुमात जगामा जाता है कि द्वाता रथा काल मा १७३३ ग नवर १७५३ तक रहा होगा । सोमनाथ तीनवट मित्र क पुत्र जोर गगाधर मित्र क अनुज थ । इनका नाम शशिनाथ भी था । यह जयपुर रण महाराज रामनिहा मत्र गुरु थ । भरतपुर क महाराज बदर सिंह न छोट पुत्र प्रतापसिंह क आग्रय म यह रथ जिनक आश्रय म रहते हुए ही इ हान रसपीयूषनिधि की रचना की थी । इस ग्रंथ क अतिरिक्त इनकी अन्य कृतिया म कृष्ण नीता पचाष्यायी गुजानविनाम तथा माधवविनोद नाटक हैं ।

अपने रसपीयूषनिधि नामक ग्रंथ म सोमनाथ न काव्य के स्वरूप का विवेचन करत ग काय उम कवि कम को कहा है जिसम छन्दोबद्ध मन्त्राय गण तथा जनकार सहित और श्लेष रहित रूप म प्रस्तुत किया गया है । काव्य पुरुष रूपक म सोमनाथ न यम्य का काव्य का प्राण शक्त तथा अथ का उसका शरीर और दाप गुण और जनकार नामक कायागा का क्रमग शो का उपमान माना है । उत्तम मध्यम और अधम नामक तीन काय भेद सामनाथ ने बताया है । रसपीयूषनिधि म दो सामनाथ न शक्त शक्ति निरूपण भी किया है । इस प्रसंग म उ हान सबप्रथम शब्दाथ का निरूपण किया है क्योंकि शब्दाथ काय पुरुष का शरीर है और उस पर प्रथम श्रष्टि पडती है जीव का ज्ञान बाद म होता है । सोमनाथ ने बताया है कि जिस ज्ञान द्वारा ग्रहण किया जाय वह शक्त है और जिस चित्त द्वारा ग्रहण किया जाय वह अथ है । सोमनाथ न शक्त की तीन शक्तिया अभिधा लक्षणा और प्रजना मानी हैं । ध्वनि विवेचन करते हुए सोमनाथ ने यम्य प्रधान काय को उत्तम काय कहा है जिसका दूसरा नाम ध्वनि काय है । सोमनाथ ने रस विवेचन का समावेश अपने रसपीयूषनिधि तथा शृंगार विनास नामक ग्रंथा म किया है । उ हाने भाव को रस का मूल बताते हुए हृदय मे वाग्मना रुत से स्थित चित्त वृत्ति को ही भाव कहा है । भाव के उ होने स्थायी भाव सचारी भाव विभाव तथा अनुभाव नामक भेद बताया है । नायक नायिका भेद का प्रसंग भी सोमनाथ न रसपीयूषनिधि तथा शृंगार विनास म किया है । सोमनाथ क विचार म नायक शुकि धनवान जवार अभिमानी उत्तार भक्ति गणी स्वायत्तम्बी चतुर और नरित हाता है । नायिका सुचरी केविकता चतुरा सवगण सपत्ना सरसा और आमूषणभूषितागा होती है । सोमनाथ ने काव्य दोषा को याख्या करत हुक उ ह रस का घातक बताया है । उ हान चार प्रकार के दोष बताया हैं जा शब्दगत वाक्यगत अर्थगत तथा रसगत हात ह । सामनाथ न शक्त नकारा और अर्थानकारा का भी विवेचन अपन

प्राथम्य किया है। इस प्रकार स काय भास्व क प्रायः सभी अंगों का विवचन सामनाय
न करत हुए अपने पांडित्य और काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। सामनाय क काव्य
क कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

छटिक कटि रचक छीन भई
गति नननि की तिरछान गयी ।
ससिनाय कहैं उर उपर तैं
अचरा उघर त सजान लगी ।
तरबाई के पति पछरि कछुक
सयानि सयीन पत्यान लगी ।
पिय नाम मुनें तिय चौसक तैं
दुरिख मुरिख मुसकवान लगी ॥

यदि हैं जान क मग चनी,
बहिक उर म मति ओरई टानी ।
या बहकाइ कै नह बड़ाइ
ममकमुखा रति मदिर आनी ।
हैं न तय ससिनाय मुजान
बछुक तहा टटना टकुरानी ।
हैं न सयान रती भर ह
अनबनी तऊ हिय म अकुरानी ॥

उतइ है मन, यतैं मूषन परत पाग
अग बरसात भुरहरें उठि आए हा ।
रगमगी जपियां अनूप रूप चोरें तत,
सामनाय आछें यहि रूप सधि पाए हो ।
हम सा तो बिहसि बिलाकिचो बिसारयो पिय,
सब बिधि उनइ न हासन बिनाए हो ।
बाह को नन्त, बइ बनन प्रकट हात,
अनुराग जिनकी नितार धरि आए हो ॥

रसलील—

रसलील का पूरा नाम मध्य गुणाम नबी था। इनका जन्म सन १६८३ में
अनुमानित किया जाता है। इनका पिता मध्य मुहम्मद बाकुर था। यह हरदाद जिन क
अन्तपुत्र बिनशाम नामक स्थान में निवासी था। रसलील क माया और अस्तुन रसलील न
भी हिन्दी में काव्य रचना की थी। कहा जाता है कि जहाँ क ताहा म रसलील का
भी हिन्दी में काव्य रचना की उरणा मिली थी। रसलील नवाब सफरत खान की सेवा

म रहते थे । उ ही की आर ग एक बार गया । म पुत्र रगा हुए मन् १७५० म इनकी मरु हो गयी । इनके तिम हुए म प्र पा या उ रय मित्रा है जो अम तपण तथा रसप्रबाध है । अम तपण का रचना का म १७३७ है । अम कवि । नयनिष्ठ विवेचन प्रस्तुत किया है । रमप्रबाध का रचना का १७४१ म पुत्र थी । इसम रम भाव नायिका म पशुपति वना तथा बारहमासा का प्रमम ममाविष्ट है । रस नीन व कुछ दाह उगाहरणाथ गीर प्रस्तुत किया जा र है

नन चहे मुख दिय म मन मा वछू टुराद ।

मन चाहत दग मूदि न नीन न्यि उगाद ॥

मुख ससि निरखि चकार अरु तज पाणिप नयि मान ।
पद पकज दखत भवर हान नयन रम नीन ॥

माहन सखि यह सबन त ह्व उगाम निन रान ।
उमटति हसति जकति डरति विगचति विनयि रिसानि ॥

यो वय तिय बाति कना जीवन ससि अधिकात ।
त्यो सिमुता निसि निमिर घट छवि कर टननि जात ॥

दीपक नो पापनि नीती नवन हाति यह बात ।
ताहि चरत अब फन नो बिगमन नाग्या गात ॥

स्वत बसन जुत जा ह म यो तिय दुति दरमाइ ।
मनो चनी छीरधि मुता छीर सिध म जाइ ॥

कहाँ गये व जलद ज नित उठि जारत जा ।
गाइ मनार बुनाइण तऊ न परत नद्याइ ॥

दूनह कवि—

दूनह कवि व ज मकाव न विषय म प्रामाणिक विवरण उपन ध नही होता । इनका रचना का न सन १७४३ स नकर १७६८ तक अनुमानित किया जाता है । यह कानिदास त्रिवेदी व पौत्र और उदयनाथ कवी व पुत्र थे । दूनह इनकी उपाधि बतायी जाती है । इनका वास्तविक नाम कुछ और था । इनके प्रसिद्ध ग्रंथ कविकुन कथाभूषण म अठकार शास्त्र का सम्यक निरूपण प्रस्तुत किया गया है । गम्भीर शास्त्रीय विवेचन व साथ साथ न्हान जा सरस उगाहरण अपन इस ग्रंथ म प्रस्तुत किया है वह

इनके पांडित्य और काव्य प्रतिभा का प्रमाण है। इनका काव्य कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सारा का सरोरें सब सारा म मिलाय गढ़ा
 भूपन का जब जल जब ब्रह्मियत है।
 कहै कवि दूतह छिनाव न छ मुत्र
 नह न्य सोनिन का नह दृष्टियत है।
 बाबा चित्रसारा न निरगि गुजन जा
 काहा चतुराद सा नप्राद न्हियत है।
 सारिका पुकारें हम नाहा हम नाहा एव
 राम राम कही नाही नाहा कहियत है॥

उरज उरज घस बस उर जा नम
 बिन गुन मान गर घर छवि छाप हो।
 नन कवि दूतह हैं रात तुतरात यन
 दय मुन मुग्र व समूह मरनाए हो।
 जावक सो तात मान पत्रन पाए तात
 त्वारे ब्रजच गुचि मूरज मुहाए हो।
 हात उफ्लाद यदि वा मति बसी जानु
 नीन उरबसा उरबसा करि जाण हो॥

रतनकवि—

रतन कवि गढ़वाल के अत्यंत ध्यानरत नामक स्थान के राजा मन्नीगढ़ के पुत्र पतेहनाह के आश्रय में रहते थे। इनका शिष्यो दूध नीन कृतिया उपलब्ध होती हैं या पतहभूषण पतहप्रसाद तथा अनकार नाम हैं। इनके अतिरिक्त कुछ चातुरी विचार' सूक्त विवक तथा विष्णु नामक रत्नार्णो भी इनकी बतायी जाती हैं। पतहभूषण के अत्यंत कवि ने न न नति काव्य में ध्वनि निरूपण रस विवेचन तथा काव्य विवचन आदि प्रस्तुत किया है। पतहनाह में भी दृष्टा विषया का समावेश है। अनकाररूपण में कवि ने विविध अनकारा का विवचन प्रस्तुत किया है। रतन कवि के काव्य में पांडित्य और प्रतिभा का समन्वय विराहा है। रतन कवि के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बरनि की बाहिनी का नीपन निरार रवि
 कुबलय कलि का गरज गुणरह है।
 गनघरि सिधुर है मज का बनु जर है
 विदुष कृपति की पतिन कामरह है॥

पानिप मनिा का रता रताहर को
 कुबर पुय जनम का छमा महीधर है ॥
 अग को सनाह बतराह को रमा का ताह
 महाबाह पतहगाह एरै तगह है ॥

चदनराय—

चदनराय जिना शाहजहापुर के अ तगत पवाया नामक ग्राम में निवासी थे । इनका पिता का नाम धनुर्दास पितामह का नाम फरीरे राम तथा प्रपितामह का नाम भीष्म था । चदनराय के दो पुत्रा का उत्तम भी मिनता है जिना नाम प्रमराम तथा जीवन है । इनका काव्य काल सन १७५३ ग नकर १८०५ तक अनुमानित किया जाता है । कहा जाता है कि यह हिन्दी के अतिरिक्त मरुती तथा पारसी में भी जाना था । पारसी में यह सदल नाम से शायरी करते थे । इनके अनेक कवि शिष्य हुए हैं जिनमें मन भावन का नाम विशेष रूप से उत्तमनीय है । यह राजा रणगी सिंह के आश्रय में रहते थे । अनेक राजाओं और नवाबों ने इन्हें अपने यहाँ आमन्त्रित किया परन्तु यहाँ स्वाभिमानवश कहीं नहीं गया । इनकी लिखी हुई अनेक रचनाएँ बतायी जाती हैं । इनमें कृष्णकाव्य केशरी प्रकाश राधाजी को नयनिय राग्यविनास काव्याभरण रसकलत्रोत्तम तत्वसना पीतमवीर विलास चदन सतसई पथिक बोध शृंगार सार नाममाना तत्वसना तथा सीतलमत आदि के नाम विशेष रूप से उत्तमनीय हैं । इनके अतिरिक्त पारसी में लिखी हुई कवि की एक रचना दीवान सदल शीषक से भी बतायी जाती है । शृंगार सार काव्याभरण और रसकलत्रोत्तम कवि ने रीति निरूपण किया है । चदन सतसई की रचना सतसई परम्परा के आधार हुई है । तत्व सना एवं राग्य विलास में आध्यात्म विषयक विचार हैं । सीतलमत एक लोकप्रिय कथा पर आधारित रचना है । इस प्रकार से इनके काव्य में पांडित्य और प्रतिभा के साथ साथ बहिष्कृत और मौलिकता भी मिलती है । इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

ब्रजवारी गवारी द जान कहा यह चतुरता न तुगायन म ।
 पुनि बारिनी जानि अनारिनी है रुचि एनी न चदन नायन म ।
 दबि रग सुरग के बने लग इद्रबधू नधुतायन म ।
 चित जो चहै दी चकि सो रहै दी केहि दी महदी इन पायन म ॥

देवकीनदन—

देवकीनदन जिला फर्रुखाबाद के अ तगत मकरद नामक स्थान के निवासी थे । इनके पिता का नाम शिवनाथ और भाई का नाम गुरुदत्त था । यह मुख्यतः उमराव गिरि महल के पुत्र कबर सरफराजगिरि तथा राजा अबधूत सिंह के आश्रय में रहे थे । इनकी लिखी हुई रचनाओं में शृंगारचरित सरफराज चरिका अबधूतभूषण समुहारि पचीसी तथा नखशिख आदि का उत्तम मिनता है । इन ग्रंथों में से

शृगारचरित क अतगन कवि न नायक-नायिका भव भाव विभाव अनुभाव सात्विक भाव तथा मचारी भाव विवचन काव्य-गुण निरूपण काव्य-वृत्ति निरूपण शब्दाद्य निरूपण एव अन्कार विवचन प्रस्तुत किया है। सरफराज चंद्रिका नामक ग्रंथ में कवि न अलंकार शास्त्र का विवचन किया है। जवभूतभूषण नामक रचना भी अन्कार विवचन ही है। समुद्रारिपचीसी एक शृगारिक काव्य है। इनका काव्य माधुर्य तथा सात्वित्य आदि गुणा से युक्त हान पर भी कही वहाँ पांडित्य प्रमाण के कारण प्रसिद्ध हो गया है। इनकी एक रचना उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत की जा रही है

मोतिन की मान तारि कीर सब चारि नार
फरि क न जहौं जाती दुख विचरार हैं ।
दक्कीनदन बहै घाय्य बाग छोनन क
अलक प्रमून नाचि नाचि निघार हैं ॥
मानि मुष चद भाव चाच दई अघरन
तीनी य निकुजन म एक तार तार हैं ।
ठोर ठोर डोलत मरान मनवारे तौ
मार मतवार त्यो चकोर मनवारे हैं ॥

बानराय—

कविवर बानराय त्रिना रायबरी की अन्तगन डाडियाधर नामक ग्राम के निवासी थे। इनके पिता निहारराय तथा मामा चन्द बनीजन थे। यह देवसिंह नामक एक जमादार के आश्रय में रहते थे। उनकी कानाम पर इंदान प्रत्यप्रकाश नामक एक ग्रंथ की रचना की है। इस ग्रंथ में कवि न रत्न विवचन काव्य गुण विवचन काव्य दोष विवचन तथा अन्कार निरूपण आदि विषया का समावेश किया है। इनकी रचना का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

कानुप हरनि मुष करनि सरन जन
बरनि बरनि जउ कहत धरनिघर ।
कतिमन कतिठ कतिउ अष छरगन
सहत परमपत्र तुटित कपउतर ॥
मन कन गुरसदन बन मसि
अमल नवन तुनि भजन भगतवर ।
गुरसरि तव जल दरस परस करि
गुरसरि गु भाति उहत अधम नर ॥

बेनी बशीजन—

बेनीबशीजन त्रिना रायबरना के अन्तगन बडी नामक ग्राम के निवासी थे। यह महाराज टिक्तराम के आश्रय में रहते थे। इन्होंने टिक्तराम प्रकाश नामक ग्रंथ की रचना उदाहरणार्थ नीचे प्रस्तुत की है। यह ग्रंथ अन्कार निरूपण काव्य

से भी उल्लिखित किया जाता है। इसमें रवि । असाधारण विष्णु प्रस्तुत किया है। रसविनाम नामक प्रथम कवि । रस विरचना तथा रस प्रयोग का तथा रसनायिका भी प्रस्तुत किया है। इन प्र । र अतिरिक्त रवि नायिका द्वारा एक अन्य प्रथम गणनहरी शीघ्र म भी बताया जाता है। रवि । कुछ भंडार भा । वि । ये जिनका एक मग्रह भंडोवा मग्रह शीघ्र म प्रतापिता हुआ है। यह ध्याय राध्य है। बेनी वशीजन के दाम्य का एक उदाहरण । प्रस्तुत किया जा रहा है

घर घर घाट घाट बाट बाट राट टट

बना जोर बुझा फिर बना तिर जागपाग ।

कविन सा बाट कर भट बिन नाट करे

महा उनमाट कर धरम करम नास ॥

बनी कवि कहै विभिचारिन का बाटगाह

अनन प्रकासत न गनन सरम नास ।

ननना लनक नन मन की लनक

हसि हस्त अनक रण चलक ननकनास ॥

परमाकर—

रीतियुगीन आन्वारिक रविया की परम्परा म परमाकर का नाम विशद रूप म उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन १७२३ म हुआ था । इसका पिता का नाम माहन नाम भट्ट था । जाति क यह तनय ब्राह्मण थ । इनका पूजक कवि थ इसलिये उनका वंश का नाम कवीश्वर पट गया था । यह जनक राधाश्याम म रण थ जोर वत्त सम्पन्न थ । उनके आश्रयदाताओं म विशेष रूप स नागपुर क महाराज रघुनाथराय अणासाहज, पन्ना क महाराज हिंदूपति जयपुर क महाराज प्रतापसिंह मुगुरा के नाते अजुनासिंह गोसाईं अनूपगिरि (उपनाम—हिम्मत बहादुर) उदयपुर के महाराज भीमसिंह श्वाभियर क महाराज दौनतराव सिधिया आदि मुख्य हैं । पन्ना क महाराज तथा जयपुर क महाराज न ह कविराजशिरामणि की उपाधि तथा जागीर भी प्रदान की थी । कहा जाता है कि सितारा क महाराज रघुनाथराव ने इन्हें एक लाख रुपया एक हाथी तथा दस गाव भी प्रदान किया थ । भगवन्त सिंह भी इनके आश्रयदाता बताये जाने है । परमाकर की मुख्य कृतिया म हिम्मतबहादुर विष्णावनी पदमाभरण जगत विनाद प्रबोधपचासा गंगा नहरी रामरसायन भाषा त्रितोपदेश ईश्वरपचीसी आनिकाह प्रकाश तथा प्रतापसिंह विष्णावनी आदि है । इनम स हिम्मतबहादुर विरदावनी धीर रस प्रधान काव्य है । जगत विनाद म रस विवचन हुआ है । परमाभरण म अन्कार विवेचन किया गया है । प्रबोधपचासा गंगाहरी तथा रामरसायन काय भी अपनी मधुर कल्पना तथा कलात्मकता के कारण महत्वपूर्ण है ।

पदमाकर न सरस भाषा म रस वणन ऋतु वणन शृंगार वणन आदि प्रस्तुत किया है । मुख्यतः सौन्दर्य और प्रेम के कवि होने क कारण उनके काव्य म भी इ दो

विषय का प्रधानता है। वा भक्ति मात्र परमात्मा न विद्या उसमें ना 'व्याख्य' काव्य का भाति रसात्मकता विद्यमान है। छन्द विद्यान क धर्म म परमात्मा का विषय रूप म सफरता भिन्न है। उहान छप्पम हरिगात्रिका हाकन डिल्ला भुवन प्रभात चिन्ती पदरा नाराच दाहा चौपाइ सारंग चौपाया रक्ति और सनया जाति छन्द का प्रयाग किया है। मुत्तवरा और ताकाकियता न प्रयाग न परमात्मा का कामनकात पयावता उ मुक्त भाषा का व्यावहारिकता प्रदान की है। परमात्मा न काव्य व कुछ 'हरण नाच प्रस्तुत निज जा रत्न ह

प्रानन व प्यार तन ताप व हृग्न हार
 न व टुनार रत्नवार उमहठ है।
 वहे परमात्मा उरत उर अतर वा
 अतर चह हू व न अतर चहन ह।
 नननि बस है जग जा दुनने है
 राम रामनि गन है निरन है का बहत है।
 ज्या व गाविण काऊ जीर मररा म
 यही मरता गाविण माहि माहि में रहत है ॥

माहि तजि माहन निया है मन मरा गौरि
 नन हू मिन है तधि दधि सावरा गरार।
 वहे परमात्मा त्या कान मय कान भव
 हौती रहा जकि यकि भूना सी भ्रमा सा बार।
 म ली मिरह तद इनका दया न दइ
 एसा गता नइ मरा कस घरो तन धार।
 हौ ता मन हू व मन ननन व नन जा प
 प्रानन व प्रान तो प जानत परा पार ॥

जाहिर जात जा जमुना
 जब रूढ बहे उमठै बह बना।
 त्या परमात्मा हार व हाग्न
 गग तरगन का पुत्र दना।
 पावन करग जा रति जात जा
 नति तु भाति उर बडा सना।
 पर बहाइ नहा बह बाव
 तहा नहा जान में हाउ प्रियना ॥

वजन म वेति म बछारा म कुजा म
 ब्यारित म बनिन बनीन निरत है ।
 बहे पदमाकर परागा म पीन हू म,
 पानन म पीर म पनाजा पग त है ।
 हार म दिमान म तुनी म न दान म
 लघी लीप दीपन म लिय लियत है ।
 बीधिन म ब्रज म नयति म बनिन म
 बनन म बागन म बगरा बहत है ॥

म्वाल कवि—

म्वाल कवि का जन्म सन १७६२ म हुआ था । म्वाल कवि म्वालराम बनीत्रन क पुत्र थ । यह बूढ़ावन क रहने यान थ । कुछ विवरणा न आधार पर इनक पिता का नाम मुरचीधर राव भी बताया जाता है । इनक गुरू म्वाय जी थ । इनक दा पुत्र गब चद या रूपचद तथा ममचद थ । इनक आश्रयताताआ म नाभा नरेश महाराज जसवत सिंह तथा महाराणा रजोतसिंह प्रमुख थ । म्वाल की लिखा हुई पुस्तका म यमुना लहरी रसिकानन्द हमीरहू राधामाधव मिलन गधा अष्टक श्रीकृष्णजी को नखशिख नह निवाहन वशी नीना गापी पत्नीमी कु जाष्टक कवि म्पण साहित्यानन्द रसरग अनकार भ्रम भजन प्रस्तारप्रकाश भक्ति भावन अथवा भक्तभावन साहित्यभूषण साहित्यमपण दाहा शृंगार शृंगारकवित्त दूषणमपण कवित्तबसत वशीवीसा म्वालपहनी रामाष्टक गणशाष्टक म्गशतक, कवित्त प्रथमांश कविहृत्यविनाद इक नहर दरियाव विजय विनाश तथा पटश्रुतुवणन आदि के नाम विशय रूप स उत्तमघनीय है । इनम कवि न विविध कायागी का विवचन करन क साथ साथ भक्ति शृंगारमयी कविता भी लिखी है । इनकी रचनाआ के कुछ उदाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रह है

मीन मग खजन छिसान भरे मन बान
 अधिक गिलान भरे वज कत तान के ।
 राधिका छवीनी की छहर छवि छाक भरे
 छतता क छोर भरे भरे छवि जान के ।
 म्वाल कवि जान भरे सान भरे स्यान भर
 स्यान भरे कछ अनसान भरे मान क ।
 नाज भरे लाग भरे नाम भर लाभ भर
 वाली भरे लाड भरे लोचन है जान के ।

— —
 सीरे सीरे नीर भय न दिन क तीर तीर
 सीरे भय चीर धरा सीरी सब परि गई ।

दसहूँ जिगें तिन रात लागी कुहरान
पौन सरसान साकू तीर सी निकरि गई ।

'वान' कवि एष या हिमत मन आव कत
सो सुष्ट न दाप सलमत जोरें उरि गई ।

मूख गय फूत धोर उडि गय प्रान्त
काम की कमान का कमान सी उतरि गइ ॥

प्रतापसाहि—

रोतिकालान आचार्यों की अन्तिम कड़ी के रूप में प्रतापसाहि का नाम विनय रूप से उल्लेखनीय है। इनका रचना-काल सन् १७२४ से लेकर १८१८ तक था। इनके पिता रतनसन बजाजत था। महं मुग़ल रूप में महाराज छत्रसाल परनापुरन्दर तथा महा राज विप्रमसाहि के राधाश्रय में रहे थे। इनकी विधो हुई रचनाओं में व्यंग्याय कोमुनी जयबा विनाय कोमुनी कायविनास जयविह प्रकाश नृगारमजरी नृगारगिरामणि, अन्कारचित्तमणि काव्यविताद जुगन-नघसिध रसचंद्रिका भाषाभूषण का टीका रत्तराज की टीका, बिहारो सतसई की रत्नचंद्रिका टीका, नघसिध की टीका आदि हैं। इस प्रकार से प्रतापसाहि मौलिक कवि काव्य-पंडित तथा टीकाकार थे। प्रतापसाहि ने जपन प्रायः काव्यविलास में काव्य-स्वरूप का निरूपण किया है। उद्दान काव्य के तीन भेद मसृज वृत्ति और अम्यात बताया है। उनमें त्रिचार से काव्य के चार पुरुषार्थ चतुष्टय का प्राप्ति होती है और इनके ध्वन करत अभावबाध हात और ध्वनन करत समय मुग़ मित्रता है। ध्वनि निरूपण करत हुए प्रतापसाहि ने बताया है कि काव्य के तीन भेद उत्तम मध्यम और अधम का आधार ध्वनि की विभिन्न स्थितियाँ हैं। उन्होंने गलीभूत ध्वन्य का विषय बड़ा माना है जहाँ व्यंग्याय का चमत्कार बाध्याय के चमत्कार की अपेक्षा अधिक नहीं जयबा उत्तक मद्भूत है। यह विवचन के प्रयोग में प्रतापसाहि ने बताया है कि विभाव अनुभाव और गचारी भाव के तयाग से अभिव्यक्त स्थायी भाव रस कहा जाता है। नायक-नायिका भेद भी प्रतापसाहि ने प्रस्तुत किया है। आचार्य प्रतापसाहि के काव्य के कुछ उदाहरण नाच प्रस्तुत किए जा रहे हैं

चान्नी महन फँस्यो चान्नी फरस
सत्र चान्ना बिछाय छवि चान्ना रित रही ।

बड़ी छवि तुम्हारे उहाँनि समान बीच
बन पे पारजा विराऊ का बिने रही ।

बड़े परकुर्वे आवे माहुन रगान ह्याम,
नघ सिध दधि करि मानन छिने रही ।

मुपन विषारि कनानिधि का निहारि

मनुहारि करि करि मुख पीतम गिने रही ॥

माचति ही ननजन रैन गिने साचति ही
 गमुति साराग मा मोर मुख धरिबा ।
 इटिगा मुमन सग छूटिगा सृष्टि का
 भूति गरी जोर सङ्गाय ता गिरिबा ।
 कहै परताप कोन जानत पराई पीर
 गरी भरी बीर रह्या जो तो एत जग्गिबा ।
 का सा कही ही दुख प्यार निजपाता मादि
 चागत न नीना निति मित्रिया बिगिबा ॥

बचन बचन चाग नमरा चाग जा
 नमि नूमि पुरवा धरनि परगन ५ ।
 सीतल समीर नग टुग्न विद्यागिह
 मयागिह समाज गुग्गमाज सरगत है ।
 कहै परताप जति निविड जवरा माह
 मारग चनन नाहि ननु दरसन है ।
 समि चनानि चहु कात उमडि आज
 धाराधर धारन अपार बरसन है ॥

रसिक गोविंद—

रसिक गोविन्द जयपुर व निवासी थे । इनका वास्तविक नाम गोविंद था । रसिक इनकी उपाधि थी । इनका रचना काल सन १७८३ म तक १८३३ तक अनुमानित किया जाता है । इनका पिता का नाम साविगराम तथा माता का नाम गुमाना बताया जाता है । कवि न जने चारा मोरीराम और नाइ बानमुकुट का उल्लेख भी किया है । कहा जाता है कि बानमुकुट व पुत्र नारायण व लिए इन्होंने रसिकगोविंदा नामक पुस्तक की रचना की थी । अपने परिवार की आर्थिक दुरावस्था से क्लेश पाकर यह बटावन चले गये जहाँ इन्होंने निम्बार्क-सम्प्रदाय के आचार्य सर्वेश्वर शरण के का शिष्यत्व ग्रहण किया । इनका निधन १८३३ म अष्टदेशभावा विगत समय प्रवध रामायण रूचिनी तथा जवरा कहारा रामायण युगनरस मापुरी नछमन चरिका रत्नजगराभा तथा 'रसिकगोविंद आदि' मुख्य है । इन प्रथम कवि न शृंगार तथा भक्ति का य व साथ साथ शास्त्र विवचन भी प्रस्तुत किया है । इनका य का एक उदाहरण इस प्रकार है

आनस सा मन् मद धरा प धरति पाव
 भीतर तें बाहिर न जाव चित चापक ।

राकति दूगनि छिन छिन प्रति साज साज
 बहुत हनी की शीनी बानि बिसराय क ।
 मोलति वचन मटु मधुर बनाय, उर
 अतर क भाव की गभारता जनाय क ।
 बात सखी मुन्दर गोबिन्द की रहान ति है
 मन्दि बिलौत बर भवुना ननाय क ॥

अथ कवि—

रति युगीन शृंगार का परम्परा में उपयुक्त प्रमुख कवियों के अतिरिक्त
 अन्य भी अनेक कवि एवं दूत हैं जिन्होंने इस प्रकृति के विभिन्न मन्तव्यों का योग दिया है।
 इन कवियों में बेनी जमरत सिंह, मदन राम, नवाज, इन्द्रनाथ बखीन्द्र, बीर, कृष्ण,
 रसिक, मुमति, गजन अथवा मुहिव, तापनिधि, श्यामनि, बनीधर, तुमार, मणि, रामनाथ,
 शिवसहाय, लाल, रूपसाहेब, श्यामनाथ, बंसीमान, दत्त, हनुमान, मतिराम, रामसिंह,
 योगानन्द, करन, गुरुश्रीन तथा प्रह्लाद आदि हैं। इनमें गबनी ने स्वयं शृंगार
 काव्य की रचना की थी। महाराज जमरत सिंह ने भाषाभूषण जगदीश
 सिन्हा से अनुभवप्रकाश नामक विज्ञान सिद्धांत तथा प्रथम चंद्रोप
 नाटक की रचना की। इनकी एक कृति इच्छा विवर्त शीघ्र ही भी उल्लिखित की
 जाती है। इन्होंने अपने भाषाभूषण नामक ग्रंथ में अनेक निरूपण प्रस्तुत किया
 है। जमरत सिंह नाम से ही एक और कवि दूत हैं जिन्होंने 'शृंगारगीरोमणि'
 नामक आदि ग्रंथों की रचना की थी। कवि मदन चुन्नेन्द्रक निवासियों और
 राजा मंगल सिंह के आश्रय में रहते थे। इन्होंने जनकपत्नी तथा रत्नाकर
 पुस्तक भाषा ज्ञानकी जू की याह शृंगारकवित्त बाराभागी नवन
 पचास तथा राम विनाय नामक ग्रंथों की रचना की थी। इन्होंने मुख्यतः रस
 विवर्तन तथा नायिका भंग प्रस्तुत किया है। राम कवि का जन्म संवत् १७०३ में हुआ
 था। इन्होंने शृंगार शीघ्र ही तथा तुमान नायक की रचना की थी। शृंगार
 शीघ्र ही में राम कवि ने नायिका भंग प्रस्तुत किया है। नवाज कवि महाराज छत्रपाल
 के आश्रय में रहते थे। उन्होंने मनुमान नायक की रचना की थी। उपनायक बखीन्द्र
 ने रस चन्द्रोप विनायक शिवा तथा आग शिवा नामक कृतियों की रचना की
 थी। बीर कवि ने अपने कृष्ण चरित्र नामक ग्रंथ में रस विवर्तन और नायिकाभंग
 प्रस्तुत किया है। कृष्ण कवि ने महाकाव्य जर्जियर, एक मंत्री राजा मायास्य के
 आश्रय में रहकर बिहारी चतुर्दश की शीघ्र ही रचना की। रसिक मुमति ने जनक
 काव्य नामक ग्रंथ में अनेक निरूपण प्रस्तुत किया है। गजन कवि ने कमरुद
 काव्य नामक ग्रंथ में रस चन्द्रोप तथा पञ्चमहाकाव्य प्रस्तुत किया है। अथवा
 मुहिव का (उपनाम—श्रीराम) ने चन्द्रमन्थनी नामक कृति की रचना की। श्याम
 निधि ने रस चन्द्रोप नामक ग्रंथ में उपनायक नामक शृंगारक नामक अनेक

रत्नाकर नामक ग्रंथ की रचना की। कुमार मणि भद्र । रमिहरनाथ नामक रीति ग्रंथ रचा। शम्भुनाथ मिश्र नामक तीन कवि उल्लिखित किये जाते हैं। इनमें से प्रथम । रमरत्नाथ रम परिगणी तथा अन्कार शीघ्र नामक कृतियाँ की रचना की। त्रिवेणुसुधापात्र ने त्रिभूषण तथा त्रिभोक्तिरत्नामुनी नामक ग्रंथ । रूपगाहि । सवत् १८१३ म रूपविनाय नामक ग्रंथ में विषय विवचन अन्कार विधान तथा नायिका भद्र प्रस्तुत किया है। अग्निनाथ दीवान सदान और रघुवर पापस्य के आश्रय में रहते थे। इन्होंने अन्कार मणि मञ्जरी नामक ग्रंथ रचा। उरीसान्त । अन्कार नामक विषय भाषाभरण नामक ग्रंथ की रचना की थी। इन कवि ने चर्यारी । महाशत्रु सुमानसिंह के आश्रय में रहकर नास्तिक्य तथा नामक अन्कार ग्रंथ की रचना की थी। नाथ जयवा हरिनाथ कवि ने अन्कार नामक विषय अन्कार रूपण नामक ग्रंथ सवत् १८२६ म लिखा था। मनिराम मिश्र ने अन्कार तथा जानक मंगल नामक कृतियाँ की रचना की थी। महाराज रामसिंह ने अन्कार रूपण रम निवास तथा रस विनाय नामक कृतियों में रस विवचन अन्कार निरूपण तथा नायिका भद्र प्रस्तुत किया है। बेनी प्रवीण ने नवरत्नरग सुगार भूषण तथा नानारावप्रकाश नामक ग्रंथों की रचना की थी। करन मंगलानन्द ने बयननायिका भेद नामक ग्रंथ की रचना की थी। करन कवि ने साहित्यरस और रस कल्याण नामक ग्रंथों में ध्वनि विवचन रस विवचन तथा काव्य के गुण रूप का विवचन किया है। गुल्दीन पांड ने बागमनोहर नामक ग्रंथ में काव्य शास्त्र विवचन प्रस्तुत किया है। कवि ब्रह्मदत्त ने विष्णुनाथ तथा दीपप्रकाश नामक रीति ग्रंथों की रचना की थी। इन सभी कवियों की रचनाओं का एक एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

छहर मिर । छवि मारपछा उनकी नय के मुकुता थहर ।
 फहर पियरी पट बनी इन उनकी चनरी ने झवा लहर ॥
 रसरग भिर अभिर है तमान दोऊ रस ख्याल बहै लहर ।
 नित ऐसे सनेहू सो राधिका स्याम हमारे हिए म सग बिहर ॥ (बेनी)

अन्कार अत्युक्ति यह बरनत अतिसय रूप ।
 जाचक तरे दान तैं भए कल्पसह भूप ॥

पयस्त ज गुन एक को और विषय आरोप ।
 होड सुधाधर नाहि यह बदन सुधाधर आप ॥ (जसवन्त सिंह-प्रथम)

घनन के घोर, सोर चारो ओर मोरन के

अति चित्तचार तस अकुर मुन रहै ।
 काकिलन बूक हूक हाति विरहीन हिय
 जुक स लगत चीर चारन बन रहै ॥
 मिली मनवार तसी पिबन पुकार डारी,
 मारि जारा डारा दुम अकुर मुन रहै ।
 जुन रहै प्रान प्रानप्यार जसवत विनु
 कार पीर ना न ऊटे बाजर उन रहै ॥ (जसवत सिंह-द्वितीय)

भलि हौं तो गइ जमुना जन का सा बहा कही बार विपति परी ।
 पहराय क बारी घटा उनई इतनइ म गागरि सीस धरी ॥
 रपयो पम घाट चढयो न गया नबि मडन तू व विहान गिरी ।
 चिर जीवहु नद का बारी जरी गहि बाह गरीब न टाड़ी करी ॥ (मडन)

उमडि पुमडि घन छोडत अखर धार
 चचना उठति ताम तरजि तरजि क ।
 विरही पपीहा मक पिक पग तरत हूँ
 धुनि मुनि प्रान उठ तरजि तरजि र ॥
 बहे बबि राम लखि चमक प्यान की
 पीतम का रही मै तो बरजि बरजि र ।
 लाग तन तावन बिना री मनभावन र
 सावन जुवन आया गरजि गरजि र ॥ (राम)

आग तो कीहा जगानगी तामन, कम छिन जरह जो छिपावति ।
 तू अनुराग का माघ तियो ब्रज की बनिता सबे मा ठहरावति ॥
 कोन मकोच रह्या है नवात्र जा तू तरत उनहू तगमावति ।
 बाबरी जो । बनक तप्या तो निमक है क्या नहि एक जगामति ॥ (नवात्र)

महर मगार हा पहर एक नागि जहै
 छार पी नगर व सराय हे उतार की ।
 बट्ट बबि मग मांग ही परगी माग
 घबर उठानो है बगही दूक मार की ॥
 पर व हमार परम को निधार
 मात दया क बिपारी हम राहि राह बार की ।
 उठरो नगी व तार बर क नर ही तुम

चोती जति गोरी तहाँ हाहक हमारे की ॥ (उरपाताय कबाग्र)

— —
 अह बना और परत बिगान बाहु
 कीत को हिया है हरे सामन जा द्य को
 प्रबल प्राड गितार फिर आण
 धूरि नाहन मितान स्सख अथ मुय रो ॥
 चमन समरभूमि बरछी महन पन
 कहत पुकारे तक अह दीह दुय को ।
 बलकि बनहि बोस बीर रघुवर धीर
 महि पर भीडि मारा आज रगमुय रा ॥ (घोर)

— —
 छबि सा फबि सीस विरीट बायो हचिसान तिए बनमाल तस ।
 कर कजहि मजु रयो मुरनी बछनी कटि चाह प्रभा बरम ॥
 कबि कृष्ण कह तखि सदर मूरति या अनिताय हिए सरम ।
 वह नदकिसार बिहारी सग यहि बानि न मा हिय माण बस ॥ (कृष्ण कवि)

— —
 प्रत्यनीक जरि सा न बस जरि हितूहि दुय दय ।
 रबि सो चन न कज की दीपति ससि हरि लय ॥ (रसिक सुमति)

— —
 मीना के महन जरबाफ दर परना है
 हलबी पनूसन में रोसनी चिराग की ।
 गुनगुनी गिनम गरकआब पग होत
 जहा बिछी मसनद सावन क दाम की ।
 केती महताबमुखी छलित जवाहिरन
 गजन मुकवि कहे बीरी अनुराग की ।
 एताभदुगोता कमरुद्दीन छा की मजलिस
 सिसिर में ग्रीषम बनाई बड भाग की ॥ (गजन)

— —
 जगत क वारन करन चारो बदन के
 कमन म बम क सूजान जान धरि क ।
 पोपन अबनि दुख सापन तितकन के
 सागर म जाय मोए सेस सेज करिन ।
 मदन जरायो जा महार दच्छि ही म सष्टि
 बग है पहार दऊ भाजि हरबरि क ।
 बिधि हरि हर, और इनत न कोऊ, तऊ,

घाट प न साव घटमानन की उरिक् ॥ (अलीमुहिय खा प्रीतम)

अरन हरीन नम मडन मुनक पर,
 चकया अक्क चक्कवकि तानि व किग्नि वार ।
 जावत हा सावन नछत्र ताय धाय धाय
 धार घममान करि काम जाण ठौर ठौर ॥
 ससहर सन भया सटक्यो सहमि ससी
 जामिन नूव जाय गिरे उदरन जोर ।
 दुद दधि अरविद बदीघान ते भगान
 पायक पुत्रि व मत्रि मकर चार ॥

(दत्तपतिराय और बशीधर)

गाव बधू मधुर गुर गातन प्रीतम मग न बाहिर आइ ।
 छाई कुमार नइ छिति म छवि माना बिछाइ नइ उरिमाइ ॥
 ऊच अण चडि दधि चहू तिसि बाति या बान गरी मरि जाइ ।
 बसी बरी हहर हियरा हरि आण नहा नही हरिजाइ ॥

(कुमार मणि भट्ट)

बाबु चतुरण महाराज सन साजन ही
 घोडा की पुनार धुरि परी मह माहा न ।
 भय व अजाग्न ते तारन उजार भण
 मून उगी उर न अमार जाही लाहा न ।
 बार घत बाव बरछी व बिरगाना उठ
 धारन न रखा उभ रोन हू उपाही न ।
 भूप भगवत बार खाहा व यवन सर
 ख्याहा लाइ बदन वमान ताठमाहा न ॥

(गमनाथ मिश्र)

करो रघाई नाहिन वाम । बगिहि व आई पनयाम ॥
 बहे पघानो नरि अनुगत । बाजा ठांड कि दूयवो राग ॥
 बोल निरर विवा बिनु गाय । आगुहि तिय बडा गहिर न ॥
 बहे पघाना अहि गहि मान । अउ न बूदा बूगी गान ॥

(गिबनहाय दास)

जगमगाति सारी जरी तलमल भूषण ज्याति ।
 भरी दुपहरी निवा बी नें गिया मा हाति ॥
 लानन बगि चलो न बयो ? बिना तिहार बात ।
 मार मरोरनि सा मरति करिण परगि निहात ॥ (कपसाहि)

छाया छत्र त्त करि करति महिपातन मो
 पावन का पूरो फनो रजत अपार ॥
 मुकुत उदार त्त नगत गुण श्रीरत म
 जगत जगत हग हास हरिद्वार ॥
 'श्रुपिनाथ सदानद मुजम बिन'
 तमर द क हरया चरुबिका मुडार ॥
 हीतन का सीतन करत घनमार ॥
 महीनन का पावन करत गगधार ॥ (श्रुपिनाथ)

नहि कुरग नहि ससक यह नहि वनर नहि पक ।
 बीस बिस बिरहा दही बनी दीठि ससि जक ॥
 करत कौकनद मदहि रण तुव पण हर मुकुमार ।
 भए अहन जति दबि मना पापजब क मार ॥ (बरीसात)

ग्रीपम म तप भीपम भानु गई वनकुज सधान बी भूल सो ।
 घाम सो बामनता मुरक्षानी बयारि कर घनस्याम दुखून सो ॥
 कपत यो प्रगटया तन स्वेद उरोजन दत्त जू ठो ी के मून सो ।
 न अरविद कनीन प मानो गिर मररु गुनाब के फून सों ॥ (दत्त)

तरनी नसति प्रकास तें मानति नसति मुवास ।
 गारस गोरस दत्त नहि गौरस चहति हनास ॥ (नाथ)

भार ही याति गई लो तुम्है वह गोबुन गाव की ग्वानिनि गोरी ।
 आधिक राति नो वनी प्रवीन कहा ढिग राधि करी बरजोरी ॥
 आव हमी माहि दखत जानन भाग म दी ही मलावर धारी ।
 एत बड राज मडन म न मिनी बहु मागहु रचक सारी ॥ (बेनी प्रवीन)

अहिरिनि मन क गहिरिनि उतह न दइ ।
 नना कर मयनिया मन मधि लइ ॥

तुरीजनि जाति हुरुजिनी जति इतराई ।
छवन न दइ इजरवा मुरि मुरि जाइ ॥

पीनम तुम कच नाम्या, हम तजवनि ।
सारत क अमि जारिया फिरो अकनि ॥ (पसोवा नदन)

कटति हात गात बिपिन समान दधि,
हरी हरी भूमि हरि हिमा सरजतु है ।
एत प करन धुनि परनि ममूरन की
चातक पुकारि तह ताप सरजतु है ॥
निपट बवाई भाइ बधु ज बसत गाव,
दाव पर जानि क न काऊ बरजतु है ।
जरग्यो न मानी नू न गरग्यो चतत बार
एर घन वरी अब काह गरजतु है । (करन कवि)

मुखसोयी सखि दून कला घरे । रि मुश्ताफत जावन म भरे ॥
तलिन बुकनी अनुहारि क । तसत हैं रूपभानु कुमारि क ॥
तुम्ह जत नि भान मुहाण क । तवित मत्र किथी अनुसा क ॥
भ्रतुटि या रूपभानु मुता तम । जनु जनग सरासन का हम ॥
मुकुट ती पर दपनि की घना । सखि ककित राहु बिधा पना ॥
अपर ना उपमा जा म तहे । तव प्रिया मुख क सम का कहे ?

(गुरदीन पार)

महत्व—

इस प्रकार स हिन्दी साहित्य क इतिहास म रीति युग क अंतगत गूगार काल की एक पुष्प परम्परा का विकास हुआ । असा कि उपरसूत बचन उ स्पष्ट है अतः उद्भूत कवियों और काल्य पास्त्रिया न इस प्रगति क विकास म योग दिया । इन्हीं जहाँ एक ओर मसूत क काल्य पास्त्रिया विद्या का अनुकरण पर ताल मया की रचना की बहा दूगरी ओर रचनात्मक धार म मौलिकता का भा परिवर्तन दिया । इस युग क सायाहित कवियों न अपन आध्वपदानाभा म मान सम्मान पाकर उन्की प्रगति करत हुए जो काल्य लिया बहु मात्र चारण साहित्य नहा है । मसूत-साहित्य म अचरित रत-सम्प्राय अन्कार-सम्प्राय ध्वनि-सम्प्राय राति-सम्प्राय तथा कथासि-सम्प्राय का आधार बनाकर हिन्दी साहित्य का निमाण हुआ । मसूत क कुछ साम्प्रदायिक विद्या का ता हिन्दी क साहित्यीन आचार्य न बिगार म अपन साहित्य म विविधत किया और कुछ का उपागवा । अन्कार रण और ध्वनि साम्प्रदायिक विद्या उ इतक काल्य म अस्वतंत्र विवेचना मरित उपलब्ध कर है अतः

रीति और ब्रह्मिनि मित्रा ता स सम्बन्धित तस्य निरूपण इति वाच्य म तदा मित्रा ।
 अन्तर सम्प्रदाय क अतया जस्यत सिद्ध गाय, रगिन् गुमति गाविन् देरीगात
 गाकुतनाथ पषाकर रछिराम रविरात्र मुरारि गात आदि इ नाम उ श्यनीय है ।
 रस सम्प्रदाय को प्रत्येक शब्द शास्त्रीय पथ रचना करा जाता म गुजर तितामणि
 तोष मतिराम कुमार मणिभट्ट रगिन् रमान रम गात रूपगाहि समनम उत्रियारे
 रामसिंह रसित गाविन् गान आदि मुष्य ६ । ध्वनि शास्त्राधिकारका का विरचन
 करने वाला म कुतपति त्व मुरति मित्र तमार माणभट्ट श्रीरति सामनाथ
 भिवारीदास प्रताप सिंह आदि है । इत कविया न शास्त्र निरूपण करने क साथ साथ
 अपनी मौखिक काव्य प्रतिभा का भा परिचय दिया है त्रिमय इम वाच्य प्रवृत्ति को
 समृद्धि मित्री ।

रीति युगीन वीर-काव्य की प्रवृत्ति

हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीति युग का अन्ततः प्रामाण्य रूपांतरिक कविता की प्रवृत्तियाँ ही विवक्षित दृष्ट समझी जाती हैं। परन्तु यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि रीतिकाल में वीर रस की वायु प्रगम भा विगण रूप में विकसित हुआ। इस युग की काव्यात्मक उपनिधियाँ तथा प्रवागमकता जाति का दृष्टि में भी रीति युग का वीर काव्य अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मूलमूल रूप में वीर काव्य का प्रवृत्ति आदि युग में प्रारम्भ हुआ परन्तु भक्ति तथा रीति युग में भी यह अत्यन्त रूप में विकसित होती रही। स्वरीयता तथा उपनिधियों की दृष्टि में रीतिकाल में वीर काव्य यद्यपि अन्ततः अदृश्य नहीं है तथापि तन्मुखीन काव्य प्रवृत्तियाँ का मूलमूल में इसका विविध स्थान है। रीतिकाल में प्रगत काव्य प्रवृत्ति रूपांतरिक हान का कारण प्रयत्न प्रवृत्तियाँ का बहुत कम कविता में प्रयत्न किया। फिर भी शृंगार का बह दूधरा स्थान वीर रस का ही रहा। इस युग में रीति कविता में वीर रस का अन्त किया है उनमें से अधिकांश में अपने आनन्दानामों का स्तुति में उनका अन्ततः वीरता तथा पराक्रम आदि का बतान किया है। मयापय इस काव्य में जीवनारकता जोर दृष्टिमता अधिक हान का कारण इसका महत्व कम हो जाता है। दूसरे पक्ष में यह कहा जा सकता है कि कुछ भाग में यह कविता युक्त तथा मात्र प्रयास के रूप में हान का कारण ही अन्ततः अधिक आनन्द में पा सकती। अन्ततः विपरीत कारणों से अन्ततः ने उमा काव्य का आचारा विवक्षित प्रवृत्ति हान उन नायिका के प्रति पाया जा पहेल उहा उसका आनन्द के पात्र में। इस दृष्टि में विवाहा, लक्षण तथा हमारे आदि विविध काव्य नायक उन हैं रीतिकी युग-आगता का बतान का न बतान काव्य अन्ततः काव्य के रूप में नायकप्रियता प्राप्त कर सकता है। नायक रीति हान का प्रमुख वीर-कविता का विविध परिवर्तनमक विवरण उपनिधियों किया जा रहा है।

सूचक—

युग के जीवन-परिवर्तन का सूचक में उल्लेख है, युग के अन्त में बहुत कम पावनी

मिनती है। उता ज म जात र विषय म भा वि ता म माभ है। उता ज म जात सवन १६२० और १७२० र बीच म अनुमाति विवा जाता है। उत जातपुर तिन क तिजुवापुर गांव र रहा बाव थ। उता पिता का नाम गंगाधर त्रिपाठी था। उनके तीन अ य भाई तानामणि माराम तथा नीतार र। भूपण र वाग्बिवा नाम क विषय म कोई जानकारी नही मिली है। कहा जाता है कि चित्ररू र राजा हरराम सावकी न उनकी कविता म प्रसन्न हारर उत भूपण का उपाधि प्रदान की थी। चित्ररूट क अनिरिक्त भूपण अ य अनर गंगाधरा म भी रू थ। कुछ समय तर वह औरगजब क दरवार म भी रह थ। शिवाजी क आश्रय म रहत हुए उतान तिन राजभूषण की रचना की थी। मराराज छत्रमान र आश्रय म भी कुछ समय तर रहकर भूपण न सम्मान प्राप्त किया था। तुमाय पत्रा तथा बी र दरवाग म भा वह गय थ। इनर अतिरिक्त शिवाजी र पौत्र साहू जी रोवा र महाराज अबधून सिंह जयपुर के नरेश जयसिंह क पुत्र राम सिंह र विषय म भी भूपण न कुछ स्फुट पत् लिखे हैं। भूपण के लिखे हुए ग्रंथा म शिवराजभूषण शिवाजामनी तथा छत्रसाम दशक आदि है।

भूपण न अपने आश्रयदाताया विशय रूप स शिवाजी और छत्रमान आदि की वीरता का जो वणन किया है वह आश्रयदाताओ क गुण-गान की प्रथा का अनुसरण मात्र नहीं है। जिस उत्साह क साथ जनता इन दाना वीरो का स्मरण करती थी उसी की अभिव्यजना भूपण न की है। आज भी इन चरित्र नायका का जनता म सम्मान है और उनर साहसिक कार्यों तथा महत्वपूर्ण विजया की कथाएँ प्रसिद्ध हैं। इनर कीर्तियुक्त चरित्र का वणन करने म भूपण को कृत्रिमता तथा कल्पना की सहायता अधिक नही लेनी पनी है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ वीर रस स परिपूर्ण और ओजस्विनी हैं। अत्याचार और अत्याय के विरोध म हिंदू जनता म अपने अधिकारा की प्राप्ति क लिए एक प्रकार की राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने का प्रयत्न भूपण न किया। भूपण के युग म मुगल साम्राज्य की विरोधी शक्तिया का उदय हो रहा था। जनता अत्याचारो का विरोध करने के लिए तयार हो चकी थी। इसी काल म दक्षिण म मराठा की शक्ति भी प्रबल हो रही थी। यह औरगजेब र शासन का युग था। औरगजेब मुगल साम्राज्य की पूवनीति को त्याग चका था। उसकी कट्टर धार्मिक नीति ने साम्राज्य विरोधी इस अग्नि को जोर तीव्र किया। मराठापति शिवाजी उसके विरोध म तड़तापूर्वक खड हुए। भूपण ने उही को अपनी कविता का प्रधान नायक बना। शिवाजी का यह विरोह किसी साम्प्रदायिक भवना पर आधारित नहीं था। वह मुसलमानो तथा उनके धर्म का आदर करत थ। भूपण हिंदू जाति क प्रति निधि कवि थ। उहाने वीर काव्य की परम्परा को रीति युग म विशय रूप स प्रनय लिया। उनका वीर काव्य इतना रसमय है कि उसको पठकर एक बार कायर का हृदय भी वीरोत्साह स भर जाता है। भूपण ने सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक शत्र

न जना प्रभावाना कविता क माध्यम न एक कान्ति -- मित की । भूपन न जपन
 चरित नायक विवादा का एक आदा वार क म्य न चित्रित क उरु उनम धनवार
 बुद्धवार जनवार तथा दयावार आदि गुण का समावेश दिया है ।

एक जनकार प्रिय कवि हान क काग भूपन न जपन राज्य न जनकारा का विषय
 रूप न स्थान दिया है । भूपन पर प्राय यह जायक लगाया जाता है कि वहानि जन
 काग क अरुद्ध न रूप लित हैं तथा जपन -- आहृता मिय हैं । किन्तु वस्तुतः भूपन
 क काव्य न जनकार यात्रना चमत्कार नृष्टि क माय-साय भावालय न निग भा हूइ
 है । जपन विवगज भूपन नामक ग्रथ न भूपन न १०५ जनकार का वान दिया
 है त्रिभन ५ सप्तजनकार हैं तथा १०० जवानकार हैं । य जनकारा भूपन न पूर नहा
 विव । कहा कहा जनकारा क नद भा कम विव हैं । भूपन की भाषा मिश्रित भाषा
 या त्रिभन ब्रज, बुन्देलखी जरबी फारसी तथा जपना जाति की मलावली
 मिनती है ।

महाकवि भूपन न जपन चरित नायक का गुणान करत हुए लिखा है कि विवा
 या जपन गुणना क लिए अमि क तथा मित्रा क लिए अमर क पर अधान उदमा क
 समान रसा प्रकार बुद्धायक गुण त्रिस प्रकार उरु नमुद्र क लिए कुमुदावली तथा
 उरु क निग चदमा हाता है । भूपन कहत हैं य का पर बनी विवा जी
 निष्पत्तना क उरु हा गया । पृथ्वी रूपी वपू क विर उरुता उरु सिद्धर समान तथा
 शृंगार की वस्तुन चदन क समान हा गया

पावक नून अमिजन क भयो
 मित्रन के भयो घाम मुधा क ।
 आन भी बररो पहिन कुमुदावलि
 चरनि क अमुजा क ।
 उरुतो त्याग बनी शिवराज भी
 भूपन भारत बपु मुधा क ।
 बरन उरु और चरन हीरति,
 मात्र निगार बधु बमुधा क ॥

हि रूपति क जन्मत पराक्रम का सूत्रक एक परना का वान करत गुण भूपन
 कहत है कि वया मनु ना एक भवा रूप न वार विवादा उरु बुद्ध न उरु का उरु ना
 म ही मरागा क घमदन उ हजारा मरुच्छ बरु न । भूपन क उरु है परना क
 बरुजा का घमक क विव हो भूमि हिन उगी । जनकारा क माय मिनरर विवता क
 घमदन न उमराजा क हाग उरु गया

पावक का एक राति पै जानि
 महाबला मिय सवा नमक न ।

म० उ हजारा की मरिण
 दस ही मरहान के जमन ॥
 भूपन हाति उठी गढ़ भूमि
 पगन नरधन के धमन त ॥
 मीरन ए जवमान गण मिनि
 धापनि सो तपना तमन त ॥

छत्रपति या शीय वणन करन एण भूपण विप्रत है कि अहमदनगर ए स्थान पर
 तत्रवार लख मोतरी यां ग शिवाजी तत्रवार कर भिन्न गण । एण गणन
 कवचधारिया स कवचधारी और सवाग ग नवान गढ़ म निन गण । भूपण
 कहत है एसा घमासान युद्ध हुआ कि यही नही मानम पहना या कि कीन याडा किन
 सेना स आया है । सबना वष समान था । शिवाजी ए बाक वीर दुवार माया एण
 और मीर तग भागत एण ही पहचान जान ५

अहमदनगर क धान किरवान उर
 नवसरा घान मो घमान धिरया बन त ।
 प्यान्न सो प्यान्न पखरतन पखरत जुरे
 बकर वार बकर वारे हन त ।
 भूपन भनत एत मान घमासान भयो
 जायो न परत कीन आयो कीन दन त ।
 सम वेप ताक तहा मरजा सिवा क बाक
 वीर जान हाके दत मीर जाने चन त ॥

भूपण ने अपन काय म कुण स्वता पर युद्ध भूमि क विस्तत जीर रोमाचपूण
 विवरण उपस्थित किथ हैं । एण स्वत पर वह मरहठा पति शिवाजी द्वारा न गये
 युद्ध का वणन करन ज्ञान निखते है कि कही मड कटने है कही रुड नाचते है और
 कही हाथिया की कटी हुइ मूड पथी का पात्ती हैं । कही गिद्ध लन्ते है तो कही
 सिद्ध मन म आन की वडि म हसते है । कही भूत घूमते एण परस्पर भिडन है ता कही
 नवदून इकण होत ह । कही कानी नाचती है तो कही भूत प्रता की मडली जमा
 हाकर शार करती है । भूपण कहत है शाहजी के पुन शिवाजी ने घमासान युद्ध करके
 अपना तेज जटन किया जीर तत्रवार क बल स बहनोल छा की अचल सेना को नष्ट
 किया

मुण कणत बहु रुड नटत बहु सड पटत घन ।
 गिण उसन बहु सिद्ध हमत मुख वडि रसत मन ।
 भूत फिरत करि बूत भिरत मुरदून धिरत तह ।
 चडि नचत गन भडि रचत धुनि हुडि मचत जह ।

इमि टानि धार पमासान अति भूषण तत्र किये ज्ञान ।

सिबरात्र साहिबुन जग वन जनि जडोन बहनात न्त ।

माह जा क पुत्र वाग सिरा जो न मनिक एक मूत्र हाकर जब युद्ध म प्रवत हा
 वात थ नर जात नान हा न्त कारण कर नन व । उता गीप का बान करन
 हुए भूषण निजत ह कि नुद्ध हाकर मनिक फिरत ह रण म भिन्न ह आर पादे नहा
 हृत । तत्रवार वजत ही धनु-मना क लागे क दगडी स सजित विर पाठ न्त ह ।
 मन्मन्त हाथी भिन्नत जोर चाप मार कर पथ्या पर गिर पडत है । महात्वं जा क गण
 चतुरगिणा मना का रस्त छन पर पात ह बरन नहा ह । भूषण कहत है, माहना क
 पुत्र म भयकर युद्ध करके अपना भूषण अज्ञ कर दिया जोर तत्रवार क वन स बहनात
 या का अचन सेना का नष्ट कर दिया

नुद्ध फिरत जनि जद्ध जुरत

नहि रुद्ध भुरत भन ।

धगा बरन जरि बग तस्त,

तनु सग सजत टा ।

सविक फिरत म सुविक भिरत

कति कुबक गिरत वनि ।

रग रक्त हर सा छत

चतुरग धदत मनि ।

इमि टानि धार पमासान पन,

भूषण तत्र किये ज्ञान ।

सिबरात्र साहिबुन धगा वन

दति जडात बहनात दन ।

महारात्र सिबाना का उनाआ क सामन काइ भा सत्र-न कमान् टट्ट
 सता । उनका मूर-वारता अनिनाय था । भूषण विषय है कि नुद्धा क न्त युद्ध म
 धमन करत है । जा सामन आया उन पार युद्ध म टकरा करे हर डाया । गविया क
 म जत ता बहूत है कि न्त क ई धार महान का प्रवाह भर गग । भयन क न हे
 कि ह विमानबाहु भाउता राजा नुद्दारी या त तत्रवार म मूर क समान तत्र हे ।
 धान महार क रात्र सिबाना नुद्दारा बग व मा क उमान उना म नता

जरि क दन । त घोर म समुपन

दुष्ट दूक सजत क गार म समान न ।

दर बार करा महान परवाह पूरा,

ब उ है हाथिन क म न्त नान म ।

भूषण भन्त महाबाहु म सिता भुवार

मूर गरि सम तत्र त्रि न्त नान म ।

भात मकरण तुन इव रतादिधि तरा

सरजा शिवानी जस जगत ब्रह्मा मैं ।

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि भूषण । द्वितीये म वीर गाना का अन्त की परम्परा का रीतिरिवाज में भी अलग रहना । उसी वीर रस बगल में गुना कविता इतनी जाजभियनी है कि उस प्रकार एक बार कायर और भीड़ भयति या दृश्य भी उत्साह से भर जाता है । भूषण ने अपनी सभी कविता में माध्यम से सामाजिक धार्मिक तथा सामाजिक धर्म में एक महान् प्राति उपस्थित की था । उसी कविता सास्त्व में बहुत प्रभावशालिनी है । इसीलिए भूषण का रीतिरिवाज व वीर कविता में मशहूर माना जाता है । उसी तुलना श्रुगारी कविता में नहीं की जा सकती । रानि युगीन तथा द्वितीये व अन्त वीर कविता में भी यन्त्रि भूषण की रचना को जाय ता उनका स्थान बहुत ऊँचा ठहरना ।

कालिदास त्रिवेदी—

कविवर कालिदास त्रिवेदी का जीवन का विषय में प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है । यह कवि अत्यन्त ही कविता तथा कवि दूतह का पितामह है । इनके निम्न हुए ग्रंथों में राधामाधव मितन बुध विनाम अथवा बुध विनाम जजीरायध तथा कालिदासहजारा नामक ग्रंथों का विशेष रूप में उल्लेख मिलता है । बुध विनाम नामक ग्रंथ इहाने जम्बूनगर के नरेश जातिम जागाजीत के लिए लिखा था । इस ग्रंथ का विषय नायिका मत्त है । यह ग्रंथ बरवधुविनाम तथा बार बुध विनाम नाम से भी उल्लिखित किया जाता है । जजीरायध नामक ग्रंथ २ कविता का एक संग्रह है । कालिदासहजारा एक मध्यम ग्रंथ है जिसमें २१२ कविता का एक हजार कवित्त संकलित है । कालिदास त्रिवेदी की मुख्य रचना बधु विनाम है जिसमें ३४ छन्द मिलते हैं । इस ग्रंथ में कवि ने राधा उमकी सखी रतिता के द्वारा विविध नायिकाओं का परिचय दिया है । कालिदास त्रिवेदी की काव्य रचना का दो उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

सावन की रत मन भावन गोविंद बिन

दत्त दुख पारन में मिलिन के मार है ।

कालिदास प्यारी अधियारी में चकित हात

उमटि उमटि घन घहरत धार है ।

मून कुज मंदिर में दुसरी बिसूर बठि,

दादुर में दहकि सी तत बहु जोर है ।

हिए में बियागिनी के बिरह की हून उठी,

बूक उठी कायन कुहुक उठ मोर है ॥

हिनि मिति जोषनि म याकत सरोचनि म,
 हियरा म हिलकी, दगन अनुवार म ।
 कानिदास कहे आप कामिनी कुरग तनी
 दामिनी या देघी जान दमक टुआर म ॥
 जाह म दहगा दुष एस क्या सहगी
 जस सीता पार सागर न रपवर वार म ।
 न द न सुवर नाह नस कहा प हो जान
 छाडि वपभानु जू क नुवरि कुवार म ॥

श्रीधर ओझा—

कविवर श्रीधर आशा का जन्म सन् १९८० म हुआ था । यह मुरलीधर क नाम से भी प्रसिद्ध हैं । यह प्रयाग क निवासी और जाति क ब्राह्मण थे । इन्होंने जगनामा नामिका भू चित्र काव्य तथा भाषा भूषण नामक ग्रन्थों की रचना की थी । इनमें से जगनामा नामक ग्रन्थ में कवि ने कुरुक्षेत्र तथा जहादराह क युद्ध का वर्णन किया है । इस ग्रन्थ में वीर रस की प्रभावशाली अभिव्यक्ति मिलती है । भाषा भूषण नामक ग्रन्थ की रचना कवि ने मुसल्लोह के आश्रय में रहते की थी । इसमें कवि ने अर्थात्कारों के लक्षण और उदाहरण १५० दोहों में प्रस्तुत किए हैं । नायिका भेद तथा रस विवेचन भी कवि ने किया है ।

रघुनाथ—

हिंदी-साहित्य क इतिहास में रघुनाथ नाम क कई कवियों का उल्लेख मिलता है । इनमें से पहले रघुनाथ का जन्म सन् १८५३ म हुआ था जो गग कवि क पिता थे । इन्होंने संस्कृत में रसमञ्जरी का अनुवाद 'रघुनाथ विनाय जीवक' से किया था । दूसरे रघुनाथ का बाल्यिक नाम गिराण था । इनका रचना काल सन् १८७३ क लगभग अनुमानित किया जाता है । इनकी एक रचना 'भावामहिम गाथक' उल्लिखित की जाती है । तीसरे रघुनाथ का रचना-काल सन् १८२७ क लगभग अनुमानित किया जाता है । इनकी एक रचना कृष्णध्यातियों का सारा गाथक से उपलब्ध है ।

श्रीधर युगीन वीर-नायक की परम्परा क अन्तगत जो कवि रघुनाथ उन्नीनाथ हैं वह रघुनाथ बल्लोचन हैं । यह काशी क निवासी थे और काशी क राजा बरिबहादुर क आश्रय में रहते थे । उन्होंने ही इन्हें घोरा नामक एक गाथा लिखा था । इस गाथ में यह निवाउ करते थे । 'नरक पुर गोकुलनाथ और वीर गरीनाथ भी कवि हुए हैं । इनकी रचनाओं में रघिक्माहल काव्य कलापर 'वगतमाहन' इ क मूलानुवाद तथा गजधर की टीका 'वर्ण' ब्याख्या जाती हैं । रघिक्माहल 'वीरक कव्य' में कवि ने ३२३ छंदों में अठारह विवेचन प्रस्तुत किया है । काव्य कलापर वीरक कव्य में कवि ने भाव भेद रस भेद नायिका भेद तथा नायक भेद प्रस्तुत किया है । अष्टमाहल क

श्रीकृष्ण की दिनचर्या का वर्णन है। "रामायण एक शृंगारिक रचना है। नर-
आचरित प्रथम रसिकमाहृत प्रमुख विषयता यह है कि राम कवि ने जो उदाहरण
प्रस्तुत किये हैं वे शृंगार रस का आभासी आतिथ्य रस का अतिथ्य हैं। इनके
बाव का एक उदाहरण इस प्रस्तुत किया जाता है

गुधर सिताह राध बागु रंग मधु राध
रमल ही राह राध राध रहे यत ता ।
चार का समाग राध यजा जी तजर राध
पवरि क बाज बगुछपी हर पन को ॥
जागम नखया राध सगुत नयया राध
कहै रघनाथ जी विचार यो मन तो ।
याजी हार कबहु न ओसर न पर जोत
ताजा राध प्रजन का राजी गुभजन ता ॥

भान कवि—

भान कवि का वास्तविक नाम जान नहीं है। इनके विषय में जो विवरण प्राप्त
होता है उससे यह अनुमान लगाया जाता है कि भान कवि राजा जारावर सिंह के पुत्र
थे। महाराजा रजवार सिंह युद्धों में जातीय मर रहे थे। इनकी एक रचना नरद
रूप में श्लोक में उपलब्ध होती है। इनका रचना काल लगभग १७२० है। यह ग्रन्थ में
कवि ने जनकार विवचन प्रस्तुत किया है। इसका प्रमुख विषयता यह है कि कवि ने
जनकारों के उदाहरण शृंगार रस के तत्प्रस्तुत किए हैं। तब ही वीर भयानक तथा
जदमत्त जादि रसा के उदाहरण बताना से प्रस्तुत किया है। वीर रस के उदा-
हरण के होने प्रस्तुत किया है व अोजपूर्ण है। इसीलिए इस काव्य परम्परा के अंतर्गत
इनका नाम उल्लेखनीय है। भान कवि ने बाव का एक उदाहरण इस प्रकार है

रन मतवार य जारावर दुतारे तय
बाजत नगारे भए गातिव दितीस पर ।
दन के चलत भर नर हात चारा ओर
चातति धरनि भारी भार सीकरीस पर ।
दखि क समर सनमुख नया ताहि सम
बरनत भान पज क र बिता बीत पर ।
तरी समसंर की सिफत सिंह रजवार
तखा एक साथ हाथ जरिन क सीस पर ॥

बनवारी—

बनवारी कवि के जीवन के सम्बन्ध में कोई विधि विवरण उपलब्ध नहीं होता।
अनुमान लगाया जाता है कि इनका रचना काल संवत् १६८० के लगभग था। ये भी
रानि युग के वीर कविता में उल्लेखनीय हैं। महाराज जसवंत सिंह के बड़े भाई अमर

सिंह क यह बन् प्रामाण्य व । उनर गीय का वनन करत अरु अहात वार भावमया कविता
निघी है । इतिहास म इस बात का उत्तर मित्रता है कि एक बार बादगाह माहब्रहा
क दरबार म सत्तावतिया नामक सरदार न इनर अदा नाशन जमरसिंह का पवार कह
दिया था । इउ पर देहनि बहा पर प्रता न मत्तावन ग्या का वष वर दिया । इनर
वाय का एक अहाहरण नाव प्रस्तुत किया जा रहा है

जाति क मत्तावन ग्या आर न पनाद वात
नारि घर पजर करज त्राय करती ।
द्विपति साहि का चवन कवि का भया
ग्या अरुसिंह का मुनी जा वात वर ती ॥
कहै वनवारी बाधशाहा क तजत पास
करकि परकि त्राय लाविन जा जग्या ।
कर की ब्याद क अ्याद बहिय री ग्या,
बाड का बडाई क ब्याद जमघर ती ॥

गाकुलनाय—

रात्रियुगीन वार काव्य का परम्परा म त्रिभङ्ग गाकुलनाय का नाम त्रिपिप
रूप स उत्पत्ताय है । इनका ज म मय १८२० क का १७ अनुमानित किया जाया
है । यह कागा क निवासी व । इनर कविता कविता रचनाय क्लीबन व । गाकुलनाय
न कागा नरत उत्तिनारायण सिंह क अाया त मगभावन और हरिचण्डुराण का
हि । अनुवाक प्रस्तुत किया था । इन काय म उद् गापीनाय और मणित्य कविता
का स्याण भी मिता था । गाकुलनाय का रचनाया म त्रि चद्रिया गावि मुद्र
बिहार, साधु नरुपिध नामरतमाया काउ उत्तिराभुपुताय कथावृत्त
विताउ जमरकाय भावा कविमुद्रमन्त्र अाति है । इन कथा म कवि न रस
अनवार अाति का विवचन ना प्रस्तुत किया । वीर रस क अनर काव्याय अाजुत
है । इन कागा कविता का रचनाया का एक एक अाहृत्य ना र प्रस्तुत किया जा
रहा है

दुग अति हा महत रतिन न गा नर आर ।
साहि घरयो गाव्य रूपति तन क अति पार ॥
एक मानुर निरखिब रा री कड न गह ।
परा गता गाव्य नप वा नग उद् अाह ॥ (गाकुलनाय)

सर गिदि निरस नायम वा मुद्र नत मान ।
तथ धर काउ तनी भूष अतन पर तनन ॥
सर धर गव रदिन गा अि मय नर गव आर ।
एक भावम स्रुष छम रन जरा १) कह आर ॥ (गाकुलनाय)

बचन यह गुनि कहा भी चनाग हम उदार ।
 उद्योग मम सग विमि सुम कहनु मा उपकार ॥
 घाय जूते पुष्प गविन नाग गुनि द या ।
 बह्यो जाना उडा ही शा रीति हम बच तन ॥ (मणिदेव)

जोधराज—

नविवर जोधराज क पिता का नाम बानट्टण था । यह जाति क ब्राह्मण थे और अन्वर के निवासी थे । इनके आत्मपता तीर्थगङ्गा राजा क भान चोहान थे । उही की इच्छानुसार इन्होंने हम्मीरराजो नामक प्रमुख ग्रंथ की रचना कदा १८७५ म की थी । इस ग्रंथ म ८६८ छंदा म कवि क गणन और गरम्बनी रचना आश्रयदाता का परिचय कवि परिचय गृष्टि रचना रत्न तथा मूय रत्नोपनि अग्निबुल जन्म का वणन करन क पश्चात् रणसम्भोर क राव हम्मीर जोर अनाउद्दीन के युद्ध का प्रभावशाली वणन प्रस्तुत किया है । इसम कवि न वीर रस क साथ साथ शृंगार रीत तथा वीभरस भाति रसा का भी निर्वाह किया है । दाहुरा मानीराम नाराच्य कवित्त तथा छप्पय जाति छंदा का प्रयोग इस ग्रंथ म मिनता है । ब्रज भाषा के साथ साथ फारसी अरबी आदि भाषाभा क कुछ शब्द भी इसम प्रयुक्त हुए हैं । हम्मीररासो की कथा का मुख्य अंश इतिहास सिद्ध है । परन्तु कही कही तथक ने चामत्कारिक कल्पनाए भी प्रस्तुत की हैं । जोधराज के काव्य का एन उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

कह पवार जगदेवब सीम आपन कर कटटमो ।
 कहा भोज विन्नम सुराव जिन पर दुख मिटटमो ॥
 सवा भार नित करन बनक बिप्रन को दीनो ।
 रट्यो न रहिए कोय देव नर नाग सुचीनो ॥
 यह बात राव हम्मीर सू रानी इमि जासा कही ।
 जो मई चक्कब मडनी सुनो राव दीष नही ॥

सबलसिंह चोहान—

सबलसिंह चोहान का नाम भी रीतियुगीन वीर काव्य की प्रवृत्ति क अन्तगत उल्लिखित किया जा सकता है । उनके जीवन के सम्बन्ध म कोई विवरण उपलब्ध नहीं होता । विद्वानो का अनुमान है कि यह चंदागढ अथवा सबलगढ क राजा थे । कुछ लोग इन्हें इटावा जिन के अन्तगत किसी गाव का जमीन्दार भी अनुमानित करते हैं । औरगजब क दरबारी राजा मित्रसन से इनका कुछ सम्बन्ध था । इन्होंने सन् १७८१ म अपने महाभारत नामक ग्रंथ को पूरा किया जिसम महाभारत की कथाए हैं । ऋतुमहार तथा रूप बिलास आदि इनकी अन्य कृतियाँ भी बतायी जाती हैं । महाभारत म चोहान जो कथाए अनूदित की हैं उनम वीर रस का सुन्दर परिष्कार मिनता

है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

अभिमनु घाइ खडग परहार । सनमुख जहि पावा तहि मार ॥
 भूरिधवा वान नख छाटे । कुवर हाव व खगहि वाट ॥
 तीनि वान सारथि उर मार । जाठ वान तें जम्ब महार ॥
 सारथि जूझि गिरे मदाना । अभिमनु बीर बित्त जनुमाना ॥
 यहि अन्नर उना सब धाई । मारु मारु व मारन आई ॥
 रथ वा खचि कुवर कर लाई । तात मार भयानक कीह ॥
 *अभिमनु कापि अम्म परहार । इक एक पाव बीर सब मार ॥
 अजुनमुत इमि मार बिय महावीर परउण्ड ।
 रथ भयानक दखियत जिमि जम लीह दण्ड ॥

छत्रसिंह काव्य—

कविवर छत्रसिंह काव्य बटखर व अटर नामक गाँव के निवासी थे। यह अमरावती के राजा कल्याणसिंह के आश्रय में रहते थे। इनका विद्या हुआ एक ग्रंथ विजय मुक्तावती शीपक से उपनम्य होता है। इस ग्रंथ का रचना काल सन् १३५३ है। इसमें इन्होंने महाभारत की कथा, प्रस्तुत की है। बीर रस के आश्रय उदाहरण इस ग्रंथ में उपलब्ध है। इनका काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

निरपत ही अभिमनु का बिदुर हुआवा उउ ।
 रछा वानक की करो हव वृषाण जगगाउ ॥
 आपुन बाणी मुड नहि धनुष शिबो भव डारि ।
 पापी बट यह बत पापुत्र तुम चारि ॥
 पीछम तजि लखा तयो तयो सनन कुलकानि ।
 बावत र्नाहि पठाव के आपु रह मुय मानि ॥

साल कवि—

साल कवि का वास्तविक नाम मारुनाथ पुराहित था। यह कुतुम्बक के अश्वमेध मऊ गाँव के निवासी थे। यह महाराज छत्रगान के आश्रय में रहते थे और इन्होंने छत्र प्रकाश नामक ग्रंथ में अपने आश्रयदाता के जीवन चरित्र का वर्णन प्रस्तुत किया है। यह ग्रंथ ऐतिहासिक तथ्यों और प्रामाणिकता से युक्त है। मऊ के अन्तर्गत एक रूप में कल्याण-नरेश का नाम भी इसमें है। विद्या है। साल का अन्तर्गत इस ग्रंथ में समाविष्ट युग है। इसमें अनिश्चित नाम कवि ने विजय विनायक नामक एक ग्रंथ में शिवा विमला विजय नाविका भी है। इन कवि निरिच्छ छत्र प्रकाश में ही काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

धर नार से मूबनि परो । शिबनि अनापक से दरो ॥
 पवर महर साहि के बोर । मूमधूम न दिवकर दारो ॥

रबह प्रगटि जुड म हाँरी । मुगर्ति मारि गुमि ता डोरी ॥
 बानन बरगि मयनि पारे । पुरक्ति तमर । ग तर गारे ॥
 रबह उमडि अगारु जा । पा गम मयनि । गीरु बरगारे ॥
 रबह हाति हरोरु रू । रबह पाणि पा रति मू ॥
 रबह रस गोरि । गारे । रसद कटू रा रडा न पारे ॥

सूदन—

सूदन मधरा निधानी मायूर घोड व । गू त र पिता रा नाम बगत या । अरा
 पुर क राजा चरनसिंह र पत्र महाराज गुजान गिह अथवा गुरजमन र जाय म य
 रहत व । अपने जायगता की प्रशंसा म इहान गुजान चरित नामक ग्रंथ की रचना
 की थी । इसमें कवि न जायगता र जीवन की मन् १७४५ म तार १७५३ त
 की घटनाओं का वर्णन किया है । गुजान चरित र आरम्भ म गूतन र १७५ रचना
 क नाम उल्लिखित किय है । इ प्रारंभ स जायगता का उा वर्णन तथा उनक राग
 नड गय सात प्रमुख मुडा का वर्णन प्रस्तुत किया है । यह ग्रंथ मुफ्त घोरे रस का
 है । पर तु मक साय साय शृंगार तथा बीभत्त जाति रसा की भा अभिव्यजना इम
 हुई है । सूदन क इस काय म अनक प्रकार क छ मित्त है जिनकी म्फ्या १०३
 बतायी जानी है । सूदन की भाषा मुफ्त राज है जिमम पञ्चाची मारवाणी रसवाडी
 पूर्वी तथा पारसी क शब्द बहुता से उपग्रथ हात है । सूदन क काव्य क कुछ उदाहरण
 नीच प्रस्तुत किय जा रह है

बखन विनर तरी दुदुभा धुमारन सी
 दद दवि जात दस दस मुख जाही क ।
 तिन तिन दूना महिमडन प्रताप होत
 सूदन दूनी म एम बखत न काही क ।
 उदत मुजान मुत बुद्धि बनवान मुनि
 निदानी क दरनि बाज आवन उछाही क ।
 जाही क भराम अब तखत उमाही कर
 पाही स पारे है जा सिपाही पातसाही क ॥

दुह ओर बदन जह चनत बचूक
 रव हात धुक धूक विनवार कहु कूक ।
 कहु धनुष टकार तिहि वान वकार
 भर दत हुकार सकार मह मूक ॥
 कहु दखि दपटत गज बाजि वपटत
 अरि गूह तपटत रपटत कहु चूक ।

समस्त सदसत, सर मन पकत,
बहु ज्ञात हवन पकत गि पक ॥

धुमान—

धुमान बदीन सुन्दर का अन्तत चरजारा व रासा विद्मसाहि क जाधम म रहन व । उपनय प्रमाणा व जाधार पर नरा रचना-कात मवन १२२० म उकर मवन १२२० तक अनुमानित किया जाता है । इनक विद्य रूप प्रया म अमर प्रकाश अन्नाम नामगावक हनुमान नगणिय हनुमानचक हनुमान पचासा नाति विधान समरसार अतिहचरित तथा नसिहपवीती व नाम अल्लिखित सिच ज्ञान है । इन प्रया म बार रउ का प्रय लमणाउक विाप रूप म महवपूर्ण है जिसम कवि न नामा जोर मधनाप का चुड बड कतामक रूप म वर्णित किया है । धुमान क काव्य का एक उदाहरण नाव प्रस्तुत किया जा रहा है

जाया द्रवजान दमकध का निरध
बाबा रामबध सा प्रबध किरवान का ।
या ३ अनुमान का है वान विकगत
मर सामुद् मए न रह मान महान का ।
तू ता मुकुमार यार उधन कुमार मग
मार अनुमार का छहेया धमासान का ।
बार ना चितया रनमन गिनया काव
बहर बितया हा जिनया मपवान का ॥

बागेश्वर वाजपया—

कवि बागेश्वर वाजपया का जन्म मवन १२१५ म हुआ था । यह बिना पतहपुर क अन्तत मुञ्जवनाबा नामक स्थान क निवासि व । इनक पिता का नाम मतिराम था जोर बहु खन भा कविता करत थ । कुछ समय तक अरमता म रहन क पचास यह वाजपय व महागत्र नामसिह तथा पटियाता क माराक कासिह व नाम म रह थ । महागत्र नामसिह का ब्रामानुजर दहाने अपन प्रसिद्ध बार को व ह नाम का रचना का थी । हमार हए क अतिरिक्त अरु कथा म विश्वविनाथ रसिक बिना अम्भितिविनाथ नयतिर कावनाउक सुहचामिका नाकक वातिव तथा माधवावतन व नाम ना ल्लघनीय है । बार म्म क अतिरिक्त अरु काव्य म शृंगार रस का अभिनयना भा निरता है । हमारहए नामक काव्य म दामन गति हाधिक तथा क उपनयन का निरु तथा का मनाश भा किया है । हमार नामक का व का स्थान बार काव्य का इन पम्परा म बड मर वून है । इनक काव्य का उदाहरण नाव प्रस्तुत किया जा रहा है

बागम नवात्र निगात्र पाउगाहन क
वात्र त दगात्र काव नवरतिहास है ।

जाके डर डिगत अडान गढ़पारी इग
 मगा पठार और डनति महि सारी हे ।
 रन असो रहन सगवित गुरेग भया
 रग दगपति म अडन रति भारी हे ।
 भारी गढ़पारी, सगा जग की रियारी
 धान मान ग निहारी या हमीर हुटपारी हे ॥

भाग मोरजाण पीरजाण ओ अमीरजाण
 भाग घानजाण प्रान मरत बचाय न ।
 भाग गज बाजि रघ पथ न गभाई पर
 गोनन प गोर, गूर सहमि सहाय न ।
 भाग्यो सुनतान जान बचत न जानि बगि
 बनित बितड र विराजि बिनग्याय न ।
 जस नग जगन म ग्रीपम की जागि
 चन भागि मृग महिष बराह बिललाय न ॥

शम्भुनाथ मित्र—

शम्भुनाथ मित्र के जीवन के सम्बन्ध में जा विवरण उपलब्ध है उसका आधार पर इनका समय सन १७३६ के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह फतेहपुर के अंतर्गत जसापर के राजा भगवतराय छोची के आश्रय में रहने थे। उनके प्रथम रसतरंगिणी रस कलान तथा जनहार दीपक है। इनके काव्य गुरु मुष्ट व कवि जयवा मुद्देव मित्र थे। इनके लिख्ये में शिव कवि का नाम मिलता है। रसतरंगिणी तथा रस कलान में कवि ने रस विवेचन तथा जनहार दीपक में जनहार विवेचन प्रस्तुत किया है। दोहा कवित्त तथा सवैया छन्दों का प्रयोग कवि ने अधिक किया है। शृंगार रस के उदाहरणों के साथ साथ कवि ने अपने आश्रयता के शीघ्र का जो वर्णन किया है उसमें वीर रस की अभिप्रेक्षा मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

आज चतुरंग महाराज सेन साजत ही
 घोसा की धुनार धूरि परी मह माही के ।
 भय के अजीरन त जीरन उजीर भय
 मूल उठी उर म अमीर जाही ताही के ।
 बीर घत बीच बरछी स विरुझानो इत
 धीरज न रहयो सभू कौन हू सिपाही के ।
 भूप भगवत वीर न्वाही के घनक सब,
 स्याही साई बदन तमाम पातसाही के ॥

पद्याकर भट्ट—

कविवर पद्याकर भट्ट का नाम रीति युग की टुगार-परम्परा के माय माय वीर काव्य प्रवर्तित र अन्तगत भा उन्निवृत्त विरा जा सत्ता है। यह अनेक राजाजा के आश्रय में रह प। टुगारिक तथा आनकारिक का परचना के अनिरिक्त इहान हिम्मतबहादुर विद्वानकी शीषण प्र य जान एक आश्रयता की प्रशंसा में किया था। इसी प्र य से इन वीर काव्य का एक उदाहरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है

तीर्थ तगवाही ज सिनाही चढ़ पाठन प,
स्याही चढ़ अमित अरिदन की एन प।
बहे पामार निगान चढ़ हाथिन प
धूरि धार चढ़ पाक सासन क सन प।
साजि चतुरंग चम्पू जग जीतिब क हतु
हिम्मत बहादुर चढ़त कर फल पै।
लाची चढ़ मुय प बहानी चढ़ बाहन प
काची चढ़े सिंह प कपाची चढ़े बन प।

भगवतराय घोषी—

राजा भगवतराय घोषी पन्हुदुर र अन्तगत अयोधर नामक गाव के निवासी थे। यह भगवत सिंह नाम ग भी जाने जाते हैं। यह बन्त काव्य प्रवी और कवियों के आश्रयता थे। सन् १७३६ में जबकि पद्म नवाब खजीर सञ्जातियां घटाने उन मुक से हुए युद्ध में इहोत वीर-गति प्राप्त की थी। इनके विश्व हूण कुन दा प्र य उल्लेख होते हैं जिनके नाम रामायण तथा हनुमन्त पञ्चवी हैं। इनका एक प्र य हनुमन्तपवासा श्रापक से भी उत्तिगित किया जाता है। इनकी कविता में वीर रस और शृंगार रस की विनय रूप से अभिव्यजना मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बिदिन विमान डात भानु कपि जान की है
जाट मुरपान की तज न कुमार की।
जाही सौ गोटि के गिराण गिरि गढ़ जासा
कटिन कपात तार खिनी सा मार की।
भन भगवन जाना लागि मर प्रभ
जाक लाग लयन की सुमिता उमार की।
भाइ ब्रह्म जय की प्रवाती महाताती की
मुड मन्माता परना पवन कुमार की ॥

साता ठाकुरदास—

साता ठाकुरदास हिंदी साहित्य के इतिहास में सावर ठाकुर कुन्वयशी के नाम प्रसिद्ध हैं। इनके विनायक चमराय तथा निता गुसावरण थे। इनका जन्म १७४९

जाके डर डिगत जडाव गङ्गधारी इग
मगत पहार और इतति मद्दि सारी है ।
रक जगो रहत सगवित गुरेग भयो
ग्य दगपति म अतर जति भारी है ।
भारी गङ्गधारी, सग जग की गियारी
धान मान ता निहारो या हमीर हृष्टधारी है ॥

भाग मीरजाद पीरजाद ओ जमीरजाद
भाग घानजादे प्रात भरत बन्नाय न ।
भाग गज बाजि रम पथ न सभाई पर
गोलन प गाव गूर सहमि सराय न ।
भाग्या मुलतान जान बचत न गानि बगि
बनित बितड प बिराजि बिनगाय न ।
जस नग जगन म ग्रीपम की जागि
चल भागि मृग मरिप बराह बिनगाय न ॥

शम्भुनाथ मित्र—

शम्भुनाथ मित्र के जीवन के सम्बन्ध में जा विवरण उपलब्ध होता है उससे आधार पर इनका समय सन् १७४५ के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह पतहपुर के अतगत असागर के राजा भगवतराय छोची के जायस में रहते थे। उनके घर का नाम रसतरगिणी रस के नाम तथा जनकार दीपक है। इनके काव्य गुरु मुत्तव कवि अथवा मुत्तव मित्र थे। इनके शिष्या में शिव कवि का नाम मिलता है। रसतरगिणी तथा रस कलोन में कवि ने रस विवेचन तथा जनकार दीपक में जनकार विवेचन प्रस्तुत किया है। दोहा कवित्त तथा सवया छन्द का प्रयोग कवि ने अधिक किया है। शृंगार रस के उदाहरणों के साथ-साथ कवि ने अपने आज्ञादाता के शीघ्र का जो वर्णन किया है उसमें भी रस की अभिव्यक्ति मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

आज चतुरंग महाराज सेन साजत ही
घोसा की दुवार धूरि परी मह माही के ।
भय के अजीरन त जीरन उतीर भये
मूल उठी उर में जमीर जाही ताही के ।
बार खत बाव बरछी से विरगानो इत
धीरज न रहयो सबू कौन हूँ सिपाही के ।
भूप भगवत बीर न्वाही के एक सब
स्याही सारी बदन तमाम पातसाही के ॥

पद्याकर मट्ट—

कविवर पद्याकर मट्ट का नाम रीति युग की शृंगार परम्परा के साथ साथ वार काव्य प्रवृत्ति के अतगत भी उल्लिखित किया जा सकता है। यह अनक राजाआ के आश्रय में रह था। शृंगारिक तथा जातकारिक का यरचना के अतिरिक्त इहाने हिम्मतबहादुर विरुणावनी शोपक ग्रंथ अपने एक आश्रयदाता की प्रशंसा में लिखा था। इसी ग्रंथ से इनके वीर कव्य का एक उदाहरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

तीछे तगबाही जे सिलाही चढ घोडन प

स्याही चढ अमित बरिदन की एन प।

कहे पद्माकर तिसान चढ हाथिन प,

धूरि धार चढ पारु सासन के सल प।

साजि चतुरग चमू जग जीतिब के हतु

हिम्मत बहादुर चढत कर फड प।

साली चढ मुख प बहानी चढ बाहन प

काली चढ सिंह प नेपाली चढ बल प।

भगवतराय खीची—

राजा भगवतराय खाची फतेहपुर के अतगत अमोयर नामक गाव के निवासी थे। यह भगवन्त सिंह नाम से भी जाने जाते हैं। यह बहुत काय प्रेमी और कवियो के आश्रयदाता थे। सन १७३६ में अवध के पहले नवाब बजीर सआदतखा वहीन उन मुल्क से हुए युद्ध में इहाने वीर-गति प्राप्त की थी। इनके लिखे हुए कुल दो ग्रंथ उपलब्ध होते हैं जिनके नाम 'रामायण' तथा 'हनुमन्त पचीसी' हैं। इनका एक ग्रंथ हनुमन्तपचासा शोपक से भी उल्लिखित किया जाता है। इनकी कविता में वीर रस और शृंगार रस की विभक्त रूप से अभिव्यजना मिलती है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

विदित विसान डाल भानु वपि जाल की है,

ओट मुरपान की तेज व कुमार की।

जाही सौ चण्डि के मिराए गिरि गढ़ जासा

कठिन कपाट तोर लविनी सा मार की।

भन भगवत जासा लागि मट्ट प्रभ

जाके दास लपन को धुमिता छुमार की।

ओढ़ ब्रह्म अम की अवाठी महावाती बी

मुड मदमाती घाती पवन कुमार की ॥

साता ठाकुरदास—

साता ठाकुरदास हिन्दी साहित्य के इतिहास में तीसरे ठाकुर बुदेनखन्दी के नाम से विदित हैं। इनके पितामह खगराय तथा पिता गुनाबराय थे। इनका जन्म सन

रीति युगीन भक्ति तथा नीति-काव्य की प्रवृत्तियाँ

हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीति युग का अन्त शृंगार तथा रास रास्य की प्रवृत्तियों के अतिरिक्त भक्ति काव्य की प्रवृत्ति भी विनासनात्र मिलती है। इस युग में हाने वाले भक्त कवियों की भी संख्या बहुत बढ़ी है। इन भक्त कवियों में भक्ति भावना का साथ साथ शृंगारिक आध्यात्मिक विषयों पर भी काव्य रचना की। कुछ कवियों ने नीतिपरक काव्य भी रचा। रीति युग का यह भक्ति काव्य अनन्त रूप में उपलब्ध होता है। कुछ कवियों ने नीति अथवा भक्ति सम्बन्धी स्तुति पद्यों की रचना की है तथा कुछ ने प्रबन्धात्मक रूप में भक्ति काव्य प्रस्तुत किया है। राम और कृष्ण के चरित्र और नीताशास सम्बन्धित अनन्त प्रयोग इस भक्ति-काव्य के अन्तर्गत उपलब्ध हैं। निम्न भक्ति के अन्तर्गत अध्यात्म तथा ब्रह्म विषयक सिद्धान्त कुछ कवियों ने विवक्षित किये। विनय सम्बन्धी पद भी इस युग के कुछ कवियों ने लिखे हैं। यहाँ पर रीति युग के प्रमुख भक्त कवियों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

बद कवि—

बद कवि का जन्म सन १६४३ में हुआ था। इनका वास्तविक नाम पदावनतास था। यह बद जाति के सेवक थे। इनके पूर्वज बीकानेर में निवासी थे। इनके पिता का नाम रूपजी था जो जोधपुर में रहते थे। इनकी माता कौशल्या और पत्नी नवरगदे थी। बाल्यावस्था में बद ने काशी में ताराजी नामक पति से विद्या प्राप्त की थी। विद्वान् होकर तौलने पर जसवंत सिंह द्वारा सम्मानित किये गये थे। उहाँ के प्रयत्न के फलस्वरूप नवाब मुहम्मद शाही की सहायता से यह औरंगज़ब के दरबार में प्रविष्ट हुए। औरंगज़ब ने इनसे प्रसन्न होकर इन्हें अपने पौत्र अजीमु शाह का अध्यापक नियुक्त कर लिया था। आगे चलकर अजीमुशान के बगाल का गवर्नर नियुक्त होने पर यह उसी के साथ चले गये थे। बाद में सन १७७७ में यह किशनगढ़ के राजा राजसिंह के अनुरोध पर वहाँ आ गये। इनकी रचनाओं में समस्त शिखरछन्द भावपचायिका शृंगार शिक्षा, पवनपचीसी हितोपदेश सधि बदसतसई 'बचनिवा सत्य

स्वरूप, यमक सतमई, हितोपदेशाष्टक भारतकथा तथा प्रतापविलास आदि है। इनमें से समनखिखरछंद म व न ने जन सम्प्रदाय के प्रसिद्ध तीर्थ का माहात्म्य वर्णित किया है। 'भावपचाशिका शृंगार विषयक काव्य है। शृंगार शिमा म पातिव्रत धर्म का वर्णन है जिसकी रचना कवि न जोरगजब के बरीर तवाव मुहम्मदखा क पुत्र मिर्जा कादिरी की पुत्री का शिमा दन के लिए की थी। इसमें कवि न नायिका भी प्रस्तुत किया है। पवनपचासा शृंगार प्रधान ग्रंथ है। हितोपदेश संधि म हितोपदेश की चौथी कथा का पद्यानुवाक किया गया है। व द सतमई नीति साहित्य विषयक एक महत्वपूर्ण रचना है। बचनिका बिष्णुनगर के राजा रूपसिंह के युद्ध वर्णन को प्रस्तुत करती है। सत्यस्वरूप म श्रीरगजब के द्वारा जादि पुत्रा के सत्ता के लिए किय गये युद्ध वर्णित है। यमक सतमई म शृंगार विषयक दोह हैं। हितोपदेशाष्टक शात रस प्रधान काव्य है। भारतकथा महाभारत पर आधारित एक प्रयोग है। प्रतापविलास का कुछ बिम्बान प्रामाणिक नहा मानत हैं। इस प्रकार स व द के साहित्य म रीतियुगीन काव्य की ताना प्रमुख प्रवृत्तिया शृंगार वीर तथा भक्ति रस प्रधानत उपलब्ध होती है। इस अतिशय म यह अपन युग के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं। बिम्बान से इनका नीति काव्य महत्वपूर्ण है। व द के दो श्लोक उदाहरण के लिए नीचे प्रस्तुत किय जा रहे हैं

भन बुरे सब एक सम जो नो बोनत नाहि ।

जाति परत हैं काग पिरु नुतु बमत के माहि ॥

दूत हू का कहिए न तहि जो नर हाय अगोष ।

ज्या नकट का नारसा हात लियाए राध ॥

बतात कवि—

प्रधान कवि जाति के वर्गीजन र। इनके जीवन काव्य के विषय म काइ प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहा है। इनका जन्म सन १६३३ म अनुमानित किया जाता है। कुछ बिम्बान का विचार है कि यह राजा विक्रम के दरबार म रहते थे। इनका काव्य म मुख्यत नीति विषयक पत्र मिलत है। इन्होंने छप्पय तरा दादा छत्रा म व्यवहार-नीति के विविध पक्षा का विवचन किया है। इनका काई पृथक् ग्रंथ नहीं मिलता। कवन तीस के लगभग स्तुति पत्र उपलब्ध हात हैं। इनका काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

मर चन गरिमारे मर वह अनियन टट्टू ।

मर करकशा नारि मर वह धम्म नियट्टू ॥

बाहून सा मरि जाय हाय न मरिा प्याय ।

पूत वहा मरि जाय जा कुल म दाग लगाव ॥

अरु बनिया राजा मर तब नाम भर साइए ।

बतात कहे बिष्णु मुनी एव मर न राइए ॥

शासम—

रीति युगीन रवि जातम जाति र शङ्काय र । रत्ना ज्ञान जात र वि शय ताम
की किमी रगरेत्रिण पर भागता हारर इ ह्या उगा बिया रर तिया ओर मुन प्रमान
हा गय । इनके पत्र ता ताम ज्ञान था । यह रोमगदर र शय्या मुद्रातम र जायप
म रहने थ जा वा म वपयगनाह र ताम म वा ताह दुना था । उपाध प्रमाण र
आधार पर उनका रचना-नाम मया १०४ म मर १०० र अनुमार्ति रिया
जाता है । हात मुख्य प्रम भावता की जायार बाहर मर ता य रता है ।
इनकी रचितान जातमरति नामक मयह म मयहान है । रर राव्य वा एर उर
हरण नीच प्रस्तुत रिया जा रहा है

ता वन तीन बिहार जनकता ता वन कायग रति र वा रर ।

जा रसना मा करी बहवान ता रसना मा चरिण गुवा कर ॥

जातम जौन म रजत म करी रति रती अर माग धया रर ।

ननन म ज सया रहत तिनकी अब तान कताता गुवा रर ॥

गुरु गोवि रसिह—

गुरु गोवि रसिह सिक्का व दमर और जतिम गुरु माता तान हैं । उनका ज म
सबत १०२३ म हुआ था । उनका पिता का नाम गुरु तगबदादुर तथा माता का नाम
गूजरी था । जारम्भ म उनका नाम गोवि रराय था । बाल्यावस्था म ही उह युद्ध म
विशप रचि हा गयी थी । अस्त्र शम्भ्रा की अच्छी शिता उ दोन प्राप्त का थी । गह
गोवि रसिह न खानसा पव का निर्माण रिया था । उ हान दयाराम धमरास
माहकमच र साहिवच र तथा हिम्मत नामक पाच सिक्का का म वजयी बना कर मिह
बनाया था । उ हाने अपन जीवन म अनक मटवपूण उडाया रर । अपन चारा पुत्रा
अजीतरसिह जोरावरसिह जुझारसिह जोर पतेहसिह को उ हाने स्वराश क रिए बनि
दान कर रिया । धम मुधारका म धीपस्थ स्थान प्राप्त करन क साथ साथ उ हान
राष्ट्र उनायका म भी उरुव स्थान प्रात रिया । गुरु गोवि रसिह के प्र वा म मुख्य
रूप स मुनीतिप्रकाण सबनोभप्रकाश प्रममुमाग बुद्धिसागर जोर चनीचरित के
नाम विशप रूप स उरुनखनीय है । इनके काव्य का एक उपाहरण नीच प्रस्तुत रिया
जा रहा है

निजन निरूप ही कि मुदर स्वरूप ही

वि भूपन क रूप ही कि दानी मदादान ही ?

प्राण क बचया दूध पून के दवया

राग साग क मिटया किधी मानी महामान है ?

विद्या क बिचार ही कि अत अवतार ही

कि मुदता की मूर्ति ही कि सिद्धता की सान ही ?

जाबन क जान ही कि कानहू क गाल ही

कि सवन क सान ही कि मित्रन क प्राण ही ?

घनानन्द—

घनानन्द का स्वात रीति युग न कविया म अत्यधिन महत्वपूर्ण है। इनक जीवन चरित्र व विषय म सुव्यवस्थित विवरण उपलब्ध नहीं होता। इनक सम्बन्ध म जो जानकारी मिलती है उसक अनुसार यह जाति क कायस्थ जार बहादुरशाह क मीर मुशी व। कहा जाता है कि जीवन स विरक्त होकर जब यह मथुरा गय तब नादिरशाह क सिपाहिया न दत्तको हत्या कर दी थी। इनक जीवन क सम्बन्ध म अनेक विवरणिया प्रचलित हैं। कहा जाता है कि मुजान नाम की स्त्री वश्या स इनका प्रेम सम्बन्ध था और उसी के नाम को श्रीकृष्ण क नाम पर रान कर - हान काव्य रचना की थी। घनानन्द नाम के साथ साथ हिन्दी साहित्य म जानपन जतपन आनदमा आनद निधान, जानद आनदमष आनमह तथा घनआन जाति नाम स जा रचनाए मिलती है उह कुछ विद्वान एक ही कवि का और कुछ एक स अधिक कविया का कृतित्व मानते है। घनानन्द की स्फुट रचनाए मुन्नी तिनक मुजान शतक 'मुजान-सागर वियाग उलि विरह लाना इशकता 'यमुनायश प्रीतिपावस प्रम पविका घनानन्द प्रदावली कवित्त सवया का मग्रह पनावली कृपानन्द अनुभवचन्द्रिका रगयथाइ प्रम पद्धति वषभानपुर-मुपमा वणन गाकुन गीत नाम माधुरी गिरिपूजन विचारसार दान घटा भावनाप्रकाश ब्रजरत्नरूप प्रम पट्टी रसायनयश गाकुनविनाद कृष्णकोमुना, धामचमत्कार प्रियाप्रमा, वदावनमुद्रा ब्रजप्रमा गाकुनचरित्त मुरनिकामा मनारथ मजरी गिरि गाथा ब्रजव्यवहार छटाष्टक त्रिभगी परमहमावनी तथा कृतत्व तथा शीषक परीक्षा जाति प्रथम म सग्रहीत ह। इनक काव्य म प्रेम और भक्ति का प्रभावपूर्ण अभिव्यजना मिलती है। घनानन्द क काव्य क कुछ उदाहरण नीच प्रस्तुत किय जा रह है

हीन भए जन मोन प्रधान
 कहा कुछ मो जकुनानि समान ।
 नीर सनेही का नाय कनक
 निरास हू बायर त्यागत प्रान ।
 प्रीति री राति तु क्या समुज ज
 मोति क पानि पर को प्रमान ।
 या मन की जु दसा घनआन
 जीव की नीवनि जान हा जान ॥

रससागर नागर स्वाम नउ
 अभितापनि धार मदार बदी ।
 गुन भूगत धीर का तीर बहू,
 पथि हारिक लाज सिवार गदी ।

घनआनन्द एत अरभा बड़ी मुन
 हाथ हूँ रूढ़िगिरी वाणी वदो ।
 उर आयत या छवि छाह या हो
 ब्रज छैन की गत मनाई रहो ॥

रावरे रूप की रीति जगुप
 नया नया नागत या या तिहारिय ।
 त्या इन आग्रिन बानि अगायी,
 अघानि बटू नहि आन तिहारिय ।
 एक ही जीव हुतो मु तो वारयो
 मुजान मकाच ओ सात्र सहारिय ।
 रावि रहै न दहै घनआन
 बावरी रीय न हावनि हारिय ॥

अति मूषी सनह की मारग हे
 जहा नकु सयानप बाक नही ।
 तहा साच चन तनि जापुनपो
 यल्लव कपटा ज निसाक नहा ।
 घनआनद प्यारे मुजान मुनी
 यहा एक त दूसरो आव नही ।
 मुम कोन धी पाटी पत्र ही कहो
 मन नहु प दह छटाक नही ॥

रसनिधि—

कविवर रसनिधि का वास्तविक नाम पृथ्वीसिंह था । उनका रचना काल सन १६०३ से १६४० तक अनुमानित किया जाता है । यह दत्तिया राय के एक जमादार बताया जात है । नतिपय फटकर दोहा के अतिरिक्त उनका लिखा हुआ एक ग्रंथ रतन हजारार शीपक से प्रतिद्ध है । यह ग्रंथ भी दोहा में ही लिखा गया है । इनके काव्य पर विहाधी सतसई का विशय प्रभाव पितरता है जिसके अनुकरण पर इस ग्रंथ की रचना हुई है । इस रचना के अतिरिक्त रसनिधि क लिख हुए जयग्रंथाम विष्ण पद कीतन कवित्त बारहमासी रसनिधि सागर गीति सग्रह तथा अरिल्लाहिडोला जादि के नाम भी उल्लिखित किये जाते हैं । उनका लिखे गए दो दाह नीच प्रस्तुत किये जा रहे हैं

अदभत गति यहि प्रेम की बनन कही न जाय ।
 दरभ भूष नाग दुगन भूषहि देत भगाय ।

नहुं न मत्रनू गौर णिग काऊ लला नाम ।
दरपन कानहु ती लन षु विसराम ॥

गिरिधर—

गिरिधर कविराय क जीवन क सम्बन्ध म विस्तृत प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं हाता । इनक नाम क साथ कविराय जयवा कविराज लाा रहन क कारण इहें भाठ जाति का अनुमानित किया जाता है । इनका जन्म सन १७१३ म अनुमानित किया जाता है । इनक जावन क सम्बन्ध म अनक प्रकार की विवदन्तिया प्रचलित हैं । उनकी निजी हुई कुञ्जिया विाप रूप म प्रसिद्ध है जिनम साइ शब्द की छाप है । यह कइनिया उनकी पत्नी द्वारा अपन पति—अर्थात् स्वामी या साई—का सम्बन्धित करक निजा गयी है । इन कडलिया क अनक संस्करण उपलब्ध हात है । इनम सन १८३३ म प्रकाशित कुडलिया १८७४ म प्रकाशित कुडलिया १८८६ म प्रकाशित गिरिधर कविराय गीपक ग्रन्थ म मप्रहीत कुडलिया तथा १८४४ म प्रकाशित कुडलिया विशेष रूप म उत्तमनीय हैं । सन १८५३ म गिरिधर कविराम का कुडलिया का सबसे बड़ा संग्रह कविराय गिरिधरराय कृत कुञ्जिया गीपक म प्रकाशित हुआ था जिसम उनकी निजी हई ४५७ कुडलिया संग्रहात है । गिरिधर कवि न कडलिया क अतिरिक्त दाह सारठ और छप्य भा लिखे हैं । गिरिधर क काव्य क मुख्य विषय भक्ति चान नाति वराय्य तथा व्यवहार शास्त्र जाति है । इनक काव्य क कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं

दोलत पाय न काशिए सपन हू अभिमान ।
बचन जल दिन चारि का टाउ न रहत निदान ॥
टाउ न रहत निदान जियत जा म यह राज ।
भाठ बचन मुनाय बिनय सब ही की कौज ॥
बहु गिरिधर कविराय जर मह सब घट तीत ।
पाहुन निनिग्नि चारि रहत सब हा क दोलत ॥

साई य न बिराघिण छाट बड सब भाय ।
एम भारी बड का कुहरो दन गिराय ॥
कुल्हरी न गिराय मारि क जमा गिराइ ।
टुक टुक क काशि समु म दउ बहाइ ॥
बहु गिरिधर कविराय, कू जहि क घर जाइ ।
हिरपाकदवन कड गण बलि, रावन साइ ॥

तुन क गाऊत सहस्र नर बिनु तुन लहे न कोय ।
जय काना काकिना गण मुन सब काय ॥

घ ७ मुने मर काय काँति ता सधै गुणारा ।
 दोऊ को एत रग बाग सब भण जावा ॥
 कह गिरिधर कविराय गुणो हाँटापुर मान ।
 बिनु गुन सहै न कोप सदा तरगाय गुन ॥

साई सब मसार म मतवय ता ध्यरहार ।
 जब जग पसा गाठ म सब जग ताको पार ॥
 तब लग ताको पार पार लग ही गग दान ।
 पसा रहान पास पार मुअ म नहि बाँ ।
 ऋ गिरिधर कविराय जगत यहि जग्य भाई ।
 करत बगरजी प्रीति पार खरता काँ माई ॥

गुमान मिथ—

कविवर गुमान मित्र सारो क निवासी थे । इनके पिता का नाम गापाचमणि था ।
 उनके तीन अर्थ भाए दीपसाहि गुमान और जमान थे । इनके गुरु का नाम सबमुद्र मित्र
 था । यह युगत्रिंशत्क नामक जायस म कुछ समय तक रहने के बाद अकबर अनी पा
 के पास पिहानी बन गये थे । वही ज्ञान रूप त्रिषिप्त नयन का अनुवाक हिन्दी म
 कायकथा निधि के नाम म प्रस्तुत किया था । अकबर स्वयं तथा गुमान चरण्य
 शीपक से इनके जय दा प्र य मिलत है । उनकी निघा हुई कृष्णचरिका और छप्पटी
 अथवा पिंगन नामक कृतिया भी बनाया जाता है । इनके काय के कुछ उदाहरण नीचे
 प्रस्तुत किये जा रहे हैं

दिग्गज दवत दवकत त्रिगवान् बूरि

बूरि का धररी मा अधरी जामा मान की ।

धाम औ धरा को मान बान जवना का जरि

तजत परान राह चाहत परान की ।

समद समय भूप जरी अकबर दन

चरत बत्राय मारू दुहुभी धुवान की ।

फिरि फिरि फननि फनीस उरटतु एम,

चानी घानि डानी या तमाता पाक पान की ॥

हाटक हस च या उडिक नम म दुमनी तन याति भई ।

नीक सी खचि गयो छन म छटाय रही छबि सोनमई ॥

ननन सा निरट्या न बनायन क उपमा मन माहि नई ।

स्वामल चीर मनो पस या तहि पवन कचन बनि नई ।

सरजूराम—

कविवर सरजूराम पंडित अवध के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे । इनके

जीवन क विषय म कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता । इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ जमिनीपुराण भाषा अथवा 'जममुनि पुराण' है । यह ग्रंथ जमिनी के लिखे हुए महाभारत के एक पत्र पर आधारित है । इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

गुरुपद पक्व पावन रेनू । वहां नवपत्रक का मुखधनु ॥
गुरुपद रज अज हरिहर धामा । विभुवन विभव विश्व विश्रामा ॥
तब त्रिगि जग जन् जीव भजाना । परम तत्व गुरु जिम नहि जाना ॥
श्रीगुरु पकज पाव पसाऊ । स्रवत सुधामय तीरव राऊ ॥
मुभिरत होत हृदय अमनाना । मित्रन मात्मय मन मल नाना ॥

हरनारायण—

कविवर हरनारायण के जीवन विवरण से सम्बंधित कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता । इनकी विद्ये हुई दो कृतियां मात्रवान न कामरुधना तथा प्रताप पचीसी शीपक से उपलब्ध होती हैं । इनमें से प्रथम का रचना काल लगभग १८१२ है । इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सोहे मूड चंद सा त्रिपड सा विराज भाव
तुड राजे रत्न उड क मिनन त ।
पाप रूप पाणिन विषन जल जीवन के
कड सोधि मुजन बनाव जखिनन त ॥
एम गिरिनजिनी के नदन को ध्यान ही म
कीव छाडि सबन अपानहि निलन त ।
भगुति मुकुति ताके तुड तें निकसि ताप
कड बाधि नवती भुमड क विलन तें ।

ब्रजवासी दास—

कविवर ब्रजवासीदास बदावन के निवासी थे । इन्होंने 'ब्रजविलास' शीपक एक प्रबंध काव्य की रचना की थी । यह ग्रंथ वर्ष १८२७ म नूतनसालस लिखित 'राम चरितमानस' के अनुकरण पर रचा गया था । इस ग्रंथ के अतिरिक्त इनका लिखा हुआ प्रबंधकाव्य शीपक अनूत्ति नामक भी रचाया जाता है । इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

जमुमति कहति कहा धौ बीर । मागत च वहा तें छीज ॥
तब जमुमति इक जन पुट बीना । कर म तें तहि ऊचा कीना ॥
एक कहि श्याम बहराव । आव न तोहि ताल बुनाव ॥
हान लिए तहि धनत रहिए । नकु नही धरनी प धरिए ॥

बोधा—

कविवर बोधा बांग जिन के जनमगत गजपुर नामक स्थान के निवासी थे । जिनके यह सरलपारी शाल्य थे । इनका वास्तविक नाम बुद्धिन था । परंतु पद्मा

क दरबार में यह बाधा राम में ही प्रमिष्ट हुए। ता राम राम मन्त्र १८३०। १८६० तक अनुमानित किया जाता है। ता राम राम मन्त्र १८३०। १८६० तक अनुमानित किया जाता है। अनेक विवरणियाँ प्रमिष्ट है। इस विवरण में राम मन्त्र मीत तथा इतनामा है। इनका य ए तु उ वरण मीत प्रस्तुत किया जा रहा है।

अति गीत मूनात क तागूँ । हि ऊपर पाठ जाया है ।
मुई यह क तार मने त तहाँ परि गीत का गीत म मरमा है ।
कवि बोधा अनी पनी नजहुँ तें पड़ितानी त पित इगना है ।
यह प्रम को पथ करान महा तग्वारि की धार त घावता है ।

हिति मिलि जान तासा मिति न जायै हत
हित को न जान ताको हितू त रिगाहिए ।
होय मगरूर ताप दूनी मगरूरी रीज
तय त्र चल जा तासा तयुता निबाहिए ॥
बाधा कवि नीति को निचरी यही भाति अहे
आपको सराहै ताहि आपहू सराहिए ।
दाता कहा मूर कहा मुतर मुजान कहा
आपको न चाहै ताक बाप को न चाहिए ॥

रामचंद्र—

कविवर रामचंद्र के विषय में विवरण उपन ध नका होता। उपन ध प्रमाणा क आधार पर इनका समय मवत १८४० के तगभग अनुमानित किया जाता है। इनकी लिखी हुई एकमात्र पुस्तक चरणचंद्रिका शीषन से उपन ध हाता है। इस कृति में ६२ कवित्तों में पावतीजी के चरणों की महिमा वर्णित है। इनका य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

मानिए करी द्र जो हरी द्र की सरोप हुर
मानिए तिमिर घर भानु किरन को ।
मानिए चटक बाज जुरी की पटक मारे
मानिए भटक द्वार भरु भजगन ना ।
मानिए कहै जो बारिधार त दवारि औ
अगार बरसाइयो बताव बारिदन को ।
मानिए अनेक विपरीत की प्रतीत प न
भोति आई मानिए भवानी सवकन को ॥

मचित—

कविवर मचित का समय सन १७७६ क तगभग अनुमानित किया जाता है। वह बु देनखड के अन्तगत मऊ नामक स्थान के निवासी थे। इनके जीवन क सम्ब ध म

विशेष प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है। उनका जिनका हृदय का रचनाओं का उन्मत्त
मिन्नता है जिनके नाम मुरझा-मान नीला तथा वृष्णावन हैं। इनमें से प्रथम ग्रंथ में
सखक न वृष्णा की नीलाजा का गान किया है। जिनके ग्रंथ में प्रथम ग्रंथ में लिखा गया
काव्य है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

कडन तीन अमान कान क छवन कपोलन आव ।
डुन आप न खुन जार छवि वरधस मनहि चराय ॥
घोर विसाद भाव पर साभित कसर की वित भाव ।
तारे भीव विदु रारी को एना बउ बनाव ॥
प्रकुण कक नन खजन स कवन गजन वार ।
मन भजन खग मीन सग ज मन रजन अनियारे ॥

मधुसूदन दास—

कविवर मधुसूदन दास इत्यादि क विवामा थ। जाति क यह मायर चौब थ।
इनकी एक रचना रामाश्वमेध शोषक में उपलब्ध है। इनका रचना-काल सन
१३८२ बताया जाता है। उनकी रचना हेतु प्रेरणा कवि का गाविंद दास नामक
व्यक्ति से मिली थी। इस ग्रंथ में कवि ने तत्कालीन विद्वान् रुद्रचरण भगवान राम के चरित्र
की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ रामचरितमानस की भाँती पर वर्णित की हैं। इनके काव्य का
एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

मिय रघुपति पदकज पुनीता । प्रथमहि बन्ध कर्षी सप्रीता ॥
मदु मजुन मरु सब भानी । ससि कर सरिन मुभग नख पाती ॥
प्रणन कन्यतर तर सब आग । दहन जन तम जन चितवाग ॥
त्रिविध कनुप कुजर घनधारा । जगप्रसिद्ध कहुरि बरजाग ॥
चितामणि पारन मुरधन । जधिक जाति गुन जभिमन दन ॥
जन मन मानस रसिक मराना । मुमिरन भजन बिपति दिमाना ॥

शान्तपाल गिरि—

रानि युगोल काव्य क अउद्यत नीति प्रधान रचना करन वाला में दीनद्वान
गिरि का नाम विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इनका जन्म सन १८०२ में हुआ था।
यह ज्ञाता क विवासा थ। इनका गुह का नाम कुशागिरि था। इनके का गुह भाइया—
स्वयंवरगिरि तथा शान्तपालगिरि—का उन्मत्त भा मिन्नता है। इनके लिखे हुए ग्रंथा
में अनुरागवाता, शान्तपालगिरि जयान्ति माना रामाय जिनका तथा अन्त्यात्ति
काव्यम हैं ता शान्तपाल गिरि का सबसे नीचे प्रकाशित किया जा चुका है।
इनकी एक अन्य रचना का भी उन्मत्त मिन्नता है जिसका शोषक बाग बहार है।
पं तु यद् ग्रंथ अनुराग है। वृष्णा-नीलाजा का गान करने के साथ-साथ शान्तपाल गिरि
ने अनेक ग्रंथों में भी शान्ति विषय पर ही मुन्मत्त रूढ़िवादी दाह कविने
भी उल्लेख किया है। इनके काव्य क कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तो माम क्या करे करे मुखा का रान ।
 नहीं धर्मणि जो भी यह लिया पान ॥
 यह तनिया पद्या बड़ी बटिआई जायो ।
 टटी याव गीस बीच बनु बारा टांका ॥
 बरन दीनपान पद तुमही गित गयो ।
 कर त कामन हाहि पना जो गीत गयो ॥

—

—

चन उकई तहि गर बिरी जहँ नहि रैत बिछाह ।
 रहत एकरस निवम ही मुण्ड हग म ॥
 मुण्ड हग सगोह काह अरु गह त जाया ।
 भागत मुख अवाह माह दुख हाय त ताया ॥
 बरन दीनपान भाग बित जाय त गरई ।
 पिय मित्राप नित रहै ताहि सर उरतू परई ॥

—

—

कोमल मनाहर मधुर मुरतान सने
 नपुर निनानि सा कीन दिन बातिहै ।
 नीक मम तीर तुद वृदन मुमातिन को
 गहि कृपा की जब बाचन सा तोनिहै ।
 नम धरि शम सा प्रमुखा हाय दीनपान
 प्रम कोकनद बीच कव धौ बसानिहै ।
 चरन तिहारे जदुबस राजहस कव
 मेरे मन मानस म मदमद डोलिहै ?

—

—

पराधीनता दुख महा सुखी जगत स्वाधीन ।
 सुखी रमत मुन बन विष कनक पीजरे दीन ॥

मनियारसिंह—

कविवर मनियार सिंह का जन्म सन १७५५ के लगभग अनुमानित किया जाता है। यह काशी के निवासी थे। इनके पिता का नाम श्याम सिंह था। इनका काय मुसलमानान कवि थे। विशेष रूप से यह रामचन्द्र पण्डित के आश्रय में रहे थे। इनके निम्न ग्रंथ यो म सोप्य तहरी महिमा भाषा अथवा भावाम चंद्रिका हनुमत पचीसी तथा सुदरका रामायण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महिमा भाषा नामक ग्रंथ महिम्नस्तोत्र नामक कृति का भाषानुवाद है। अथ वृत्तिप्राम कवि ने शिव पावती राम तथा हनुमान का भक्ति विषयक काव्य प्रस्तुत किया है। कवि ने

मुज्तब ब्रज भाषा का प्रयोग किया है जिसमें मञ्जुत शब्द का बहुवचन है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तेरे पल पकड़ पराग राज राजस्वरी
 बंद बनाय विहारावनी बनी रहे।
 जाका किनुकाइ पायघाता न घरित्री रची
 जाप लाक लाकन का रचना कनी रहे।
 मनियार जाहि विष्णू सबै मच पापन म
 समूह क संग सीस सहस मनी रहे।
 साइ मुरानुर क सिरामनि सदातिव व
 भसम क रूप हव सरार प चगा रहे ॥

कृष्णदास—

कविवर कृष्णदास मिश्रानुर के निवासी हैं। इनके विषय में प्रथम में माधुय लहरी शीर्षक एक बहाने काव्य का उल्लेख किया जाता है। इसमें कवि ने राधा कृष्ण के विहार प्रेम का बहाने विस्तार से प्रस्तुत किया है। इस प्रेम का रचना काय समय १७८५ ई. है। इनका भाषा पर भी मञ्जुत का विशेष रूप से प्रभाव मिलता है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

कौन काज राज ऐसा कर जा नवान जहा
 बार बार कहा नरन्य कहा पाइए।
 टुनभ समाज मिल्यो सजन सिद्धात जानि
 जाना गुन नाम धाम रूप सेवा गाइए।
 बानी की सयानी सब पाना म बहाय राज
 जानी सान राति जासा अपति रिधाइए।
 जसो जसा गहा तिन जहा तसा ननन हू
 धय धय राधा कृष्ण नित ही गनाइए ॥

गणेश कवि—

गणेश कवि के पिता का नाम गुराब कवि और पितामह का नाम गान कवि था। इनका समय सबसे १८५९ से लेकर १८९० तक अनुमानित किया जाता है। यह काली के महाराजा उदितनारायण सिंह के राज्य में रहते थे। यह महाराज स्वराज्यप्रसाद नारायण सिंह के भाई समकालीन थे। इनके विषय में तीन प्रथम का उल्लेख मिलता है त्रिनक्षत्रायक वा मार्कि रामायण श्लोकप्रकाश, प्रद्युम्न विजय तथा हनुमत पंचांग है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

बान हरि इन्द्र सी बिन व कर जारि राज
 जानु शिबिब्रय हमार हय आवा है।

मरे गुर साग सब तासि भग हे जानु
 पूरो तप ता भाग्य गणत महाया हे ।
 बारज ममता मरे मरिद म आण जाव
 दया न दत माहि ज म ठहराया हे ।
 सो गुनि गुर कर उत न मधि आर गो
 बान गुणे व गु ताओर ताम पाया हे ॥

सम्मान कवि—

सम्मान कवि जति न प्राणण थ । यह जगद न निराभा थ । ताता न म मनु
 १७७७ म हुआ था । इनका जीवन न विषय म विराय प्रामाणिक विवरण उपन थ
 नहा है । इनका विषय न प्रथम उल्लिखित किताबत है किम एक विवरण ता य भूषण
 तथा दूसरा सम्मान न दा है । इनका म प्रथम म कवि न जगदर विराय विज्ञा है
 तथा दूसरे म नीति प्रधान न विषय है । इनका विषय न ता उदाहरण न विषय
 नीच प्रस्तुत किय जा रह हैं

निज रह आर पथ दूरि रह दुय हाय ।
 सम्मान या ममार म श्रीति करो जनि काय ॥

—

—

सम्मान चहो मुख दह की तो छोडो य चारि ।
 चोरी चगुनी जामिनी और परा नारि ॥

नवकदास—

कविवर नवकदास नखनऊ न निवासो थ । यह रामानु सम्प्रदाय न मूल न
 थ । इनका विषय जगता प्रथा का उल्लेख मिलता है जिनका एक म वापाकरण है
 तथा दूसरा भाषा काशतच्छेद । य नमश म १७६८ तथा १७७३ म किय गय थ ।
 यही इनका रचना काव माना जाता है । इनने अनेक इन दाना प्रथा म रामजीवा
 का वर्णन किया है । इनके काव्य का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

धरि एक अक राम की माता । नहया मात नहि मुख महु माता ॥
 तत नत मुकुता मम साहे । यधुजीव मम तीन विमोहै ॥
 किमनय सधर अधर छवि छाग । इतनीन मम गड बिराज ॥
 सतर चिबुक नामिका सोहै । नकुम निवत चिबक मम माहै ॥
 कामचाप मम धनटि बिराज । अतक कनित मुख जति छवि छाज ॥
 यहि विधि सकत राम न जगा । नहि चूमति जनात मुख सगा ॥

नवनामिह कावस्थ—

कविवर नवनामिह कावस्थ पासी न निवासो थ । यह रामानु सम्प्रदाय के
 अनुयायी थ । इनका साम्प्रदायिक नाम रामानुजनाम शरण बताया जाता है । यह
 टीकमगत दतिया तथा सभारक जात्रय म रह थ । इनके आश्रयदाताओं म प्रधान

महाराज हिन्दूपति थे। इनके लिखे हुए अनेक ग्रंथ मिलते हैं जिनमें सन्तमाचन जोहरिन तरण, रसिक रत्ननी विज्ञान भाष्कर' ब्रजराजदापिका' मुकुटम्भा सवाद कविशावना भाषा सप्तमिता कवि जावन, जाल्हा रामायण स्विमणा मान मूल दाला', रहस्य बावना अध्यात्म रामायण' एक रामायण नारीप्रकरण साता स्वयंवर' रामचन्द्र विनास भारत वातिक रामायण मुमिरना दानलाभ सवाद' नाम रामायण' रामायण काव्य तथा जान्हा भारत आदि मुक्त हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सगुण सरूप सगुण मुपमा निघान मजु
बुद्धि गुण गुणन आघ वनपति स।
नन नवलस कल्या विषद महा म यग
वरनि न पाव पार पार फनपति स।
जक्त निज भक्तन क कलुष प्रभञ रज
मुमति बनाव धन धान धनपति स।
अवर न तूजा देव सहज प्रसिद्ध यह,
सिद्धि बरन सिद्ध इस मनपति क हैं ॥

रामसहाय दास—

कविवर रामसहाय दास काशी के निवासी थे। जाति के यह अस्थाना कायम्प थे। इनके पिता का नाम भवानीदास था। इनके गुरु चित्तामणि थे। यह काशी नरना उजिनारायण सिंह के आश्रम में रहते थे। इन्होंने भगवत छाप स काव्य रचना का है। इनके निम्न ग्रंथ प्रज्ञा म वेत्ततरगिणी सतसई 'राम सतसई शृंगार सतसई वत्त तरगिणी, ककहरा रामसप्त शतिका' वाणी भूषण आदि का उत्तम मित्रता है। इन्होंने जनकार विद्वचन के साथ-साथ धर्म और भाति विषयक काव्य रचनाओं का भी प्रणयन किया है। इनके दोहे उदाहरणाय नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

नाग नना नन म कियो कहा धौ मन।
नहि नाग नना रहै लाग नना नन ॥

या विभाति दसनावली सतना बदन नसार।
पति का नाता मानि के मनु आई उदुमार ॥

पत्रनेस—

कविवर पत्रनेस के जीवन के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता। य पना के निवासी बताया जाते हैं। इनके लिखे हुए दा प्रथम मधुप्रिया' तथा नद्यगिण का उत्तम मित्रता है। पत्रनेस पचासा तथा पत्रनेस प्रकाश' नामक दो संग्रहों में इनके कवित्त और उचने संग्रहित हैं। बरवा और फारसी के शब्दा का इनके काव्य में बाहुल्य है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

पञ्चनेम तस्य इदुक् ता विगमिन त्र ऋ परवत् न कस्युव वग ।
 महसूय चत्वा च मस्त मगम अत्ररत्त अत्रावा त्रस्त वग ॥
 मत्रमूर्त्त न वाप गिगाग र्ण मम त्रयामत्त प म ग य वरत्त ।
 मित्रगा गुरमा तहरीर तुा मुक्त विा व विा त विनग ॥

द्विजदेव—

द्विजदेव का वास्तविक नाम राजा मार्जित था। इनका जन्म सन् १८३० म हुआ था। यह अपाध्याय का राजा था। ज्ञाति के यह शायक थे। इनके पिता का नाम दत्तनसिंह था। इनका नाम मार्जित म उल्लिखित प० प्रवीण बन्नि व तथा जगन्नाथ अवस्थी जस कवि रहते थे। जीवन के अन्तिम काल म यह विरक्त हाजर यथावन म जाकर बस गये थे। इनके प्रथम शृंगार रत्निका शृंगार बलीषी तथा शृंगार चानीसी का उल्लेख मिलता है। इनम म शृंगार रत्निका की शीरभ नामक टीका महाराज प्रतापनारायण सिंह न लिखी थी। द्विजदेव के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सुर ही के भार मूष सव शृंगारन के
 मदिरन त्यागि कर अतन बहू न गीन ।
 द्विजदेव त्याही मधु मारत अपारन सा
 नकु मुक्ति झूमि रहे मागरे मरअ पीन ।
 छानि इनमनन निहारो तो निहारो कहा ?,
 सुपमा अभूत छाय रहा प्रति भोन भोन ।
 चादनी के मारत दियात उनया सो चद
 गद्य हा के मारत बहुत मद मद पीन ॥

महत्त्व—

इस प्रकार से रीति युग के अतगत भक्ति तथा नीति काव्य की प्रवृत्तिया भी स्वतंत्र रूप से विकासशील रही मिलती है। इस प्रवृत्ति के अन्तगत ऊपर बहुत से ऐसे कवियों का उल्लेख भी किया गया है जो विगुद्ध भक्ति प्रधान अथवा नीति प्रधान कवि ही थे। इनके साथ ही साथ ऐसे भी जनक कवियों का सन्निधित परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है जिन्होंने भक्ति तथा नीति के अतिरिक्त शृंगार अथवा वीर काव्य की ही रचना की थी। परन्तु औचित्य के विचार से उनका उल्लेख शृंगारिक तथा वीर काव्यमक प्रवृत्तिया के अतगत न किया जाकर भक्ति और नीति काव्य विषयक प्रवृत्ति के अतगत किया गया है। भक्ति और नीति काव्य की यह प्रवृत्ति स्पष्टत यह सक्थ प्रस्तुत करती है कि रीति युग म शृंगारिक काव्य रचना करने वाले कवियों की प्रधानता रही अवश्य परन्तु फिर भी वीर तथा भक्ति आदि रसा का भी प्रयत्न मिला। यही नती नीति काव्य की परम्परा का प्रसार भी इस युग म विशेष रूप से हुआ जिसका पूर्व स्वरूप भक्ति युग म मिलता था और परवर्ती हिन्दी

काव्य पर जो चिन्तका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित किया जा सकता है। इस युग में गिरिशंकर कविराय त्रैलोक्याल गिरि तथा बन्द आदि अनेक ऐसे कवि हुए जिन्होंने विगुद्ध नाट्य-काव्य की रचना की।

सभ्य म राति युग म जो काव्य प्रवर्तिया विकसित हुइ वह किसी न किसी रूप म जपन पूर्ववर्ती तथा परवर्ती परम्पराआ से सम्बद्ध है। भृगार तथा धीर रस क साय-साय इस युग क अनेक कविया का भक्ति तथा नीति आदि विषयो से सम्बन्धित काव्य रचना करना तन्त्रयुगीन काव्य प्रवर्तियों के ध्वजगत विस्तार और विषय-विविध का सूचक है।

भारतेन्दु युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

आधुनिक काल में हिन्दी कविता की विभिन्न प्रवृत्तियाँ का आरम्भ भारत दुर्लभ समय में ही हुआ। साहित्यिक नवजागरण की दृष्टि में दशम युग का आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में अत्यन्त महत्व है। अन्तिम पद्य के इतिहास में प्रमुख विद्यालय युग में जो प्रवृत्तियाँ उपस्थित होती हैं उनकी पृष्ठभूमि में भारत-दुर्लभ युग में विभिन्न काव्य धाराओं का आविर्भाव हुआ। ब्रजभाषा अवधी तथा छड़ी बाली में दशम युग में अधिकांश कवियों ने काव्य रचना की। गद्य के क्षेत्र में छड़ी बाली का प्रचार प्रसार बढ़ने के साथ-साथ पद्य के क्षेत्र में भी उसका उपयोग अनुनतापूर्वक किया जाना लगा। छड़ी बोली के प्रचार एवं परिष्कार के लिए अनेक आन्दोलन किए गए। अन्तिम परिणाम यह हुआ कि छड़ी बाली में स्पष्ट काव्य रचना के साथ महाकाव्यों की रचना भी आरम्भ हो गयी। जो कविगण अपक्षान्त अधिकांश परम्परावादी थे वे पूर्व काल की हिन्दी काव्य धारा से अधिक प्रभावित रहे। फलतः उन्होंने ब्रजभाषा अथवा अवधी में ही काव्य रचना की। विषयवस्तु की दृष्टि से ब्रज अवधी तथा छड़ी बोली तीनों में ही किया जाना वाली कविता समान प्रवृत्तियों में मुक्त रही। रीति कालीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों का भी समावेश इस युग की हिन्दी कविता में मिलता है। जो कविगण रीति काल के विरुद्ध एक प्रकार की प्रतिक्रिया की भावना रखते थे उन्होंने अवश्य नवीन चेतना के निरूपक विषयों को ही स्वीकारा। राष्ट्रीयता की भावना के जाग्रत होने के साथ साहित्यिक विषयवस्तु का भी विस्तार हुआ। दीक्षानिरीत विदेशी दासता से मुक्ति पाने के लिए जन स्तर पर आन्दोलन आयोजित हुए। समाज में इसके फलस्वरूप सवधनीय परिवर्तन उद्दिष्ट हुए। विदेशी सभ्यता संस्कृति की साहित्यिक प्रभाव के फलस्वरूप ये परिवर्तन स्पष्टतर रूप में सामने आये। राष्ट्रीय एकता की भावना के प्रसार के लिए ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्वामी रामकृष्ण परमहंस स्वामी विवेकानन्द जस मनीषियों ने धार्मिक पुनरुत्थान पर बल दिया। सन् १८८५ में श्री ह्यूम के प्रयत्न से बम्बई में इन्डियन नेशनल काँग्रेस की नींव पड़ी। इस समस्या ने दश के राजनीतिक जागरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। बालगंगाधर तिलक ज्ञाना राजपत

राय, विपिनचंद्र पाल अरविंद घोष दादाभाई नौरोजी सर फीरोज शाह महता गोपाल कृष्ण गोखल मदनमोहन मानवीय सुभाषचंद्र दास महात्मा गांधी आदि नेताओं ने राजनीति के क्षेत्र में दश का नेतृत्व किया। इन प्रकार से चतुस्रुषी जागृति ने साहित्य के क्षेत्र को भी प्रभावित किया। खड़ी बोली का जन भाषा बनाने के लिए भी अनेक आंदोलन हुए। स्वामी दयानंद सरस्वती ने सत्यान प्रकाश का हिंदी में अनुवाद किया। सन १८८४ में प्रयोग में हिंदी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा की स्थापना हुई। इसके पूर्व जनीय में बाबू तोतागम भाषा सर्वद्विनी सभा की स्थापना कर चुके थे। सन् १८८३ में बाबू श्यामसुंदर दास १० रामनारायण मिश्र तथा ठाकुर शिवकुमार सिंह द्वारा काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। पंडित गौरीदत्त जैसे भाषा प्रचारका ने नागरी प्रचार के लिए अपना सबस्व दान कर दिया। सन १८८८ में महा राज प्रतापनारायण सिंह राजा रामप्रसाद सिंह राजा बनवत सिंह डा० सुंदर लाल तथा पंडित मदनमोहन मानवीय एक शिक्षणमंडल लेकर लाला महाश्व संमिलन। पत्र सन १८०० से कचहरियो में नागरी प्रवेश की घोषणा हुई। राजनीतिक धार्मिक, साहित्यिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में इस प्रकार के नवजागरण के युग में भारतेन्दु युगीन कविता की जो प्रवृत्तियाँ विकसित हुई उनका सक्षिप्त परिचया में विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र—

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म सन १८५० में तथा मृत्यु सन १८२५ में हुई। भारतेंदु ने हिन्दी गद्य के साथ ही कविता के क्षेत्र में भी अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देने में विभिन्न कृतियों की रचना की। उन्होंने रीति युगीन परम्परा का अनुगमन करते हुए ब्रजभाषा में भी काव्य रचना की तथा इसका साथ ही खन्गी बाली में काव्य लिखकर उसकी परम्परा का भी प्रवर्तन किया। अपने पूर्ववर्ती भक्त तथा शृंगारिक कविता से प्रभाव ग्रहण करके उन्होंने विविध विषयक काव्य रचना की। समकालीन परिस्थितियों और उनके भावनाओं का चित्रण भी उनकी अनेक रचनाओं में मिलता है। भारतेंदु की काव्य-कृतियों में भक्ति सबस्व कार्तिक स्नान वनाय महात्म्य दबी छन्दमाला प्रवाधिनी स्वरूप चित्तन श्री पंचमी प्रातःस्मरण मंगलपाठ तमस नीता दान नीता, राता छन्दमाला शानाय स्तुति अपवगदाष्टक अपवग पंचक प्रातःस्मरण स्तौत्र वणव सबस्व वनभाष मरस्व तनीय सबस्व भक्ति मूत्र वज्रयोनी प्रम मानिका प्रम सरावर प्रमानु वपण प्रम माधुरी प्रम तरंग प्रम प्रलाप हीनी मंग मुकुट वपा विनाय विनय प्रम पचागा फूला का गुच्छा प्रम फनवारी कृष्ण चरित्र जन कुतूहल उत्तराह नवनमाल गीत गाविणान सतसई शृंगार स्वगवाही श्री बनवत वणन जतलापिका श्री राजकुमार तुस्वागत पत्र मुमनाञ्जलि श्रीमान प्रिय बाप वत्स के पीड़ित हौन पर कविता मुह दियावनी, श्री राजकुमार शुभागमन वणन

भारत भिखा, मातापा । मनामुत समाप्त भाग सीरत विजय र गी,
 विजयिनी विजय पाताया या जय गी आशय मगीत रिपाण न बम त्हासी
 प्राठ समीरत एतुरग तथा मूत प्रया प्राति त नाम विजय रूप म उ न मनीष दे ।
 भारत तु क विविध विषयत काभ्य न विविध उ इतरण गी प्रभुता विषय न रद् दे

पटा गुलाब पूत वसन धिता
 वाई मुख ब न परत हित्त ।

गावत प्रभानी बाव म न म न डान
 बहू बहू जय शिख पा जय बाव ।
 उडन वपोत बहू वाग बर रार
 बहू चहू निरयन कीती जी गर ।

बाव तम चार बहू उता बरि माथ
 अल्ता अकबर बर मुल्ला साय साथ ।
 बुझी सातटन तिण धरि र्ह माथ
 पहरू नटकि र्ह लम्बो तिण हाथ ।

स्वान सोय जहां तहा छिपि र्ह चोर
 गऊ पास बछन अहीर दत छोर ।
 दही पन पून तिण ऊन बोन बाव
 आवत प्रामीन जन चन टान टोल ।

बाज यग्र योग धाए क धन हिताय
 बस बटि चस्त बन पगडा हिताय ।
 अरुन किरन छाई दिमा भई तान
 घाट नीर चमकन लाग तीन वान ।

— —
 आज उठि भोर वषभानु की नन्दिनी
 पून के महन त निबसि ठाडी भई ।
 खसित गुन सीस त नसित कुसुमावली
 मधुप की मडनी मत्त रस हू गई ।

बछक जरसात सरसात सकचात अति
 फून की नास चहु जोर मोदित छई ।
 दास हरिश्च द्र छबि देखि गिरिधर तान
 पीत पन नकुट मुधि भूनि आनदमई ।

— —
 आजु तन आनद सरिता वाली ।
 निरखत मुख मीतम प्यार को प्रीति तरगिनि बाडी ।

लोक बंद दोड़ कून तरावर गिरे न रहै सम्हारे ।
 हाव भाव क भरे सरावर बहै हाइ क पारे ।
 बुध दवानल परम विरह क प्रम परव भा भारी ।
 मीन बान क जा प्रमीजन जल लहि भए मुघारी ।

सोई पिया अरसाय क सज प सा छवि ताल विचारत ही रहै ।
 पोछि रूमालन सौं प्रम सीकर भौरन का निरुवारत ही रहै ।
 त्या छवि देखिब कीं मुख तें अनेके हरिचन्द जू टारत ही रहै ।
 द्रक घरी लो जके से खरे वपमानु कुमारि निहारत ही रहै ।

पठ फारसी बडूत विधि तोहू भये खराव ।
 पानी खटिया तर रही पूत भरे बकि आब ।

नारि पुत्र नहि समयही बछु इन भापन माहि ।
 तासौं इन भाखान सो कामचलत कछ नाहि ।

रल चलत कहि भाति सौं, कल है नाको नाव ।
 तोप चलावत किमि सब जारि सकत जो गाव ।

जगमोहन सिंह—

ठाकुर जगमोहन सिंह का जन्म सन १८५७ म तथा मृत्यु सन १८६८ म हुई थी ।
 इनकी शिक्षा-दीक्षा काशी म हुई थी । गद्य पद्य दादा ही विद्याआ क धर्म म इहान
 अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है । इनकी काव्य रचनाआ क तीन सग्रह
 प्रेम सपत्ति तता, श्यामा सता तथा श्यामा सराजिनी शीपक से उपलब्ध तात हैं ।
 इनकी अन्य काव्य रचनाएँ दाहावनी प्रेम रत्नाकर प्रमिताक्षर दीपिका श्रुतु
 सहार प्रमह्वारा कुमारमभव पवनदूत चित्रकट वणन कपात विरहाष्टक
 मधून तथा सजाष्टक आदि हैं जो विविध विषयक हैं । इन क काव्य का एक उदा
 हरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

यह भाग की मरी सजा गति री अति रावति प्यासी रहै जयिया ।
 इनका न मित्नी मुपन मुग्र हाय, ए पात की चात्रकी सा दुयिया ।
 सगती नहि बर इह जगत उचन जगमोहन की सयिया ।
 मुघ राम रच्यो न इह कबहू समुसावत बाऊ नहा सयिया ।

प्रतापनारायण मिश्र—

प्रतापनारायण मिश्र का जन्म सन १८८६ म तथा मृत्यु सन् १८८५ म हुई थी ।
 इहाने गद्य तथा पद्य दाना ही धारा म अपनी रत्नात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है ।

इनकी काव्य कृतिषा में प्रेमपुण्यावली का जो गहरा अंग अर्थात् माकानिज काव्य
उप्योग्य शब्दात् रसागत । प्रेमपुण्यावली नाम मानस विनायक प्रथा
समूह तथा रमयात् नाम जाति का नाम विशेष काव्य कृति विधा विशेष काव्य है।
इहान विविध विषयकाव्य की रचना की है। इनका काव्य का एक उदाहरण यहाँ
प्रस्तुत किया जा रहा है

मुग्धां गण ताडपूर की माता ताव त अनो मुग्धार ।
जग ह्य महाभागव करिब का दूगरी बत्ता का जोहार ।
मर्त्यां पुरुषात्तम कहिए रात्रा राम धरम अवतार ।
जिज्जा नाम अत मनई त निगरे पाव हाय अर टार ।
उनर भवा बार त-टमन जानें चार बत्ता का बात ।
रावत छाडि गए सीता का बत्ता मां भूति जाम का नात ।
छीना छाडा त- त नामा व यह सब धरना का परभाय ।
ताताचम्मा बानपूर की है यह अताजुग त- ताव ।

राधाचरण गोस्वामी—

भारत-दुःखी कविषा में राधाचरण गोरामा का नाम भी उल्लिखित किया
जा सकता है। उनका जन्म २५ फरवरी सन १८५८ को तथा मृत्यु सन १८२५ में हुई
थी। साहित्यिक भाषा में विषय में यह ब्रजभाषा में कट्टर समर्थक तथा छडी वाली का
विराधी थे। इन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय विभिन्न साहित्यिक माध्यमों
के द्वारा मिला है। इनकी काव्य रचनाओं में नवभक्तमान दासिनी दूतिका निशिर
मुपमा इशक चयन भ्रमरगीत निमूक नागान वारहमाती प्रेम बगीची भारत
सगीत त्रिववा विनायक भू भार हरणाथ प्रायना गापिका गीत नापिन स्नात्र
रत्न स्तोत्र तथा यमनाक यात्रा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके
काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

म हाय हाय ते धाय पुनारा काई ।
भारत की दूबी नाव उबारो काई ।
उड गए बंद का बादवान जति भारे ।
श्रुतिजन रसता नहि रहे छचने हारे ।
याम चि तामणि सत्त रत्न की डरी ।
याम अमत सम जीपधीन की फरी ।
बन चनी सकत यूरोप हाय मति साई ।
भारत की दूबी नाव उबारो काई ।

रामकृष्ण वर्मा—

रामकृष्ण वर्मा का जन्म सन १८५६ में तथा मृत्यु सन १९६६ में हुई थी। इन्होंने
गद्य तथा पद्य के क्षेत्र में मौलिक तथा अनूदिन रचनाएँ प्रस्तुत कीं। ब्रजभाषा में यह

बनवार' अथवा 'बीर कवि' उपनामा से काव्य रचना करते थे। समस्यापूर्ति प्रकृतियों में इनकी स्फुट रचनाएँ मशहूर हैं। इनकी एक काव्य कृति बनबीर पचासा गाथाएँ से भी उल्लिखित की जाती है। नाक तत्व का समावेश इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। यहाँ पर इनके काव्य का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है

रूपवाक भरवा त गारी से परखार ।

सोववा धरन न जाय ।

नबि लवि जाना दया गौरी की कमरिया

जावनवा क जानवा तवाय ।

राधाकृष्ण दास—

भारत दु युगीन कवियों में राधाकृष्ण दास का नाम भी उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन १८६५ में तथा मृत्यु सन १८०७ में हुई थी। इनकी काव्य रचनाएँ 'राधाकृष्ण प्रथावता' के प्रथम भाग में संग्रहीत हैं। काव्य के क्षेत्र में इनका नाम प्रथम प्रथम का ही प्रयोग किया है। मकानन पुष्पाञ्जलि विजयिनी पृथ्वीराज प्रयाण भारत बारहमासा जुवनी तन्ना, छपन न विनाइ रामजानकी प्रनाप विमुजन रहमन बिनास जाति इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। इनका नाम विविध विषयों का है। यहाँ पर इनके काव्य का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है

हो बनि जाउ मानिना छवि पर ।

यठी नौह चढ़ाय रिस भरी गान कपाननि कर घर ।

नन बान अलकावलि छूना जवन पत यतनवा सर ।

लान मनावति मानहि रहि गए धरि क प्यारी कपानकर ।

बदोनेनारायण चौधरी प्रमथन —

भारत दु युगीन साहित्य के विकास में योगदान करने वाले साहित्यकारों में बदोनेनारायण चौधरी प्रमथन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका जन्म सन १८२५ में तथा मृत्यु सन १८८२ में हुई थी। साहित्य रचना के क्षेत्र में इनका सबसे प्रथम अपना काव्य प्रतिभा का परिचय दिया था। इन्होंने मुद्रा प्रथम भाग में शृंगारपरक काव्य ही लिखा है। इनकी नाक काव्यात्मक रचनाएँ कृष्णी काव्यिनी में संग्रहीत हैं। आज जनपद इनका एक प्रबन्ध रचना है। यन्त्री बानी में लिखित काव्य रचनाओं में इनके अक्षरालाप तथा मयन महिना जाति हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

यनन में जवन भरया तम्य उठि ऊपर नहरत ।

चान्दु आरन हरियारा हा का छवि छहरत ।

भारी भारा तम बधू दक तग मिति गावन ।

दक तुम मरन भरा गाठ यनकार मचारति ।

कह नागरी नवना ए ताउ मुर पाव ।

रगभूमि का तारम मा रस सब बरगार ।
 कितो युवति तिम अति रूप सनात पाए ।
 तिम बज्रवत अन सीम मि दूर मुहाए ।
 धान धत म बटी तपत पयति गयावति ।
 वन म भटरी तिमि मृगी गी छवि तरगावति ।

बाबा मुमेर सिंह—

भारत दु युगीन काव्य क जतगत बाबा मुमरागढ़ क कृतितर का भी उत्तम
 किया जा सकता है। यह निजामाबाद क निवासी थ। यहा पर यह सिध सम्प्रदाय क
 महत थ। गद्य साहित्य म तपन क भाव ही क हान पद्य म भी कुछ रचिता की रचना
 की थी। य कवित्त मु री निरर म मगहोत है। क हान जनक गाण्डिया का आयो
 जन करर अपने समराचीन रचिया ता काव्य रचना भी प्ररणा ओर प्ररमाहून त थ।
 इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

गुरु त्राग करग चवाय धनी तिनकी मुनिर नहि माण्डिहो म ।
 करिहै जुय तट प्रचड तु प मुमरम हरी नहि भाण्डिहो मैं ।
 बन्नाम जा ताब कर सिगरी तऊ रूप गुधा रस चाण्डिहो मैं ।
 ब्रजराज जो आज मित सजनी इहि त्राज सी काज न राण्डिहो मैं ।

राव कृष्णादेव शरणासिंह गोप—

भारत दु हरिश्चन्द्र क साहित्यिक यकित्य म प्ररणा तकर काव्य रचना करन
 वान आनीय युगीन कविया म राव कृष्णादेव शरणासिंह गोप का नाम भी उल्लिखित
 किया जा सकता है। उनके काव्य का मुख्य विषय कृष्णारिक्ता ही है। इनकी कृतिया
 म प्रम सदसा मान चरित्र तथा दाहावनी आदि है। उनके काव्य का एक उदाहरण
 नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

मोहन क्या जनीति मन भाइ ।
 सवसा तारि नह चरनन म जोरि यहै मनि आई ।
 ताहू प परतीति न मानी जग उपहास कराई ।
 यद्यपि हती अधम अति निदित अति प निज आर लगाई ।

महेश नारायण—

भारत दु युगीन कविया म महेश नारायण का नाम भी उल्लिखित किया जा
 सकता है। छंद याजना की दृष्टि स उनकी कुछ रचनाए महत्व की है। इ हाने उद्ग
 टि की काव्य रचिया का मिताकर एक नवीन रूप दिया था। प्रकृति चित्रण सम्बधी
 कुछ रचनाए इनकी इस दृष्टि म विशेष रूप सदृश थ है। उनके काव्य का एक उदाहरण
 यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

सजी का बना था शामियाना ।
 और सज ही मध्यमनी बिछोना ।

फूलों से बना हुआ था वह वज्र ।
था प्रीत मितन क योग्य वह कज ।

एक वज्र

बटुन गुज

पडा स धिरा था

सरनों क बगल म

बिजनी की चमक भी न पत्र चती थी जहा तक

एमा वह धिरा था

जस दीप हा जल म

पानी की टपक राह भवा पाव कहा तर ।

मन्नालाल द्विज—

भारत-दु युगीन कविया म मन्नालाल द्विज का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। इन्होंने मुख्यतः व्रज भाषा म ही स्तुत काव्य रचना की थी। इनके काव्य व्यक्तित्व पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का पर्याप्त प्रभाव है। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है

मन्नालाली रसाल की डारन प चनी आनल सौं य विगजती ह ।

कुल आनि की वान कर न कछू मन हाय पगपहि पारली ह ।

बाई कसी करे द्विज तू हा कहे नहि नकों न्या उर धारती हैं ।

अरी कवलिया कूकि करेजिन की किरव किरचें किए चारती हैं ।

सधमी प्रसाद—

आचार्य युगान हिन्दी कविता क विकास म सागहन वान कविया म सधमी प्रसाद का नाम भी उल्लिखनीय है। इन्होंने भी अनेक समझान कविया का भाति शृंगारिक विषया पर काव्य रचना क साथ समसामयिक परिस्थितिया का चित्रण करने वाली कविताएँ लिखी हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

दुःशा तरी है जब ध्यान म आसी नक बार ।

आँसू आत्रा म उमड आता है बध जाना है नार ।

साच या व्यग्र है करता कि न रहता है विचार ।

सबसा जी म बिसर जाता है जा का व्यवहार ।

सना स्वप्न होता है जटा नही अन जाता है ।

मोक की आग म भग्म हान बनन जगता है ।

अन्य कवि—

भारत-दु युगान काव्य क विकास म ऊपर उल्लिखित किय गये नामा क अलावा अन्य भी अनेक साहित्यकारों का योगदान है। अरण चित्रण क उग्रक हाथरसी चिरन्तान तथा नयासम मयोन मन मैया क उग्रक ताता गाबिण राम समात पूतमन तथा

गात्रिप्रज्ञान विधिवान्तर तस्य ।
 हा हत ' दुग्धमय जीवत या विद्वा ।
 ऋड ' तुही अबमि मत्सुत गीत गाई ।
 त्वमातु नात ' जब तजिह या लिंगाई ।

हात बनिअई आई हमर का अब तुमग पूर रााय ।
 हम हू पिउ बरमन याता है छापी बशी रजारा जाय ।
 हिया की बात हिय रहि ग' अब जाग रा मुनी तरान ।
 गाउ छाडि हम सहर तिधापत नागत तिय 'र'कुता म्वात ।

यह जा भारत भूमि हमारी ।
 ज म भूमि हम सबकी प्यारी ।
 एक गह सम विस्तृत सारी ।
 प्रजा कुटुम्ब तु य है सारी ।
 जमभूमि की बनिहारी है ।
 यह मुरपुर स भी यारी है ।

श्रीधर पाठक—

श्रीधर पाठक का ज म सन १८५८ म तथा मृ यु मन १८२८ म ऋई वी । इ हाने मौलिक तथा अनूत्तित का य रचनाएँ प्रस्तुत की है । मौलिक कृतिया म जगत सच्चाई सार कश्मीर मुपमा भारत गीत मनोविनोद (तीन भाग) धन विजय गुनवत्त हेम त बनाष्टक दहरादून गायन गुणाष्टक गोखन प्रशस्ति गापिकागीत स्वर्गीय वीणा तथा तिरस्कारी मुर्तरी क नाम विशेष रूप स उल्लेखनीय हैं । अनू दित कृतिया म गो-डस्मिन् के हरमिन् द्रवन्तर तथा त्रिजटन् विनज के अनुबात् ब्रमश एकातवासी योगी ज्ञान पत्रिक तथा ऊजड ग्राम शोपका स है । पाठक जी क काय के मुख्य विषय प्रकृति मुपमा राष्ट्र प्रेम तथा समाज सुधार आत्ति है । ब्रज भाषा ओर खडी बोनी दोनो ही भाषाआ म इ हाने काय रचना की है । पाठक जी क काय क कुछ उदाहरण इस प्रकार है

दो घण तक मुय नित्य वह रम स आप पढाता था ।
 बिद्या विषयक विविध चातुरी नित्य नई सिखलाना था ।
 मैं ही एक बानिका उसर सत्सुन म जीवित थी शप ।
 इसम स्वत्व बाप क धन का प्राप्य मुनी का था निशप ।
 साधारण अति रहन सहन मृदु बोन हृदय हरने वाला ।
 मधुर मधुर मु ग्यान मशोहर मनुजवश का उजियाता ।

तम्य मुजन सत्कम परावण नोम्य मुशील मुत्रान ।
मुद्र चरित्र उदार प्रवृत्ति मुम विशा बुद्धि निगान ।

प्रवृत्ति यहाँ एकांत गति निज रूप मवारति ।
पत्र पल पत्रटति भय छिनिक छबि छिन छिन धारति ।
विमल अम्बु मर मुकु रन मह मुग्ध विम्ब निहारति ।
अपनी छवि प माहि जाप ही तन मन वारति ।

मुरपुर अरु कश्मीर राज्य म का है मुरुर ?
का सामा की मौन रूप की कीन ममुन्दर ?
काकों उपमा उचित न दाउन में काकी ?
काकों मुरपुर की जयवा नुरपुर का याकी ?
याकों उपमा याहा की माहि न मुहाव ।
या सम दूजा ठौर गष्टि म गष्टि न जात्र ।
यही स्वय मुरताक यही मुरवानन मुन्दर ।
यहि अमरन की आक यहि कहू बसत पुरदर ।
ताहि रसिक वर मुजन जबसि जवतावन काज ।
मम समान मन मुग्ध तन्कि तावन पत्र तात्र ।

नाथूराम शर्मा शर्कर —

नाथूराम शर्मा शर्कर का जन्म सन १८५८ म तथा मृत्यु सन १८३५ म हुई ।
इसके प्रमुख काव्य-ग्रन्थों म अनुराग रत्न शर्कर सराज गमरग रहस्य गीता
बली कविता कुञ्ज शर्कर सबस्व कविन कतवर' तथा शर्कर सतसई आदि
हैं । इनके काव्य म भारत-दु युग तथा द्विपदी युग का प्रवर्तिया समान रूप स मिलती
है । काव्य की भाषा विषयवस्तु तथा छन्द विधान की दृष्टि न इनके काव्य म
पर्याप्त नवीनता मिलता है । इनके काव्य म ती ग उग्रा मन्त्रा का भी समावेश है ।
उपदेशात्मकता तथा समाज सुधार की भावना भी इनकी कविता म उपन ध हाती है ।
कहान्कहा प्रवृत्ति चित्रण व प्रभावशाली रूप मिलन ह । काव्य की जात्रमयी भाषा
द्वारा भी उसमें प्रवाहित ह है । इनके काव्य क कुछ उदाहरण दन प्रकार हैं

उन्नत उरात्र यदि युगन उमग है ता
काम न भी गया न कामने ताक ताना ह ।
शरर की भारता क भावन भवन पर
माह महाराज की पठावा फहराता है ।
द्विषा सट नागिनी की सावना सपतिना न
आग्र विषु विम्ब वै द्विसास विधि टानी है ।

काटती है कामिया का काटती रगता गा,
भक्तुगी का रिया का नगा रडा गा। दे।

फन अम्बर का रगता का बगार रप रहा।
रूप गागर का गजीन तीव है या भी रहा।
गान गुहार रगता तो कड़ी उपमा का दी।
पुष्प पाटन से समत मो रूप गुपमा तूम ला।

अब गिताया दय गोध रगता बड़ी है।
पकड एव का एर बना बाहर बढ़ती है।
आराट्टन इस भाति क रगता जब गीया।
तब तो चढ़ना अश्व जाति पर हुमा गीया।

बातमुकुट गुप्त—

बातमुकुट गुप्त का जन्म सन १८२५ म तथा मृत्यु सन १८७७ म हुई थी।
इन्हीं मुख्य सन गय ना हन रगता म है। इन्हीं रविनाभा का एक सग्रह सन्
१८७५ म स्पष्ट कविता शापक म प्रकाशित हुआ था। इन्हीं काय का प्रमुख गुण
उसम समाधि का मारिक्ता है। बातमुकुट का वाचना म इन्हीं काव्य का एक उदा
हरण प्रस्तुत किया जा रहा है

अपन बन हूँ नाय की राग सान न राय।
नाम बरि कस भर भिख्या बन करि साय।
बहा राज रह पाए प्रभ कला मान सम्मान।
पट हन पायन भरत हारे तुम्हरी सत्तान।
जिनन कर सी मरन तो घटया न कठिन कृपान।
तिनक मुन प्रभ पण हिन, भय दास दरवान।

अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध—

अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध द्विवेदी युग के महत्वपूर्ण कवियाम है। खड़ी
बोली का काय की नापा क रूप म स्थान जिनान वाता म इनका नाम सर्वाधिक
महत्वपूर्ण है। इन्हीं जन्म सन १८६५ म तथा मृत्यु सन १८९९ म हुई थी। गद्य
तथा पद्य दोनों ही का शक्ति म देने अपनी रखात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है।
उनका प्रमुख काय का नाम रमिक रम्य प्रमाणुवारिधि प्रम प्रपव प्रमाणु
प्रवण प्रमाणु प्रवाह प्रम पुष्पहार उपाधेन का शापकन प्रियप्रवास
कमबीर श्वेतुमुकुर पद्य प्रमून पद्य प्रमा, चाव चौपटे बरही बनवास
चभत चौपटे तथा रसजनन जादि है। प्रियप्रवास इन्हीं का सबसे प्रमुख प्रव काव्य
है जो ठगार तथा प्रमपरक रचना है। इस खड़ी बोली का सबसे प्रथम महाकाय माना

जाता है। वदेही बनवास भी प्रवृत्तात्मक काटि की रचना है। चौथे चौपदे तथा 'चुभते चौपदे मा'हरिजोध जी ने 'नोक भाषा का प्रयोग किया है। रस कलश म इहाने ब्रज भाषा का भी प्रयोग किया था। छन्द विधान के क्षत्रम भी इहान अपनी काय शक्ति की मौलिकता का परिचय दिया है। छन्द की योजना के प्रति सजग रहने के कारण भाषा म भी वक्षिष्टय जा गया है। इनके विविध विषयक काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं

राधा जाती प्रति दिवस धी पास न'दागना क ।
 नाना बालें बचन करके धी उह माध देती ।
 जो वे होती परम यवित्ता मूर्छिता या विप'ना ।
 तो वे आठा पहर उनकी सेवना म बिताती ।
 घटा लक हरि जननि की गान म बठती धी ।
 व धी नाना जतन बरती पा उह शाक मग्ना ।
 धीरे धीरे चरण सहता और मिटा चित्त पीडा ।
 हाथा स था युगन गग क वारि का पाछ दती ।

— — —
 जय-जय जयति लाल ललाम ।

नवन नीरद श्याम ।

राशि म शिरमणि मुकुट क शुक्ति सम नप नीति ।
 मृजन करती है मनारम पाय मुक्ता दाम ।
 दमक कर अति दिव्य वृत्ति म दिवस नाय समान ।
 है भुवन तम कार उन्नत भाल अनि अभिराम ।

— — —
 बस सुरसरि मुर करति अमुर हू का
 बासी क्या बनति मुक्ति मा'नी मनाहरा ।
 अशचिर दाह चारु चन्दन बनत बस,
 काच महि बस हाति कचन बलबरा ।
 हरिजोध बस मन पहत सती सी मुना
 सिया क्या मुग्नी हू सुधार सहारा ।
 बस बमुधा का बमुधापन बित्त हात
 जान हाति सिद्ध भूमि भारत बसधरा ।

राम देवीप्रसाद पून'—

राम देवीप्रसाद पून का जन्म सन १८६८ म तथा मृत्यु सन् १८१५ म हुई थी। इहान मौनिक तथा अनुदित साहित्य क क्षत्र म अनक कृतिमा प्रस्तुत की थी। इनकी प्रमुख अनन्तित रचनाआ म मधुसूत का अनुवा' धाराधर घावन' रमा मुक

तथा तत्त्व तरंगिणी तथा मोहित रथाभा म मूर्खत्रय प्रदर्शनी स्वागत
रामरावण विरोध स्वदली पडत तथा वग । त्रिभाग आदि है । इनका अतिरिक्त
इहान चन्द्रना भानुदुमार ताडन शीघ्र एक ताडन वृत्ति भी प्रस्तुत की थी ।
इनकी काव्य भाषा मुख्यत ब्रज है यद्यपि यही बाला का प्रयोग भा इहान अपनी
कुछ रचनाओं में किया है । धार्मिक सामाजिक राष्ट्रीय तथा प्रकृति सम्बन्धी विषया
पर इहान काव्य रचना की है । उनकी कविता का एक उदाहरण इस प्रकार है

मारा है दारिद्र्य का भारत पड अधीत ।
कारीगर बिन जीवित है दुषित अति दान ।
है दुषित अति दीन परत व बुना वान ।
धीरधीर अनर समय न टूभा ह्वान ।
मरा दन म हाय निरम्मा पण्डा मारा ।
तुमन ही कारिया जसाहा का वस मारा ।

रामचरित उपाध्याय—

रामचरित उपाध्याय का जन्म सन १८७२ में तथा मृत्यु सन् १८३८ में हुई थी ।
यह गाजीपुर में निवासी थे । इहान गस्टून की शिक्षा प्राप्त की थी । इनका काव्य
मुख्यत यही बाला में लिखा गया है यद्यपि ब्रज भाषा पर भी उनकी अति अधिकार
था । महावीर प्रमाण द्विवली के गणन में जो पर एक पचास प्ररणा जोर प्रोत्साहन
मिला । जनक स्फुट रचनाओं का साथ इहान रामचरित चिन्तामणि शीघ्र एक
प्रबोध-काव्य की भी रचना की थी । इनका नीति परक काव्य रचनाएँ मूर्च्छित भुवनावली
में संगृहीत है । देवी शायरी शीघ्र एक उपमास का रचना भी इहान की थी ।
उनकी न्यायिता का मुख्य आधार उनकी रामचरित चिन्तामणि शीघ्र वृत्ति ही है । यह
ग्रन्थ पच्चीस सर्गों में लिखा गया है । इसमें मूलत वात्मीय तथा तुलसी की प्ररणा
और प्रभाव है । राम जन्म तक तक प्रसंग तक की घटनाएँ इसमें वर्णित है ।
इसमें कुछ काव्यांश यहाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत है

उठ नहीं राम कभी प्रभात में
उठ रहे बधु सभी प्रभात में ।
स्वयं जगान जननी उह गया
घिनी मना चम्पक की कनी लयी ।

हसकर कहा मुनिनाथ ने रघनाथ मत धवडाइए
मरे वह समाग पर निशक चरत जाइए ।
बलिण चल शाभा लख राजा जनकपुर की जमी
है असुर जगणित शम फिर मारना उनको कभी ।

फिर नास्त्र रीति से जानकी रचनाय से व्याही गया।
मुर राजपुरी सी हो गयी जनकपुरा मगनमया।

गिरिधर शर्मा नवरत्न —

गिरिधर शर्मा नवरत्न का जन्म सन १८८१ में तथा मृत्यु सन १९६१ में हुई थी। इन्हें महामहाराष्ट्राय की उपाधि प्राप्त की गयी थी। इनकी मौखिक तथा अनूठित कृतियाँ मत्त वत्ता जायशास्त्र व्यापारशास्त्र मुद्रण कठिनाई में विद्याभ्यास आराम्य शिक्षण तथा ज्योतिष राशि का पत्र, सरस्वती का मुक्या सावित्री श्रुति विनायक, गुदायन सिद्धांत रहस्य, चित्रादा भीष्म प्रतिज्ञा कविता कुमुद कल्याण मन्दिर वीर भावना रत्न करण्ड निगापहार आदि हैं। विद्याभास्कर नामक पत्र का सम्पादन भी इन्होंने किया था।

रूपनारायण पाठय—

रूपनारायण पाठय का जन्म सन १८८४ में तथा मृत्यु सन १९५८ में हुई थी। पाठय जी ने निगमागम चंद्रिका नारी प्रचारक मृदु तथा 'माधुरी ज्योति' पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन करने में अतिरिक्त जनक मौखिक तथा जनकित कविता का भी रचना की थी। इनकी कृतियाँ मत्त वत्ता वन वनव वन विज्ञान जायवामन तथा दन्त कुमुद आदि के नाम विगम रूप में उल्लेखनीय हैं। इनका काव्य का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

वन बीच बस व फन व ममत्व में एक वपात-वपाती कहा।
जिन रात में छाड़ता एक का दूसरा एम हिन मिन जाना वही।
बढ़ने तथा नित्य तथा माह नई-नई कामना हानी रही।
रहने का प्रयोजन है इतना उनका मुझ का रही सीमा नहीं।

रामनरेश त्रिपाठी—

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन १८८८ में तथा मृत्यु सन १९६२ में हुई। त्रिपाठी जी जोनपुर के रहने वाले थे। वहाँ पर इनकी शिक्षा भी हुई थी। पूरे छायावाद युग के स्वच्छन्दवादी कविता में इनका नाम विगम रूप में उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय भावना का समावेश भी इनकी काव्य कृतियाँ में मिलता है। इनके प्रमुख काव्य ग्रंथों में सन १९१७ में प्रकाशित मिनन सन १९२० में प्रकाशित पथिक सन १९२३ में प्रकाशित मानसी तथा सन १९२८ में प्रकाशित स्वप्न के नाम उल्लेखित किया जा सकता है। इनमें से प्रथम स्वप्न कविताओं का संग्रह तथा मत्त वत्ता काव्य है। प्रकृति चित्रण तथा प्रेम भावना उनके काव्य में मुख्यतः अभिव्यक्त मिलता है। इनका काव्यतर कृतियाँ मत्त वत्ता बाबाला तथा तद्मा मायक उपाय मुष्मा, ज्योति तथा 'प्रमत्त' गोपक नाटक एवं तुलसीदास और उनकी कविता तथा हिंदा साहिब का अधिस्त इतिहास गोपक भासाचना ग्रंथ आदि हैं। इनके नामक पत्र का सम्पादन

य भी इ हा विमा था । लिपाठीनी व वायव्य । कुछ उ ।हरण यहा प्रग्या विम
 रहे हैं

एक समय स्वाधीन रंग का
 समस्त शाल भय रहित गुराति
 योग स्वयं गुण भाग रू ध
 शाति सहित निविधन जगति ।
 मुधा मधर रसमय वाध्या रा
 पत्र-मुन समस्त और अनुभव तर
 अभिनय कर विना विनिगय पर
 आनदित ध सब नारी तर ।

पारस्परिक सहानुभूतिमय
 सकल मनुज नीहज विहरव ।
 हाट बाट घर घर म प्रतिनि
 करते ध संगीत महात्सव ।
 युवक युवतिया व कनाल स
 गूजा रहता था घर उपवन
 नित्य नवन कामना निरत ध
 विविध विनास युक्त उन्नत मन ।

शक्ति नहीं जो नाथ तुम्हारा मुन भी सरू प्रयाण ।
 रहते प्राण न जाने दूगी मरे जीवन प्राण ।
 मुन प्रणयी के इदु वपन म मदुन कीमुनी हास ।
 विकसित हुआ जकाया उसने शशि का शशि न पास ।

प्रतिक्षण नतन वश बनानर रग विरग निराना ।
 रवि के सम्मुख विरग रही है नभ म वारि माता ।
 नीच नीच समुत् मनोहर ऊर नीच गगन है ।
 घन पर बठ बीच म विचरू यही चाहता मन है ।

दुतारेलाल भागव—

दुतारेलाल भागव का नाम सन १८८५ म हुआ था । आपने माधुरी तथा
 मुधा का संपादन भी किया था । जिसका नाम राय जीवर आलोचनात्मक कृति
 प्रस्तुत करने के साथ आपने दुतारे दोहावनी शीतक काव्य रचना भी प्रस्तुत की है ।
 यह रचना सतमई काव्य परम्परा की एक महत्वपूर्ण कृती के रूप में माय की जाती

है। विषय तथा भाव-साम्य की दृष्टि से यह रचना रातिकानोत कवियों के अपेक्षाकृत अधिक निकट है। इनके काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

कवि कोविद पावन हन ज नरपाल मुजान।

पावन आत्र खुजामनी, मार गनिफा स्वान।

मयिचोशरण गुप्त—

मयिचोशरण गुप्त का जन्म सन १८८८ में हुआ था। आधुनिक कवियों में नाकप्रियता की दृष्टि से इन्हें सर्वप्रमुख रखा जा सकता है। जन्म मुन्शीप उन्नत-कान में इन्होंने अनन्य भौतिक तथा अनूत्तित दृष्टियाँ प्रस्तुत की थी। इनका प्रमुख रचना-काल अत्रि और अर्ध अत्रित अन्त अजन और विमन्त उच्छवास काव्य और कवना किसान स्वप्न वासव त्त रात्रा प्रत्रा योना वत्र सहार वन वभव वत्र महार बीरायना साकत विरहिणः प्रजापाना' ह्वाइयत उमर ख्याम मरनात् वध पनासी का मुद्र विकट मट विश्व वपना विष्णुप्रिया वतानिक शरतना शक्ति सिद्धगात्र मरजा हि, ह्रिडिभ्या रत्नावरी रग म भग मुद्र यगायरा भूमि नाम भात्र भारता 'कुमान गान 'गुरुकुल गुरु तगवहादुर चद्रह'स जयद्रथ-वय जय भारत पकार त्रिजानमा त्रिपरागा द्वापर नट्य पचवरा यत्रायना पथ्या पुन तथा प्रश्रिणा आदि हैं। उपयक्त ग्रन्थों में नाकप्रियता की दृष्टि से विविध आधुनिक युग का सर्वाधिक नाकप्रिय महाकाव्य है। इस रामकवि काव्य परम्परा का एक महत्वपूर्ण कर्मी के रूप में मान्य किया जा सकता है। इसमें लखन ने राम का चरित्र गान किया है। इसमें कवि ने अतीत युगीन भाग्यव्य मन्त्रित न मन्त्रा जोर जाय भी प्रस्तुत किया है। राम कथा से सम्बन्धित जो मुख्य पात्र तथा पात्रिका हैं उनमें से उपरि चरित्रा का अन्त गुप्त जान अपेक्षाकृत विस्तार से किया है। वाचमीकि तथा तुलसीदास से गुप्तजी ने इसकी कथा के मूल ग्रहण किया है। बारह सर्गों में विघटित इस महाकाव्य में कवि ने राम जन्म से लेकर भग्न मिनाप तथा ल मग उमिना मिन्न लक का कथा वर्णित का है। इसकी प्रधान पात्री के रूप में उमिना चित्रित दृष्ट है त्रिजगा मन्त्रा मार महाकाव्य में प्राप्त है। इसमें मुन्तन कवण बार 'दृष्टान' तथा गान रसा का चित्रण हुआ है। गुप्तजी के काव्य के कुछ उदाहरण उनकी विभिन्न कृतियों में यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

स्वग का तुमना उचित हा है यहा

कित मुर सगिना कहाँ उरपू कहा ?

दीपत उतग विचित्र तरग है

कानि मन्त्रारास हात मा है।

गार पर है त्र मन्त्र साहन

भावका के भाव मन का मन्त्र।

साहित्य की अनेक विधाओं में ध्यान में अपना रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है।
आपकी प्रमुख रचनाओं में अलग-अलग मुद्रा प्रमुख नृत्य रथी धारि बारी
नूरजहाँ विद्यमानि अम पान रथिया रथी। प्रमद या तथा आम
क्या आदि है। नूरजहाँ एक अतिशय प्रयत्नवान् है। अम नूरजहाँ की
हासिक तथा वाचनिकता में अमिका एक एक प्रम कथा की मूर्ति की है। यह
साध्य है एक अतिरूप यही प्रस्तुत किया जा रहा है

मनयानि । स एव प्रम का मग उम तह पदुता ।
उम अति कठोर मानस का मग एव कर शिपया दा ।
अगर उस सात पाना का तटपन नहा जगता ।
जाकर पहन टिप उपवन म कथिया का विचरना ।
फिर भवरा का अज कमलमुघ पर गुणगात कराना ।
तितनी एव पया म पयता एव विरण क छाटें ।
पया का समझात रहना हि ताकी मत पीटें ।

हरदयालु सिंह—

हरदयालु सिंह का जन्म सन १८८३ में हुआ था। साहित्य में ध्यान में आपने
अनेक टीका ग्रंथ संपादित एवं आभाषनात्मक कृतियाँ पद्यानुशासन विषय में ग्रंथ ज्ञान
कार ग्रंथ तथा अत्यन्त एव रावण नाटक मद्रास प्रस्तुत किया। ये दोनों महा
काव्य अज भाषा में लिखे गये हैं। इनकी रचना महाकाव्य शास्त्रीय नियमों के
आधार पर ही हुई है। माइकल मधुसूदन दत्त लिखित मधनाम बंध से इनके दोनों
महाकाव्य प्रभावित कह जाते हैं।

वियोगी हरि—

वियोगी हरि का पूरा नाम हरिप्रसाद द्विवेदी है। इनका जन्म सन १८८६ में
हुआ था। आपने विविध विषयों में अनेक कृतियाँ की रचना की है। इनकी लिखी हुई
विभिन्न कृतियों में 'साहित्य विहार छपयोगिनी नाटिका अजमापुरी सार कवि
कीर्तन अतर्नादि भावना प्रायना वीर सतसई विश्व धर्म मंदिर प्रवृत्त
अनुराग वाटिका अम शतक प्रम पथिक प्रमाजति प्रम परिपत्र वीर वाणी
सत वाणी बुद्ध वाणी अडाकण तथा तरगिनी आदि प्रमुख हैं। इनके काव्य
का एक उदाहरण इस प्रकार है

भोय सरिस स्वाधीनता वन वन जांचत साधि ।

अरे ममन की पाठरिन पाठयो वीन पयाधि ।

बनदेव प्रसाद मिश्र 'राजहंस'—

डा० बनदेव प्रसाद मिश्र राजहंस का जन्म सन १८८८ में हुआ था। आप
मध्य प्रदेश के राजाव गाव नामक स्थान के निवासी हैं। आपको तुलसी दत्त 'शीषक
शोध ग्रंथ पर डी लिट की उपाधि प्रदान की गयी थी। आपको प्रमुख कृतियाँ में

'एक निम्बत्रय' जाव विज्ञान' समाजसुखक' कोव न किगोर' जावन संगीत, उमर खयाम का ख्याया साकत सत हृदय-बोध भारतीय संस्कृति', मानस न रामकथा जत स्मृति छतीसगढ परिचय, भारतीय नस्कृति का गाम्वाभावा का मानान मानस मापुध 'यामाउक' रामराज' ध्यग्य विनाद 'टुगार गउक वराय शतक' अखत्य-सक्य' वासुना-वभव' साहिय-नहरी 'गोडा-मार' माक प्पाना' मृगालिना-परिचय, मानस-मनन आदि हैं। साकत सत आधुनिक महा कान्या की परम्परा म एक महत्वपूग उपनत्रि है। इसम महाकवि न भारत का नायक क रूप न चित्रित करत टुए एक महाकाव्य की रचना की है। कया-वन्मु न मौलिकता तथा कान्तात्मक भावाभिन्त्यजना स इस कृति म गरिमा बायी हे। इसके कुछ कान्या न्दाहरण क लिए महीं प्रस्तुत किय जा रह हैं

मरे कारण ही अथ राम न छोडा
मरे कारण तनु बध पिडा न तोडा ।
मरे कारण यह दया तुम्हारी माडा ।
दानव ह दानव, विपुन व्यथा का गडा ।

—
बया बर तथा दान क ठक ।
छना स छिपा कहीं क्या तक ।

गिरिजादत्त गुहल गिरीश —

गिरिजादत्त गुहल गिरीश का जन्म सन १८८८ म हुआ था। बापने अपना रचनात्मक प्रतिभा का परिचय कान्य आताचना एव कया साहित्य के क्षेत्र म दिया था। कान्य-साहित्य क क्षेत्र म जापन स्कू रचनाया क अविरिक्त तारकबध' नामक महाकाव्य भा प्रस्तुत किया। मुमित्रानन्दन पन्थ न इसके प्राक्कथन म लिखा है— तात्कबध का कथानक बचन नाम मात्र का प्राचीन परिचित पौराणिक कथानक है। कवि न उस अपना कल्पना का सजीवन पिनाकर बतमान युग का जावन समस्याया का व्यापक रामच बनान क अनिनाय स उसका आमूल कापाकरण कर दिया है। कया का जाग गीत पत्र नवान प्रागा का सक्तिवाल स्वय पाकर प्रतिमान हाकर जाग उग है। जा-तव म पात्रा क प्राचीन नामा का छोटकर समग्र कया-वन्मु प्रतीकात्मक परिधान धारण कर जस किसी जादू क बन म, मानव सम्पता तथा गन्ती का आधुनिकतम समस्याया का निरूपण कर युग मानव क सम्मुख उनका समाधान प्रस्तुत करन म सक्न हो सका है। यह रचना कुञ्जरसमय स प्रखि और प्रभावित कहा जाओ है।

सोहनलाल महता बिपोगी —

साहनलाल महता बिपोगी का जन्म सन् १८८८ में हुआ था। इनकी प्रमुख कान्य कृतिया म 'जटू' निमान्य एक शाय' धधन चिन' तथा कल्पना आदि

ने भी अक्षय आ आर करने जाता म गुण आता का भाव आया किया। आठ महाकाव्य भी गौराणिक, ऐतिहासिक तथा राजनीतिक महत्त्व के अर्थों में ही तैरि के आधार बनाकर लिखे गए। इन सब प्रयत्नों का परिणाम यह हुआ कि म गुण म प्रज्ञ भाषा को काव्य भाषा के रूप में जीवित ही रही। यही बातों भी एक काव्य भाषा के रूप में गूणत प्रतिष्ठित हो गयी।

आधुनिक युगीन राष्ट्रीय-काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक युग में हिन्दी कायक काल में जो प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही हैं उनमें राष्ट्रीयता की प्रवृत्ति भी एक है। अनेक शताब्दियों तक भारतवर्ष को विभिन्न विदेशी जातियों की पराधीनता स्वीकार करनी पड़ी। इसीलिए समय-समय पर राष्ट्रीयता की भावना देशवासियों में जाग्रत और विकसित होती रही। जब इसका अतिरेक हुआ तब अनेक राष्ट्रीय जातियों का मूलपात हुआ। ये जातियों की ताजिहात्मक रह और कभी इन्होंने हिमात्मक रूप भी धारण कर लिया। राष्ट्रीयता का मूलभूत तत्वों के रूप में भौगोलिक एकता, जातीय एकता, सांस्कृतिक एकता, भाषागत एकता, धर्म धार्मिक एकता तथा राजनतिक एकता आदि को माय किया जाता है। भारतीय सभ्यता आरम्भ से ही राष्ट्रीय चेतना का जागरण का आवाहन करती रही है। सद्गुरुओं में राष्ट्र की जा धारणा हमारे देश में विकसित हुई है उसकी चरम परिणति विश्व एकता अथवा विश्व-वधुत्व की भावना में है जो भारतीय सभ्यता की ही विपत्ति है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम अनुषंग में भारत में हिन्दी साहित्य का तल में नवीन युग का प्रवर्तन हुआ। इस समय तक सन १८५७ का भारतीय स्वतंत्रता का लिए किया गया पहला संग्राम समाप्त हो चुका था और उनका प्रतिद्रव्य और परिणाम सामन आ चुके थे। शताब्दियों से हिन्दू राष्ट्रीय सभ्यता का जा रूप दमिा था वह अब उभर कर सामन आ चुका था। बीर गाथा कात भक्ति गान तथा रोति गान के प्रमुख कवियों का राष्ट्रीय स्वर भारत-दु युगीन कवियों का लिए एक सत्त प्ररणा थी। सन १८५७ की क्रांति के अनक पत जब तक विकसत होकर जनता के सामन आ चुक थे। राष्ट्र प्रेम की भावना से अभिभूत होकर बिन दावासिया न अपना स्वस्व बिन दान कर लिया उनकी गाथा का स्मरण थी। यद्यपि अनक पतानी इतिहास का ना न इस तथ्य की उपभा करन की चप्पा की कि यह एक मतिक विगाह मान था परन्तु दमवासिया न इस एक महान क्रांति का पय माना। इस क्रांतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण तथ्य इस क्रांति के फलस्वरूप स्पष्ट हुआ और वह यह कि जनता का यह आभास हुआ कि पहली बार किसी एक न प से प्ररित होकर सपुन राष्ट्र में एका

समस्या है कि, क्या यह... जहाँ जहाँ...
 किया गया। इस क्रम में...
 दशकमिया की मु...
 पाठ्य...
 रहा था...
 पत्र...
 न...
 महा...
 सिद्ध...
 जातीय...
 देश की...
 नता...
 जाग्रत...
 ही...
 इसकी...
 म भी...
 गतिविधि...
 थी।

भारत दु युग में राष्ट्रीय भावना प्रधान का उदय हुआ।
 नारायण चौधरी प्रमथन राधाकृष्ण गोस्वामी भारत दु हरि...
 बानमुकु...
 न...
 गौरवपूर्ण...
 प्रमुख राष्ट्रीय कवियों का य का एक एक उत्साहपूर्ण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

हमारा उत्तम भारत है ।
 जात तान जात सागर है उत हिमगिरी अतिवप ॥
 श्री गंगा यमुनाहि नदी है विध्यातिर परवश ।
 रवि राकश ॥ (राधाचरण गोस्वामी)

—
 हम कह भोज
 हा वह जोज ।
 —
 समृद्धि वह शोभा ।
 न है सब छाभा ॥ (राधाकृष्ण दास)

इन दुखियान अडियान मह बन आन को राज ॥
 जह मारा का कर नहा अ ज्ञान का लास ॥
 जहा कर मुख सम्पदा बाग्हु मास निवास ॥
 जहा प्रबन को बल नहा अरु निबनन की हाय ॥
 एन बार मो अश पुन जाबिन दहु त्रिवाय ॥ (बालमुकुट गुप्त)

लसन इनकम चाा चन्ना पुलिस अदानत बरसा याम ।
 सबके हाथ असन बसन जीवन मसय मय रहत मुगाम ॥
 जो इनहु ते प्रान बच ता गाली बोलति हाम धन्गाम ।
 मृत्यु देवता नमस्कार तुम सब प्रकार बम तप्यन्नाम ॥ (प्रतापनारायण मिश्र)

चनहु वीर उठि तुरत मय जय ध्वजहि उडाया ।
 नहु म्यान सो खडग याचि रन रग जमाया ॥
 परिकर बसि कति उठा धनुष प घरि सर साधा ।
 केसरिया बाना सत्रि सत्रि रन ककन बाधा ॥
 ओ बारजगन एक हाइ निज रूप सम्हार ।
 तत्रि गह कन्हि अपना कुल मरजाद बिचारै ॥
 तो यह कितन नाच बहा इनका बन भारी ।
 सिंह जग बहु स्वान टहरहि समर मझारी ॥ (भारतकु हरिश्चन्द्र)

हुआ प्रमुद बद्ध भारत निज भारत दशा निगा का ।
 समथ अ त अतिशय प्रमुदित हा तनिव तब उसन ताका ॥
 अरुणाच्य एकता त्रिवाकर प्राची त्रिशा त्रिघाती ।
 दंडा नव उत्साह परक पावन प्रसा पनाता ॥
 दशो वस्तुआ का अनुराग पराग उडाता ।
 पुन जागा मुग घ पनाता मन मधुकर नननाता ॥
 उपनि पव जनि स्वच्छ दूर तव पन्न नगा त्रियाद ।
 यम बन्मानरम मयुर ध्वनि पडन नगा तुगाई ॥ (प्रमथा)

भारत ु पुग व पञ्चान त्रिवा तुा म ना राष्ट्रीय रविता का यह प्रवृत्ति
 विकासगत रणी है । बासबा जनानो व प्रारम्भिक बयो म सार्वनातिक पात्रिया गरा
 किय गय स्वत प्रता प्राप्ति व उर य उ आ गालन और ना अधिक तात्र हा गय ।
 अनक समान-मुधाशक मता तथा मस्या नी उन समान म तूनाधिक जागरण करन
 म सपन हुद । स्वत्या जागानन आदि व पनस्वरूप ना जनता म त्रियागतता
 आयी । बीसबा गनागा व प्रथम चतुगा म प्रथम विश्वयुद्ध व ना मानवशायाी

विचारका का गम्भीर पित्त न मिला बाध्य किया । भारत में इस युद्ध का कोई भी स सम्बन्ध न होते हुए भी राष्ट्रीय भावना में भाग्यवाग्यिया का इस युद्ध में प्राणाहुति देने पड़ी तथा अगम्य रूपका व्यय हुआ । इस विषय आचार्य उपाध्याय का सरकारी दमन चक्र का निवारण बना पडा । महारमा गांधी व अणुबल में प्रथम भारतीय जनता नवीन उत्साह के साथ गणदण्ड दुरी और गांधी जी के अर्थ में भ्रम विद जाने पर आन्दोलन में वेडि हुद । म युग में श्रीधर पाण्डे, तादुराम नरर गोवाचरण मिह मधिलीशरण गुत सत्यनारायण कविरत्न ठाकुर प्रसाद गर्मा रामादन त्रिपाठी गया प्रसाद गुवन सनही महावीर प्रसाद रिया अयाध्या मिह उपाध्याय राम रीप्रसा पूण आदि कविया न राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य की रचना की । इन कविया न र्ग की आर्थिक सामाजिक नास्टृतिक और राजनीतिक दुःसावस्या तथा उमर कारणा की आर सवेत करत हुए राष्ट्रीय अतना व जागरण का आह्वान किया । नीर र्गियी युग के प्रमुख राष्ट्रीय कविया व काव्य के प्रतिनिधि उपाहरण प्रस्तुत रिय जा रह है

जय भव वदित भारत भूतन ।

शिर पर शाभित कनित त्रीट सम विनसित अचन हिमाचन ॥
 कण्ठ गन मुक्ता भाजा द्वव मजुन गुरसरि धारा ।
 हाता है विद्योत पग पावन पूत पयानिधि तारा ॥
 मणि गण मण्डित कान कनवर तरु कामल दन श्यामल ।
 सुधा भरित नाना फन सकुन सफरी वृत्त वसुधा तन ॥ (हरिभीध)

हैं वहाँ प्रसिद्ध रण वीर वरवीर भीष्म
 उर में हमारे अब भी है मान जिनका ।
 भूरा में शिरामणि कटा है धनुषारी पाव
 करत सभी है दिव्य गुण गान जिनका ।
 मुनि देव ! हैं कहा हमारे शिवराज जाज
 हमका सदैव रहता है ध्यान जिनका ।

विष शुभ लोक में प्रताप है प्रतापवान
 हम को सदा है बना अभिमान जिनका ॥ (गोपाल चरण सिंह)

पूवज वीर अस्थिया का है यह अमय गन बना हुआ
 है सबत प्रबन सिहो के उष्ण रक्त से सना हुआ ।
 मुचि सबता रमणीगण ने निज जोहर यही दिखाया था
 निज शरीर भस्मावशेष से पावन इस बनाया था ।
 है दद साहस युक्त वीरगण ! तुम्ह कोटिश बार प्रणाम
 कब फिर भारत में हाग नर तुम से नीनि निपुण गुण धाम ।

हम से कुटिल नीच पुरपा का है घतकाटि बार धिक्कार ।
रक्षा हागी तभी हमारी जब तुम फिर लाग अवतार ॥

(ठाकुर प्रसाद शर्मा)

जा थ प्रणम्य पहल तुम कीर्तिमान
विज्ञान और बल विक्रम क निधान ।

सम्पत्ति, शक्ति निज खाकर आज सारी
हा हा ! हुए तुम वही सहसा मिथारी ॥
दिव्यातिदिव्य तब रत्न, अहो, कहा है ?

शामा समूह पट पुज कहा कहा ह ?
घोया सभी कुछ न हाय तुम्ह दया है ।
ह दस ! शप तुम म रह क्या गया है ? (महावीर प्रसाद द्विवेदी)

सब मिलि पूजिय भारत भाई ।

भुवि विभुस सखीर प्रसूता सरन हृत्प्य मुख्याइ ॥

बयो न जगत अब बार कसरी बठ अस जनसाई ।

एक्य नखनि सा द्राह गयन्दाहि मन विदारि रिसियाइ ॥

प्रिय स्वच्छ यापार अघजल सिचन करहु बनाइ ।

जपहु मुक्ति मन सख्य मत्र व दमानरम मुहाई ॥ (सत्यनारायण कविरत्न)

पानी पीना दस का घाना दानी अन्न ।

निमत्र दगा हधिर स नस-नस हा सम्पन्न ॥

नस-नस हो सम्पन्न तुम्हार उना हधिर स ।

हृदय यदुत सवाग नजा तक नकर गिर स ॥

यदि न दस हित किया कहगे नब अभिमाना ।

मुद्ध नही तब रवन नहीं तुव म कुछ पाना ॥ (रामदेवी प्रसाद पूण)

अम्बिर किया टाप बाना का गाधा टाप बाना न ।

गम्ब्र बिना सप्राम किया है दन माद क नाना न ।

अपन निरबय पर यह तक है मारा पीना बन्द करा

अजब बाकपन शिखाया है इनका साधा चाना न ।

यहां जमाई है अपना जद परिचय क जिन पीजा न ।

असहयोग क पत्र उपचार उनका ऊना डाडा न ।

वया यह बहो गे-

भीमाजय आदि वा बीजा ।।

धिर कुमार भीष्म ही पारा वल्ल ।। री ।

उड़ती है आज भी जहा । वागुमडन म

उ-वन अधीर और फिर वही । ?—

श्रीमुख स दृष्य । गुता या नृ भाग ।

गीता गीत गिहता—

भीम-वाणी जीवन मग्राम री—

साधक सम वय जान हम भक्ति याग वा ? (द्विकर)

हल्की घाटी मना तुम्हारे ।

आगत म भीषण मग्राम

रज म तीन हो गए पत्र म

अगणित राज मुक्त अभिराम ।

यग यग बीत गए तब तुमन

घना था अदभत रण रग

एक बार फिर भरा हमार

हृदय म मा बही उमग । (सोटन लाल डियेवो)

तुझ मित्री हरियात्री डानी

मुझ नसीब कोठरी बानी ।

तरा नभ भर म संचार

मरा दस पट का संहार ।

तेर गीत बहार्हो बाह

रोना भी है मुझ गुनाह ।

दख विषमता तरी मरी

बजा रही तिस पर रणमरी । (माणनलाल चतुर्वेवो)

नर जीवन के स्वाथ सवन

बलि हा तरे चरणा पर मा

मरे धम सचित सब पत्र ।

जीवन क रथ पर चर कर

सदा मत्यु पथ पर बरकर

महाकाल के धरतर शर सह

सकू मुझ तूर कर २२२
जाग मर उर म तगी
भूति अद्भुत घीत विमन
२२ जल से पा बल बनि कर २
जननि जाम प्रम-सचिन फन । (निराला)

सुन-सुन य दीवान किसरु जावाहन का शार चन ।
मचन मचन गनहार पहनकर किस महकन की जार चल ॥
चड टिकटा पर चूम रस्सिया य मनवाल उधर चन ।
जिधर हमार लान नाचिन बिहस बिहस कर बिछर चल ॥
हसत हसत आखिर य भी अपनी आँखें मूद चन ।
मा का घाना भरन का य बन रुधिरा की बूद चल ॥ (नपाली)

हिमाद्रि तुग गृग म
प्रबुद्ध मुद्ध भारती—
स्वय प्रभा समु-बला
स्वतन्त्रता पुकारनी—

अमत्य वीर पुत्र हा दू-प्रतिज्ञ साच ला
प्रान्त पुय पय हे वर चतो बड बला ।
अनक्य कीर्ति रश्मिया
विकाण नि य-गह-सी
सपूत मानभूमि व—
रुयो न गूर-साहसा ।

अराति मय सिधु म मुवाडवाग्नि-स जला
प्रवीर हा जयी बना बड बला बड चतो । (प्रसाद)

युग व चरम म कान मूम
युग युग का विपय जनिन विपा
यजित कर लिया यजन जग का
भर तुमन जात्म निना ।
रा रा यहर क मूना म
नव शीवन बागा सहासा
मानवी कता क मूजपा ।
हर दिना यल छोगन प्रवाद । (मुमिजानदन पत)

उनका बहुत जल्द दफनाया
 नवयुग के जन जाग जाया।
 नवनिर्माण करा तुम जग का
 जीवन का समाज का मन का ॥ (त्रिनाचन)

विश्व में आनन्द बरस
 थी यही श्रुति चाह तरी।

गान दुखिया के हृदय की
 बंदना का धन समझ
 थी गगन में उड़ रही
 बन कर गहन घन जाह तरी
 विश्व में आनन्द बरस
 था यही श्रुति चाह तरी। (हरिकृष्ण प्रभो)

महत्त्व—

इस प्रकार से राष्ट्रीय कविता का प्रवृत्ति आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य के क्षेत्र में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम अनुदान में विकसित होकर बनमान बन तक प्रवाहमान मिनता है। राष्ट्रीयता का भावना मानवीय चेतना का एक अंग है। राष्ट्र के प्रति जनव्या के लिए किसी भी व्यक्ति के हृदय में जागृतता का भावना विद्यमान रहता है। हमारे देश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्पराएँ एक राष्ट्र के भाव से युक्त हैं। समय समय पर इतिहास में एक अवसर आया है जब राष्ट्रीय भावना के एकाङ्कन और समग्र रूप से जागरण का आवश्यकता पड़े है। तब तब हमारे देश पर विपत्तियाँ आती हैं। जागरण के लिए तब तब राष्ट्रीय चेतना का आन्दोलन करिया न किया है। कवन आधुनिक युग में ही नहीं बरन हिन्दी साहित्य के सभी युगों में राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य का रचना कविगण करते रहे हैं। यह एक उत्तमचरीय तथ्य है कि जय प्रवृत्तियाँ के पापक कवियाँ न भी राष्ट्रीय भावना प्रधान काव्य की रचना की है। आधुनिक युग में भारत के समस्तान कवियाँ न सामाजिक राजनीतिक तंत्रों में जागरण के उद्देश्य से राष्ट्रीय काव्य प्रवृत्ति का प्रसार किया। अनेक सामाजिक और राजनीतिक जागृता का आधार पाकर भी यह काव्य धारा विकसित हुई। आधुनिक युग में हिन्दी के प्रचार के माध्यमों से जन समाज में तब सुधार का भावना जाग्रत हुई उससे भी राष्ट्रीय एकता का रच मिला। आधुनिक युग में राष्ट्रीय कविता अनेक धाराय जागृता से समन्वित होकर बनता है। राष्ट्रीय एकता के लिए ही समाज में व्याप्त अनेक कुरातियों के निवारण के लिए भी आजागृत किया गया। भारत के हरिश्चन्द्र के बन्दीनारायण चौधरी प्रमथन राष्ट्रीयता का बालमुकुट युक्त तथा प्रजापनाशयन मित्र जाति काव्य न भारत के युग में राष्ट्र काव्य प्रवृत्ति के

विकास में योग दिया। द्वितीय युग में हम एक ही ओर भी अतिवृत्तिमानता आभासित हुई। महावीर प्रगाथ द्वितीय भैषिरीकरण युग का नाम है, अवाध्यायित् उपध्याय धीधर पाठक ठाकुर गोपाकरण सिंह जादि कविता। यह एक वागदात दिया। यत्मान युग में स्वयं ज्ञान प्राप्ति के लिए किये जाने वाले जातियों में बुद्धि के साथ साथ भी कविता। राष्ट्रीय ज्ञान का आहारा दिया। अथर्वर प्रगाथ बदरीनाथ भट्ट बाबुल्लग जमा। इसी मायानता। दुर्गेशी गुप्त। कुमारी शोभन निराना। दिनकर निवमगन सिंह गुप्त आदि अति कविता। हम काव्य प्रवृत्ति के विकास में योग दिया। साथ में आधुनिक युग के अर्थ एवं स्वभाव को ज्ञानियों में राष्ट्रीय काव्य की यह प्रवृत्ति ही ही गार्ह्यत एक ही में प्रसङ्गीत मितनी है।

आधुनिक युगीन छायावादी काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक हिन्दी साहित्य के अनेक छायावादी काव्य प्रवृत्ति का आरम्भ बीसवा सता के आखिरी भाग में हुआ। जयजी माहित्य का हिन्दी पर अज्ञान विप्लवा के क्षेत्र में आना के माध्यम से प्रभाव पड़ा। छायावाद के अनेक में यही तथ्य है। यह गल्प भी आना से ही आया है यद्यपि उसका प्रभाव आना के माध्यम से जयजी की दल है पर आना का प्रति से भा दस काव्य में यही विप्लव मितना है। कहा जाता है कि छायावाद का जन्म विप्लव युग का पौराणिक सम्बन्ध से प्रभावित निर्मित साहित्य के प्रति विद्रोह जयवा प्रतिक्रिया का भावना के फलस्वरूप हुआ था। कुछ विचारकों ने इस आधुनिक पौराणिक धार्मिक चेतना के विद्रोह चेतना का विद्रोह तथा कुछ ने उस प्रवृत्ति को प्रवृत्ति का विद्रोह भी माना है। अनेक आलोचकों ने छायावाद को रहस्यवादी तथा आत्मनिर्देश भी बताया है। वस्तुतः छायावाद सौन्दर्य और प्रेम का काव्य है। आता कवि स्वाभाविक रूप से आत्मनिर्देश का अर्थवादी मानव वास्तविकता है उसका समावेश भी इस काव्य में है। जीवन के व्यक्तिगत पर इसमें विरहित रूप में चित्रित रूप हैं। विभिन्न विषयों में छायावाद की परिभाषा विविध रूप में की है। १० रामचंद्र गुप्त ने छायावाद का प्रयोग का अर्थ में किया है। एक ता रस्यवादी के सम्बन्ध में कहा उनका सम्बन्ध काव्य की कथावस्तु से होता है और जिसमें कवि उस क्षण और अनेक विषयों का आरम्भ बनाकर जयन चित्तमयी भाषा में प्रेम की अभिव्यक्ति करता है और दूसरे वाक्य में या पद्धति विप्लव के व्यापक अर्थ में। इतिहास गुप्त ने हिन्दी के प्रमुख छायावादी कवियों को काव्यों में विभक्त किया है। पहले में वह महाकाव्य का रचयिता है और दूसरे में पर प्रकाश निराला तथा अनेक कवियों का आ प्रकाश पद्धति का चित्र भाषा में का प्रति से छायावाद कहता है। अनेक आलोचकों ने छायावाद का एक वाक्य कहते हैं भा दूसरे किया है जिसमें १० विनयमाहृत नाम का विचारक है। अनेक अनुमान है कि चूक छायावाद का प्रवृत्ति में विषय प्रकार का दार्शनिकता नहीं है अनेक काव्य की एक

तवीन न ही मात्र ही कहा जा सकता है। सि पाणिनिप्रिय द्वितीय । छायावाद का वाक्य
 तो एक तत्त्वमय और अष्ट अभिव्यक्ति बताया है। आसत । ३३० तार बताया है ।
 छायावाद म भावुका साहित्यता रहस्य दुःखता कामा का पराधी प्रकृति प्रम
 उच्छ्रयता आति तत्वा का समारा बताया है। ३३० तार का विचार है कि छाया
 वा एर विषय प्रकार का भाव प्रकृति है प्रिया का एर प्रकृति एर विषय भावा
 मर दष्टिवाण है। एर प्रकृति अ भागी तथा वापरी है एर एम मुग्धा प्रकृति ए
 प्रतीता एरा अभिव्यक्ति हुई है। ३३० तार का विचार यथा । छायावाद का रहस्यवाद का
 नी पयाय माता है। ३३० तार का छायावाद का गीति वाक्य प्रकृति वाक्य प्रम वाक्य
 तथा रहस्यवादी वाक्य कहा है। एर म स एम धमिस्ता या जस्य टता बाराती
 या गुम्फन की मूक्षमता नरा काल्पितता और एरा एम एर एर म गी मु ए तर
 विद्यमान है। नी विश्वमय मानव ए प्रकृति म एरा ए जराण का छायावाद बताया
 है। उनर विचार स प्रकृति म मानवाय भावा ए जराण हा छायावाद है। उपयक्त
 विज्ञान क अतिरिक्त हिता म एर नी एरा एरा एर ह वि ह्येन छायावाद ए
 विविध पला पर एपन विचार प्रस्तुत विय है। एर अनिरिक्त स्वय छायावाद क
 प्रमुख वविया न भा व्याख्या और विशयण क प्रयत्न विय है। छायावाद क प्रमुख
 स्तम्भ जय एकर प्रसा न बताया है कि जब का य क क्षत्र म वना क जाधार पर
 स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति हान तयो तब हि । म उक्त छायावाद नाम प्रिया गया।
 यह वाक्य परम्परानुवांग रीति वाक्य म भिन्न था। रीति वाक्य म वास्तु वणन की
 प्रधानता था। छायावाद म भिन्न भावा की नवान अभिव्यक्ति है जा भाव जा तरि
 स्पष्ट स पुनक्ति थ। छायावाद की अ यतम ववियित्री रामनी महादयी वमा न एर
 का य प्रवृत्ति का इतिवत्तात्मकता क विरुद्ध मनुष्य की कामन और मूक्षम भावनाओं क
 प्रति विद्राह बताया ह। उनक मन स छायावाद प्रकृति क बीच जीवन का उन्मीत
 है। इसीनिण छायावादी वाक्य की सभा प्रतिनिधि रचनाओं म प्रकृति क मूक्षम सौदय
 म व्यक्त विज्ञा पराक्ष सत्ता का आभास तथा प्रकृति क यत्किमत सौ दय पर चतना का
 जाराण भा रहता है। उनका अनुमान है कि जहा तक छायावाद की प्ररणा का सम्ब ध
 है वह पाश्चात्य साहित्य तथा वगना साहित्य स प्रभावित हान क साथ साथ हिंदी
 रहस्यवादा का य परम्परा स भी प्रभावित है। नी मुमिज्ञान दन पत न छायावाद को
 एर जाधुनिक जादानन बताया। उनका विचार है कि छायावादी सौ दय बाध और
 कल्पना म पाश्चात्य साहित्य का पयाप्त प्रभाव है। इस प्रकार स छायावाद का प्ररणा
 और स्वम्प क विषय म विभिन्न आनाचका और वविया क मन परस्पर भिन्नता रखत
 ह। छायावाद का उपनधिमा क विषय म नी विविध विज्ञाना क विभिन्न मत है।
 इनम यह एवट हाना है कि छायावाद का उदभव "तित्रिया जयवा विद्राह क रूप म
 था। अग्रजा और वगना साहित्य की पूर्ववर्ती और समकालीन प्रवृत्तिया न भी इस
 प्रभावित निया। त्रिबदी युग की राति वाक्य स प्रभावित वविता क प्रति भी इसम

विद्रोह का भावना थी। वस्तुतः प्रथम वि ब मुद्र क प चात जनता की मनाभावनाया म तीव्र गति से परिवर्तन हुआ। सामाजिक चेतना मुत्तावस्था म जाग्रतावस्था का प्राप्त हुई। इसलिये छायावादी क प्रवक्तृता और ममथका न अपने कवि हृदय की अभिव्यजना क लिंग आत्मिक अनुभूति का ही यथाथ जोर महत्वपूर्ण बताया है। जहम भावना व्यक्तियता तथा एकान्तिकता आदि त य इसी कारण म मम ममाविष्ट हुए। प्रकृति म चेतना का जा आरापण छायावादी कविया न किया है वह इसलिए क्योंकि प्रकृति का समग्रता म कवि न एक अनात चेतना म मरत मितत य। वह प्रकृति क इस चेतन रूप म मनुष्य की भांति ही स वनधीलता का आभास पाता था। प्रकृति म मानवीय भावनाया और चेतना का ही आरापण हिंदी काव्य साहित्य में एक नवथा नवीन वस्तु थी। छायावादी कविता इहा नवीनताया और विभषताया क कारण नाकप्रिय य। नीच छायावादी कविता के मुख्य तत्वा तथा प्रतिनिधि कवियों क काव्य क आधार पर सक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

जयशंकर प्रसाद—

छायावादी क प्रवक्तृ कविया म सवप्रथम श्री जयशंकर प्रसाद का नाम उल्लेखनीय है। उनक काव्य म वदना का चित्रण नवीन गती म प्रभावशाली रूप म हुआ है। वदना की अतिशयता छायावादी कविता की एक सामान्य विशेषता है। यह वदना अनुभूत्यात्मक सत्यता म युक्त है। उसकी पीछा अनुभूतिजनक और मार्मिक है।

इस कवणा कलित हृदय म अग्र निवृत्त रागनी बजती।

बया हाहाकार स्वरा म वदना असीम गरजता ॥

मरी आहा स जाया, मुस्मित म सान वात।

अधरा स हसत हसते आछा म रान वात ॥

मुनकर बया तुम मना कराग मरी भांती आत्मकथा।

अभी समय भी नहा, पकी सायी है मरी मौन कथा ॥

नादि पतिया जयशंकर प्रसाद का वदना भावना का परिचायक है। आत्मी और लहर की य पतिया तीव्र स्तर पर प्रेम का मू म चित्रण करती है। आध्यात्मिक आधार पर इह सिद्ध कर भी अनेक आनाथका न इनक स्वरूप का विवक्षित किया है। प्रसाद की वदना का आधार प्रेम भावना है। अस्फुट प्रेम प्रतिश्रिया क रूप म मन का पीडित कर जाता है। फलतः वह उस प्रेम-जनित वदना का ही उदाहरण इह की अवस्था म अपना सबन बना कर ग्य उठा है बयादि जलीन सुगीन प्रेम का स्मृति उा भविष्य म भा आस्था रघन का बाध्य करता है। निम्नलिखित पतिया एसा की भाव साहित्य करती है

पागल र ! वह मित्रता है कर !

उसका ता नु है हा सब

आंगू र का त म गितर
 र विश्व रिर हे एण उधार
 रू र्वा रिर उगा हे पुनार ?
 मुगरो र मिरा र री पार !

रस गिरिब आह म गिररर तुम आभार्य ताराग ।

इग बरी स्वया वा मरी रा रा रर जाताराग ॥

प्रसाद व वाच्य म छायावा न ॥ त व मितो हे उर आधार पर तावा ।
 उम अभिज्ञान वर्गीय मतागति म युक्त भी गिद्ध रिया है । प्रसा वा वा गिरिवागिरि
 समष्टि भी इस वयन वा परिपुष्ट करती है । प्रसा । रामना मनुगा र गा गाव
 सोना चादी हीरा माती जाति उपमान भा अपा वाच्य म विस्तार म प्रसा रिर
 है । स्वण गष्टि स्वण शतम स्वण हृत्य स्वग मितो हार मा रूय । रा म
 भरा मुय मणि दीप मणि मयता वभर वी मनुगाता आति प्रवाग प्रसा र र वा य
 म मिलते है । इह अभिज्ञात वर्गीय मनावृत्ति व साय माय नवीन । रा वा मूवत भा
 कहा जा सकता है । जहा तक छायावा न वाच्य म विस्तार तत्त्व वा मन्व ध है प्रसा
 ने उम वनापरक भावभूमि प्रदान की है । प्रकृति र प्रत जन्म माह भावता जोर
 उत्तम चेतना वा आरोप अधिनाश छायावा । कविया न किया है । नारा विपन्न
 नवीन दृष्टिकाण भी वन कविया ने प्रस्तुत रिया है जा द्विग वाच्य म विद्यमान
 परम्परागत दृष्टिकाण स भिन्न है ।

नारी ! तुम कवन श्रद्धा हो विज्ञात रजत नग पग तन म ।

पीयूष म्यात सी बहा करो जीवन व गुटर समतन म ॥

नारी वा यह स्वरूप नकर प्रसाद न प्रम यन म स्वान जोर रामता र्वन करना
 होमा की भावना वा समावेश किया है । मी र्वानुभूति व भा नवीन चित्रण प्रसा र
 काय म विद्यमान है जो परम्परागत काय स भिन्न दृष्टिकोण व ही मूवत है । उदान
 कामायनी म निखा है

वरदान चतना का उवन सौदय जिम सय रहते है

जिसम अन त अभिनाया व सपने सय जगने रूत ह ।

प्रसाद व काय की एर प्रमुख विशेषता प्रकृति म चतन सत्ता रर आरापण है ।
 जसा कि ऊपर सक्त किया गया ह प्रसाद ने अपने काय म प्रकृति म मानवीय चतना
 की निर्दिति करके उसकी रूप को यापक पठभूमि म एक जटिलम सौ त्य स युक्त करके
 प्रस्तुत किया है । उहां प्रकृति क बाह्य रूप जोर जाकार वा चित्रण न करन उसक
 आभ्यतिरिक्त स्वरूप का भी उपाटिन किया ह । प्रसा री य धारणा है कि सभी
 जड और चतन उभी एक जण महाचतन सत्ता का जग है । उनर प्रत्येक वण अण
 जोर परमाणु म एक एसी चतना है जो उसी मदाअण म परित है । प्रस्तुत और अप्रस्तुत

दाना ही विद्याना के द्वारा प्रसाद न प्रकृति चित्रण किया है। मानव और प्रकृति न मध्य इसम मानव ही पराजय प्रकृति का निरीह मानव के प्रति प्रेम और मनुष्य की उस पर विजय यदि प्रकृति के जगत् और सनातन स्वल्प के निरूपण है। निम्नलिखित पंक्तिया प्रसाद के प्रकृति चित्रण के रूप में उचित की जानें हैं।

युगा की चट्टाना पर मलिन गान पर चिह्न चतो गमार ।
दब गहन अमुर की पक्ति अनुमरण करता उम जवीर ॥

पच भूत का भरव मित्रण सम्पादा के पक्ष निपात ।
उल्का लेकर अमर शक्तिया छाज रही या खाया प्रात ॥
घसनी घरा घघकती बाना ज्वानामुखिया के निरवान ।
और सकुचित क्रमण उमक जवयव का हाता या ह्यान ॥

अहा वह मुख परिवचन के थाम वाच जब घिरत हा पनश्याम ।
अरुण रवि मडन उनका भू शिवाइ देना हा छविग्राम ॥
या कि नव इन्द्र नील तपुश्रुय फोर कर घघन रही हा कान ।
एक तपु बानामुखी अचत माघवा रजना म अनात ॥
घिर रहे के घवराल बाल जग अवतम्बित मुख र पात ।
नील घन शावक म मुकुमार मुधा भरन का विधि के पाम ॥

इस प्रकार न छायावादी कविता के मूल तत्व जयगन्ध प्रसाद के वाच्य म निहित हैं। रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र म प्रसाद ही न गद्य और पद्य दोनों ही विद्याना म अपनी गीतगीत मोनिकता और नवीनता का परिचय किया है। प्रेम विरह और सौन्दर्य वाच्य चित्रण की जो नवीन गीत प्रसाद के वाच्य म निवृत्ती है वह भी अनूठी है। आधुनिक म प्रेम व्यापार की मूर्धन्यात्मिकता के साथ-साथ उदात्त गम्भीर और नयापह प्रतिनियामक सम्भावनाओं का चित्रण किया गया है। प्रसाद ही मात्र पदना अपना गणूण विपयताओं के साथ इसम अभिव्यक्त हुई है। तदनु आधुनिक पदना वाच्य के साथ कामायनी महाकाव्य म प्रसाद न जिन आधुनिकता के प्रति तथ्या का निरूपण किया है वह भी मर्यादीन कान्य की एक विविध उपरिप्रेष के रूप म माप किया जा सकता है।

सूयकात त्रिपाठी निरासा —

छायावाच्य के चार प्रमुख स्तम्भों म श्री सूयकात त्रिपाठी निरासा भी एक हैं। उनका प्रतिनिधि वाच्य पद्य परिमल अणिमा गानिना तुलगाणम जनामिना बना नय पत कुटुरमुता तथा जरा है। यह एक उदात्तगीत तथ्य है कि छायावाच्य के प्रसाद और पाठकों के साथ साथ निरासा के वाच्य म आधुनिक वाच्य

जीवू र बन वत म पिाकर
 य विश्व तिर हे धुण उजा
 तू बना पिर उठाा हे पुकार ?
 मुमको त भिमा र रभी पार ।

म निरिच आहू म पिाकर म आभाण ताभाण ।
 इम वना म्यवा का भरी रा रा कर आभाण ॥

प्रसाद व वा य म छायाता व जीव त मित्त है उता आभाण पर तगा ।
 उस अभिज्ञान वर्गीय मनावति न मुन भी मिद्ध तिया है । प्रसाद वा वा पाणिनामि
 समद्धि भी इम तथन वा परिपुट करती है । प्रसाद । तामरा मरागा र गात्र माय
 सोना चादी हीरा माती आि उपमान भा जपन बाधर म विभाण न मरत रिर
 है । स्वण मष्टि स्वण मरत न स्वण ह्यय स्वग मी ताता हीर मा र य रा म
 भरा मुख मणि दीप मणि मत्ता वभर की मजुगाना आि प्रनाण प्रगाद र का य
 म मितते है । इह अभिज्ञान वर्गीय मनावति र माय माय तथीन । रा वा मूरत भा
 कहा जा सक्ता है । जहा तत्र छायावांग राय म विचार तत्र वा मन्व ध है प्रसा
 ने उस वदनापरक भावभूमि प्रान की है । प्रकृति र प्रत जन्म माहू भावता जोर
 उसम चतना वा आराप अधिज्ञान छायाता । वविद्या न विद्या है । तारो विषय
 तवीन त्रिकोण भी दन वविद्या न प्रस्तुत तिया है जा टिगा वाय म विद्यमान
 परम्परागत दष्टिकाण य भिन्न है ।

नारी । तुम वंवन प्रडा हा विन्वास रजत नग पग तन म ।

पीयूष खान सी बहा करा जीवन व मुँर समतन म ॥

नारी का यह स्वरूप तकर प्रसाद न प्रम यन म स्वाय और कामता त्वन करना
 होगा की भावना का समावेश किया है । सी त्र्यानुभूति व भा तवीन चित्रण प्रसाद र
 काय म विद्यमान है जो परम्परागत काय म भिन्न त्रिकोण व ही सूचक है । उान
 कामायनी म तिया है

वरदान चतना वा उज्वल सौंदर्य जिम सन रहते है

जिसम अन त अभिनाया व सपन सन जगते रहते ह ।

प्रसाद व वा य की एव प्रमुद्र विगयता प्रकृति म चान सत्ता वा आरापण है ।
 जसा कि ऊपर सकेत किया गया ह प्रसाद न अपन का य म प्रकृति म मानवीय चतना
 की निहृति करक उसक रूप को यापक पञ्चमि म एक जट्विम सौ दय स युक्त करके
 प्रस्तुत किया है । उान प्रकृति व बाह्य रूप और आकार का चित्रण न करक उसक
 आभ्यतिरिक्त स्वरूप को भी उ घाटिन किया ह । प्रसाद ही व धारणा है कि सभी
 जड और चतन उमी एव जग महाचतन सत्ता का जग ० । उनक प्रत्यक वण अण
 जोर परमाण म एक एसी चतना है जो उसी म्नाअण स परित है । प्रस्तुत और अप्रस्तुत

की अथ धाराभा विनाश प्रगतिार ओर प्रयोगवार ए भी चीन नियमान है। १।
 न । म यह रहा जा गता है कि इस नाम्य प्रगतिार का आरम्भ हुआ। ए पूर ही गिया ता
 इनकी भावी विनाश की निता रा मरता कर । ए म । आग । ए ए र विमान । म । ए
 म उतग प्रभाव प्रण किया । जाधिका कि ही नाम्य ए । ए म गिया ता ही भाषा
 भाष ए । अमिष्यत्रता ओर प्रगतिार ए । ए म गाम्भार प्रमाण रता ता म्य है ।
 कतिपय आचारता ता यह भी अनुमाा े कि मुक्त ए । ए म मी गिया ता ए प्रमाण
 नयी पीढी र कविया ता मान प्रगम्भ रता की । एता रता है । ए म मा मया ता
 आधार निराता का स्वय मुक्त ए । ए म गाम्भार कति रता है । उतरी कविया ता म
 एम अनक उदाहरण मित जायग जा इस दृष्टि त विनिष्टता रता है । ए ए उ । ए म
 इस प्रकार है

वह जाता

दा टूक बनज का करता
 पछताता पथ पर जाता
 पटपीठ दाना मितकर है एक
 चन रहा त्रुटिया र्व
 मुण्टी भर दान का
 भूष मिटान का
 वह फगे पुरानी
 यानी को फँताता
 पछताता पथ पर जाता ।

छायावादी कविता म वचना का जो चित्रण व्यापक परिपश म मितता है वह
 निराता क काव्य म भी विद्यमान है । 'दुःख ही जीवन की व्यथा रही क्या कू आज
 जो नही कती जमी पत्तिया पीडा की तीव्रता का बाध कराती है । इसन अतिरिक्त
 निराता का विद्रोही स्वभाव और नातिकारी बलि छायावादी न अथ कविया की तुना
 म विशिष्टता रयती है । उनक सबप्रथम काव्य सग्रह परिमत्र म जूही की कती
 प्रभाती यमुना न प्रति वासती तथा हम जाना है जग के पार आदि रचनाग निराता
 की प्रम भावता और सौ र्याभिन्निक की परिचायक है । अनामिका म निराता का
 दशनिक रूप गधान हा गया है । तुनसीदास तथा मीतिका आदि की रचनाए भी इसी
 लक्ष्य म युक्त है । रह यदानी काटि के पीतो म स अधिकाश पीतिका म
 सग्रहीत है ।

मेरे प्राणो म आजो
 शत शत शिथिल भावनाओ के
 उर क तार सजा जाओ
 गान दा प्रिय मुस भूत कर

अपनापन अपार जग मुंदर
 खली करुण उर की सीपी पर
 स्वाती जन नित बरसाया
 मरं प्राणा म आजा ।

निराला का काव्य कल्पनाशीलता की प्रखरता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। तुलसीदास राम की शक्ति-पूजा तथा यमुना के प्रति आदि कविताओं में उनकी कल्पना का सामर्थ्य अभिव्यक्त हुई है। छायावाद की सामान्य विंगपना प्रकृति में चतन काव्य व्यापार के नकशा की निहित निराला की इन कविताओं में मिलता है। प्रकृति की सामान्य हृदयना में कवि का जतीत की नाताण भा स्मरण हो आती हैं

स्वप्ना सी उन किन जाया का
 पलनव छाया में अमान
 यौवन की माया सा आया
 माहन का सम्माहन ध्यान
 गंध-नुद्य किन जनि वाता के
 मुग्ध हृदय का मनु गजार
 तर ग-कुमुमा की नुपमा
 जाच रहा है बारम्बार ।

प्रकृति में मानवता का यह आरोप कहा-कहा जसाधारण रूप में मुन्दर जी के माहक रूप में अभिव्यक्त हुआ है। उपाहरण के लिए गध्या मुन्दरी का निम्नलिखित चित्र प्रस्तुत किया जा सकता है

मधमन आसमान में उतर रही है,
 वह गध्या मुन्दरी परा-सी ।
 धार धार धीर
 तिमिराचन में नहा कहा चकनता का आभास
 मगुर मगर है जाना उसक अघर
 कि तु जरा गनीर नहा है
 उसक हास बिनास
 डूबा रबि अम्त्राचन
 सध्या के दग छन छन ।

प्रतीका के नवान प्रयोग का दृष्टि से निराला का निष्ठा हुई जहाँ का कला गायक कविता का उन्नत किया जा सकता है। इसमें कवि ने जूहा का कला का चित्रण करत समय में कवन जड प्रकृति चतना का निहित इगिन का है बरन एक नायिका के रूप में भी उसका चित्रण किया है

बिजन उन बत्तरी पर
 साती भा मुद्दा नरा स्नह म्वन मधन

त प्रति तबि न हृद्य म एव सहज ममता विद्यमान मिनती है। इग गो रव ओर मम वाच्य पर छायावाणी कविता की एक नामा य दिनपता की भांति रहस्य भावना का आवरण मिनता है। तबि की प्रकृति की गु र ओर आकाशक छवि म भी गुद मना की सदृशता सिघारि मी है

आज साय घग का अज्ञात
रज्जु म चोता गयी प्रभात
गूढ़ मरता म हिन पात
बह रह स्फट बाग
आज कबि क चिर जवन प्राण
पा मय अपना मान ।

भाषा जनी तथा उदा क धल म पत न कुछ नय प्रयाग किय है। उदाहरण के लिए कबि क प्राग्धा नामक सपह म बहा बहा मध्यवर्गीय जीवन चित्रण की यथाय और मार्मिक अनुभूति मिनती है। म्मकी न गवनी छायावाणी हात दृष्ट भा गद्यारम कता स युक्त है

माली की मडई स उठ
नम क नीच नम सी धूमानी
मद पवन म तिरती
नीली रक्तम की सी हनकी जानी
बत्ती जला दुकाना म
बठ कस्य क यापारी
मौन मद आना म
हिम की ऊप रही नवी अधिपारी ।

छायावाद क जय कविता की भांति पत न भी छद रचना क धल म कुछ नवीन प्रयाग किय। मुक्त छद म भी उ हान कुछ रचनाए प्रस्तुत की जिनम स जीव प्रमू शोषक कविता उदाहरणाथ महा प्रस्तुत की जा रही है

तक रह हा मगन ?
मत्यु नीलिमा गहन मान ?
अनिमय, अचितवन काल नयन ?
नि स्फ द शू य निजन, नि स्वन ?
दख भू का !
जीवन प्रमू का !

जिस पर अकित
सर मुनि बदित

मानव पद तन
देखो भू को ।
स्वर्गिक भू को
मानव पुण्य प्रसू को ।

अपनी काय प्ररणा क विषय म पत न स्वय लिखा है कि प्रकृति निरीक्षण स उहोने काव्य रचना आरम्भ की । प्रकृति क विविध रूप कवि क हृदय म अनात आकषण उत्पन्न करते थ ।

प्रकृति का अव्यक्त सौन्दर्य कवि की चेतना को तन्मयता की स्थिति म ला दता था । प्रकृति क जो सशक्त चित्र कवि ने अपन काव्य म प्रस्तुत किय हैं उनम कही प्रकृति क कोमल और मुकुमार रूपो की यजना है कही उसका शृंगारिक रूप प्रधान हो गया है, कही कवि को प्रकृति एक सुन्दरी नारी क रूप म परिलक्षित होती है और कही प्रकृति का जननी रूप कवि को आकृष्ट करता है । प्रकृति म चेतना क आरापण की यह यत्ति छायावाङ् की एक सामान्य विशेषता है । नारी चित्रण भी कवि ने रूपात्मक और भावात्मक दोना रूपा म किया है । कही तहाँ पर सौन्दर्य चित्रण क भावात्मक रूप पत न इन शब्दा म प्रस्तुत किय हैं

नील रेशमी तम का कोमल
घोल लोल कच भार
सार तरन नहरा लहरा चल
स्वप्न विक्च स्तन हार
शशि कर सी लघुपद सरसी म
करती तुम अभिसार
दुग्ध फन शारद-ज्योत्स्ना म
ज्योत्स्ना सी मुकुमार ।

पत का काय व्यक्तित्व प्रकृति म जसी तत्त्वोन्नता म तात्कालीकरण करता यगता है वसा अय छायावाङ्गी कविया म नही दय पता । पत न प्रकृति क आकषण म अनात आकषण पाया वह एक दुरूह बधन मा यगा । छाड ग्या की मृदु छाया ताड प्रकृति स भी माया बात तेर जेज्ञ जान म बन उरगा नू चोचन म कवि ने प्रकृति क मोह पाण म अन्वारा न पाने की विवशता ता ही चित्रण किया है । आज मुकुनिव कुमुमित सब ओर तुम्हारी छवि छ । अपार । फिर रहे उ म म प्रिय और नभ पलका स पथ पमार अभी पतिया भी प्रकृति म निहित अनात गता का सरत गी है । यह आकषण तब ओर भी स्पष्ट आवाहन मन जाना है जब कवि चियता है

धुन्ध जल निघरा को जब बान
सिंधु म मय कर फनाकार

बुनबुना ता भ्याहुन गगार
बाा बिधरा नी अगात ।
उठा तब तहरा म तर मो
त जात मुा ततात वी ?

पल्लव मसप्रहोतपत की कविताएँ म्ये उासाती त रा ग मुा है । "म रति
की भावात्मरता की प्रधानता मिलता है । छायावादी त रा त ममान त री म
भी प लव का पत त राभ्य म विणय म् र है । इन मय्य रा प्राम कविता री रति
की कोमल भावा मरता जीर अजुम् यामरात रा बाध तगती है

न पला का ममर रागत
न पुष्पा का रग राग पराग
एक जस्य अस्पष्ट जगीत
गुप्ति की य स्वधिन मुक्ता
सरन शिशुआ त मुनि अनुरागे
वय विहग क गात ।

कल्पना क य विह्वल बात ।
बाध क ज्ज ह्वल्य क हाम,
वदना क प्रतीप की ज्वात
प्रणय क य मयमास
मुछवि क छाया बन की मास
भर गई लनम हाव तास ।

बाज पल्लवित रई है डान
नकशा कत गजित मधमास
मुग्ध हीग मध क मध बात
सुरभि से जस्विर मरताकाश ।

पत के का य में छायावादी काय की चतन प्रकृति जपे ताहन प्रयर रूप म
विद्यमान रही है । बौद्धिक विकास की दृष्टि से भी उनका का य म एक प्रकार की
क्रमबद्धता नक्षित होती है । मानव और प्रकृति क सौंदर्य का चित्रण तथा प्रकृति म
मानवीय चतना रा जारापण सहज अभि यक्ति से युक्त हाकर "नरु का य म विद्यमान
ह । कनात्मरता की दृष्टि से भी पत का का य विशिष्टता रखता है । मुकुमार जीर
कामन भावनाएँ मूम्म पपवे रण से युक्त होकर उनकी कविता म चिनबड हुरई है । पत
की सवेन्मा युगीन यथाय का आधार ग्रहण करक उनका का य म विवधित हई है ।

महादेवी वर्मा—

श्रीमती महादेवी वर्मा का ज म सन १९०७ म हुआ था । वह उत्तर प्रदेश क

पद्माशय नामक स्वान की निवास थी। इतार तथा प्रयाग में उनका गिता-दाक्षा हुई। गिता समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने प्रयाग मठिका विद्यपीठ का प्रयागावा का एक मन्नाला तिम पर बहु आज्ञाएँ दीं कर रहीं। उनका कविता के जनक सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें १८० म प्रकाशित निहार मन १८३० म प्रकाशित रश्मि मन १८४४ म प्रकाशित नाराजा मन १८५५ म प्रकाशित माध्य गीत तथा मन १८६४ म प्रकाशित आपगिया जाति का नाम विष्णु-पद्म-नन्द नीय है। आधुनिक कवि महात्मा के भा उनका प्रमुख कविता का प्रभाव है। दृष्टता की कडिया स्मृति की रक्षा तथा अतीत के चरित्र उनकी सम्पूर्णता तथा विचारामक गद्य रचनाएँ हैं। महादेवी का विचित्र मरु गद्य में रचना के मदानिष्ठ विचार मिलते हैं। महात्मा के काय की एक विषयता यह भी है कि उनमें वर्णन की चरम अविश्वसित के साससाय तागतिक के पना भी मिलता है। प्रति चित्रण के सन्दर्भ में भा महात्मा का काव्य छायावादी तत्वा से युक्त है। उहान प्रति में अर्थ छायावादी कविता की भाति चतना का आगपण करके उसमें एक विराट काव्यत सत्ता के गहन छाने हैं। यामा का भूमिका में उहान स्वयं लिखा है कि छायावादी न मनुष्य के हृत्प्य एवं प्रकृति के सम्बन्ध में प्राण डाल दिया है जो प्राचीन ज्ञान में विम्ब प्रतिविम्बवादी में चला जा रहा था जोर जिसके कारण मनुष्य का प्रकृति अपने हृत्प्य में लाने एवं पुत्र में पुनरित जान पड़ती थी। छायावादी का प्रति पद रूप जाति में भर जन का एकलता के समान अनर रूपा में प्रकृत मत्प्राण बन गया। जनण पुत्र के अग्रमप के जनकण एवं पृथ्वी के आसविन्दु का एक ही एक कारण पर। मय प्रकृति के पुत्र न जोर महान के कामन कविता एवं उदार मिताने अस्मिन् जन एवं मित परत निविन् अ धनार एवं उ-बन विज्ञ रखा मानव का उधन विगतता कामना फटारता चकनता निरचरता जोर माता जन का उधन प्रतिविन् न उहान एक ही विराट में उरधन महात्मा है। प्रति की जनकरूपता में परिवान गीत विमित्रता में कवि ने एसा वारतम्य मानने का प्रयत्न किया जिसका एक छार किया अतीत मन जोर दूसरा छार उनके असीम हृत्प्य में समाया हुआ था। तब प्रति का एक एक जन एक अती क्रिष्ट रचित्व उकर जा उठा। प्रति की रज तथा तथा के विरि सा तातामी करण जात अगो म स्पष्ट है। मैं याम मनुमान जाना तथा सा जी नाय्य व्यथा तम सा अगम मग रहाना जसा पत्तिया तथा तातामीकरण की दानक है। विभिन्न मतानुभूतिया के प्रतीका मर रूप में प्रकाश विरलप के भा अनर उगाहरण महात्मा के काव्य में विद्यमान है

जा कहा करण में मपुर मपुर
 शोना मित कर न रज कण
 निर करण मपुर पुत्र-गुण
 जग पतञ्जल का नाय्य रसान।

पक्षी क्षिप्र जल की अस्मान
 मे पित बर गती डाँडात ।
 मुन पूत पूत उठो पतपत
 मुद्य दुद्य मजरियो ए अरुर ।

— —

उय गीत मरि गति ताव अमर
 अप्सरि तरा नार गुप्तर ।
 आनात तिमिर मित असित चीर
 सागर गजन मुन तन मजीर ।

उडता गगा म अतस जात
 मघा म मुद्यगित विविण स्वर ।
 अप्सरि तरा नतन गुप्तर
 रवि शशि तर अवतश नात ।

सीमन्त जटित तारत अमान
 चपना विभ्रम रिमति इ द्रधनुष ।
 हिम-कण बन चरत स्पर्श निकर
 अप्सरि तरा नतन मुदर ।

महादेवी क क वा य की एक विशेषता दुःख जयवा वदना का प्रभावशाली चित्रण है। कवियित्री का पीडा स विशेष प्रम है। स्वयं एक स्थान पर उहाने लिखा है कि दुःख मरे जीवन का रोमा काय है जा सार ममार का एक सूत्र म बाध रखने की क्षमता रखता है। हमारा एक एक बूद आसू भा जीवन की अधिक मधर एव उवर बनाय दिना नहीं रह सकता। मनुष्य सुख को अकत भोगना चाहता है पर दुःख को सब को बाट कर विश्व जीवन म अपन जीवन को तथा विश्व वदना म अपनी वदना को इस प्रकार मिना देना जिस प्रकार एर जन वि दु समु म मित्र जाता है कवि का मोक्ष है। दुःख की यही भावना महादेवी क क वा य म एक स्वप्नित और स्मतिपरक अभि यनित त्रिएहुए मिलती है

पुलक पुनक उर सिहर सिहर तन
 आज नयन क्या जाते भर भर ।
 सकुच सलज छिनती शफानी
 अनस मोन नी गाली डानी ।
 बुनते नव प्रवान बजो म
 रजत याम तारो स जानी ।
 शिथिल मधु पवन गिन गिन मधु कष

हरसिंघार धरते हैं यर धर
आज नयन बसा आत भर भर ।

वेदनात्मक अभिव्यक्ति की यह स्वप्निलता मार्मिक अनुभूति से युक्त है। यह अनुभूति सत्यता से युक्त है। इसलिए इस मात्र वदना की काल्पनिक अनुभूति कटना उचित नहीं होगा। वदना की अत्यन्त जाकाक्षा प्रगाढ़ परिचय के साथ महादेवी व का य म मिलती है

प्रिय तरे उर मे जग पाव—
प्रतिध्वनि जब मरे पी पी की
उसका जग समये वादन मे
विद्युत का वन-वन मिट जाना ।

तुम चुपके से जा बस जाओ
सुख दुःख सपना मे सामा मे
पर मन कह देगा ये व हैं
आँखें कह देंगी पहचाना ।

महादेवी की कविता गीतात्मकता की दृष्टि से भी विशिष्टता रखती है। उनके गीता मे कामन कल्पना व साथ-साथ भाषा और भावा की माहक अभिव्यक्ति विद्यमान है। नाक्षत्रिकता माधुर्य और मार्मिकता उन गीता की अत्यन्त विशेषताएँ हैं। प्रतीक योजना तथा आनकारिकता ने भी उन रमात्मक रूप प्रदान किया है। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

रूपसि, तरा घन केशपाव ।
श्यामन श्यामन कामन कामन
तहराता मुरभिन कणपाव ।

नभ-गंगा का रजत धार मे
धो आई बसा इह रात
कम्पित हैं तेरे सजल अंग
सिहरा सा तन है सद्यस्तान
भागी जनका व छारा मे
तूती दूँ कर विविध नास ।
रूपसि, तरा घन केशपाव ।

महादेवी की कविता मुख्यतः कल्पना व प्रचुर रूप से युक्त है। महादेवी की प्रणयानुभूति जाध्यात्मिकता तथा रस्यवाञ्छिता का आवरण लेकर भा मुख्यतः पाषण्ड है। उन लौकिक प्रेम की सहानुभूतिमयी भावना का प्रतिफलन कहा जा सकता है। कल्पना अथवा विरक्ति का जसा अनाशक्तिमय चित्रण इनका काव्य मे मिलता है वसा

अथ यत्र तुल्यं है। विरसायन्या म श्रीरा व जाय साधारण पत्र का प्रया
 यनाय रहा है पर तु वि ता की उ त साय प्रीति पर पृ ४ वर जायामिपरा जया
 तातरना वा भाषा ज म ता है। मय म्हासी एक स्यात पर तिया है। आरा
 म मुन बहू दुार बहू जाय एत कुछ माया म गव दु ७ मि ता है। पर तु उग पर
 पाधिय दुय की छाया गहा पर गवा है। व र्तिता यह उगा की प्रतिभिया है वि वना
 मुन नता मर रता गयी है। म्हा र्तिरित वरता म ही भगसा तु ७ प्री
 एत र्तिमय अनुराग त जायन तसा उता मगार वा तुयत्मेक गम ता वा ती वि ता
 सधी म मरा जसमय हो परिणय हा गया था। म्हासी की व पतिवा उती वरिवा
 म निहित छायावाणी रहस्यवाणी म्हासा। तसा ज वा म्हासी। तसा वा म्हासा
 वा स्वत म्हा र्ती है।

अथ कवि तथा महत्त्व—

मायावाणी प्रकृति व अन्तत उपर जित प्रमुद्य रविवा ता उन्मय किया गया है
 व छायावाणी व आधार स्तम्भ है। इत अनिरिता भा छायावाणी का-व्यधारा का जनक
 कविवा का पापण जोर समान मिता। त्रित नाम त वन म कविवा का परिचय
 अथ का य प्रवर्तिया व त म्भ म अधिक जोरित्यपूण हाया। छायावाणी व पत विनय
 म जाय प्रवार व मनवाणी प्रवर्तित म्भ। कुछ जायवरा न उत उ र उपरिधया म
 युक्त एव कुछ न उनन रहित साय मिद्ध विरा। उतर वि ता तान व आरम्भ। इत
 यह शाय्य प्रवर्ति प्रगतिवाणी व आरम्भित तग तर विद्यमान रही। म्हा कान म प्रमाद
 पत निराणा तथा म्हासी व अतिरित रामरमार वर्मा नर म्हा म्हा अन्त मापात
 परण सि नपाता वचन भगवतीचरण वर्मा आदि अथ जनक रविवा त भा इत
 प्रकृति व विनास म याग किया। कुछ विचारता त म्हा ता तान का एक प्रतिभिया
 वाणी प्रकृति सिद्ध किया तथा कुछ न म्हा मय भाषाया वा प्रभाव बताया।
 छायावाणी म भावात्मकता व्यक्तित्वा प्रकृति म उतन मत्ता वा जायण प्रकृति
 की नारी रूप म कल्पना प्रम जोर शृंगार की उगत भावनाएँ वना और निराणा की
 अभि यक्ति रहस्यवाण्टिता जायवारिदता तथा त्वीन अभि यजना गती आदि जा
 विणपताण विद्यमान है उ हान इभ सायनिक वा य प्रकृतिया म एक सवधा पृथक् और
 त्वीन स्वरूप प्रदान किया है। अगनी म्हा विणपताया व कारण जायनिक द्विती
 कविता व इतिहास म छायावाणी प्रकृति वा ऐतिहासिक मत्त्व है।

आधुनिक युगीन प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्ति

आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में उत्तर छायावाद कालीन प्रवृत्ति के रूप में प्रगतिवादी का उदय किया जाता है। प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिशीलता की भावना के रूप में तात्कालिक प्रियता प्राप्त हुआ है, साम्यवादी तथा मार्क्सवादी विचारधाराओं का उमरन करने वाले विचारार्थीन के रूप में भी इसकी मान्यता है। छायावाद के स्वर्णयुग में उगरे विश्व आँसू प्रतिनिधि के भक्ति मिथन तथा य। उसकी कल्पनात्मक भावभूमि के विरुद्ध दृष्ट विचारका न वास्तविकता के आधार पर चिन्तन आरम्भ किया। छायावाद के ही एक प्रमुख स्तम्भ प्रानुमितिज्ञान परतन रूपों नामक पत्रिका के एक संपादकत्व में सके विषय में अपने विचार प्रकट किए। सन् १९२८ में रूपों के प्रकाशक में उत्तम विज्ञापि इस युग में वास्तविकता न जसा 'प्रजाकार ग्रहण कर लिया है उससे प्राचीन विचारों में प्रतिष्ठित हमारे भाव और कल्पना के मूल हिल गये हैं। उदा. अबकाग में पवन सारी स्मृति का नाशकरी जागृतित ही उदा और काव्य का स्वप्नज्ञान आत्मा जीवन का बटार आवश्यकता के संशुनन रूप से सहम गयी है। अतएव इस युग की कविता स्वप्न में नष्ट पत्र उकता। उसकी जडा की अपनी पापना उमसा धारण करने के लिए बटार धरती का ज्ञान्य बना पर रहा है। नमः का प्रगतिवादी आचार्य का वास्तविकता और स्वरूप का स्वीकृति है। प्रगतिवादी एक समकालीन भाव व्यक्त थी। मार्क्सवाद और साम्यवाद में इस लिए सम्बन्ध किया गया कि इन विचारधाराओं के अनुयाय समान भवनी उपरति ही तकनी है जब उडका व्यवस्था में आर्थिक सम्यक न ही। आर्थिक जमानता का इहा विचारधाराओं का ज्ञान्य उकर उ नूनित किया जा सकता है। प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में जब प्रगतिवादी आचार्य का प्रकाशन हुआ तो इतने गवात्रों ने सामाजिक शब्दाव नावता के विचार में दाग न पर बन लिया।

एतिहासिक परिधान के प्रगतिवादी का प्रकाश हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सन् १९२८ में आरम्भ हुआ। इस वर्ष प्रगतिवादी प्रगतिवादी नमक मेष का संकल्पना विवरणन हुआ और सुधा सुभाषित के हिन्दी के प्रकाशक 'साधु' में प्रकाश

न किया। अगले अध्याय में भाषण में भी अमरा रीति का जोर तादृश्य की सामाजिक उपयोगिता पर बत दिया। अगले ही वर्ष १९३७ के दिवाण भारत में भी निरास विहारी ने एक बड़ा विषय में भारत में प्रगतिशील सामाजिक की आवश्यकता बताया। आगामी दशक में अनेक प्रगतिशील सामाजिक विचारों का जोरन की आवश्यकता और मूल्य पर बत दिया गया।

गुमिप्राण-वन पत—

जसा कि ऊपर बताया जा रहा है गुमिप्राण पत्र में अनेक छायावाद के स्तम्भों में भी अनेक चार्जर आवश्यकता का अनुभव किया और इसमें प्रयत्न में पाया गया। पत्र की गुमवाणी जैसी दृष्टियाँ में इस विचारधारा के मूल उपलब्ध हुए हैं। हर्षाभ के जुलाई ३० के अंत में प्रगतिशील सामाजिक विचारों की भावना का स्पष्ट आभास मिलता है

युग युग से रच गत गत नतिर उधर
बाध लिया मानव के पार्श्व पशु तर ।
विहारी हा उठा आज पशु दपिन
वह न रहगा जब नवयुग में गर्दित ।
नहा सत्गा र ! वह अनुचित तान्त्र
रुद्धि नीतिया का गत निमम शासन ।
वह भा क्या मानव जीवन का तालन ?
वह मानव के दहभाव का वादन ।
नहा र जीवनापाय तब विवमिन
जीवनयापन कर न सर तब इच्छित ।
नतिक सीमाएं कर बटुन निर्धारित
जीवनइच्छा की जन न मर्दांति ।

दब और पशु भावा में जा सीमित
युग युग में हाता परिवर्तित अबसित ।
मानव पशु न किया जान अब जजित
मानव देव हुआ जब वह सम्मानित ।
मानव के पशु के प्रति
मध्य वग की हा रति ।

स प्रकार की विविधताओं में प्रगतिवादी का यथार्थ का आरम्भिक स्वरूप स्पष्ट किया। अनेक रचनाओं में आरम्भ में एक चार्जर आधार ग्रहण करके साहित्य जगत का यह उस स्वरूप का माय किया जिगम सामाजिक उपयोगिता पर बत दिया गया है। यहाँ पर इस तथे का उल्लेख करना जाव एक है कि अनेक विषयों में कहो पर भी उग्रता का। अथवा दिसावादी विचारों का असमर्थन नहा किया है। स्वयं पत्र ने आधुनिक

कवि की भूमिका में लिया है कि एतिहासिक भौतिकवाद और भारतीय जात्यात्मिक दर्शन में किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं जान पड़ा क्योंकि मैं दोना का नीचोतर कल्याणकारी पक्ष भी ग्रहण किए हैं। मानसवादी के अन्तर्धर्म जीविका के मगडन का सघन आदि से सम्बन्ध रखने वान वाह्य दृश्य का, जिसका वास्तविक निणय अधिक और राजनीतिक शान्तिया ही कर सकती है में अपनी कल्पना का अंग नहीं बनने दिया है। इसमें भी यह स्पष्ट होता है कि आरम्भ में प्रगतिवादी विभुद्ध साम्यवादी अथवा मानसवादी आधार का ग्रहण करके हिन्दी साहित्य में विकसित नहीं हुआ। अतः प्रगतिवादी काव्यधारा से उम कविता का जानय समझना चाहिए जिसके मून में उपयुक्त राजनीतिक विचारधाराएं नहीं हैं वरन सामाजिक उपयोगिता व उद्देश्य के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना व जागरण का आह्वान है। यह आवाहन भी पत की युगवाणी में मिलता है

✓ हृदि रीतिया जहां न हा आराधित
धनी वग में मानव नहा विभाजित ।
धन बल से हा जहां न जन नम शायण,
परित भव जीवन के निखिन प्रयाजन ।

संस्कृत वाणी भाव, कम संस्कृत मन
नव मानव संस्कृति किरणों से मादित ।

✓ पत की इस काटि की रचनाओं का दर्शन में यह सदन मिलता है कि कामन और मुकुमार भावों की कल्पना प्रधान छायावादी कविता व प्रति उनकी भावना युगांत की रचना के साथ-साथ परिवर्तित हो जाती है। इसीलिए युगांत का मानवतावादी विचार धारा के आरम्भ की दृष्टि में महत्वपूर्ण समझा जाता है। युगांत के दो रूप पश्चान युगवाणी के प्रकाशन व साथ साथ पत का यह मानवतावादी सम्बन्धवाद की ओर बढ़ता प्रतीत होता है। छायावादी के इस परवर्ती युग में पत ने नवीन यथाथ चेतना का पर्याप्त सीमा तक स्वीकार किया है। ग्राम्या में अभिव्यक्त पत की अनुभूतिया मासिकता और यथार्थता की दृष्टि में महत्वपूर्ण है यद्यपि छायावादी गलावनी इसमें भी यत्र-तत्र विद्यमान है

मातो की मडई से उठ
नभ के नीचे नभ-सी धूमाला
मद पवन में फिरती
नाही रजम को-सा हवकी जाती
बला जगा दुकाना में
बठ कम्ब के आगारी,

मोड भर बाता म

हिम की ऊर रही ली अजियाला।

दुगात गुण्यणो भाषा पाभ्या म अभिप्यसा पर की इ विचारारा स्वणधुनि स्वणनिरण तास अभिमा ताजा भाषाण मुग्ध लीरा तास रूप ग्रहण कर रही है निमामात्रि तास तासास क न इत्यस तासासाव अभि यक्ति की प्रोढ़ता एव तास्या मर निरास की दूष्ण तास तास मपट्ट मट्टरपूण है। यथाय की रसोदृति क गातासास तासासितास न प्रति तासास मिता है। परतु यह दागति बातितास तासास तास प्रभाव तासास है पर आव नही टह्णता स्वाति जाण तनकर पर तासास म त्रयासासतास प्रोढ़ता तासास ओर बीडितास तास तास हान तगती है। एसा तासास निम्ननिधि तासास तासास दूष्ण तास है

कीन स्योत य

रडा ओ विश्वात रूपट्ट
राज मराता कस जाड
तिरत सात्विक उर सरमा म
शुत्र सुनट्टी श्रीवा माड
शोभा की स्वगिर उडान म
भर जाता सहसा अपनक मन
बजत नव छदा क नपुर
अनिधित गीता क प्रिय पन्वन।

—

एक टाग पर उचक खनी हा
मुग्धा बय स अधिक यनी हो
पर उठा दृण पिन्नी पर धर
घटना मोड चित्र धन गुदर
उठ जगूठ के बन ऊपर
उडन का अब छूने जबर
सानजुही की बन हरीनी
जटकी मधी जधर पर।

सूयकात त्रिपाठी निरासा —

सूयकात त्रिपाठी निरासा य का य म भी यथायता क तत्त्व विद्यमान है। प्रगति वात् का जो जा त्पेन चौथ शक म नियोजित हुआ उमक सन्त निरासा की लिखी हुई तीसर दशक की कविता म ही लू जा सकत है। दूसर शक म यह कहा जा सकता है कि उनकी कविता स भी हिन्दी की इस नयी का य प्रवृत्ति न प्रेरणा ग्रहण की। छायावाद रहस्यवाद और ज या मवाद से प्रभावित होन के साथ साथ उनकी अनेक

कविताएँ यथाय चित्रण की शक्ति से ग्रहण रखती हैं। सन १८४२ में प्रकाशित उनके 'कुतुरमुत्ता' नामक काव्य संग्रह की अधिकांश रचनाएँ इसकाटि का हैं। उनकी ये रचनाएँ इस तथ्य की सातक हैं कि छायावादी युग की विद्रोह भावना प्राचीन परम्पराओं की सीमाओं का तात्पर नये रूप ग्रहण करना चाहती थी। परन्तु निराशा की ये कविताएँ यथाय व प्रति यथात्मक शक्तिशाल प्रस्तुत करती हैं। कहाँ कहीं पर इनमें यथाय से समझौता नहीं भा हुआ है और उनमें निराशावादी शक्तिशाल ही अभिव्यक्त हुआ है। उदाहरणार्थ—

य सुख के दिन
काट हैं जिनमें
गिन गिन कर
पल छिन तिन दिन
आगू की जड़ के माती के—
हारे पिराय
गल डालकर प्रियतम के
तखन का गशि मुख
दुःख निशा म
उत्तल अमलिन ।

गवना न कर ।
छाती परा रास्ता न चन ।
बकरीली राह न बटेंगी
बपर की बानें न पटेंगी
बाली मघनिया न फटेंगी,
एन एन नू डग न भर ।

भगवती चरण वर्मा—

छायावादी विचारधारा ने हिंदी काव्य साहित्य में धारण कृत एक नये धर्मिका की दायीय स्थिति का मार्मिक और यथाथपरक चित्रण प्रस्तुत किया है। भगवती चरण वर्मा की अनक कविताएँ इसकाटि का हैं जिनका रचना काल उत्तर छायावादी युग है और जिनमें प्रगतिवादी तत्वा की प्रजानता है। इस शक्ति ने उनकी भगवती चरण वर्मा कविता का कुछ नये उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है

उस द्वार सिद्धि के कछ बाग,
कुछ पाव कीस रा दूरी पर
भू की छाती पर पाश से
हैं उठ हय कछ केव पर

पशु बानर वर पिम र, अहो
 सागिया जा रही है गुलाम
 राग हाता फिर मर जाय
 मर है ताया काण नाग।

रागेय राघव—

इस रागेय राघव का काव्य में भी प्रगतिशीलता का एक विद्यमान है। पिपित्त पत्थर शीपक उनका काव्य संग्रह इस अष्टिम विराय का म उति गिया विद्या का सक्तता है। साम्राज्यवादी विचारधारा का विरोध करके गुण उद्घान का सत्ता का आह्वान करते हुए आतिवादी काव्य का मृगत विद्या है। १० रागेय राघव का काव्य का कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

जायो का भीषण रोना
 शक हूणा का बट मिला
 यूनानी जीतो की पुकार
 मुगला क मर का अहकार
 हस्तम गृध्री दहनाता था
 वह कण पेंस्ता रघ महान।

यह सडा गत्रा निरन समाज
 कहता यदि तम करते प्रचार।
 तो यह प्रचार ही सही सतत
 यदि इसम जीवन की पुहार
 मुखरित हाती है बार बार।

जा नाक बन हन की सतत चट्टान का भी ताँ है।
 जो दासता क शीश को अतिहास म ही जोड है।
 जाओ जगाने मुक्त को मुक्तस हृदय के गीत से।

नरे द्र शर्मा—

नरे द्र शर्मा की छायावादी युग में लिखी गयी कविताएँ छायावादी के ह्मानी और आध्यात्मिक लत्वा में रहित मिनती है। प्रवासी का गीत संग्रह में प्रकाशित उनकी रचनाएँ मुख्यतः पूर्ववर्ती प्रभाव की ही छायाक है। परंतु उनका अग्निशप्य शीपक काव्य संग्रह नये युग की नई समस्याओं की ओर संवत करता है। इस संग्रह की अधिकांश कविताओं में समसामयिक जीवन की यथाथता का प्रति जागरूकता प्रकट का गयी है। एक उदाहरण इस प्रकार है

जब से भावी महायुद्ध का खबर लगा है जान,
 फिर लोभी के मनागमन में गड़ लग मडराने ।
 साच रहा है नफाजोर कब गोती-गोता छूटें
 कब बरमें बम, कब बम के मग भाग्य अनका फूटें ।
 कब ताज की चीनें भू पर गान बाहर टूटें
 कब वह जीता का धाखा में जीर मरा का यूटें ।
 फिर ताभी क मन को या चित्तों लगी सतान
 जब स भावी महायुद्ध की खबर लगी है जान ।
 फिर सोन का रग मितायगा बनिया रगर म
 चुन्नी मणित टकवावगा पूजी क खबर म
 फिर विष बुधी बटार छिपावगा अपन तबर म
 दुश्मन दुश्मन चित्लावगा बटा वरन घर म
 दुनियादार गवार नग फिर राग उमा का गान
 जब स भावी महायुद्ध का खबर लगा है जान ।

रामेश्वर मुक्त अचल —

रामेश्वर मुक्त अचल का नाम भी उन कवियों में लिया जा सकता है जिन्होंने उत्तर छायावाद काल में रामात्मिक संवेदना से मुक्त काव्य रचना में पृथक् नये युग के स्वर को अपनी कविता में भरा। उन्होंने जो इस काटि की कविताएँ लिखी हैं उनमें छायावादी तत्त्वा से साथ साथ मुक्त छन्द की प्रयोग भी है। सत्ता गती सम्प्रदाय रुढ़िया और मान्यताओं के प्रति नये चरना के जाहान का संकेत भी अचल की उन कविताओं में मिलता है जो छायावाद में पृथक् प्रेरणा और प्रभाव की दाता हैं।

उदाहरणार्थ

जब पाठ्य पाठ और अनाचार का गन्त
 सन्धिया का साया स्वयं मानव का जागना
 जीवन तथा पर जब फूटगा
 अपना अस्मत्पत्ता और निरुसाह का चिन्ता
 दूर जब हागा उससे एसातिव अहम का
 प्रतिश्रितमूर्तक पत्रायन की रुढ़ि का
 आत्मपानी का शपथ ।

भाव कवि का है उसा नित की प्रतीति ।

रामधारी सिंह दिवाकर—

रामधारी सिंह दिवाकर का कविता में प्राग्नि युग का अन्तक विचारधारा का तात्पर्य समझना ठीक है। उनके विचारों में 'रिश्ते' के भावों तथा धर्म और धर्म के भावों के प्रभाव प्रभावों का साथ साथ मानवजाती के विकास के विचारों में

भी महत्व रखा है। यह भारता उारी तीन कुमुद रेति न जा गनका सिम न
पत तथा त्ति की आति सपहा म भी विकसित हुई है। कवि का प्रगतिशील दृष्टिकान
यथाथ न नर न्या की अभिव्यक्ति धारणा है। अभिन्न मनुष्य चारन कविता म कुट
अन यहा पर उाहरणा प्रस्तुत किया जा रहा है या रिाहरन नरनाथ विा
का परिनामन है

हाथ रे मानव विपति रा नाव !
हाथ रे मनुपुत्र अपना जाव ही उपहाव !
प्रकृति की प्रच्छन्ना गो जीव
मिधम आकाश तन गवता रिा भयभीत
मृष्टि का निज बुद्धि स करता दुआ परिभय
चीरता परमाण की सत्ता असीम, अत्रय
बुद्धि न पवमान म उरता दुआ असहान
जा रहा तू किम दिशा की आर का विग्णाय ?
नय क्या ? उद्भव क्या ? क्या जय ?
यह नही यति जान ता विजान रा नम न्यय !
मुन रहा आकाश चर ग्रह तारका वा ना
एक छाती बात ही पती न तुसको याद ?

शिवमगत सिंह मुमन —

शिवमगत सिंह मुमन की प्रारम्भिक कविताओं म छायावादी प्रभाव न पन
स्वरूप प्रम भावना की ही प्रधानता है। उनकी परवर्ती रचनाए प्रगतिशीलतास प्रभावित
हुई। उत्तरवार्तीन रचनाओं म त्रित्वारिता का समावेश हुआ है। उनकी रस रणी
की रचनाए विनय क आह्वान म युक्त है और उनम भी राष्ट्रीय स्तर पर समाज
वादी विचारधारा का समरन मितता है। पर आर्यो गता मरा शीवक उनका काव्य
सग्रह इन मामा य प्रवृत्तिया से पृथक सामाजिक यथाय क धरातन का स्था करती
रचनाओं स युक्त है। कवि का जीवननशन इन कविताओं म एक सुस्पष्ट रूप ग्रहण
करता प्रतीत होता है। शन संगीत एव चित्रात्मकता भी उन कविताओं की विशेषता
है। एक उदाहरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

नजाओ मत इसी स
भक्त क भगवान पतत है।
इसी क जागरे दिन रात
मूरज चाण जनत है।
सितारे टिमटिमाते और
घरने फूट पतत हैं

निगा व गह-गुम्फत वध
 सहसा छूट पडत है।
 जनन का माधना ससार न
 सन्धी नहा हाती
 मयुर मु हान की कामत
 बुकात जात्र व माता ।
 न जिन्न आदि न है वाग
 बयवा अन्त न बाही
 तुम्हार मनह की दा पू
 जीत का बहुत काका ।

कदारनाम अग्रवाल—

कदारनाथ अग्रवाल का नामक बाप का नामक संग्रह में प्रकाशित कविताएँ
 मुख्यतः व्यक्तिगत अनुभूति प्रधान हैं। इनमें जो प्रगतिशील भावना प्रधान रचनाएँ हैं
 उनमें यथावत् दृष्टिकोण की प्रमुखता है। छायावादी का भाव स्पष्ट प्रभाव इस संग्रह
 का अनेक कविताओं में मिलता है। युग की गंगा नामक काल्पनिक यथावत् की
 जावन शक्ति व विचार में अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें कवि की कल्पनामूलक भावनाएँ
 भावनापरक जागरण प्रकृत कर ली हैं। इसमें छायावादी कविता की भाँति कवि ने
 प्रकृति का मानवाकरण किया है परन्तु उसकी पृष्ठभूमि में जन चेतना के जागृता की
 भावना है। यत्र-तत्र प्राचीन परम्पराओं की अद्यतनता एवं धार्मिक आत्मिक भावना
 जाति के प्रति भावनामूलक दृष्टिकोण मिलता है। यह संग्रह कुछ प्रमाण गानों भी हैं
 जिनमें सामूहिक जन चेतना के जागृता के स्वर वाजते हैं। कराई का गाना गावक
 रचना का कुछ भाग यहाँ उल्लेखनीय प्रस्तुत किया जा रहा है

हरक तार सात का बजाए चन
 बजाए चन बजाए चन बजाए चन'
 हजारा जानना का चन
 हजारा जोरता का दन
 हजारा वातका का चन
 वडकनदक न है बिकल,
 नबीन जाग जिन्गी जगाए चन
 जगाए चन, जगाए चन जगाए चन ।
 सभा का मन गुनाम है
 सभा का मन गुनाम है
 सभा का मति गुनाम है
 सभा की मति गुनाम है

गुनामिया रे तिहू का मिठाण पन !
मिठाण पन, मिठाण पन मिठाण पन !

नागाजन—

नागाजन का नाम भी हिंदी की प्रगतिवादी वाक्य प्रवृत्ति व अतन्त विषय रूप में उत्प्रेरणीय है। नागाजन व वाक्य में साम्राज्यवाद व विच्छिन्न आत्मा मित्रता है। वनमात परिस्थिति व प्रति शक्ति विच्छिन्न की भावना व साथ साथ साथ व माध्यम से उस परिवर्तित कर देने का प्रारम्भ जारी रखा है मित्रता है। समवादी जन समस्याआ जिनमें सामंतवादिता पर दली से या की समस्या भी है तथा दली साथ साथ वपव और श्रमिक वर्ग में सम्बंधित समस्याआ से भी प्रारम्भ नागाजन की कविता में मित्रता है। दूसरे में यह कहा जा सकता है कि नागाजन ने समवादी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था व विविध रूपों का अध्ययन करके नये समाज की रचना की रूपरेखा निर्मित की है। इन में 'वापस' प्रयोज्य स्थिति का रवि 'नामा' मुझे साम्राज्यवाद की विभीषणा और विच्छिन्नता व रूप में चित्रित करता है। इस दुष्प्रस्था व प्रति कथार यम्प जपन मार तापपन व साथ नागाजन की कविता में विच्छिन्न मान है। कछ उन्नाहरण यहा प्रस्तुत किया जा रहा है

लोह पुरुष क प्रखर परप उगार
जाह नहर ! बाह नहरु !
वाह तुम्हारी यह अपनी सरकार !

किया खूब है तुमने रजवाजा का जीर्णोद्धार
नई नहा है नये सिर में गनी दुई है
खूब तज है धार

राजप्रमुख चूमा करत है एक दूसरे की नब्बी तलवार
सूयनश की चद्रनश की टूला में से फट रही है नई कापों ।

कही धाठ भूचान कहां पर कहा जकान कही बीमारी ।
महागाइ की क्या नजीर दू माना दुपट सुता की सारी ॥
भूखा मरो चबाजा पत्ती भगर जन्न का नाम न लेना ।
कहा न तुम भी पकड़ जाओ कहां सफाई पन न देना ॥
सुर बदना नीडर लागे का हम सत्र की सीख दे रह ।
चचा भतीजा की पी बारह खद ही सब कुछ हटप न रह ॥

सुरभित चीनायुक फटाकर राखा पर धूला पर
दशकान का ध्यान हटाकर चल रहे हैं झूठे पर

बजी, धय हा कवि काकिल तुम
 आज नही तो कल अवश्य ही नदनान म भाग लगी
 भस्मसात हान वाला है नीड तुम्हारा
 काम जाएगी स्वण निरण की जाना
 पराशूट बना तना प्रिय,
 डना म रह गई न तावत
 उड तो क्या सकन हो ?

त्रिलोचन—

आधुनिक युगीन प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्ति व जगतगत कवि त्रिलाचन का नाम भी उल्लेखनीय है। त्रिलोचन का सर्वप्रथम काव्य-संग्रह धरती भीषक से प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह में जो कविताएँ मिलती हैं उनमें सामाजिक चेतना और भविष्य में जास्था के सन्त निहित हैं। सपन की कामना और नथप व फनस्वरूप परिवर्तित नवममाज का उल्लेख अभिजापा की भावना भी इन कविताओं में मिलती है। कवि का विचार है कि परिवर्तन समाज की एक अनिवार्य आवश्यकता है और उमी के फनस्वरूप समाज का नव निर्माण ही सना है। परिवर्तन की प्रक्रिया कतिन हान न वारण कवि त्याग और बलिदान के लिए भी प्रस्तुत है, क्योंकि वह जानता है कि धरती का पाडा उसका बलिदान से ही घात होगी। इस संग्रह में कवि के एक गीत भी संग्रहीत हैं जो प्रकृति चित्रण का मोहक रूप प्रस्तुत करत हैं। त्रिलोचन के काव्य के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

विगुन बजाओ और बड़ चना
 यह सम्मुख म्यान पडा है।
 मानवना के मुक्तिदूत तुम
 कौन तुम्हारे साथ अडा है ॥

—
 प्रिय मैं जतधर जा धरती को
 दुधो दयकर तप देय कर
 मातल छाया बन छाऊँ।
 उसका रुधा-मूया आचन
 हरा मरा कर दन व हिन
 गर-गर जाऊ मि मि जाऊँ ॥

महेन्द्र भटनागर—

डॉ० महेन्द्र भटनागर की कविताएँ प्रगतिवादी त साधुसुख दे। उनके अभिमान 'त्रिलोचिपा' दूटवी शृंगलाने ठारा के गीत नई चेतना' बल्लता युग मपरिया बिहान तथा सठरण' जालि काव्य-संग्रह दय कलि म उति-गिउ किय जा सकत है।

छायावासी के तमाम अन्तर्गत अति विचित्र प्रतिक्रिया के साथ साथ आर्त्तित जन रचना के जागरण सामाजिक गमन के चरण के साथ साथ समाज की रचना के विषय जन आवाहना तथा सामाजिक स्वर का आगमन का प्रथम दृष्टि का प्रथम मिलता है। इसी रचना के कुछ उदाहरण यही प्रस्तुत किए जा रहे हैं

धूप के दिन

एक रवा अगणित

धरा पर याति म डबी

सरन उजवी हसी हंगत पूग

आकर र म ।

उदारन रगा रहे जायात्र—

पुनर्निर्माण करा पुनरुत्थापन करा

चिर छडित नष्टप्राय मस्मृति का

आदिम युग के आदर्शों का ।

वीत वर्षों के रीते पट

तम के पट पर विगत युगों की

सम्भ्रता बला म्लान आज

ढह गया महान पुरातन ।

जीवन सत्या की निधि धन गई अरे

फिर स बुझ दीप को आज जनाओ

मानवता की उस दबी राह को

खोदो (खो दो) ।

महत्व—

आधुनिक युगीन हिन्दी का ये की प्रगतिवाणी प्रवृत्ति के अंतर्गत इन कवियों का उल्लेख ऊपर किया गया है उनके अतिरिक्त भी अनेक कवि ऐसे हैं जिन्होंने इस काव्य प्रवृत्ति के विकास में योग दिया है। उनमें से कुछ का उल्लेख अन्य काव्य प्रवृत्तियों के संदर्भ में प्रस्तुत किया जायगा क्योंकि उनके काव्य में अनेक विचारधाराओं का भी प्रमुखता से समावेश मिलता है। जसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है प्रगतिवादी का आरम्भ भी एक प्रकार से प्रतिक्रियात्मक रूप में हुआ था। यह जानान भी हिंदी साहित्य में बहुत विवादास्पद रहा क्योंकि यदि एक ओर अनेक जातपंथों ने इसकी महत्ता की घोषणा की तो दूसरी ओर अनेक लेखकों ने इन विशेषों साहित्यिक विचारधाराओं का अनुगमन मात्र बताया। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवादी उन कवियों के द्वारा एक नई काव्य शैली के रूप में आरम्भ किया गया जो संकुचित अर्थ में आज प्रगतिवाणी नहीं माने जाते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि प्रगतिवादी की सार्वजनिक

स्थिति और पच्छुभि जा कुछ भा हा परन्तु हि । साहित्य क भत्र म उसका जम एन युगीन आवश्यकता क रूप म हुआ । इसक जनक कवि छायावती तथा प्रयागवाी कान्य धाराका क क्षेत्र म भी प्रतिष्ठा रजन है । (प्रानिवात् क अनुसार साहित्य का निष्चयात्मक रूप म सामाजिक उपयोगिता का भावना म मुक्त जाना चाहिए । विगुड कल्पनात्मक एव आत्मपरक काव्य धाराका का प्रगतिवात् विराय करना है । इस काव्य प्रवृत्ति म अधिकान कविशा न सामाजिक व्यवस्था म परिवर्तन का आवाज का प्रभाव शापी बनाया है क्यानि उनक विचार म समकालीन सामाजिक व्यवस्था शापक का क लागू क हाय म है जोर कृपक तथा श्रमिक-वर्गी का नयानक रूप म गाथा भी रहा है । सामाजिक मयाय का जो रूप प्रगतिवाती कविता म मिलता है उसका आधार यहा भावनाओं हैं । दूसरे पाटा म, यह कहा जा सकता है कि उमकालीन सामाजिक समस्याओं क प्रति जागरूकता अधिकान प्रगतिवाती कविशा म मिलता है । साम्प्रदायिक भ्रम म भी जा समस्याण विद्यमान था उह भी प्रगतिवाती कविशा न उठाया । वगान क अफान पर भी कविताय लिखी गया । स्वयं यम का भावना का रसा करत पुण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग की आवाज न उगाया । पूजावात् क विरुद्ध उग्रमग सुभा प्रगतिवाती कविशा न नार लगाय क्याकि आविक वपम्य जोर आविक शापण का मून कारण पूजीवाती व्यवस्था ही है । साम्प्रवात् जोर मासमवात् का वचारिक आधार ग्रहण करक प्रगतिवाती कविशा न अपन कान्य म बोद्धिकता का भी समावा किया । इन कविशा न जनक कविताण प्रयाग-गीत का गीत म लिखा जा मुम्यत जन जाहान क स्वर स युक्त है । सामाजिक व्यवस्था का पम्परागत और अधहान रुद्धिया क विरुद्ध भा इन कविशा न आवाज उगायी । स्वभावतः प्रगतिवाती कविता की भाषा जन-सामान्य क अधिक निकट है । इस अधिनायक सामान्य वाच चान क ही शक्त प्रयुक्त किय गया है । मुक्त छन्द की इस कान्यधारा क जयिशा कविशा न प्रयुक्त किय हैं । यद्यपि शिथिल महायुद्धांतर काल म हिन्द काय क क्षेत्र म प्रयागवात् क रूप म एक अन्य कर्क काव्य प्रवृत्ति का मूलपान हुआ और उस भा व्यापक आधारभूमि प्राप्त हुई परन्तु प्रगतिवातता की भावना और तत्व का साहित्य म समावा बनमान पु ठक मिलता है ।

आधुनिक युगीन प्रयोगवादी कविता की प्रवृत्ति

आधुनिक हिंदी साहित्य में इस समय उत्तम प्रगतिवादी साहित्य का प्रयागवादी नाम दिया गया। बीसवीं शताब्दी में हिंदी कविता में मात्र मंत्रिणा का आशय न होकर उन सब का मूल में दूनाप्रति रूप में प्रतिप्रियावादिता तथा प्रयागवादीता विद्यमान थी। परन्तु इस प्रवृत्ति को प्रयागवादी नाम द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् मंत्रिणा दिया गया। मंत्रिणा १९४३ में सच्चिदानन्द त्रिपाठी द्वारा वात्स्यायन अथर्व वेद में मंत्रिणा का अर्थ प्रयागवादी का प्रकाशन हुआ तब इस का यह प्रवृत्ति की मंत्रिणा का रूप में विचार चला हुआ। तब मंत्रिणा का प्रकाशन के उपरांत दूसरे और तीसरे मंत्रिणा का प्रकाशन हुआ और इस प्रकार मंत्रिणा का यह प्रवृत्ति का अर्थ मंत्रिणावादीता धारित हो गया। प्रयागवादी कविता भी स्वतंत्र छायावादी के विरुद्ध एक प्रतिप्रिया का रूप में जमी कही जा सकती है। इसमें छन्द विधान शब्द योजना तथा जलवार निरूपण का साथ साथ भावात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि में भी नवीन प्रयोग मिलते हैं। छायावाद तथा प्रगतिवाद दोनों की भिन्नता मुख्यतः इस कारण है कि जहाँ उनका पीछा एक विशिष्ट चिन्तन भावना जवना जीवन दर्शन की पृष्ठभूमि है वहाँ प्रयागवादी का यह प्रवृत्ति के पीछे रहकर उसकी अभिव्यक्ति का शलीगत विशेषता ही है। प्रयोगवादी का प्रवृत्ति कवि अथर्व वेद का यह प्रवृत्ति का मंत्रिणावाद कहने का विरोध करते हुए निम्ना है कि प्रयोगवादी का वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहते ही हैं न प्रयोग अपने आप में इच्छा या साध्य है। अतः हम प्रयागवादी कहना उतना ही सावक या निरर्थक है जितना कवितावादी कहना। यह विचार अथर्व वेद दूसरे सप्तक की भूमिका में प्रकट किया है।

प्रयागवादी के स्वरूप तथा परिभाषा के विषय में विभिन्न विद्वानों ने विविध प्रकार के मत प्रकट किये हैं। कुछ लोगों ने प्रयोग का यह मुख्य उद्देश्य बताया है कि वह नवान मंत्रिणा की अभिव्यक्ति करना है। मंत्रिणा दूसरी विशेषता यह बताया गया कि यह छायावादी का यह दर्शन की कल्पना से हटकर यथावत्ता की ओर अग्रसर हुआ है। इन आत्म सत्य का अवलोकन बताया गया और वस्तु तथा शिष्य दोनों का अर्थ में साधारणी

करण की मौलिक आवश्यकता जनाया गया। प्रबलत-काव्य से तब प्रारम्भिक दस वर्षों में जो प्रयागवाणी काय रचा गया उससे मूल में मात्रम के तब प्रयाग भी। इन प्रयागों का उद्देश्य भावाभिव्यक्ति का नई प्रगाति का काव्य में समावेश था। विचारात्मक शक्ति से प्रयागवाणी कवियों में पर्याप्त पारम्परिक अभिप्राय हान के बावजूद भी अभिव्यक्ति शक्ति की शक्ति से समता मिल रहा है।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अनय'—

प्रयागवाणी के अत्यन्त कवि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अनय' का नाम इस प्रवृत्ति के कवियों में सप्रसन्न अधिक महत्वपूर्ण है। उनका कविताश्रय अनक मध्य प्रकाशित हा बुक है जिनमें भगवद्गीता चिन्ता इत्यन्तम हरा घान पर धन भर' बावरा अद्वैती तथा जगन्मय के पार पार शक्ति के नाम विद्यमान रूप से उत्पन्ननीय है। अनय की प्रारम्भिक कविताओं में प्रकृति जगन्मय की शक्ति से कइ विपत्तय मिलती है। गीतात्मकता नया छत्र याज्ञना एवं काव्यानुभूति का समन्वय का साथ साथ मयीतात्मकता, मुरता और कतात्मकता शक्ति विपत्तय भी अनय के काव्य में विद्यमान है। तब मन्त्र के सप्रतीक अनय का रचनात्मक व्यक्तित्व विपत्तय के अहम का भावना पर आधारित है। अहमका

नूतन प्रचलित स्वर में
जाननाया आज तुमका पुकार रहा म
रणाद्यत दुर्निवार लनकार रहा है—
कीन हूँ म !
तरा दीन दुखा पन्थित पराजित
जाज जो किन्द सपन्थ जनात का जगा
म से हम हा गया ।
म हा हूँ वह पन्थित रिरियाता कुता
म हा हूँ वह मानार पिथर का प्राथी मुन्ता
मैं वह छपर तन का अह दीन पिथु भिन्व ।

यौन प्रकाशों और नवीन माध्यम से शक्ति में भी तब उत्पन्न में तब अनय का कविता शक्ति रचना है। हरायास पर तब अनय का मध्य में अनय न कुछ हराया अनय कविता ना विद्यमान है। ये कविता उन रचनाओं में भिन्न है जिनमें मनाभावा का गहन अभिव्यक्ति से तुल्य विपत्तय हुआ है। इनका विपत्तय अनय का हराया पुनर्कायन ही है। एक अहमका इस प्रकार है

✓ अन्ता र जन्ता
हाता न मनुष्य मैं हाता करमकता ।
हय कम प्रायन उ उन्नतता न पन्ता ।
चाहता न नाम कुछ

सांगता त नाम कुछ
करता त नाम कुछ बेटा मिठ ता—
अ ता र अन्ता ।

जय त जयन्तु तथा बावरा अन्ती तामर संपदां म जा कविगण प्रशान्त
हुई है उनमें अजय की कविता को गाना य विगताआ न गाय गाय आज रागाण
एमी भी है जा मुता छ त त म त्रीत प्रयाग है। इनमें ज याचना का प्रौढ़
रूप नही मिनता परतु फिर भा भाशातिन्वित की विगता ग य भी मुता है।
इत्यन्तु स एव उदाहरण ना प्रस्तुत किया जा रहा है जा मुता छ त्री श्लि ग
एक कमजोर रचना है

मरा ध्यान
धधना सा पडता हुआ
गया
मनान व विनारे यात्र पटरी व उस मीनसिरी व
गाय की आर
जिसके नीचे की छडती घाम म बठ नर
एक लिन दा आने की विनायगी मनाइ री वर
घाई थी ।

जय की कविताए प्रयागवाणी विगताआ का परिचय तन व साय साव उसक
विकास की भी छातक है। यदि एक आर उनमें प्रवृत्ति वणन व तात्र रूप मिनत है
तो दूसरी जोर योन प्रतीक और सौ दयबाध व नय उपमान भी यदि उनमें एक आर
यकिनवाणी विद्राह व जन्म की भावना विद्यमान मिनती है ता दूसरी आर मनाभावा
का सफन चित्रण भी मिनता है यदि उनमें एक आर हुनके फत्रर विचारा की सरत
जमि पजना मिनती है ता दूसरी ओर अनास्था स आस्था की आर बड़न का गम्भीर
सकत भी यदि उनकी बरत सौ रचनाए छत्तात्मकता गीनात्मकता तथा मधुरता की
दष्टि म महत्वपूर्ण है तो दूसरी आर एसी रचनाए भी है जा अभि यवित की क्वात्म
कता की दष्टि स विशेष महत्व की है। अनास्था क स्थान पर आस्था की ओर बरने का
मकत वचारिक तीव्रता स जिय रूप म अजय की कविता म मिनता है उसका एक
उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

तुम तुम हो म क्या हू ?
ऊँची उडान, छात्र कृतित्व की नवी परम्परा हू ।
पर कवि हू—एप्पा दाता
जो पाता
हू अपन का मिट्टी कर उस गजाता चमकाता हू ।
पुष्प सा सलिन सा, प्रसात्र सा

अनिवच जाह्राद सा तुगाता ह
क्याकि तुम हा ।

गिरिजा कुमार मायूर—

प्रयागवाणी काय प्रवृत्ति क अन्तगत थी गिरिजा कुमार मायूर का नाम भी उल्लेखनीय है। प्रयागवाद क आरम्भिक काल म ही श्री मायूर की कविता म प्रयोग शोचता क तत्त्व उभित विषय जाना जाय। छन्द प्रतीक तथा उपमाना क धर्म म उनक प्रयाग सफल कह जा सकत हैं। श्री मायूर न अपन एक निबन्ध म प्रयागवाद स सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं। 'अहान विद्या है प्रयागीन कविता का क्या अर्थ है ? काय म प्रयाग जोर अवपण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी ? उसका आरम्भ और विकास कय हुआ ? आज उनका क्या रूप है ? प्रयोग साध्य है या साधन ? यदि साधन है तो किस चीज क ? किस का अभिव्यक्ति क ? हिन्दी कविता की प्रगति म क साधक हैं या बाधक हैं ? क्या प्रयाग का काइ स्वतंत्र वाग्य है या सक्ता है ? क्या यह वाग्म्य म रूपवाग्य का ही एक धारा नहीं है जो प्रयाग और प्रतीक की आत्मा म प्रगतिशील कविता क विरोध म खड़ी हुई है और रूप प्रकार तथा माध्यम पर आर दवर यथाय वस्तु-भाव और जीवन की वाग्म्यविकृता क बीच दीवार बनना चाहती है या कि माध्यम ' गता गित्य क प्रयाग आवन-श्यों काव्य क हित म भा है ' श्री मायूर की कविता म 'परवत्त म स वृत्त स प्रश्ना क उत्तर मिल जात है। सन १९११ म उनक काव्य का प्रथम संग्रह मञ्जूर प्रकाशित हुआ था जिसम मुक्त छन्द प्रतीक और उपमान क नय प्रयाग थ। उनकी आरम्भिक कालीन कविताओं म छायावाणी काव्य तत्त्व ही विद्यमान था। सांगी भाव और तत्त्व क साथ-साथ प्रकृति चित्रण की शक्ति स भा उनकी अनेक कविताओं सफल कहा जा सकती है। विषय तत्त्व का शक्ति स अर्थ पर बस वषा शीघ्रक कविता का नाम उल्लेखनीय है। नवीन उपमान एवं यथायवाग्य शक्ति भी इनम मिलती है। कवि का दूसरा संग्रह नाश और निष्ठा है जिसका प्रकाशन सन १९१९ म हुआ था। य कविताओं मुख्यतः नय छन्दों जोर नय उपमाना क प्रयाग का शक्ति न उल्लेखनीय है। श्री मायूर क सासुरकाव्य संग्रह रूप क ध्यान म भा उपमान साया छन्द म सातात्म्यकता जाति क धर्मता म सफल प्रयाग मिलत है। विनात्मक प्रतीक गती भा उनकी कविताओं का एक विशेषता है। श्री मायूर की कविताओं क कुछ आह्वान नाथ प्रस्तुत किए जा रहे हैं

जब म बसत

किन्तु सहस्र वर्षों की ममो बना जाया

बहिउ, अवाक

य गिरि सरीखा बादल नया हवा चपटा

रामा का पाद टूट रहा

य मुग उड़ाता न आता वर्षों पाद

जादा तो मध्या का वह अंतिम प्रहर
 रात मन्त्री चारदी म धीरे रानी जाती
 जब नानिदास तो गगरी म
 उन गीता की छाया म मैं बेटा था,
 पहनी भी अंतिम बार बही
 जग न जिसका मित्रा पर है पक्षिता
 वह चित्त न मुन पर म उनका
 उसको ही पूरा करने म
 मुनको भी पूज न हान ता यत्नान मित्रा
 मैं चरता जाऊंगा इतिहासा व ऊपर
 यद्यपि पाषाण हुआ जाता ।

— —

चाद हमती

हवा बहती बटोनी

चाल्नी पानी हुई है ।

ओस नीनी

चाल्नी डधी हवा सुधि गध जाती
 याद क हिम वक्ष स आचन उडाता
 चाद क जब गान बीसा आइना म
 मोम की सित मूर्ति सी गत जायु आती ।

— —

बवार की सूनी दुपहरी

श्वेत गरमीन रूप स बादना म
 तेज मूरज निरुनता फिर टूब जाता ।
 घरा म मुनसान आलस ऊधता है
 वकी राह ठहर कर विनाम करता
 दूर सूनी गली क उस छोर पर स
 नीम नीच खनत कुछ बानको की
 मिरी सी जावाज आती ।

रामबिलास शर्मा—

प्रयागवादी का यद्वारा क जा कवि तार सप्तक म सग्रहीत किय गये व उनम
 से अनक एसे है जिनके काय म प्रयोगशीलता के तत्व विद्यमान होन के साथ साथ
 समाजवादी यथाथ की प्रवृत्ति प्रधान थी । एक कविया म डा रामबिलास शर्मा का

नाम विशय रूप म उल्लेखनीय है। उनक काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

ईश क सुवर्ण सिंहासन के पाशव म
उड़ चल पुष्पक विमान पृथ्वी की आर
करत हैं पुष्प रश्मि
नष्ट करते हैं नर-सर्पि कर अग्नि वष्पि
दुग्ध नशस आवतापिया क ध्वंसकारी वायुयान
हरे हरे खता क
काल-कान लाहूँ क कल कारग्राना क
नीचे कही दवा था मूकप एक चुपचाप
हडिडया का ताप ।

नेमिचन्द्र जन—

नेमिचन्द्र जन न प्रयागवाक क आरम्भ म जिन कविताशा की रचना की उनम
रूमानीयन विशय जनकता है। कुछ कविताशा म व्यष्टि और समष्टि का ज तद्र द भा
व्यक्त हुआ है। नवीन परिस्थितिया म उत्पन्न मन स्थितिया का भी अच्छा चित्रण
उनम मिलता है। कही-कहा पर कतिपय प्रतीकारमक चित्र भी मिलत हैं। उनके काव्य
का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

देखता हूँ दशमी का पीना सा चाँद
कही भागता
दोगता नहा है मुख
उसम किसी का मुख धिनता उत्फुल्ल
किसी मुग्ध भावना की मधु-आभा स दीप्त ।
लगता है यामा स पादित निस्तज
मुख काई
मुख पूरता है अपनक निस्पद

गजानन्द माधव मुक्तिबोध —

गजानन्द माधव मुक्तिबोध का काव्य बौद्धिकता एवं गिन्यगत उपनिधि का रश्मि
स तार सप्तक क कविता म विगिष्टता रचना है। इनकी बहुत सा कविताशा म नवीन
परिस्थितिया के जनस्वरूप उत्पन्न मन स्थितिया का प्रभावगानी चित्रण किया गया है।
कुछ कविताएँ एसी भी हैं जिनम व्यक्तिसागी रश्मिकाण प्रधान हात रूप भी समाववा ।
यथाप की प्रवृत्ति स्पष्टत अनिव्यक्त हुई है। इनक कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

बह परस्पर की मृदुल पहचान जंठे
अतल गभा भव्य सरती हृदय के निर्र कूल पर

मृदु स्पर्श कर पहला करती गुंथाम उग विगत
 दीप छाय श्याम र नाय बरगं दू। वो
 जिसन त त आगि आना प्राण
 जिसन मून पथी त हु प म र हा आय उगत जाय ।

तर रक्त म भी मत्व का अन्वेष
 तर रक्त म भी घणा जाती तीव्र
 तुलसी दण्ड मितनी उमड़ जाती पाघ्र
 तरे हाम म भी राग दृमि म उग्र
 तरा नाम तुल पर तुल तुल पर ध्यय
 मरी -वाल जन की -वान हावर ए
 अपनी उष्णता म धा उन अविश्व
 तू है मरण तू है रिक्त तू है ध्यय
 तरा ध्वस नवन एक तरा अय ।

प्रभाकर माचवे—

इसी प्रवृत्ति व अन्तगत डा० प्रभाकर माचवे का उत्तम भी किया जा सकता है। प्रभाकर माचवे की कविता म मुक्त छन्द म नवीन उपमान एवं रिम्ब यात्रना मिलती है। सामाजिक चेतना व जिस स्वर का उनकी कविता म जावाहन है वह जाधु निक निम्न मध्य वर्ग की अथहीन सत्ता की प्रतिक्रिया है। निम्न मध्य वर्ग म याप्त कुटा एक जीवन मध्य की अधिक्ता न उस एक जमानवीम वृत्ति प्राप्त कर दी है। प्रभाकर माचवे की इसी प्रकार का एक कविता उदाहरणार्थ नाच प्रस्तुत की जा रही है

नाच तल तकड़ी की फिर म नग घन म
 मकड़ी व जाल स कौलू के बन स
 मका नही रहने को फिर भी ये घुन स
 ग द अधिघारे जीर बरू भरे दरवा म
 जनत है बच ।

बीसवी सदी न हम क्या दिया
 मोटर रल विमान वातिया
 यह बेतार सवार चित्रपट
 कागज मुद्रा आर्थिक सकट
 गति अतिशयता वगानुरता
 कही प्रपीचन कही प्रचुरता ।
 बीसवी सदी न यही दिया

मानव को मानव का भक्षण
 मानव को निज मरण का
 परवाना सबका बाध दिया
 जीवन-मरण बड़ा यहाँ तक
 कि हाथ दिया उस हाथ दिया
 दक्षा न पुष्प जयवा पातक
 जिसने मारा बस वही जिया ।

भारतभूषण अग्रवाल —

भारतभूषण अग्रवाल के काव्य मद्रहा में छवि के बदन जागृत रहा तथा मुक्ति माग आदि के नाम विाप रूप में उल्लेखनाय हैं । ये मद्रह उनकी कविता में आन वान विभिन्न माड बनाते हैं । इनमें न मुक्ति माग का रचनाएँ कवि के आस्था वाली श्रुतिकान की अभिव्यक्ति के विचार से विाप रूप में महत्वपूर्ण कहा जा सकती हैं । समाजवादी यथाय का प्रकृति के साथ साथ नमाना नावना भी समवित रूप में उनकी कविता में उपन घ हाती है । आस्थाव दी श्रुतिकान के विचार से इनका कविता का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

जात्र ही मैं जान पाया हूँ
 कि कवन में अरना हा नहीं हूँ दुखी चिंताग्रस्त
 वरन आज समस्त जीवन-आन
 दड हा उस विषम बाधा से विवन है फूटन
 पर घात्रन के लिए
 व्यस्त है गभार जावन मरण के सुग्राम में
 मुक्ति के उस माग में हम-नुम अवन ही नहीं
 हूँ हमारे साथ ताया कराडा अरवा अगम्य
 स्वर्ग और विदश के भाई

भवानी प्रसाद मिश्र—

प्रयागवाणी कविता के अक्षर में दूसरे सप्तक के प्रकाशन वान सन १९५१ में एक नया चरण आरम्भ होता है । कवचित्ता तथा बोद्धिगतता के विचार में तान सप्तक के कवि भन हा शिल्पिय रगत हा परन्तु अभिव्यक्ति आस्था केपनामकता एवं शिल्पगत प्रयागवाणी शिल्प में उस सप्तकन के जनक कवि महकवू हैं । भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएँ सहज अभिव्यक्ति सरन भाषा एवं तागी व्यंग्यता के से के कारण उल्लेखनाय हैं । उनका गात करान कविता का कुछ नया उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है

श्री हां हूँ न गीत बनता हूँ ।
 मैं तरह-तरह के

गीत बचता हूँ

मे सही कितिम त गीत बचता हूँ ।

जी मार गिर नाम बाराङ्गा

बनाम गरी हे नाम बाराङ्गा

तुछ गीत निम्न हे मरी म मा

तुछ गीत निम्न हे मरी म मै

यह गीत मरुत सरर युवावगा

यह गीत पिदा का पास बचावगा ।

जी पहन बुछ नि मम गमी मुपका

पर पाछ पीछ जतन जगा मुपका

जी नागा म ता बर निया रमान ।

जी आप न हा मुनकर यारा हेरान ।

मैं साच समपनर जादिर

जपन गीत बचता हूँ

जी हा हुनूर मैं गीत बचता हूँ ।

शकत मावर—

हमरे सप्तक की उत्थीयमान कवियित्री शकत मावर का नाम विापन सांगी जीर रागात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । जबि यति की सरचना नी तनरी कवि ताजा की विशयता है । उदाहरण के लिए जानबूझकर नहा जानती शापक कविता यही प्रस्तुत की जा रही है

आज मुन लगता ससार पशो म डूबा

बया ?

जान बूझकर नहा जानती ।

आज मुन लगता ससार पशो म डूबा—

मा न पाया अपना धन यो

बन्त जिना का खाया

बहुत बडी बवारी नडका को मुघर मिना

हा दू र्हा

मन भरी दीवारा पर राजा न फरा हो चूना

किसी भिखारिन के घर म बन्त दिनो के

पीछ म न जना हा चूटा ।

बूढ़ की काया म फिर स एक बार

यौवन हो कदा ।

पकड़ गया था चोर अकेले कूचे म जो

किसी तरह वह कारागृह से छूट गया हा,
 या कि अचानक किसी वियोगिनि का पति
 लौटा
 उसी तरह
 बाज मुख लगता मसार खशी म डूबा
 क्या ?
 जान बूझकर
 नहा जानती ।

हरिनारायण व्यास—

हरिनारायण व्यास की कविता कल्पना के आधिक्य एवं प्रकृति वपन के समस्त चित्रा से युक्त है। न्यात्मक प्रवाहपूर्वता में उनकी कविताओं को एक विषयता है। इनकी कविता में कहा कहा पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे जाध्यावाणी स्वर टूट रहा गया है और सदहोनीता की भावना तबित हाती है

इस पुरानी जिन्दगी का जन्म
 जन्म होता है नया मन

जल रही प्राचीनतायें बाध छाती पर धरण का एक भाग
 इस अधर की पुरानी जाड़ना का छाड़कर
 आ रही उपर नय युग की किरण ।

समस्यर बहादुर सिंह—

दूसरे सप्तक के एक महत्वपूर्ण कवि समस्यर बहादुर सिंह हैं। इनकी कविता में उद्गमनी और ताकसमीत का प्रवाह भी यत्र-तत्र मिलता है। अनन्य स्थिता पर अभिव्यक्ति का उपसर्पण घटकन की स्थिति में आ जान के कारण उसका सरचना भी अपभासित कम हो गयी है। कहा कहा पर कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कामन कल्पनाओं और नयान विम्ब विधान के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यथाध्यावाणी स्वर का प्रमुखता न रहे इस सप्तक के कविता में एक विचित्र व्यक्ति के मुख बनाना है। इस स्थिति में नवीन विधान ही उनका कविताओं का प्रमुख विषयता है। दूसरे सप्तक में उपर कामन भावक कविता का अहरणन नाच प्रमुख का जा रहा है

तुम गिरा
 जा
 गुरु गया या गहन
 छायायें तिम ।
 अब
 हा उगा है मोन का डट

और भी मीठा

दुख उठा है बरुण गागर का हूँ मैं

साँत कामन और भी अपनाज का आना

डालती है मैं यम का मुँह पर।

नरेश मेहता—

नरेश मेहता स्व-रचनावादी कवि हैं। जातिवादियों और साम्यवादियों द्वारा कविता में मुख्य गुण हैं। उनकी रचनाओं में एक नया अनुभूति की परागिता है जिससे नारण अभिव्यक्ति में साक्षात् तदा जा पाया। नारा अक्षय है कि नरेश रचनाओं में तदा तदा पर सोच्य व रूम्यमय गता मिला है जिससे रामाई व सवन्ता व साथ जम्बित्ववादी पुत्र भा है। नरेश रचनाओं में पारित्रि गुण में मानव-यत्तित्व व विपटा व सवत भी बड़ा रत्न मिला है। उदाहरणार्थ

जिन्की

दा उगलिया मन्दी

सस्ती सिगरेट व जगत खड की तरफ

जिस कुछ नमला म पार

गनी म फेंक दगा।

रघुवीर सहाय—

रघुवीर सहाय की कविताओं में भी अभि व्यक्तित्व गुणवाचक म मिला है। चिन्तात्मकता की दृष्टि में उनकी कुछ कविताएँ अक्षय जन्मी बनी हैं। गद्यात्मकता की प्रवृत्ति उनकी रचनाओं में बहुलता में मिलती है। भाषा की सरलता और बमत्कार युक्तता इनका कविता की विशेषताएँ हैं। मानसिक अतृप्त व का मू में विरचना उनकी कविता में यत्र तत्र उल्लिखित हानी है। आस्थावादी स्वर भी उनकी कुछ रचनाओं में मुखरित है। रामाटिकता का स्वर भी उनके कुछ गीतों में तीव्रतर रूप में मिलता है। एक उदाहरण इस प्रकार है

मुक्ति व सारे नियंत्रण तोड़ डाल
मुक्ति व कारण नियम सब छोड़ डाल
जब तुम्हारे बधना की कामना है।
विरह यामिनी में न पत भर नीद आयी
बयो मितन के प्रात वह नना समायी
एक क्षण हाता मितन में जागना है।
यह अनागा प्यार ही यति है भगना
ता विरह व वह कठिन क्षण भूल जाना,
हाय जिनका भूना मुक्तको मना है।
मुनत हा उच्छ्वास अम्बर मापता है

तारका के पास जा कुछ कापता है
स्वाउ के हर कम्प में कुछ याचना है।

धमवीर भारती—

ज धमवीर भारती का प्रारम्भिक कविताओं में रोमानियन के साथ-साथ सामाजिक चेतना का अनुभूति भी विद्यमान मिलती है। इस दृष्टि से उन पर समकालीन गीतकारों का प्रभाव भी मिला जायगा। इनके कुछ गीत ताजगा का दृष्टि से भी अद्भुत हैं। उन्नीसवीं शताब्दी का भा प्रभाव यत्र-यत्र इनकी रचनाओं पर मिला जाता है। यथाय की कविता अनुभूति भी उनके कान्ध में विद्यमान है। स्वयं कान्ध के जतिरिक्त धमवीर भारती के जहाँ तुलना नामक काव्य-कान्ध में कथात्मकता का बहुतायत के कारण बड़े प्रभावशाली भी जा गयी है। अनेक कविताओं में प्रकृति के माहुर चित्र मिलते हैं। कवि का मानवतावादी विचारधारा बोद्धिकता से मयुक्त होकर उनकी विचार प्रधान कविताओं में मिलती है। कट्टे यथाय का अनुभूत्यात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से इनका कविता का एक उदाहरण मान प्रस्तुत किया जा रहा है

हर घर में सिर्फ चिराग नहा चूट मुनग

उजिन फिर भी

जान के माँ मुनगान अजरा

रह रहे कर धधजाता ३

छप्पर उ छनता आजा जजा

हर जाग

हवा का पर्दा पर छा जाता है

बढ़ जाना है तनकाँ माँ तक तन में

हर घर में मचता हगामा

आतुर के पर दूय बचकों की गल गप

बच्चा का शोक पुकारों

पना का मुनगन ।

जय कवि—

श्रीमुर आन्ध्र के कविता में प्रयाणना जय त्रिपाठी काँति चौधरी मन्त्र बाँध
यायन के आन्ध्रना गिहू रक्तांग दग विद्वयन्व नागदण साँटा तथा सर्वोपर स्वात
उत्पत्ता है। काँति चौधरी की कविताओं विश्व-वाङ्मया का मान्यता और परिपूर्णता
का साक्ष्य हैं। उनका कविता का एक उदाहरण मान प्रस्तुत किया जा रहा है

जब याँ तुम्हारा आता है,

उ माँ में बगर की उत उ आ जाता है।

सदृश

बहु आउ पशु का जग

पीसा सासा गा गया है ।
 एसा सपता
 जग बावन न मरता म जगो ह
 धरती न मानव जहा इहा न मरता है ।
 उन एसाकी महसा म
 मुधि वा परस
 कर्म नर दता है
 जान जगो अनुभूति बिषय मा जाता है
 मे गिहुर सिहुर रह जाती ह
 आठ डूबर
 मधु न निम न सागर म ।

अचरनारायण का ब्रह्मिता म ब्रह्म ब्रह्म मानसिक अ तबिराधा एव परिप्लुत पीसा
 की मूख म ब्रह्मनाजा का जमि यति न है । ब्रह्मानियत न साथ माय बोद्धिजा न
 तत्व मा मितन है । गत्रात्मजा का प्रवृत्ति का ब्रह्मना म समारा भी उनरी ब्रह्मिता
 म हुआ है । इसी प्रवृत्ति न कारण जनक स्वना पर जनरी ब्रह्मिता अभिव्यक्ति की
 दृष्टि स गुरुह और प्रभावहीन हा गयी है । एम स्वना पर भावा म भी अस्पष्टता आ
 गयी है और जय म एन विचित्र सा उत्पत्ताय मितता है । एन उदाहरण यहा प्रस्तुत
 किया जा रहा है

चात्नी सित रान चित्तबरी
 उस भूषण की गजी सतह पर
 छाह स घाहर
 कपाता म धमा या रगता मनहूस अधियारा ।
 जवानक चौक कर बुत छाव म
 दो पख फाक
 या किसी स्मृति न जगुरा पर घा ह
 दूर की महाराव म घसती हयी
 प्रता माशा का पुकारा
 प्यार की अतृप्त यत्ति आत्मा
 जाश्वस्त हा
 वह दण जीवित है तुम्हारा ।

त्रिजयन्व नारायण माही की ब्रह्मिताण अचरनारायण क का य क विपरीत भाषा
 की सरना जोर सगठन की चस्ती की दृष्टि स उत्पत्तीय है । इनरी कुछ रचनाआ
 म बि बास जोर जनास्था का अ तद्व ह भी मितता है । त्रिजयन्व नारायण साही क
 का य का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है जो अभि यक्तिगत सहजता क
 विचार स दष्ट य है

छार स उमनी घग गिरि धारिया म वस गयी
 पत्थरा क बाव साधी वास थाकर वस गयी
 नार म ही जा रही हू यद हमारो वावरा ।
 रस्तिवा की गाठ सा जस प्रधा मन उन गया
 मस्तिवा सा या गया में गज-सा म घुन गया
 स्वरा को वमुध स्वरा का आपहू यह मावरा ।

महत्व—

इस प्रकार स आधुनिक हिन्दी कविता क क्षेत्र म प्रयोगवादी काव्य की जा प्रवृत्ति विकसित हुई है उसका मूल आधार उपर्युक्त बर्णित तीन सप्तरा क कवि ह । जसा कि ऊपर स्पष्टत गन्त बिया गया है प्रयोगवादी नामक यह जा दानन कविता क क्षेत्र में स्वयं गली छल विधान क चयन जनकार धारना एव मवत्नात्मक वगिण्य आदि का आधार तकर विकसित हुआ । प्रयोगवादी कवियान वचारिक दृष्टिकोण म पार्श्वगत कविता की प्ररणा ग्रहण की । मूलत यह प्रग्णा अनास्था क पति एक प्रकार के विद्रोह स युक्त है । इसातिम अधिगत प्रयोगवादी कवि निजा की किसी रूप म जाम्बाजनक दृष्टिकोण का जार उमुध सिजा पडा । प्रयोगवादी जा यह उद्देश्य उस कवन काव्य तव प्रयोग स भिन्न एव जगारक काव्य की काति म प्रतिप्लित करता है । प्रयोगवादी काव्य म जा चौदान वाली प्रवृत्ति विद्यमान है वह उहा कविया सा कवितासा म मितनी है जिन पाठ का, तुम्यल वचारिकता नहा है । ऊपर जिन कविया का उल्लेख किया गया है उनक अतिरिक्त अन्य अनेक कवि एव है जा आधुनिक काव्य की विभिन्न धारासा क विकास म योग द र है । किसी विशिष्टवादी जयवा विचारधारा क प्रति विरोध रूप म जापदोत न रहुपर य कवि आधुनिक हिन्दी कविता क स्वरूपगत वम्प्य का जाउन करत है । इनम अनेक कवि प्रयोगवादी है तथा अनेक स्वतंत्र रूप स गीति छान्य का परम्परा प्रारम्भ कर रत हैं । इन कविया का उल्लेख पथक अध्याय म किया जायगा ।

आधुनिक युगीन कविता की अन्य प्रवृत्तियाँ

आधुनिक युगीन कविता का अन्तर्गत अन्तर्भाव प्रतीतिवाद तथा प्रयोगवादी प्रवृत्तियाँ तथा अनिश्चित अर्थों का अन्तर्भाव प्रतीतिवाद का अन्तर्भाव है। समाज के समय में यह द्वितीय-कविता विद्यो जा रही है उन्मत्त भी यह प्रमुख का प्रयोग का साधन-साधन अथवा धारणाएँ सभी विद्यमान हैं विद्यमान हैं साहित्यिक आन्दोलन भाग्यमय है। बहुधा ऐसा भी प्रतीत होता है जगत् इतना मरिचक विविध विचार धाराओं की मन्त्रालय सम्भावनाएँ विवादास्पद है परन्तु दूरगामी और अतीतनीयता का अन्तर्भाव सम्भावनाओं का युक्त भी जान पड़ती है। दूसरे अन्तर्भाव यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग की कविता अपनी प्राचीन परम्पराओं का विरोध करती प्रतीत होती है इसका साथ ही आधुनिक युगीन का अन्तर्भाव प्रतीतिवाद उन्मत्त विरोधी भावना मान्य होती है। अन्तर्भाव कवि आधुनिक युग में अन्तर्भाव है जो पूरा प्रवृत्तियों का अन्तर्भाव का थोड़ा बहुत साम्य रखता अन्तर्भाव भी मूलतः उन्मत्त अन्तर्भाव है।

बालकृष्ण शर्मा नवीन —

बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविताएँ छायावादी कविता से समानता रखती हैं अन्तर्भाव हैं। उन्होंने अपने एक उत्कृष्टतम काव्य गद्य कहें वासि की भूमिका में लिखा है इस दशक सिद्धांत पर जो भी साहित्यिक अन्तर्भाव शास्त्र आधारित होगा वह पूर्ण रूप से ग्राह्य नहीं हो सकता। इस प्रकार का शास्त्र उस अन्तर्भाव तक कि वह अपने का अन्तर्भाववादी दशक का अनुगामी बना रहता है मानव प्रगति की राह में अन्तर्भाव मानवोत्थितवाद्यक गति अन्तर्भाव अन्तर्भाव प्रतिप्रियावादी सिद्ध होगा। इस प्रकार का साहित्यिक अन्तर्भाव शिल्प शास्त्र में अन्तर्भाव उस सीमा तक गति होगी जिस सीमा तक वह जीवन के तथ्य का स्पष्ट विकसित और प्रस्तुति करेगा। किंतु जिस समय वह अन्तर्भाव जीवन के तथ्य का अन्तर्भाव नीतिवत्ता में बाधने का दुराग्रह करने लगता उसी समय वह विचार विराधी के रूप में प्रकट हो जायगा। इस अन्तर्भाव की कविताएँ नवीन का अन्तर्भाव के अन्तर्भाव निहित आस्थावादी दृष्टिकोण की परिचायक हैं। रहस्यवादिता, मानववा

श्रिता तथा कालवाश्रिता क स्वयं उनकी दून कविताया मन्व्यत् है
 स्वमित उद्वेगयन ध्वनित गति उचित अनहू नात्र न यह ।
 श्रिताकाका वास्यन रहा है तत्र अहूरह ।
 उत्र गति न ध्यानमत्ता गीत मति का जात परा ।
 उत्र चत्ता उत्र नाचनन न मन विहृण तत्र निद्र बधगा ।

नपक चाटत जूठ पत
 तिस तिन मैंन क्या नर नो
 उस तिन साचा क्या न नगा न
 बाग बाज इस दुनिया भर का

तून हा सब बधन विरत्र ह अपन स
 य हाग भस्म मनुज तर हा तपन स
 बधन है बहा ? जर तनिक त्राग सुपन स
 नू वा है निविहार त्रिनिद्राज उय मध
 नू अबाध क्या कहा मानव तब चगा यध ।

बातकृष्ण राव—

बातकृष्ण राव का कविताया म यदाय की टात्र चतना श्रिता ३ । गन बाता
 नामन का य मद्रह म नना त्रा कविताय प्रकाशित नू ३ अनर उ उम म यह नध्य
 उत्रप्रदीप है । उत्र मद्रह का कविताया की उत्रन पर यह भा जाभासित जाता है कि
 कदा-कदा कवि ज्ञानो अनुभूतिया का मगडिन नो कर पाया है । कवि न अन्ती उत्र
 नाभा म गित्त का अर गा गीच्छता का अत्रिक मन्व्य श्रिता ३ । बातकृष्ण राव
 की एक कविता नीच उत्राहरणय प्रम्नुन का वा रतो ३ त्रिउत्र अनाम्या का उत्रग
 रहित चित्रात्मक अन हुआ है

दाय ज्ञानय ध आम्भान राह श्रितान
 किनु बगाभा भा इतर का अउकार की
 उत्रकर त्रिउत्र उहागन स गत्र र्हा मा
 गका जोर विरागा की आसाठ युवा उ
 वन कर सापक धन जान क श्रिया उत्र
 श्रिताया साजी पर श्रिताया मूला रा राह
 करन प्राय ध आताश्रित त्रि हू रात्र भर ।
 दन उत्रा की आति पूव-नभ का नाता-यो
 श्रिता चत्ता हो मिया ... माग अब भा है मून
 मूत्र रहा आसाठ बाय भा अत्रि-वाग की ।

बहुत कुछ न ही आता है २० हाथ
 आज प्रताप उत्तर भय आता है।

सशमीकांत वर्मा—

व भीतर वर्मा ही कविता रच्य विद्या वा वि म ही रच्य रचि है। उता
 मरणात्त वा व म गहगाई म अति यता ७ १। ६ वा मरणात्त उता रच्य म वा
 तव मिनती है। मामात्रिह आवा की मवासा र प्रति रच्य रच्य पर पर प्रहार
 व जाहाज वा नार ही उममें मिनता है। उता रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य
 उताहरण र विद्या वा प्रसार ही रच्य रच्य है। प्रयाग रच्य म रच्य रच्य रच्य
 की प्रतीक है

म आज ही विद्या रू
 उस दृष्टात्त की भाति
 जो मजात मजात म वा ही रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य
 पिरनिह तफरीह म विद्या रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य रच्य
 एक तग धार वात पीतात्त की नार
 जय भी मरी छानी म गी त्रे
 और उम बर-बधा वा घायत भीना
 उस दाग ही रच्य हर मीसम म करना है
 छिनी रच्य रच्य पर छान चढ़ गी ३
 दुधियार पत्ता म वात वम जानी है
 जगण भी पचती है भूतन वा छती है
 चरवाह की वशी ही टर भटव जाती ४

मगर

एक म रू फोलाद की वाती रच्य
 जीता रू—

म आज भी जिदा हू।

जानकीवल्लभ शास्त्री—

उत्तर छायावाणी युग क प्रमुद्य गीतकारा म जानकीवल्लभ शास्त्री वा नाम भी
 उल्लेखनीय है। इनकी कविता म छायावाणी प्रभाव क साथ साथ छायावात्तार काय
 व तत्व भी स्पष्ट रूप म रचिह हात है। फलत उनकी कविता म जहा एक आर
 छायावात्त व प्रभाव स्वरूप श शाय ही विषय रहस्यात्मकता राल्पनिकता तथा ह्रमा
 नियत वात्ति मिनती है वहा दूनरी आर नवीन युग की नवी समस्याआ र प्रति मुत्तग
 ह्रा रच्यिहाज भी भिन्ता है। रगात्मकता एव गुत्तर मगुर रच्य वाचना न उ ह एक
 गीतकार क रूप म महत्वपूर्ण स्थाप दिया है। उता भीता म रच्य जीर सीवात्मकता
 की रच्यिह से भी पर्याप्त नवीनता मिनती है। भाषा चमत्कार क साथ साथ जन चम
 त्कार भी उनक काय की एक विशेषता है। उनकी जनक कविताए सांस्कृतिक पर की

प्रधानता लिये यह है। यह भिन्न छटा जीरणात्मक म लिये गया है। प्रकृति चित्रण विषयक कविताएँ कवि का विषय सुन्दर बन पडा है। इन मन्वन्तात्मक अभि यक्ति स्वाभाविक है और नैतिक-मन का जार भी बिबिध प्रकार की न होता है। काक्या रूप-रूप तार-सुता गिरा मन्तात तया अवलिका जति कान्त मन्तह नका अभिव्यक्त्यात्मक प्रोत्सा न परिचायन । नका कविता क दा ग्राहण नीय प्रस्तुत विय जा रू है

रणु पित्ररिण कुञ्जित कुन्त
रक्षम याम सुदन् या
स्वण प्रलिन म मद मन्—
छिन्ता अरविन् वलन या
मुकन्ति गन् उचन विरवन् प्रम
तात कपात विनावन
गात मपुर मरा जतान क्या
सस्मिन् वात मन्त या।

भ्रमना भ्रमता प्रमर प्रमा क बन का
क्रम प्रम उ जाता-स्ताव तव जाया
नन दा पहिचान ज्ञान का माया
बह कहनाता धूप जीर यह छाया।
धूप नातिमा म ध्वनि का छान या
दन कर बाद पुइ है बाणा-बाणा
विकन विश्व क काताहूत स ज्ञन कर
आन या प्रति-वनि कर्णा कन्वापा।

मुनिवाहुमारा सिन्हा—

छायागततर गुो क गाकारा म भ्रमना मुनिवा हुमारा नि य का नाम भा
उल्लसभाव है। उद्दीन मुचन नायमय प्रणम गावा वा रचना क ह विगत जागा
पर पदिना तथा वे भा व बला नामक का यन्त्रण म य प्रम नावना प्रम
विद्यागतात स्म म निजता है। नका उदिता का मन्त ग्य ग्य ना प्रस्तुत विया जा
रहा है

तुम गय जपा ह वरुन मन न बंठ गु
गिन चरु वापना ग्ने वाता शा है।
पाना-क प म ताक रण प्रकृति बगु
करा पुत्रा पूता वा मुसकान मग

यह रूप ज्योति तुम खना ली पाती
 आन निमग्न प्राणा का जग जग बिखरा ।
 तुम जिना र अगार तिय क्या करे दू ?
 साधा की मीठी पाँव जीती जाती है ।

गगाप्रसाद पांडेय—

नवीना र रचयिता श्री गगाप्रसाद पांडेय का कविता नामक मसुर प्रवृत्ति र सहज मोक्ष चिन्तन म युक्त है । इस प्रकार र प्रवृत्ति श्याम त करन विद्यात्मक स्वाभाविकता मितती है वरन तबीयत की रीति भी व म्बू नपूण है । विविध विषयक अथ रचनाओं की तुलना म कविता एव प्रवृत्ति विद्या र अन्त म विद्यय गणना मितती है । उनम र्हा र्हा पर ग्रामीण पाण भा मितता है । उाहरणाय

य भर वादन
 भरी जाया म जम हा गगा काजन ।
 क्षमन बनकार
 मजत हा दूर जम पुनर पावन ।
 और यह शुभ रूप
 जम प्राण पापक धप जाइ का ।

— —
 अन्तरा क वन्तरा घहराय
 भर वन्तरा इठनाता
 बिना नुम्हार मरा चानक
 चित पन बन न पाता ।

वचन—

आधुनिक युगान कविता की नवीन प्रवृत्ति क अतगत कुछ एस महत्वपूर्ण कविया क नाम भी लिय जा सकते है जो परम्परागत रूप म माय और प्रतिष्ठित हैं । उदाहरण क लिए कविवर वचन का नाम गीत परम्परा क धर्म म उल्लेखनीय है । उनर गीतो क अनेक मग्रह प्रकाशित हा चके ह तिनम उठ पया त नाकप्रियता भी मितती है । सोपान निशानिमग्न एवात्मगीत आधुन अतर सतरगनी तथा प्रणय पत्रिका जाति उनक अनेक काय सग्रह प्रकाशित हा चके ह । उनकी नवीन काय रचनाए पुराने सग्रहा स शान्ति भिन्नता भा रण्यती है । वचन की कविता र नाकप्रिय हान का मुख्य कारण उनकी भाषा का सरल तथा यावहारिक ढाना है । वही वहा पर वचन क गीता म मरण भावना की प्रबलता भा रणित हाती है । इस काटि क गीत भावात्मक अभि यक्ति का प्रौढ़ उदाहरण कह जा सकत हैं । उदाहरण क लिए एक गीत नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

बीत चली सध्या की बला ।
 धधला प्रति पल पड़ने वाली ,
 एक रघु म सिमटी चानी ।
 कहती है समाप्त होता है सतरंगी बादल का मला ।
 बीत चला सध्या की बला ।
 नभ म बछ द्युति हीन सितारे ,
 माग रह हैं हाथ पसारे—
 रजना आय रवि किरणा स हमन है दिन भरदुःखयना ।
 बीत चली सध्या की बला ।
 अतरिक्ष म आकुन जागुर
 कभी उधरउधर कभी उधरउडा ।
 पय नोड का खाज रहा है पिछडा पछी एव बनना ।
 बीत चली सध्या की बला ।

विद्यावती 'कोकिल'—

विद्यावती कावित्त का नाम भी गीतकारा का परम्परा म उन्नयनीय है । इनक गीता का एक सग्रह मुहागिन म एक स प्रकाशित हुआ है । इनक गीता म इनकी भावनाम परम्परागत मस्कारा म प्रभावित रूप म मिलती है । मुहाग की अचल ओर अमर भावना भी वही बला नारी हृदय क स्वाभाविक उन्गारा क रूप म अभिव्यक्त हुई है ।

नीरज—

कविवर नीरज क गीता क अनक सग्रह प्रकाशित हा चुके हैं । उनक विभावरी' शीपक मग्रह म जो गीत प्रकाशित हुए हैं उनम स अधिकांश निराशावादा दृष्टिकोण के सूचक हैं । उनम कवि न जीवन को एक विवगता सिद्ध करते हुए ससार का प्रत्येक वस्तु क नाशवान होने की बात कही है । इस मग्रह म उनका जो दृष्टिकोण अभि यान हुआ है वह पुरान सग्रहा की अप ता अधिन नवीनता का सूचक नला है । ओजपूर्ण भाषा की रचानगी की दृष्टि स इनक अधिकांश गीत सफ्त हैं । महा नारज क काव्य की प्रतिनिधि विगपता भा है । नीरज की कविता का एक उदाहरण नीच प्रस्तुत किया जा रहा है

हर जीव महा मूं ता बगुल रात्री है
 हर मूं मगर जरक नहा हाती है ।
 पर मय क रा म जा जमान का गम
 उस जीव म आनू जा गिर मोती है ।

श्रीपाल सिंह धाम—

श्रीपाल सिंह धाम का नाम भा नय गीतकारा म उचित्वित्त किया जा सकता है । उनक गीता क मग्रह जीवनउरी तथा नीरम चारि और सधन शीपक स प्रकाशित हुए

है। उनका गीता की प्रमुख विषयता यह है कि उसमें अनुभूतिगत नतीजा सुझाता और गहराई मिलती है। वहाँ कहीं पर धार्मिकता का भी जहाँ-तहाँ का-तहाँ का भिन्नता है। इस नाटिक का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

धीरे धीरे सीर पवन । उभाए नी
 किरना क पवन पर घूम रहा गाए ।
 पत्ता पर जड़ी हूया मूरज का ताबे
 तनया म मपताया गया का शाय है।
 बाह्य म डब गया कि कयता ना मोरभ
 कथा म डब गया साग रस मुताब है।
 बिदिया मा कहन रहा है पता पाग
 किरना क घूम पर पवन रही गाए ।।
 पत्ता पर घनन रहा धारा की जातिया
 बजती ह नरम नरम पीपन का नातिया ।
 जा हा क गाता म टूथी क्या जरहर
 जावन म मुरक रहा बजरे का नातिया ।
 शरमीन नयना का पवनम न धार दा
 किरना क पवन पर पवन रही गाए ।

शम्भूनाथ सिंह—

शम्भूनाथ सिंह का एक संग्रह 'निवाला' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इनके गीता की विशेषता मुख्यतः नये उपमानों का प्रयोग है। 'निवाला' में जो गीत संगृहीत हैं उनमें से कुछ में विपाद भावना का मार्मिक चित्रण भिन्नता है। कवि कहीं कहीं पर विपाद भावना से इतना जागरूक हो उठता है कि जीवन और मरण दोनों ही उसका लिए समान रूप से स्वीकार्य हो जाते हैं। छन्द रचना और ताजगी की दृष्टि से भी कुछ गीत अच्छे बन बड़े हैं। भाषा प्रतीक और प्रयोग का क्षेत्र में नये सूत्र इन गीतों में उपलब्ध हैं। कवि की विपाद भावना भी अतृप्तता आरघ्यायुक्त स्वर में परिचित हो जाती है

हम अतृप्त
 शक्ति का है केन्द्र जीवन के प्रणता ।
 ध्रुव तिनके कान धारा के विजिता
 अब बनग एक एक नहा सहस्र शत ।
 एक होकर आत्म मुक्ति समष्टि चता
 व्यक्ति हागा कान का रव पर चन्दा ।
 प्राणवत नई दिशा-जा में बल्गा

रमानाय अवस्थी—

आधुनिक कविता की इस गीतात्मक प्रवृत्ति का जन्म जहाँ जहाँ नाम उल्लिखित किया जा सकता है उनमें रमानाय अवस्थी का नाम महरोत्रा हनुमत्तर तिवारी आदि हैं। इनमें से रमानाय अवस्थी का गीत जाय और पराम गायक से प्रकाशित हुए हैं। इनके गीतों में प्रणय भावना की प्रधानता है। जब वे जोर भाव से इनकी मुख्य विषयता है। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है

सा न सका वन या तुम्हारी जाइ सारी रात
 और पास ही बजी कहां गहनाइ सारी रात
 मर बटुत चाटून पर भा नीं न मुग नर जाइ
 जहर भरी जादूगरनी सा मुनका नगा ज हाइ
 मरा मस्तक सहनाकर बानी मुनस पुग्वाइ—
 दूर कहीं दा आये नर मर जाइ सारा रात
 और पास ही बजी कहां गहनाइ सारा रात।

वातस्वरूप राही—

वर्तमान काल के गायकों में वातस्वरूप का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है। छायावादी के उत्तर काल में जो गीत गायने विकसित हुए हैं राही के गीत उन्हीं के परिचायक हैं। विभिन्न मन स्थितियों के विवेक के साथ-साथ मानवकी स्वर भी इनकी विशेषता है। एक उदाहरण इस प्रकार है

धनत धनत रुक जाता हूँ गह म पर इसका मननय यह नहीं
 तम क हाथा बच दिया मैंने किना के प्यार का।
 एक तण भा पा सक नव प्राण तो सावन सफ्त है
 एक मुख भी कर सक गृहार ता अपन उपन है
 मान पाया मैंने नहीं कवि विश्व मुपरा ता तुभा क्या
 यह मुख विनास मरे गात मुनका भा र है।
 प्यार तुभा नया तुमसे मरा सार जग से प्यार हा गया।
 एक तुम्हारी छवि का दर्पण यह सारा जग है गया।

बीरेन्द्र मिश्र—

बीरेन्द्र मिश्र के गीतों में मानवतावादी स्वर गूँजता है। छायावादी के उत्तर कालीन गीतों में उनका वर्तमान युग के गीतकारों में मूर्तिमती हुई है। समाजिक कल्याणकारकता के साथ-साथ गहनमयी भावना से कला न इनके गीतों का माहुर लक्षण प्रकट किया है। एक उदाहरण अधोलिखित है

कल्प सा तन तुम नरद का धूप सा
 प्र नन्ना मन तुम बिराट स्वल्प-यो

सात्रजती जीय जुम कर का परग
हिमनिना धी जुम तप क म्गुद मा

रामावतार त्यागो—

रामावतार यागी व गीता म छायाशा ी श्रमानो प्रभाज व गाव गाव "इति क
मानवीकरण व प्रय न भा मित्त है । अइ प्रती म मात म राना वा श्रावण
करते हुए त्यागो न क । इहा अरव प्रभावता म श्रम पि न प्रमुद विज है । य विज
कवि की कपना गति म भी छात्र है । एव उ । अइय यही प्रमुद रिया वा यही है

बूना की तक ीर पा गई य रमा अतभी प ।

कीजिल का मगीन श्रम निया कतिया है या विरत राग ।

जीय म वात्रन तयाव गा त्रिमरा

तारता व गाव घर पर छात्रता है ।

डा० रामेश्वरलाल छडतवाल तरुण—

डा रामेश्वर लाल छडतवाल तरुण व गीत प्रथम श्रिण तया हिमावत
आति सग्रहा म प्रकाशित गण है । इन गीता की गती बन्त स्वाभाविक ओर सरन ह ।
प्रकृति विषमक गीता म विशेष मधरता भी मितती है । कुछ गीत सामाजिक यथाय
की सकेतात्मक निहिति व वारण भी मूल्यपूण बन प है । मनोरम ओर मार्मिक
विद्या स युक्त उनन काय का एक उदाहरण यही प्रमुद रिया वा रहा है

बना आ नी जन म उतरी अब पुटना तर

रखा घडा पानी पर ले पन जन हिनराया छन छन छन छन

भर कर घडा उठाया भरी मूम उठी यौवन म सारी

काया गहरारी गहरारी बाड तनिक सा घुघट

सिर पर रख घट पगडडी पकडी निज सकरी

जाती पटपट नहराती नट फहराती पट

मादक गति स और पवन स पडते है साडी म सत्रप ।

डा० नामवर सिंह—

डा० नामवर सिंह की कविता म प्रगतिशील तत्व बोद्धिक चतना स सयुक्त हाकर
समाविष्ट हुए हैं । इसके साथ ही प्रकृति का विविध रूपात्मक चित्रण भी उनके काव्य
की एक विशेषता है । स्फट चित्रा क रूप म प्राकृतिक सौन्दर्य का मोहक अकन उनके
काय मे यत्र तत्र विद्यमान है । उदाहरणाय—

खेतो म नहरा रही खूब कुछ उठी हगाई की नहरो

रह रह अगडाई सी गती नारा की भरी नदी गहरो

झपुर अपुर धान के समुद्र म

हलर हनर मुनहला विहान ।

डा० (कु०) रमा सिंह—

डा० (कु०) रमा सिंह की कविताएँ वनमान युगीन गानपरम्परा के अन्तर्गत परिगणित की जा सकती हैं। उतर छायावादी काल की गीत गीतों में निखी गयी उनकी कविताएँ जीवन की सामग्री अभिव्यक्ति से युक्त हैं। कहा सहा पर रहस्यवादी के प्रभाव-स्वरूप दुःख प्रतीक्षा की यात्रा में मिनती है। कुछ कविताएँ सामाजिक तन्मयता से युक्त हैं। एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है

निधति की बीन घरे आग पर समय का नपरा यह ।
 कसा धुन बजाना है
 ममो बध जाता है नागिन मी घरता यह धूम धूम जाता है ।
 कसा यह बशीकरण कसी तन्मयता है ?

डा० देवराज—

आधुनिक युग के प्रौढ़ कविता में डा० देवराज का स्थान भी विविध रूप से महत्वपूर्ण है। उनके चार काल्पनिक प्रकाशित हुए हैं जिनके गारक जीवन रसि में घरती और स्वयं उबगा न रुहा तथा इतिहास युक्त हैं। जीवन रसि का कविताएँ मुख्यतः भवार्थ अतिरिक्त का परिचायक हैं। धरती और स्वयं में जो कविताएँ संगीत हैं वे अधिक काल्पनिक और आधुनिक न हाने का भाव सामाजिक भावना तथा प्रेम भावना की छाया प्रस्तुत करती हैं। इस मध्य की जनक कविताओं में कवि ने आधुनिक जीवन की समस्याओं की आरम्भ कर दिया है। ये कविताएँ इस तथ्य का साक्ष्य हैं कि कवि ने आधुनिक जीवन के विभिन्न पक्षों का महत्त्व तथा परवर्तन किया है। इसमें कुछ कविताएँ ऐसी भी मिनती हैं जो उन गीतों में निखी गयी हैं। ये स्वयं द्वारा जमी हल्की-फुल्की ध्वनिपूर्ण तथा रावक हैं। एक उदाहरण इस प्रकार है

घरती ये स्वयं सान बात है
 जन की व्यथा मिथान बात है
 दा बूट नहा आधा में पानी
 मरु का चमन बनान बात है ।
 बस्ता हैं मगर सत्य से अपरचित
 नता है मगर राहु उ अगिचित
 करत है जमान की मसाहाद ,
 दुधिया के मगर दूध से अपरचित ।
 पत्तिका का पत्ता जाक पकरत है
 हर अपन विरायी ये अकरत है
 हिममत है किन्तु उनकी कर ममता
 ममता के निच जनकी बा मरत है ।

श्री० बाऊजा गुप्त—

श्री० बाऊजी गुप्त की कविताएँ गद्य तथा अधिकांश म मर्यादा १११
 अतिरिक्त मात्र बारी गौरव मय, म प्रकाशित ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 म ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 क नरायण्य एत त स्थ प्राप्त त प्राप्त ही इतम जावत त प्रतिगत त्रय ज्ञान्य त
 मगत मितता ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 का मी त मपुत्र मगत मगत जीर व्यसिगत वा परिगत ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 मितता म आहा त्रि गुप्त प ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 पर ११११ मगत है त्रि यत् कवि वा ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 यमिनक कविताया म प्रकाश त स्थ म प्रतिष्ठा मगत ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 विरस्मता तथा उपविष्टयो गीयक कविताया म मुष्ठ जग प्रमुता मित ता ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११

मर अंगन वा पत्तना गौरवा
 जाज वही उग गया ।
 त्रिम पाया वा मरा त्रि न
 कितन वाग्म्य रूप म
 जाज मही नहा है

मैं बाजार म
 कितना गौरवां खरीन सक्ता हू
 पर वह—
 जिस मेन दान चगाय व
 परमान कर कर
 अंगन क चक्कर बटवाय व
 वही जीर बसरा व रही है
 जीर उतना जाकाश जा उमकी आकृति की
 खाती है मर मन म—

सत्य ता यह है
 छत्रमता क जतावा
 किसी की मुझम निष्ठा नहा ह

वह सारी प्रायनाय
 जा कुछ पान क त्रि वी वा
 मन्त्रि क कगूर स टकरा कर,

एक हवावील का खाना गिरात
 चोटी जायी है ।
 जाम्घाए उन उतराता
 मछलिया की तरह सड गयी है
 जो बोहवा स निबन कर
 साँस लन जायी थी
 और कितारे क
 गरम पानी म उबन गयी ।
 मभावनाए क्या है ?
 मूरज है जिसम बिस्फोट हा रह है
 चाँद है जिमक धरातन म
 सिवाय रत और छिद्रा क कुछ नहा है ।
 दिन और रात हैं
 जिह सिफ मरी उम्र स मनलव है ।

डा० जगदीश गुप्त—

डा० जगदीश गुप्त की प्रतिनिधि कविताया का मन्वन्त 'नाव क पाव शीपन स प्रवाशित हुआ है । यह दो छडा म विभक्त है— नाव क पाव तथा टूनी तहर । इस सग्रह की अधिकांश कविताए गीत शैली म लिखी जान क कारण गीतात्मकता क सत्वा स युक्त है । जगदीश गुप्त की काव्य शैली पर छायावाद तथा उत्तर छायावाद युग क गीतकारा का स्पष्ट प्रभाव मिनता है । वही कहा इत्न पुरान माव्यमा म नयी अभि व्यक्ति का सनक्त रूप म प्रस्तुत किया है । इस सग्रह का कुछ कविताए काका हनकी भी हैं कपाकि उनम अभिव्यक्ति प्रभाव रहित प्रतीत हाती है । अनुभूति का नवीनता और ताजगा क साथ साथ प्रकृति चित्रण प्रधान कविताए जन्म बन पडी हैं । वहीन्ता पर एसा आभासित हाता है जस कवि का काव्यात्मक सवन्नाए वस्तु गन्त हा गया है पर नु जब कवि कल्पना चित्रा का माह छाडकर सथाप क धरातन पर उतर आता है तब उसका अभिव्यक्ति सत्ता स प्रकृ हाता है । उदाहरणार्थ

मैं बिछर गया हू
 जपन ही चारा जाँर ।
 मरा एक जन—सामन क नीम का
 नगी टहनिया म नगा उपास पाता
 पतिया क बाँत उतप गया है—
 और नदी क साथ
 पतवार क रूप चित्तु हमारा भर
 पाता की बात उ—एक-एक कर

नाचना गिरा महाराज गिरा
जटाभा जमी भरी मूया धूल भरी पागार
उतर रहा है—उतर रहा है।

मुझ कीन पूरा कर
पीनी पत्तिया का फलत जेन युसा म कीन बा
बह जायेंगी व ।
कान दागा पर बहन सफ बाजा का कान गाथ
द्वं जायगा गद धा जायगी पी ।

डॉ० पुस्तुलाल शुक्ल चन्द्राकर—

डॉ० पुस्तुलाल शुक्ल चन्द्राकर न अनग तथा मातृगाहा शीघ्रक प्रबन्ध काव्या की रचना की है। इनम म द्वितीय हिन्दी का सप्रथम आन्तरिक प्रबन्ध काव्य कहा जा सकता है। चन्द्राकर जी न संस्कृत म अश्वघोष व त्रिशद्वेष पुस्तुचरित नामक महा काव्य व मूत्र जप्राप्य उत्तराय का संस्कृत प्रचार म भी प्रस्तुत किया ह। पाठ्य पुनरचना व धर्म म यह एक अद्वितीय कृति कही जा सकता है। मातृगाहा म चन्द्राकर व का य का एक अग यही उदाहरणाय प्रस्तुत किया जा रहा है

मरा मन सूना सूना है ससार ।
सारे रस भाग, बिभव का याग ।
पीर कीन जान मन म वियाग ।
यजन जान सारा दुख नार ।
मरा मन सूना सना है ससार ।
सार् है दुनिया साया आसमान ।
साय पड पीद साय पाखी गान ।
दोषक जगता जन रहा प्यार ।
मेरा मन सूना सूना है ससार ।
मीड बीच आय जाप ही अक्ती ।
बह रही गया दुख की सहती ।
गिरे टूट टूट धय का बगार ।
मरा मन सूना सूना है ससार ।
स्वामी बिना गह प्राण बिना दह ।
सास बिना प्राण एसा हुआ नेह ।
मुल मिन मरा जीने का आधार ।
मरा मन सूना सूना है ससार ।

डा० प्रतापनारायण टंडन—

डा० प्रतापनारायण टंडन की विश्व-यात्रा के दौरान लिखी गयी कविताओं का एक संग्रह पंचरात्र प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित हो चुका है। काव्य के वस्तुस्थिति के अनुसार मरी यह धारणा बनती जा रही है कि आज की कविता अपनी पूर्ववर्ती कविता से कुछ ज्यों में आवश्यक रूप से भिन्न होगी। मैं यह समझता हूँ कि हमारी राजभरा की जिदगी और ऐसी अनुभूतियाँ जो हम साधारण मानुष पढ़ना हैं एक नया जन्म ग्रहण करता है और आज का कवि बाध्य हुआ गया है उनको आज की ही भाषा और साथ साथ प्रताक के विवाह माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए। मैं यहाँ पर यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि बिना शर्त का प्रयोग मैं व्यापक अर्थात् मैं कर रहा हूँ। कभी कभी कविता की अतिनिहित संभावनाओं से कविता का समग्र बिंब विधान होता है। विश्व का हर भाषा के साहित्य में—अथवा और हिन्दी के सम्बन्ध में मैं अधिक जानकारी से कह सकता हूँ कि—कुछ समय बाद कविता आवश्यक रूप से यथावत् स्तर पर आ जाती है और बालचान के निरन्तर जाती जाती है। साथ ही उसका बिंब विधान भी बावबी नहीं रहता। जिनकी कविता अधिक साधारण होगी उनको उसकी अनुभूति स्पष्ट और प्रष्ट होगा उतना ही वह सामान्य नहीं हुई होगी। परन्तु यह न समझ लिया जाय कि मैं यह समझता हूँ कि कविता का सामान्य होना चाहिए। कविता सामान्य तब होती है जब कवि असाधारण होने का प्रयत्न करता है और एक ऐसी भाषा तथा बिंब का पुनरावृत्ति करने है जिसकी सीमाओं में हम आसानी से ताड़ नहीं पाते। जब आज के कवि यह कहते हैं कि छायावादी कविता से हम हटना है तो साहित्य का एक विचार्यी होने के नाते मरी ऐसा विचार है कि वह यह कहना चाहते हैं कि छायावाद और उसकी परिवर्तित भाषा प्रतीक या बिंबगत एकरसता का वे अस्वीकार करना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि इस समस्या का समाधान किसी प्रकार का प्रतिस्त्रिया से सम्भव नहीं है किन्तु उस समय से ही सम्भव है संभवता है जिसमें साहित्य का यह सिद्धन्त अतिनिहित है कि हर परिस्थिति में कवि के लिए प्रेरणा का स्रोत आत्मनिर्मुक्त नहीं बरन नौकिक है। प्रतापनारायण टंडन की कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत है

मैं की लंबा सापहरी

उगाड़ हुआ—

साय-साय करता दूद पम गद

चारा नरक गहरा सभ्राण

तपनी धूप—

स्त्रिय कर टहर गद

नदगुहाता पडा की गहनिया

रथाकित्त—

आकाश में यहाँ बहाँ उभय गद

दग अन्तरी अतः अपन म
 अतात्—
 नीरवता गहमी पत्र ग
 हल स्वरा म छ बन् रिता गुना
 होई गीत गुगुता वा वही १
 मुदर पागत्रपत म अरा अत्रा
 गार्द नाजुत गुताह करा वा वही १—

— —
 वभी वटत है आज
 वभी वहत है वन
 वभी वदत है परसा
 असो म बात जात है यग्गा
 वभा हवती पर भा पूना है मरगा ?

राजे द्र विशोर—

राज द्र विगार की कविता म छायावा १ रक्षमयता भा वहा वहा समाविष्ट
 मिनती है । बौद्धिक परिणति न इनर वाच्य वा अवाछित रूप म दुष्ट और अस्पष्ट
 बना दिया है । गद्यात्मकता की वदता हुई वाच्य प्रकृति वा प्रभाव राज द्र विगार की
 कविता पर भी पडा है । गीतात्मकता वा अष्टि म भी अनरी अनर रचनाएँ प्रभावशाली
 बन पडी हैं । कुछ हल्क फलक मन स्थितिया की अनि पक्ति तरन वान चित्र भी अच्छ
 है । उदाहरणार्थ—

वल जब शाम जाई जान वसा रगा ।
 उम्र घटत घटत दो पत्र रन गइ ।
 जहा वह नीम की छतनार डान पुव गई ।
 और गधमनष हवा आयी १े गयी दगा ।
 तय मी-तव भी जाने वसा लगा ।

वीरेंद्र कुमार जन—

वारे द्र कुमार जन का वा य वाक भावना के पुट स युक्त है । उस दष्टि स उसम
 रक्षमयता और चामत्कारिक सष्टि व साथ साथ चोक गीता स मिलती जुलती स्वा
 भाविक रोमानियत भी मिनती है । एसा एव उदाहरण नीचे किया जा रहा है

टन गयी प्रदाप बेना
 वन पय छो गय अधर म ।
 दूर व घाटी वाल तम छाम वन पर
 एक अक्ती तारिका चित्रमित्र राती सी
 नगती थी वन म छाई एकाकिनि बाना सी ।

हा उस बाट की फूटी दरगाह में
 वह साईं रहता है चिमट वाला
 हाथ वह तो नहा आयी
 वह गयी है फूल बीनन
 मध्या के मत्प घर की दीवारा पर माडन क निय ।

श्रीराम वर्मा—

श्रीराम वर्मा की कविताओं में मानवीय सवर्णता की अभिव्यक्ति के साथ साथ दल आस्था का स्वर भी स्पष्ट रूप में मिलता है। उनमें पुराने प्रतीकों का नये रूप में प्रयोग मिलता है। कहा कहा पर गद्यात्मकता की प्रवृत्ति प्रपञ्चगत अधिबद्ध हो गयी है। इस दृष्टि से उनकी चन्द्रब्यूह शीघ्रक कविता उत्साहरणान् प्रस्तुत की जा रही है—

मरी आत्मा

अजुन स भी अधिबद्ध ऋजु है

मुभद्रा स भी अधिबद्ध धारणशीला है ।

क्याकि मैं वनमान का छाटा भाई मानता हू ।

जिम में जिधर चाहू माड सकता हू ।

ओर उस अपने प्यार के सहारे विध्य ओर नव्य

बना सकता हू ।

यह विराट चन्द्रब्यूह

उस इन तीत भाई की नूतन पाठशाळा है ।

ओर मैं उसका जवना अध्यापक हू ।

नबिन में चूठ नहीं बाचना

सब

मेरा बाप अजन नहीं या

मरी मां मुभद्रा नहा थी

ओर मैं भी अभिमनु नूतन ।

राजकमल चौधरी—

नये कविता में राजकमल चौधरी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रखर था। नवयुगन के सदाभ में कवि ने स्वयं अपने विषय में लिखा है— मैं क्या ग्रन्थ शक्ति अथवा दूसरे सहज में कटाग्रन्थ लेखक नहा हू । मर्गे जीवन प्रतिभा रचना प्रतिभा और स्थान प्रतिभा के आधार भूत मूल्याम का कोई बहुमूल्य या विनिश्चित स्थान नहा है । सम्भवतः यद्विद्वत् जह के अलग-अलग टुकड़ा पर जम जाया हुई बाबड-भाई हा कुग बनती है या जहर के छात्रुत्त परपर का—यानी आत्मीय अस्तित्व अउरग अस्तित्व को निधरन चमकन नहा दती है । या आदमा का विद्या पापसा विधी गृह प्रग, विधी भगिमा, किसी नगपन, किसी भाग, विधी मृत और अतीत, गारीरिक्

सम्भारता म हृमता न तिम—अब जा मा आति नगा म अति मरुत दुमा ॥ पु १
अगे न तिम—राज न ही है । रात्रमन रोषम की प, ॥ तिमि को भाषिमा नाम
शीषक रता का कुछ भग मदी उगाहरणा न प्रमुत तिया मा रहा है

हम भी गता गहा है विराम भंग

यह जन है

अगरी मति ती है यह तिमि गता

हम इता ही गहा है विराम

गूरज इवन की अविता प्रतीता म ही यह नाम

यह तीव यह मोगम व तीव रता

हम तुम

रक हुए है । हम तुम रक हुए है

दूर व ब न कारधाना ती तिमनिया न। तरह

—हम म धअ भी न

नही है अनुभव की यह जादुगर तिमिगांग जा गता का

एक जय बना गती है ।

जस यह नाम ।

जम तुम्हार वचन हाव ज पत ए

सिहरत ए । मगर

उम जनतिउ तिनार का एक तार भी नगा मिहरता है ।

दुप्यत कुमार—

ति ती व नय कविया म दुप्यत कुमार का नाम भी उल्लिखित किया जा सकता है । इनका का व का एक सग्रह मूय का स्वागत शीषक से प्रकाशित ग्रा है । इनका कुछ गीता म जहाँ एक बार छायावाक्य का प्रभाव दिखाई देता है तो दूसरी बार मू म सबदनात्मक अभि याक्त से भी इनकी अनक रचनाएँ युक्त है । अनुभूत्यात्मक मयनाजा का आस्था युक्त स्वर इनकी कविता की मुख्य विशेषता है । इनकी एक प्रसिद्ध कविता मूय का स्वागत उगाहरण व तिए नाच प्रस्तुत की जा रही है

दीवान काई से चिननी है कानी है

धूप से चना नहीं जाता है

आ भाई सूरज में क्या रह ?

मरा नसीब ही ऐसा है

पल्लो हुई खिडकी देखकर तुम ता चन आर

पर म। धरे का जादी

अकमण्य

निराम ।

तुम्हारे जाने का धा चुका था विश्वास ।

पर तुम आज हा

स्वागत है

स्वागत घर का इन कानों दीवारा पर ।

और कहा ?

हा—मर बच्च न खल-खन म ही

यहाँ बाद खुरच ना थी—

आजा यहाँ बंठा

और मुझे मर अबद सत्कार के लिए क्षमा करा ।

ज्या मरा बच्चा

तुम्हारा स्वागत करना सीख रहा है ।

जय कवि—

आधुनिक युगाने हिन्दी कविता का जिन प्रवर्तियों का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया गया है वे वर्तमान कविता के स्वरूपगत परिवर्तन की द्योतक हैं । ऊपर जिन कविता का उल्लेख किया है उनके अतिरिक्त भी एक बहुत बड़ा संख्या में कविता की है जिनकी कविता बोधिकता वचनिकता अभिव्यक्ति तथा कलात्मकता का दृष्टि में महत्वपूर्ण है । इन कविता में आरसीप्रसाद सिंह नरिनविनायक नामा विष्णु स्वरूप नाता सिंहा परमेश्वर द्विरक गंगाप्रसाद विमल निमता वना कागानाय उपाध्याय भ्रमर (बघडक बनारसी) भातिप्रिय दिवना प्रयागारायण त्रिपाठा नाता भारतना कला वात्रया विमला रात्रे, रूप्य प्रसाद गोड बडक बनारसी गंगाप्रसाद गुजन उनहा रामनाथ मुमन तारा पाठय प्रमनता वमा, राम बरी गावन करीन, राम बरी देवा मित्र चकारा टाकुर प्रसाद सिंह चम्पुवी आता मुधा डा० परमाना रावाम्भव वसत देव रामबहादुर सिंह मुक्त डा० रबा भ्रमर विमल जगवान प्रमनाथ अग्निहात्रा मुयागा जयनाथ नरिन रामावतार चतन गजारायण विशारिया त्रिनाकीप्रसाद नामा वसरा कुमार रात्रे मायूर उत्पन्न नाथ रावाम्भव हनुकुमार त्रिबारी, मन्द्र मन्ना गिरिधर पापाव अनाम अतकुमार पापाव निपाना त्रिबारी विमला रात्रे जगान चतुर्वे । निपाना त्रिपाठा नाता गना । ममता कानिया तारा त्रिभू विद्या गना राम रण मित्र ननागन चय मूयनताय सिंह बनवीर सिंह रण, देवराज त्रिपाठा गाराय प्रसाद राम प्राणि के नाम विष्णु रूप म उ नयनाय है । ये कवि वर्तमान हिन्दी कविता का विविध प्रवर्तिया के विद्यमान मयाग दे रहे हैं । हिन्दी कविता का वर्तमान रूप बहुत आधुनिक विशाल रूप में है । उक्त विविध स्वरूप पारंपरिक अभिनव और विराट के भा द्योतक हैं । परन्तु कुछ विचारक वर्तमान युग की हिन्दी कविता अपनी आरतता का परिचय ही नहीं दे रहे हैं । नाच वर्तमान कविता के काम्य मय कुछ समय उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहे हैं

पूर्णमा बी गी न न या वि ररगा
 सरमा जन रगी तां विर विरगा
 उत्र गी बदरिया मंरग रही
 गीन आताच बिगगा
 गीन आताच उत्र नर मत्र
 सय प्रगवा गुम पुररुग हान जग गग
 हगं न उगा वा थम
 (धम हम वि हमन एन रण गीगा)
 पुररुग करे इन ब निया वा
 गीन गामध्य । रिग गाय हे हम ।
 वम यगा क्या न मरें यनि यह मरन वि राग ।
 आताच यनि गीगा वभा भी अस्त गगगा
 सकुन निरनी मडिता धमिन रिमगिया न रध म
 (क्षण दा ण भन ही)
 पर निहारेंग
 निहारेंग इट हम । (गयर जोगी)

वाकई इस दुनिया स पार पाना बहुत मुशिकन है ।
 (गौर इन दुनिया म आपगी भी अपनी
 अहमियत है ।)
 फिर भी आप चन स रोइय ।
 काई एतराज वम स कम मुन नही ।
 म तो किसी कस गय फिररे मा
 अब आपके पार हा चबा हू । (शिवकुटी साल वरमा)

असछ्य छोरा पर टट कर बिखरा हुआ मैं—
 हर कोण स देखता नीन आकाश वा
 और तुम्ह ।
 तुम्हारा मुख ।
 सारे बिखराव म
 आँखो म बहत हुए आसू
 जाना की उष्मा लिय हण (प्रयाग शुक्ल)

मणि बिहीन
 कडली मारे

सप
मन
बुझा बटा है
और एक बहाग मान है । (निमता बर्मा)

घिड़की स एक पीता गुनाव रह रहकर टकराता रहा
वहाँ बह चुकी छाँटा राता रही
ने मुतवा रहा

काइ अपनी गतिवा स
बापता बाता आकास
मरी जार छावता रहा
छोचिता रहा— (असोक बाजपयी)

वह दया अधर म
चमकता पार गया बा ।
तुमन मह उठाकर मुझ गंगा
मुक्करा ग । टड .. वारिस
रात । (दूधनाथ सिंह)

धूप का एक कविता-मन्त्र
बापता के पार हागा ।
बरसत है जिन गगन व ।
रिक्त-अज्ञान विनन मस्तक
कवि नहीं सवार हागा । (मत्तपत्र)

गुरु अपने ही कामा स विनाह,
वपद्विवादा तस्वारा स माह
जीवन जा बन सका न उन्नता गरा
आकाशाजा क कुनब निरवम
उफ ! यह मून गतिवारा का धून ।
उक ! यह छड-पठ स्वप्ना के मून । (मुराद तिवारा)

धुले का एक तानाब है
बाबाबा क मोयन

तोह न बा है

और बाहागा भाग ती एर १३१।

गन्त बा गरी है ४१— (निवापानह तिबारी)

ब्रह्म हुआ पती—

हुगे पात १ गिर उठा गया

एर १३ बरिष्ठ नजाआ म

अपना गिर उठाए गया था

उग गी जा ग^६ ।

पड न गुता भा नपि म जा

अपना भजाआ म गिर का पमा

फेंक न का आतुर हा गया

हरी पाग गी स

तोहरी नो ग^६ ! (विपिन जप्रबाज)

हम जनावश्यर समिधा :

यता या

तिरस्टुत !

आह !

धधर उठन की हमारी चाह

मिट्टी जीर घन म

हाम हाती

रो उठी है एव कान म ! (महे इ मल्ला)

सब मिथ्या जह पर टिन हुए !

अपनी जात्मा क बिबे हुए !

सबक है अपन पात

जीर अपन बान

सब स्वण पत्र पर

घणित जय स लिख हुए ! ! (श्याममोहन श्रीवाहनव)

ला ! अब विराट घणा क कुचित ननाट का धीरज छूटता है ।

तो ! अब उत्रन क परम कण का मूय सा शक्ति स्रोत फूटता है ।

हो सावधान ।
 या बाध भावान इच्छान ।
 अब दूर कहीं बटुत-बटुत-बटुत दूर
 गुरू हाती है वह जनन्त विध्वंस प्रक्रिया-सदा
 जिसम न रह पायगी यह जध चतना की मीनार खरी,
 जिसम हा जायग य सबक सब कांच व सपन चकनाचूर । (मनोहररयाम जोशी)

— — —
 दीवारें उठाओ ।
 काम का दान करो
 बाओ ।
 स्वाठ मुघाय निज हिताय
 दीवारें उठाओ चारा बार ।
 बहम (बहम्) का मूत करा—
 होध्वा सा मह बनाओ—
 बाठा व जवाब म सिफ छण भर मुस्कराओ—
 रिरियाओ ता भी सिफ मदन हितओ ।
 झूम जाओ ।
 दीवारें उठाओ
 दीवारें उठाओ चारा बार ।
 जवन स काम ता
 जन-बकरी स राब कति मत चराओ ।
 दीवारें उगओ
 उठाओ दीवारें चारा बार । (कृष्णचन्द्र वर्मा)

— — —
 चू रह अमृत कुन्द रस फूल
 उठ रही अनग की ससि
 प्राण तुम जगा जगा नग मवी
 चांदनी म गुणध का जाग
 ज्वलित बागती बन क बाच
 रहा यम का काष्ठिन बाउ
 प्राण तुम जगा जगा है म्बर
 भवतन व पतन का जाग । (हरिभाहन)

— — —
 चाँदी चन्द मद्दुघ

कम क्या किया ?

मुझे कुछ कम का मतलब क्या है ?

हम किया

चोरी तो उस रात भी ? कि किया

कम है पर क्या मायने ?

हम तो जानें

कुछ पर ज़राब ?

अभी पर क्या ज़रामात कि । जोर मुझे सब र । ६ । (अशित कुमार)

—

—

—

बनना रहा या कि ताप था

घोबन रहा या कि ताप था

जीवन रहा था कि ताप था

कवन कि ताप था

जब हम उत्पन्न हो गए

कीमते ऊंचे जानमाना का कमती की

मीते वागुयाना पर चगी च । घमती च । (जाकारनाथ जीवास्तव)

—

—

—

मन नहा मित्रता ता क्या हुआ ?

आजा हम साथ साथ रहे

एक दूसरे की मुल जोर कठ

जो असह्य है—

उसका भी सत् । (गोपालकृष्ण जील)

—

—

—

काहनी टिकाए धवी मज पर

शीघ्र लुकाए हावा पर

क्या अपनी पनवा भ डूब रहा ?

कुछ सपने टूट शायद

रगीन बाच व टकडा स

खिडकी व बाहर पर उह ।

स्मृतिया व बाच जाकर उनका चन नग ।

ह स्वप्न टूटत उह टूटता जाने ?

तू बना रहा ता चितने स्वप्न बना लगा । (सिद्धनाथ कुमार)

इस प्रकार स वतमान हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हिन्दी कवियों की चतुर्मुखी जागरूकता और चेतना सम्पन्नता की छावक हैं। ऊपर एम जनक कवियों का उल्लेख नहीं हुआ है। जा वतमान हिन्दी कविता का विकास में योगदान कर रहे हैं। इन कवियों में कुछ न यदि एक बार परम्परागत ग्राम्य सृष्टि के भावनाचित्र खींचे हैं तो दूसरी बार एम कवि भी अपनी मर्यादा में जो यात्रिक सृष्टि की आध्यात्मिक सशक्त चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं ऊपर जा वाक्यान्त उदाहरणों प्रस्तुत किए गये हैं वे वतमान काव्य के विवादास्पद और विरोधाभास युक्त रूप में परिचायक हैं। हिन्दी के वतमान कवि साहित्य में जिन मर्यादा की प्रतिष्ठा के लिए मध्यपरत हैं उनकी स्थापना चाहें जितनी शीघ्रतासे ही परन्तु वे सम्बन्धित परिभाषाओं के प्रयत्न के साथ अदृष्ट रूप से उनकी उपनिधियाँ के प्रति आशावादी हैं। वस्तुतः वतमान कवियों का साहित्य में मूल्यगत उत्थरण और अतिशयता न ही प्रसार की समानता की परिस्थिति-सी उत्पन्न कर दी है। इसीलिए नई कविता की शिष्टा का स्वीकृति तथा निर्धारण भी नहीं हुआ है। यद्यपि हिन्दी के कवि यज्ञों का जन्मीतार नहीं कर रहे हैं, न ही उसमें पत्राचार करना चाहते हैं परन्तु अन्याय का जन्मीतार भावना के उन्मूलन के लिए वे अवश्य दृष्टगन्तव्य हैं। इस प्रकार कविता की वतमान कविता का विषय क्षेत्र-गत विविध और विस्तार भी कवि की इस माध्यम के दायित्व के प्रति सजगता का परिचायक है। हिन्दी की वतमान कविता मिल्वा जायाँ का त्याग कर जिन मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए विस्तार प्रदान और सामंजस्य के साथ कविबद्ध है वे मानववादी में विस्तार रखते हैं। इससे यह स्पष्ट गत मितता है कि नयी कविता मानव जीवन का उच्च उत्तम रूप में ही विचार दृष्टिगत से कविता का एक आन्तरिक विहान अदृष्टि और आभासिक परिवर्तन है जो उनके विचार और भविष्य के प्रति भावनात्मक करता है। सामाजिक संघर्ष के स्तर पर इमानदारी न भी नये कवि का अपने उन दायित्व के प्रति निष्ठावान बनाया है। यद्यपि नयी कविता का एक बहुत बड़ा भाग निरन्तर गन्तव्य एवं दायित्व के लिए रूपों के विस्तार तथा निर्विकार विज्ञान में भी गया है परन्तु कवियों के मन में उत्तम वस्तुतः इस प्रकार के अर्थ सहज ही उसके विद्यमान भाग और उपनिधियों के रूप में विद्यमान है। बौद्धिक परिपक्वता का सूचन इनमें अन्य कवियों की तुलना में अपुनिक हिन्दी कविता की नयी शिष्टा का परिचायक है। नयी कविता में बढ़ती हुई गद्यात्मकता की प्रवृत्ति भी उसके भावात्मक रूप का आभास दे रही है। दूसरे पक्ष में यह कहा जा सकता है कि गद्यात्मकता की यह प्रवृत्ति नया कविता का एक विशेषता सा बनती जा रही है। प्रयोगवादी काव्य प्रवृत्ति के आरम्भिक चरण ही

गयी कविता में जो मुग़ल दाग़ पाये जाते हैं और जिसकी जाहज़ान में भी आवश्यकता है वह यह कि ग़ीबतों के नाम पर भीकाने या आहूत करने का प्रतीक कविता में बहुत कम मिलने लगी है। अतः हमें यह भी अभिव्यक्ति के रूप में अत्यन्त अमूल्य काव्य मिलने लगे हैं। कहीं कहीं पर कवि ग़ीबतों का नाम दुष्कृत और अस्पष्ट रूप में ध्वनित करता है कि पाठक को उतने मात्र में उपलब्ध मानना ही है। हमें अतिरिक्त ग़ीबत कविता विविधता तथा परिमाण की दृष्टि से ग़ीबत व्यापक और विज्ञान है कि जब तक उमरु ग़म्वर मूहम्मदन के पत्रों में उमरु की उपस्थिति का संयोजन नहीं होगा तब तक वह कोई मुताबिकता ही नहीं इंगित कर सकती।

परिशिष्ट—(३)

नामानुक्रमणिका

अ	
अविकाचरण व्यास ३००	अमतराय ८५
अकबर ६१ ७५ ७७ ८७ १२३ १४३	अमर द्वाजा ८४
१८२ १८६, १८५ २०४, २०५ २०६	अमरसिंह २६६ ६७ २३६
२०७ २०८	अमान २८२
अकबर अली खाँ २३४ २८२	अमोर खुसरो १६८
अपजनी १४४	अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ३०४
अप्रदास १४३ १४४	३२० ३८८
अगरास ८३	अजन ७२
अगरमान दास ८३	अजनव ६८ ७७
अजबग ८३	अजनसिंह ७४६
अजयचन्द १०६	अरविन्द पाप २६३
अजोतसिंह ७४ २७८	अलवली २०१
अजीमुद्दौल २७६	अलक छा ११३
अद्दहमाण ४६	अलहाद ८३
अठाचार्य १७१	अलहापर खाँ २३३
अन्त करण १२०	अलाउद्दीन ८५ १०७ १०८ ११३
अनन्तास ६४	२६८
अनन्त कुमार पापाण ३८८	अलाउद्दीन खिलजी ६१
अनन्त कुमारी २१७	अलिक पा ७६
अनन्तानन्द ६३ १४४	अना ८१
अनूप नमा ३१४	अनी मुघल १२८ १३०
अहुन जगाम ७४१	अनीमुहिय २५१
अबूबक ८१	अनीमुनीन खाँ पाउम २८६
अम्बर १८५	अनीसिपार १६६
अम्बरसन १२२	अवधसिंहार प्रसा १६०
	अवध प्रसा १६२

अरधगरण १५०
 अरधगणित २४४ २६०
 अरधगणित २३८
 अरुम २०२
 अरुम गार्हपत्य ६१
 अरुम अथ ३८
 अरुम
 अरुमगार्ह २३४
 अरुमाराम १६६
 अरुनाथ ०
 अरुनद २३८
 अरुनचन २३८
 अरुनच निधान २३८
 अरुनचमथ ३८
 अरुनचमाद २३८
 अरुनच विनास १६६
 अरुनचट ४७ ४८
 अरुमीप्रसाद सिंह ३२२ ३८८
 अरुल्ला १७ १८
 अरुम ८७ ८८ २२२ २३८
 अरुमशाह ११५
 अरु
 इ अनी १३ १६
 इ १५ १३
 इ अजीत १६६
 इ अजीतसिंह १५३ २१४
 इ अरुन ११०
 इ अरुणी १ १
 इ अरुवता ५६ ११७ ११८
 इ अरुवाल याँ ६१
 इ अरुम १६५
 इ अरुसनाम १११
 इ अरुहीम लोदी ६१
 इ अरुनुल्लाह ६८
 इ अरुनुल्ला ११५

इ अरुभाग १८३
 इ अरुम ८५
 इ
 इ अरुम इ विद्यागण २२२
 इ अरुम अथ १६२
 इ अरुम अथ २०२
 इ अरुणी प्रसाद १६६
 इ अरुणीप्रसाद गारायण सिंह १५९ २८७
 इ अरुणीपुत्री गारायणी १७१
 उ
 उ अरुम अथ १७३
 उ अरुम १०४
 उ अरुम ३५
 उ अरुम मूरि ४०
 उ अरुमसिंह २३४
 उ अरुमस ६८
 उ अरुमनाथ कवी २३८ २४२ २५१
 २६४
 उ अरुमनाथ ८३ १०६
 उ अरुमगण अथ ३२२
 उ अरुमसिंह १०५
 उ अरुमनारायण सिंह २६७ २८७ २८८
 उ अरुमनाथ चमार ८३
 उ अरुम ८१
 उ अरुमरायगिरि २४४
 उ अरुम ५५
 उ अरुमपति १५
 उ अरुमपति त्रिपाठी कोविद १५६
 उ अरुमनाथ ८१ ८८ १०१
 ऊ
 उ अरुम ५७ ५८
 उ अरुमदास ८१
 अरु
 अरुमनाथ २५१, २५२

ए	कल्याण १७७ २१४
एडवड सप्तम १२६	कल्याणदास १५८
एनुत बहनी १२८	कल्याणनाथ २०३
औ	कल्याणराय १८५
औरगजब ६१ ७३ ७४ ७७ १०३	कल्याणपुजारा १७८
२३३ २३४ २६० २६८ २७८ ३३	कल्याणसिंह २६८
२७८	कलावती ११२
क	कवचस १२५
कंबलावती ११०	कवचरूप मिसर १२८
कंबल ११३	कवीत्राचाय २३३
कजा ११३	कौचन कुबेरि १६३
कण्ठ्यामर ४२	कादिर २०८
कणहृषा ३८	कातामारती ३८८
कनकावती १०८ १०८ ११२	काह ३८
कनिषम ६८	काहोपात्रा ६२
कपूरच १६४	कामचन्दना ८८
कबीर ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६,	कामचला १२८
६८, ७० ७४, ७४ १७७, २०३	कामतानाथ १६२
कमरिया ३८	कामरमणि १६३
कमल कुबेरि १७२	कामदेवमणि १६० १६२
कमला ११७	कामराज १२८
कमान ७० ७४	कामरूप १२८
कणत्रिया ३८	कामरता १०८
कणसिंह २७१	कामसन ८८ ११८
कन ११२	कायापति ११७
करकुड ४२	कनिदास १७२
करन २५१ २५२	कानिदाउ त्रिवणी २४२ २६४
करनरार् ११३	कानू ७०
करना ११३	कानूराम ८५
करमच १८८	कागागाम ८४
करिगा ८८	कागानाथ १५३ २१३ -१४
करिमन ७३	कागानाथ उपाध्याय छमर (८५४४
करिमूनि मुनि १३५	बनारसी) २८८
करीमाह ११५	कागीराम १६६

बालकृष्णदासामी देव' १५६
 बासिमसाह ११५
 बिनाराम अघारी ८५
 बिननप ७२
 बिनार १४३
 बिनारगाम १६४
 बिनोरीकरण रसिकजली १५१ १५२
 बीति घोषरी ३६६
 बीतिराय ११८
 बीति सिंह १४५
 बील्ह १४४ १४८
 कुकुरीपा ३८
 बुणान ३१४
 बनुबजमान १०३
 बतवन ८८
 कतुमुद्दीन ६१
 कम्भनदास १७७ १८४, १८५ १८८
 कम्भवार २१४
 कुमारमणि २५१ २५२
 कमारिनभट्ट १७०
 करेनाचाय १३५
 कुनपति मिश्र २३१ २३२
 कुनमणि २०३
 कवर ८८
 कवर नारामण ३६८ ३७०
 कुणार्जसिंह २३४
 कुशागिरि २८५
 केदारनाथ अग्रवाल ३५३
 केदारनाथ मिश्र प्रभात ३१५
 केदारनाथ सिंह ३६६
 केशरीसिंह २४४ २७४
 केशव १७० २२५
 केशवदास ८५ १५३ १५४ २१३
 २१४ २१५ २१६ २१७ २२७ २३७
 केशव मिश्र १७१

केशवदास २२७ २३१
 केशव भा १ १२२
 केशरी कमार ३८८
 केशरी केशरी ३८८ ३८९
 कोतारि १००
 कोतारि रा १०३ ३१५
 कर्ण ११८
 कर्ण विनाम १४६
 कर्णगाम ८४ १६५ २१५
 कर्णाराम २३८
 कर्णामान १७२
 कर्ण ५३ ५५ ६१ १५७ १६४ १६८
 कर्ण कवर ७३
 कर्ण प १७२
 कर्ण पत य १७७
 कर्णाराम २१४
 कर्णाराम १४८ १७७ १८४ २८७
 कर्णाराम अधिवारी १८३ १८४
 कर्णाराम पयहारी १४४
 कर्णाराम प्रसाद गौ ५३३ बनारसी ३८८
 कर्ण देवराय १८३
 कर्णानान २८६
 क
 कर्णाराम २७३
 कर्णाराम २०६
 कर्णाराम १२५
 कर्णाराम १७७
 कर्णाराम १३८
 कर्णाराम ११५
 कर्णाराम १४३
 कर्णाराम १३६
 कर्णाराम ५१ १६५ २७१ २८२
 कर्णाराम १२५ १२६
 कर्णाराम १२५
 कर्णाराम ५६ १७०

धर्मचन्द ०४८
 धर्मदास ८२ १४३
 ध्वजा ९१
 ध्वजा बहम १२५
 ध्वजा धिच ८३ १०४
 ग
 गग २०६
 गग कवि ०६५
 गगधर २२१
 गगस्वामी १००
 गजन २५१
 गगा ५५ ०२ ८८ १३८ १००
 गगाधर मिश्र २४०
 गगाधरान १३६
 गगा प्रसाद पा० य ३२० २२३ ३
 गगा प्रसाद विमल ३८८
 गगा राम ८६
 गगळ ८८
 गगिष्ठ ०३६
 गघन ५५
 गघवरान १२८
 गघवसन ८६ ८५
 गु डरोपा १८
 गुजान माधव मुक्तिबाध २११
 गुणवत्सल ८८
 गुण ५६ ५१ ११८ १६५
 गुण कवि २८०
 गुणगण्ड साहित्य १ २
 गुण मित्र २०२
 गुणित्ता ८०
 गुणाधर २०२
 गुणाधर घण्ट १००
 गुणा गुणाधर २१४
 गुणा प्रसाद काव्य १५५
 गुणा प्रसाद गुण वनदी ३० ३८६

गरीब ८ १६ ७४ ०१ ८ १६२
 गरीबान १३
 गानवान २६
 गार्गीतासी ८४
 गिरधर १८५ २७४
 गिरधर गमा नवरत्न ३००
 गिरिधर स्वामी १००
 गिरिजा १०५
 गिरिजा कमल माधुर ३२१
 गिरिजा लाल गुप्त गिरी ३१ ३०२
 गिरिधर २८१
 गिरिधर कविराय २८१
 गिरिधर गापात्र ३८८
 गिरिधर शम्भु १२५ २०४
 गुणशान्ता १४६
 गुरु अमल ७१
 गुरु जमराल ७१
 गुप्तार मित्रा मदन ८१
 गुमान मित्र २८०
 गुमाना २५०
 गुमानो पत्र १६५
 गुमानो नात्र १४५
 गुरु गावि मिह ७३ १५३ २०८
 गुरु चिन्तामणि २८८
 गुरु तगवद्गुरु २०८
 गुरु दत्त २४४
 गुरुत मिह १५८ २१८
 गुप्तान २५१ ५२
 गुप्ताय ११०
 गुरु बन्धु मिह ७४
 गुरु भक्त मिह १११
 गुप्तान १ ५ १ ६
 गुणाव कवि २८०
 गुणाव नाम ७४
 गुणावरान २०३

चन्द्रहास १८६	छदालाज १६६
चन्द्रावती १०६	ज
चिन्तामणि १७७ २२५ २२६ २३०	जगो १४३
२६०	जगजीवन १०३ १०४
चतुर्भुज १०५	जगजावन्यास ७५ ७६ ८१ ८३
चतुर्भुजदास (प्रथम) १७७ १७८	जगजीवनराम (द्वितीय) ८५
१८४ १८५, १८८ १९६	जगत्पास १४३
चतुर्भुजदास (द्वितीय) १७५ १७६	जगतराइ १०३
चतुर्भुज शुकन २३८	जगतराम २००
चतुर्भुज साहू ८६	जगतीसह २५१
चतुर्पास १६६ १७७ २०२	जगत्प्रा प्रमाण मित्र हिनयी ३१५
चतुर्मुख ३६, ३८	जगतीय गुप्त डा० ३८२
चम्पा ११३	जगतीश चतुर्वेदी ३८६
चरणपास ८३ ८४ ६६ १४५	जगतीश प्रमाण मातम १५५
चापा ८८ ८८	जगन्नाथ २२४
चातुर्वय ५६	जगन्नाथ अवस्था २८०
चित्रपास ७५	जगन्नाथ प्रमाण चतुर्वेदी ३१५
चित्रनिधि १५०	जगन्नाथ प्रसाद मित्रिन्द ५१५ ३२२
चित्रमन चितरा १२८	जगन्नाथ दाग १४३
चित्रमेन ६१ ६६ ११८	जगन्नाथी १७७
चित्रावती ६६ १०० १०१	जगन्निव ५७, ५८ २०२
चूहणराज ८४	जगपति ११७ ११८
चतन स्वामी ८१	जगपतिराय १०८ १०९
चता ११८	जगमन १०५
धनलाज २३८	जगमाहन सिंह २६५, ३ ०
धरम महाप्रभु १६६ १७१	जगरानी १०५, १६०
छ	जगराय १०८
छत्रधारी १६६	जगत्कर २२५
छत्रपात्र ७८ ८० १४७ २५६ २६६	जनकदुतारी जरण वामनजी १६३
छत्रसार परनापुरा २४६	जनकरात्र १५१ १५२
छत्रसिंह कायस्थ २६६	जनकसाहिबी राय १६५
छात्रम ७५	जनगाथान ७५ ७६
छात्रस्वामी १७७, १८३, १८८	जनाबा ६२
छोगा १०७	जनात्र प्रसाद मित्र ३१५
छाहन २२१ २२२	जनहृत्विदा १४८

जम्भाला ७४
जयराम १८
जम्भाला १६
जमान २ ७
जमान ४२ ५६ १७ ३१४
जय ४६ ६२ १८ १७७ २१४
४२४
जयनाथ तिन ३८८
जयराम ७०
जयानर प्रसाद २८ ३२८ ३१
३३२ ३३३ ३४४
जयसिंह १५१ २२७ २६०
जयान २१४
जवाहिर ११५ ११६
जसकलित ३६
जसवत १७७
जसवत सिंह २४८ २५१ २६६ २७६
जहागीर ६१ ८१ ८८ १०३ १०८
११४ २०१ २०८ २१८
जहागीर चिन्नी शिमनानी ८३
जहादरशाह २६५
जाज पचम १२६
जान कवि १ २ १०३ १०४ १ ५
१०६ १०७ १ ८ १०८ ११० १११
११२ ११३
जानकी चरण १६५
जानकी दाम ८२
जानकी प्रसाद १५४ १६२
जानकी प्रसाद (प्रथम) १६६
जानकी प्रसाद (द्वितीय) १६६
जानकी प्रसाद रसिक विहारी १५८
जानकी रसिक शरण रसमाला १४८
जानकी स्वामी १७
प्रीतिवता १६२
शास्त्री ३७४

निता ७४
निता १ गुरू ३७ ४६
निता १ गुरू ४७ ४८
ना ११० निता १४ ३३५
नीर १२०
नाथनाथानी १७१ १७७
नीर २४४
नाथनाथानी २००
नीरनाथ १४१ १५१ १ २ १८६
नुतार्या ७४ १७
नुतार्या १२३ १ ४ १२८
न १ ७१
नतपान ६८
नमिनी २८३
ना ७ ३७
नागराम १६५
नागीनाम ८१
नाथराज २६८
नारावरसिंह ७४ २३६ २६६ २७८
नोतिरीश्वर ठाकुर ८८
नवाला प्रसाद मित्र १४५
न
नाथनाथ १५७
नामदास १६५
नाथारानी ६८
न
निततराम २४५
नेडणवा ३८
नोडरमल २०४
न
ठाकुरदास २७३
ठाकुर प्रसाद शर्मा ३२०
ठाकुर प्रसाद सिंह ३८६
ठाकुरसी २०३

४	दमयन्ती १११
डडरात्र ८६	दयाकुमारी ७१
त	दयानिधि १६६
तसमय १२६	दयावाई ८२
तपस्वी राम १४४ १४५	न्याराम २७८
तातिमा ३६	दयात्र शास ७४ ७८
तानसन १८२ १६५ २ ५ २०६	न्यातुजी २४८
तारा च ६१ ६२	दरिया साहब ८४
ताराजी २७६	दरशास ८४
तारा तिवरू १८६	नरपत विजय ५१
तारा दन्त गगना ७४	दन्पति २५१
तारा पाण्डय ३८६	दन्त सिंह २४५
नितापा ३८	नगन सिंह १५६ २६०
तीघरे ठाकुर बु नरगणी २७२	नरगीर १२५
तुलसी दास (प्रथम) १३५ १३६ १ ७	दाऊजी गण्ड डा० १८२
१ ८ १२६ १४०, १६७ १६८ १६६	दातू ७१
२० २०८ २१० २८३, ३०६ ३०६	दाशमाई नौराजी २६३
तुलसीदास (द्वितीय) १७२	दातू न्यात्र ६६ ७४ ७५ ७६
तुलसी राम १४४ १४५	दामातर शास मवरजी १७३
तुलसी साहब ७० ८५ ८६	नानियात्र ६३ ६४
तग बहादुर ७३	दामातर प्रसन्नरामानुज १४६
तजभान ७१	नानातर वर १८०
तमूर तग ६१	दामातर ७३
ताता १२६	दारिकपा ८
ताना राम २८३	दाहिनी ५६
तापमणि २३६	दाल्ता ७२
तापनिधि २५१	दिनकर २१४
ताबरशास ८६	दिनीर ११४ ११६
नृप्या ७०	दिवाकर १४३ १४४
ष	दिवाकर भट्ट १४०
षान राय २४५	दीनन्यात्र मित्रि २८५ २८१
४	दीनयाहि २८२
दंडी २२	दीवानबा १०६
दन्त २५१ २५२	दुग्धन शास १००
दस्तावेज ८५	दुगातर १६२

दुर्गावती १८४	ध
दुर्गाराम ११८	धर्मादा ४३
दुर्गारनाथ भार्गव ३ ८	धर्मादा २०४
दुग्ध त कुमार ३८८	धर्मादा रिम ११६
दुर्गाभिरा ३८	धर्मादा ६३ ६८
दुर्गा १६८	धर्मादा १००
दुर्गा कवि २४२	धर्मादा १६६
दुर्गा २६४	धर्मादा २४४
दुर्गा १०० २३४	धर्मादा ३०
दुर्गा नाम २४४	धर्मादा ३० १४३ २०२ २०८
दुर्गा ११४	धर्मादा २०३
दुर्गा १६२	धर्मादा भार्गवी ३६८
दुर्गा ३८	धर्मादा ४१ ४२
दुर्गा १४४	धर्मादा ४४
दुर्गा ८५	धर्मादा २ ३
दुर्गा ३० ३३ ८१	धर्मादा १४५
दुर्गा ११३	धर्मादा १६२
दुर्गा ३० ४३	धर्मादा १६६ १०६ १००
दुर्गा ६३	न
दुर्गा दिनेश ३८८	नग ३३ ३३०
दुर्गा १३६ २१४	नगराम २८८
दुर्गा कवि चक्रवर्ती ३००	नगरादि १५५
दुर्गा वाक् १५२	नगरादि वाजपयी ३३
दुर्गा ८३ २०३	नगरादि १८४ १८६ १८०
दुर्गा कायस्थ १६५	नगरादि १००
दुर्गा १२२	नगीयाकूब १२३
दुर्गा २३३	नगरादि ४४
दुर्गा ३०	नगरादि नाह ५१
दुर्गा २४६	नगरादि १००
दुर्गा ३८	नगरादिदास १४३
दुर्गा ३६	नगरादि जी १००
दुर्गा १३६	नगरादिनिहद ६३
दुर्गा प्रसाद मित्र ३१४	नगरादिदास २०१
दुर्गा २८	

नरहरि २०३ २०४
 नरहरिदास १३५ १३६, १५८
 नरहरि देव १८२
 नरेन्द्र शर्मा ३२२ २४४, ३५०
 नरे द्रसिंह २७१
 नरेश महता ३६८
 नरोत्तम जी १७२
 नरोत्तमदास २०१
 नल १११
 ननिनिविचोचन शर्मा ३८८
 नवनिधि दास ८३
 नवनीत चौबे ३००
 नवरग २७६
 नवलसिंह १२४
 नवरासिंह कायस्थ १६५, २८८
 नसिंहलाह छाँ २२६
 नसीर १२७ १२८
 नसीरुद्दीन ११७
 नागमती ६४ ६५
 नागर १७७
 नागानुन ३५४
 नाथभट्ट १७७
 नाथमुनि १३४
 नाथूराम शर्कर ३०३
 नाथूरामाह ६१ २७६
 नाथक ७० ७१ ७४ २६३
 नाथक ७०
 नाथक पानगाह ७०
 नाथकसाह ७०
 नाथक साहब ७०
 नाथकी ७० ८६
 नाथबाई ७५
 नाभाधनी १४४
 नाभादास १४३ १४४

नामध ६१, ६२ १६६ १७० १७७
 नामवरसिंह डा० १८०
 नार ५५
 नारायण ६२ २०३ २४०
 नारायण दास १४३ १४४
 निजामी १२४
 निजामुद्दीन औलिया १३
 नित्यान १३६ १७१
 नित्यानद तिवारी ३८६
 निपट निरजन २ २
 निपट निरजनी ८१
 निम्बवाचाय १७०
 निम्बभास्वर १७०
 निम्बादित्य १७०
 निरतबिहारी माधुर १२६
 निरजन २२७
 निमलद १०५ १०६
 निमल शर्मा ३८८
 नियमानाचाय १७०
 निवासाचाय १७१
 निहालराय २४४
 नीना ६४
 नीरज ३७७
 नीरू १४
 नीरुद्दीन ६४
 नीरकठ २६०
 नीरकठ मित्र २४
 नूरजहाँ १२४ १२६ २ ८
 नूरदास १२४
 नूरदीन १०३
 नूरमुहम्मद ११७ ११८
 नमिच ४८ ३६३
 नमि गाडु ३६
 नबाज २५१

नहरा ती १४७	परगुणम ११
नहागरी राम १७७ १७८	परगुणम शर्मा ११ २२१
नामरीया २६२	परगुणम मि २२२
नामनिह ११२	परगुण १३५
नामिह ५५	परामा १५ १८८
प	परामा ८८
पचम सिंह १६५	परामा ८५
पुण्डरीक १३५	परामा ८२
पुण्डरीकी ५६	परगुणम नारायण ४३
पञ्चनग २८८	पद ४ ८०
पडिहार १६	पदनामास ८३ ८६
पत नन ३५	पारापनाम ८४ ८६
पतितनाम १६२	पारीछन २७७
पामकीति ४७	पानती १३८
पद्मनाभाचाय १६६	पीपा ६३ ६८
पामाकर २४६ २४७	पीपात्री १७७
पामाकर भट्ट २७३	पीरभता १५५
पामावती १६ ६१ ८४, ८५ ११२	पीर अरफ ११५
१२२	पीरजान मुदीदीन १०३
पद्यावती (द्वितीय) १८४	पीर मुहम्मद १५५
पद्मिनी १०४ १०५	पुल्लुनान गुवन च द्राकर डा० ३८४
पामसन १२२	पुनर सिंह १५५
पना २८३	पुणाधाकृष्णदास १४५
पवहारी १६	पुष्पसदन ६३
परजाप्रति १२२	पूरनमन खत्री १८३
परमरूप १०८ १ ८	पुर दर ११२
परमनदे १०५ १ ६	पुरुषोत्तम १०५ १०६ १८४
परमानन्द १७७	पुण्यस्त ३६ ४०
परमानन्द दास अष्टछाप १७७ १८४,	पुहकर १११ २१८
१८१ १८२	पुहुपावती १२२
परमानन्द १७७	पूथ पूरनच १६६
परमानन्द श्रीवास्तव डा० ३८८	पूरन ८६
परमानन्द ५६ ५७	पूरनदास ७८ १४३
परमश्वर द्विरेक ३८८	पुणवरायी १४४
परमश्वरीनाम १६५	पुर्णानन्द १३६

पूणनाथ १५६	फ
प्रताप कुबेरि बाई १५६	फजरान १३०
प्रतापनारायण टाडन डा० ३८४ १७५	फकार राम २४४
प्रताप नारायण मित्र २६५ ३०० ३१८ २२७	फाजिबखत्री २३३
प्रतापनारायण सिंह २८० २६३	फतहसाह २४३
प्रतापसाहि १६५ २४६	फतहसिंह ७४ २७८
प्रतापसिंह २४० २४५ २४६	फरहत साहब ३००
पया कुमारी ५६	फकहर डा० ६२ ६६
पयीचन्द ७२ ७४	फरु खसियर २६५
पध्वीचन्द ७६	फतहचन्द्र ११३
पध्वीपतिसिंह २५८	फिगार १२८
पध्वीराज चौहान ५२ ५३ ५४ ५६ ५७ ३१४	फीराजतुमानक ६१
पध्वीसिंह २८०	फीराजासाह महता २६३
प्रबाधनन्द सरस्वती १७७	फूलमना १३०
प्रभाकर माचव डा० ३६४	फरु ७१
प्रभूवासल जग्गिहात्री ३८६	ब
प्रयागनाथ १४३ १४६	बन्न पाठक १६६
प्रयागनारायण त्रिपाठी ३६६ ३८८,	बन्ना ७४
प्यार राम १४६	बन्दा बहादुर ७४
प्रवीन २६०	बन्नागिन दीपित १६६
प्राणच चौहान १४६ १६४	बधना ७५
प्राणनाथ ८१	बज्रावरसिंह १५७
प्रियानाथ ६ १४ १४४ १५५	बन्ना गावानाथ १५५
१७३ २१०	बन्वन १० ३४४ ३७६
प्रियासुधी १६४	बडिनाथ १७
प्रमच ३४५ ३४६	बड गध ६३
प्रमदास १७२	बन्नासिंह ४० २७०
प्रमराम २४४	बन्नीनाथ मठ ३११, ३५८
प्रमरता बमा ८६	बन्नीनाथमण चौधरा प्रमदन २८७
प्रमसुधी १५०	१ ० १५ १२७
प्रमसुधी (मिनाथ) १६५	बनबाग ७५ २६६
प्रमसन १२६ १२७	बनबारीनाथ १४३
प्रमा ६१ ८२ ११८	बनागाज १५६
	बनारना ०
	बनारनाथ २०६

बरिचडासिंह २६५	बा।मुठु २ २१०
बाबूदास १६२	बा।मुठु १ मुठु ३०१ ३१- ३२७
बाबू १६२	बा।गंगाधर गद्दी ३७६
बाबूबाबा १५० १६१	बा।गा २ १४६
बाबू प्रभाकर मिश्र १५४ ३१२	बा।नागम १६१
बाबूदव विद्याभूषण १७१	बा।दा २ १४१ ८८, ८८
बाबूबा ६१ १७०	बा।वरी गार्गिया - १ ८२
बाबूभद्र २१४	बिठु १ ६१
बाबूभद्र मिश्र २०२ २१३	बिठुन १ग ७८
बाबूवन्त सिंह १२६	बिठुनाथ १८१
बाबूवीर २८७	बिठुनाथ - १४६
बाबूवीर सिंह ८ग ३८८	बिठुमन १७०
बाबूसागर ११	बिठुनाथ ७१
बाबूसन १२६	बिठुरी २२७ २२८ २२८
बाबूदव २८०	बिठुरादास १७७
बाबूबर ४७ ४८	बिठुरीगम १८२
बाबूत २७०	बिठुरीनाथ २३१
बाबूतदव ३८६	बिठुनाथ १७७
बाबूबाबन १५१	बाबूबाबन ८४ २०१
बाबूदुर शाह ६१, २७८ २७८	बीर ८१
बाजीराव (द्वितीय) ८५	बा ६४
बाबून ८५	बीरनाथ ११
बाबूबर ६१ ८३	बुठुन ७४
बाबा बंभू १२५	बुठु ११
बाबा रामचंद्र ८३	बुठुनाथ ८४
बाबा नान ८०	बुठुसन ११७ २८३
बाबा हाजी ८८	बुधवत १ ८
बाबू नरहरदास १६१	बुधसन १२६
बाबूअली १४५	बुधनानाह १११
बाबूकृष्ण १४१ १४६ १७७ १८४	बुठुना ८५
२६८	बुठुनाशाह ८४
बाबूकृष्ण राव ३७३	बुठु ११८
बाबूकृष्ण शर्मा नवीन ३२२ ३२८ ३७२	बुधनानु कुवरि रामप्रिया १६१
बाबू गंगाधर तिवर २८२	बुठुपति ८८
बाबूदास ८३	बुठु २११

वनी प्रवीन २५१	भगीरथदास ८५
वनी वन्दीजन ०४/ २४५	भट्ट १७७ २०२
वजनाथ पूववशी १५८	भट्ट कपार ५७
वतात्र कवि ०३७	भरत (जि०) ३५ ३६
वरमथा ००८	भरत १०८ १३८ १३८
वरीसाल २५१ ०५२	भक्त मुनि २०४
वोदई ८६	भरतराय १०८
वोधा २८३ २८४	भवनाथ ७८
वज्र बहादुर १२६	भवानीपत्त शय्य २३४
वज्रभार शक्ति २०२	भवानापास २८८
वज्र भूषण नाथ १६५	भवानीप्रसाद मित्र ५६५
वज्रलाल १६५	भादास ७७
वज्ररत्नपास ३१५	भादपा ५८
वज्रवासीपास २८३	भानुचन्द्र २०८
वह्यकवि २०५	भानुप्रनाथ तिवारी १४५
वह्यपत्त २०५ २५१ २५२	भानी ७१
वह्यदान २०५	भामह ३५
वह्यकर मित्र ८६	भारत भूषण अग्रवाल ५६५
वह्या ५४	भारतगु हरिप्रवृत्त १४५, २७४ २८२
त्रिभ्र ६४	२६५ २६४ २६७ २६८ २६६
भ	०० १६ ५२७
भडारकर ६३	भात्र गमा २१४
भक्त राका बाका १७७	भाबसिंह २५०
भगवतराय याचा २३३ २७२	भाभानन्द ६३
भगवतमिह १६५ २७३	भाभ्यगावान १७०
भगवतदास रामानुज १६५	भियारापात्र २ ७२ ८
भगवतमुदित १७३	भोवा साह्य ८१ ८५
भगवत रसिक २०१	भाभ ५८ १११
भगवती चरण वर्मा ३२२ ५४४ ४६	भाभ दत्र ५५
भगवप्रारायण १४४	भाभसिंह २४५
भगवाननाथ १४३	भाभनन १२२
भगवानपात्र जन यश ३१ १७८	भाभन ७४
भगवाननाथ ग्री १६५	भाभ २४४
भगवानपात्रनिरवना ८१	भाभ अत्रवे १ २०२
भगवानात्र १६२	भवानकवि २०२

भूपति ११७ २३६	मंगुदा १०९ १९५
भूपान १०५	मंगुदा भाग २८५
भूपण २२५ २३० २४८ २६० २६१,	माभारत १६२
२६२ २६३ २६४	माभारत १२०
भूमिका ३८	मागा ११
भैरव ५५	मतिगामिनी ८६
भरवत्त मित्र १५६	मतिगाम १५१ २५१ २७१
भागीरथ २३४	मतीमठ ७४
भाज ५१ २२४	माहूर ६१ ८२ २०७
भाजराज १८८	माहूर वरिष्ठ १७२
भाजराज १७२	मन्त्रादि ३ गुरुगुणी ३१५
भाजराज ११५ ११६	मन्त्रागत वि २८६
भासना २६३	मन्त्रावधि ३८८
म	मन्त्र २२१
मचित २८४	मन्त्र कबीर ८३
मक्षन ८ ६१ ८२	मन्त्र मुहम्मद जादगी ८३ ६४
मडन १६४ २५१	मन्त्राराज अक्षर ८३
मसादास ८४	मन्त्राह १२५
मकरन्द गाह २२५	मन्त्रागत ७३ ७७ ७८
मगनीराम ८४	महम जगा २ ८
मजनु १६५	महमूद गजनवी ५० ६० ६१ १३०
मणिव २६७	महाराणा भागा ६६
मणिराम १५८ १६२	महानवि महापात्र २०३
मन्तिराम २२५ २३० २६०	महात्मा गांधी २८३
मदनकता ११०	महादेव ६२ ७१
मदनमोहन मालवीय २८३	महादेव मित्र १५७
मदनराज ११०	महादेव राना ३१८
मदनसिंह २३३	महादेवी वर्मा ३२८, ३८, ३४० ३४१
मदन वात्स्यायन ३६८	३४२ ३४३, ३४४
मधकर कवि ५७ १ ८	महानद १०५ १०६
मधकर शाह १५३ १७४	महावती ११८
मधुमालती ६१ ८२	महामोहिनी १२०
मधरअली १६४	महानदमी १८३
मधरप्रिया १४८	महावीर ३१४
मधराचाय १४६	महावीरदास १५६

महावीर प्रसाद द्विवेदी ३०१ ३०६
 ३१५ २१८ ३२०, ३२२ ३२८
 महिमाह्न १०४
 महोपा ३८
 महोदय भन्नागर ३५५
 महेश १३७
 महेशचन्द्र प्रसाद ३१५
 महेशान्त १६६
 महेशानारायण २८८
 महेश्वरमूर्ति ३७ ४७
 माखेन मधुसूदन दत्त ३१२
 माखन १५५
 माखननाल चतुर्वेदी ३२२ ३२८
 मातादीन चौध ३००
 मातावादी ७५
 माधव कत्यक १६६
 माधवदास १७७
 माधवदास चारण १६४
 माधवमुनि १७७
 माधवाचार्य १७०
 माधवानन्द १३६
 माधवानन्द ८८
 माधव द्र पुरी गोस्वामी १७१
 माधोदास १७७
 मानववि २६६
 मानमणि १६६
 मानदास १६४
 मानराम ११४
 मानसिंह १४३ १५ १८५ २७१
 मानसिंह द १२२
 मायानन्द ८९
 मायावा १२०
 मायकाय ६
 मायती १०६ ११८
 मायानन्द १०-

मिर्जाकाशिमिरी २७
 मिस्त्रीदास ७४
 मोरनीना ११६
 मोरदादा ६८ १७७ १६६ २००
 मुञ्जम २७८
 मुकटघर पाण्ड्य २१५
 मुक्ताहार ११५
 मुगलराय ५६
 मुनिनाथ १२६
 मुनिराम सिंह ३७ ४२ ४३
 मुनालान १६६
 मुबारक २१६
 मुस्लीघर २६५
 मुस्लीघर राव २४८
 मुरारि कृष्णायी ३१५
 मुगल स्वामी ७८
 मुला दाऊद ८८
 मुसलनह छा २६५
 मुहम्मद अमीन १२५
 मुहम्मद गारी ५१, ५२ ५६ ६० ६१
 २१४
 मुहम्मद छा २७६ २७७
 मुहम्मद फनी ७४
 मुहम्मद गार्ह ६१ ११५ ११७ २३६
 मुहम्मद सफी १२७
 मून १६५
 मूना साहब ७० ७६
 मकानिक ६८
 मन्नीगार्ह २४३
 मन्नाग ४७ ४८
 मधिसागरण गुप्त १०८ २० २२८
 मना ८८
 मा । रात्रभान ५६
 मानोराम १६५ २५०
 माना गुनाठी ८६

रसमालिका १४०
 रसमालिनि १४८
 रसलान २४१ २४२
 रसिकगाविद १४३, २४०
 रसिकदास (प्रथम) ८०
 रसिकदास (द्वितीय) १८०
 रसिकदास (तृतीय) १८०
 रसिकदास (चतुर्थ) १८०
 रसिकदास (पञ्चम) १८०
 रसिकचौ १८२
 रसिक नारायण १४५
 रसिक विहारो १५५
 रसिकराय १८४
 रसिकलान १७२
 रसिकलान विहारो १४४
 रसिक बल्लभचरण १६६
 रसिकमुमति २४१
 रहीम २०८ २२७
 राघव राघव १० १२३ ३५०
 राघवदास १२६ १७७
 राघव चतुर ८१ १ ७
 राघवान ६३ १ ६
 राधादास १६८
 राजकमल चौधरी ३८७
 राजावर ११७ ११८ १३०
 राजगाथा विष्णुस्वामी १७०
 राजनारायण विहारिया १८८
 राजपति १७०
 राजमथी ४१
 राजराधनास १४२
 राजवल्लभा ११८
 राजाधर ३४
 राजासिंह २३३
 राजा दश १०७
 राजा बलबन्धसिंह २०१

राजावाइ २२
 राजा रणमन् ५८
 राजा रसान १ ८
 राजा राममाहून राय १८
 राजा रूपराइ ११०
 राजा नमणमन ६१
 राजात्र किाग १८५
 राजात्र माग १८८
 राणा सागा १६६
 राधा १७१ १७६ १७८
 राधाकृष्ण गास्वामी ३१८
 राधाकृष्णदास २८७
 ०० १८ ३२७
 राधाचरण गास्वामी २८८ ३००
 राना ७१
 रागी दुगावता १०१
 रानी पावती १०५
 रानी रूपनिधि १०५
 रानी रूपरात्रा ११०
 राजसिंह २७६
 राम १०७ १२७ १३८ १३६ १४०
 १४६ १४ १४ १ ७ १ ८
 रामकिशोर १६४
 राम कुमार बन्ना झा १२२ १ ० ३४४
 राम बृवरि १४१
 रामकृष्ण बन्ना २८६ ००
 रामगुप्तान १४१
 रामगुप्तान द्वितीया १५४
 रामगाथा १६४
 राम चन्द्र २८४ २८६
 राम चन्द्र गाम्त्रा १४५
 रामचन्द्र शुक्ल ६३ ३१४ १२८
 रामचरण ८४ ८६
 रामचरणदास ८३ १५१ १५२
 रामचरित उदाध्यान १५४ १०६

ह्रस्विह २२५
 रूपविचार ३००
 रूपगास्वामी १७१ १७७
 रूप चन्द्र २०६, २४८
 रूपजस २७६
 रूपनारायण पाण्डव ३०७
 रूपमजरी ६१ ११२
 रूपमती १२६
 रूपरम्भा १०४
 रूपनाल १४६
 रूपसरण १५१
 रूपसहाय १६५
 रूपसाहि २५१ २५२
 रूपसिंह १५०
 रूपमन १२६
 रत्नास १७७
 रत्नसी ५६
 स
 सधु ऊया १४३
 सछगम ३००
 सछिराम १६६ २८०
 सढवीवान १७७
 सनकनाथ १६५ २८८
 सनित किमारी १८२ २०
 सनीर २०२
 सहिता ७० ७१
 समण १६६
 सधमण गणि ४७ ४८
 समण देव ७५
 सधमण प्रसाद १५५
 समण घण्ट १८३
 सधमणबन १५८
 समणवावा १५०
 स सी ५५ १३५ १८४

लभानान्त वमा ७४
 लभमी दत्त ७०
 लभमीनास ७० १३५
 लभमाधर बाजपया ३१५
 लधमीनारायण २०२
 लधमीनारायण पौहारी १६२
 लभमा प्रसाद २८८
 लधमीराम १५१
 लाडिनो दास १७२ १८०
 लभामन १२६
 लानकवि १६६ २६८ २८७
 लाल कुवर १३०
 लालक'द्र'नास १४४
 लानकनाथ २०१
 लालकनाथ हनुवार्डे १६६
 लालनास ७८ ८० १६५ १७७ २०२
 लानकेव ६८
 लानमणि १६५
 लानमुहम्मद १२५
 लान साह्य १५०
 लाना २०५
 लाना बाजपय राय २६२ २८३
 लानासाहि १२२
 लुईया ५८
 लान १११
 लानना १७२
 लारारबाय १ ६
 लानन प्रसाद पाण्डव ३१५
 लाननाथ १६५
 लान ११८
 लारिक ८८ ८६
 ल
 लानाधर २५१

वारसिंह ७४
 वारसिंहदेव २१४
 वीरसन १११
 वारेन्द्र कुमार जन ३८६
 वीरन्द्र मिश्र ३०६
 वर व्यास २१४
 वस्वट ६४
 वदही शरण १६६
 वमूख १२३
 वष्णव्यास १४५ १००
 व्रत ११२
 व्यास १००
 पासतीय १८३
 व्यास मिश्र १०१
 व्यासस्वर १००
 श
 शकरास १५१, १६२
 शकरपति त्रिपाठी १५६
 शकर त्रिपाठी १६६
 शकराचाय १००
 शम्भुनाथ २५१ २५२
 शातिषा २८
 शातिप्रिय द्विवेदी ११० १८८
 शकुन्त माधर १६६
 शबरपा ३८
 शम्भरी ११५ ११६
 शमशर बहादुर सिंह ३२२ ३६०
 शम्भुनाथ बी. जिन १६१
 शम्भुनाथ मि. र. २०२
 शम्भुनाथ सिंह ३०८
 शम्भुनाथ २४०
 शम्भुनाथ ५६
 शम्भुनाथ १३८ १ ६
 शम्भुनाथ सिंह ३८८

शासार मिया सलान ६२
 शालिगराम ८६
 शालिभद्र मूरि ४७ ४८
 शाहजानम १२३
 शाहजहा ६१ १०३ २२० २२५ २६०
 शाहजी २६०
 शाहनजफ़त्रवी सनामी १२४ १२५
 शाहनिजाम चिन्ता ६८
 शिख ४१ ५५ ६५ ६६ १ ७ १३६
 २७२
 शिवकुमार २६३
 शिवप्यात ८२
 शिवप्यास २ ६
 शिवजीत २६५
 शिवनाथ १४४
 शिवनारायण ८२
 शिवप्रकाश सिंह १६६
 शिवमगत सिंह मुमन १२२ ३२८
 ३५२
 शिवरत्न मुक्त सिरस १००
 शिवराम ८५
 शिवराम पाण्डेय १२२
 शिवराम पाठक १५२
 शिवराजन गाम्त्री १५२
 शिवराम राय १६५
 शिवरामदास २५१ २५२
 शिवरायण पाण्डेय ११५
 शिवसिंह १६५
 शिवाजी २५६ २६० १६१ २१० ६३
 शिवराम ००
 शिवराम १६ १६२
 गुरु ५३
 गुरु २०८
 गुरु अगारा १२६

शख अजीज ८८
 शख जनहदाद ८४
 शख आनम ८८
 शख इत्राहीम ६४
 शख रमान ८३
 शख गुनाम मुहम्मद १२३
 शख तवी ६४
 शख नबी ११३
 शख निसार १२३
 शख फजलाह ६८
 शख बुडढन ८८
 शख बुरहान ८३, १०३
 शख मुबारक ६३
 शख मुहम्मद ८१ १२३
 शख मुहम्मद चिश्ती १ ३
 शख रमजान १२६
 शख रहीम १२६
 शख साई ८८
 शख हबीबुल्लाह १२३
 शख हसन ८८
 शख हाजी ६३
 शख हिनामुद्दीन ८४
 शख हुसन ८८
 शरशाह ८० ६४ २ ४
 शरशाह सूरी ६१
 शरशाचाय १३६
 श्यामनाथ १६६
 श्यामनारायण पाण्डेय ३२२
 श्यामनारायण मि.न. ३१५
 श्याममोहन त्रीवास्तव ३८८
 श्यामराव ८५
 श्यामलाल १७६
 श्याम सध १६६
 श्यामसिंह २८६
 श्यामसुन्दर दास डॉ० ७- २८३

श्यामाग ७ १३६
 श्र
 श्रिया गाय १४६
 श्रीगृष्ण १७०
 श्रीगृष्णराम पयहारी १४३
 श्रीगृष्णराम गाय १५६
 श्रीर ७० ७४
 श्रीर गमुनि ४७
 श्रीघर ५८ १५६
 श्रीघर आगा २६५
 श्रीघर पाठन ३०२ ३२८
 श्र घर मुनि १३५
 श्रीघर स्वामी १७७
 श्रीनिवास १४६ १६६
 श्रीपति २५७
 श्रीपालसिंह शम ३७७
 श्रीभट्ट १६६ २०१
 श्रीम नारायण १३५
 श्रीराम १७
 श्रीराम वर्मा ३८६
 श्रतान द १३६
 श्रम्यान द १३६
 श्र
 पठकोपाचाय १५५
 पिजरपा साहिजादे ११३
 स
 सत दरियादास ८३ ८४
 सत दरियादास (प्रथम) ८४
 सत दरियादास (द्वितीय) ८४
 सतदास १७२
 सत दीनदरवंश ८४
 सत दीयादास ८३
 सत दूननदास ८३
 सतराम ८४ ८६

सत वषा ६८
 सत गत्र फरी ७४
 सत सन्ना ६६
 सत सीमात्री ७४
 सत नान्दर ६२
 सयागिता ५० ५३ ५६
 सिधरय ११२
 सिहमनि २३६
 सभ्रावथा बुहोन उत मु क ०३३
 सच्चिदानन्द हीरानन्द वाल्म्यायन अत्रय
 १/८ ३५८ ११०
 सतीग चन्द्र चौब ८६
 सत्यनारायण कविरत्न ०
 सत्यनामा १८४
 सत्यद्रनाथ थावास्तव ०८६
 सनान १२२ २५२
 सन्तुष्ट प्रसाद शरण १६३
 सनातन गाम्बामी १०३
 सनेदी गुरू १२०
 सफरजा ०४१
 सवतसिह चौहान २८८
 सवनुष मिथ २८२
 समायोत १२५
 समति १२५
 समरवास १६१
 समरसिह ५८ १६६
 समाधन गुप्त १०४
 सम्पतराय १४३
 सम्मन बडि २८८
 समम्भु जयवा स्वम्भु १६
 सरजूवास २८२
 सरदार कवि १६६ ३००
 सरदार कवि २४४
 सरजूवास १६०

सरजूदवा १६०
 सरसम्भ १८०
 सरसनागरा दास १०३
 सरम्बती १४ ५५
 सरह १८
 सरमाता १२०
 सर्वेश्वरग्यान सत्सना १६
 सर्वेश्वरगणम्भ २५०
 सरूप १२८
 सतावत धा २८३
 सनीम शाह ८०
 मल्हणी १४३
 सहजगम १६५
 सहजोबाद
 सहपाल १२३
 सारगधर ४३ ४८
 सायनाचाय १००
 सावतसिह ६८
 साहिबचन्द ०७८
 साहूत्री २६०
 सिक्कर ६१
 सितार तागी ६४
 सिद्धनाथ ८३
 सिद्धनाथ जागी ११४
 सियारामारण १६१
 सियारामारण गुप्त २२
 सियारामारण ठगसा १६३
 सियानान प्रमत्ता १६१
 सियाबन्धन शरण १४६
 सियारण मजुकरिया प्रमत्ता १६०
 सियामथी १५० १५१
 सोना ११८ १ ६ १६३
 सायानिबान १४६
 सीता प्रसाद १६२

सीताराम १५५ १५६, ३०	मुमति १२८
सीतारामदास १६०	मुमित्रा १३८
सीताराम प्रबोधावाय १६६	मुमित्रा कुमारी सि हा ३७५
सीताराम शरण १५१	मुमित्रानन्दन पन्त ३१३, ३२२ ३२६
सीतारामशरण रामरस रघमणि १६०	३३० ३३७ ३३८ ३३६ ३४०
सीतारामशरण शुभनीला १६३	३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८
सीतारामशरण प्रसाद रूपकता १६२	मुमेरसिंह २६८
सीताशरण १६२	मुरति मित्र २३६
मुक्तेशी १ ५ १०६	मुरपति १०५
मुखदयाल दात्रू ७६	मुरमुरानन्द ६३
मुखदेव ११४ २७२	मुरनानी ११४
मुखदेव मित्र १६४, २०२ २३३	मुरेन्द्र विजयशाह १५६
मुखदेव त्रिपाठी १६२	मुरेश्वरानन्द १३६
मुखलान १७०	मुरोत्तम २१४
मुखानन्द ६५	मुलनिखनी ७०
मुजान ८८ १०	मुशीला ६३
मुजानमणि २३४	मुपरास ११२
मुजानसिंह २७०	सूदन २७
मुषरा शाह ७४	सूफीगाह ८१ ८५
मुधाकर द्विवेदी ७४	सूरविशोर १४८
मुधीर पत १६	सूरज १०४
मुदर ११८ २२०	सूरजदास १६६
मुन्दरदास ६६ ७६ ७७ ७८ १६४	सरज द्विज १७७
१७७	सूरजभान ८१
मुदरदास (कनिष्ठ) ७५	सूरजमत २७
मुदरदास (ज्येष्ठ) ७५	सूरदास १६७ १७७ १८४ १८६ १८७
मुदर नान ७८	१८८ १८६ १८० १८१
मुदरसेन ११४	सूरदास मदनमोहन १७७ २ १
मुदनान डा० १८५	सूरमत २१८
मुदरि कबर १६५	सूपणखा १३८
मुन्नी ७४	सूयवान त्रिपाठी निराना ३२२ ३२८
मुशाचाय १७	३२८ ३३३ ३३४ ३३५, ३३६ ३४४
मुवापी १ ५	सूयप्रताप सिंह ३८८
मुभन्ना कुमारी चौहान ३२२ ३२८	सन ६३
मुभन्नाबी १६०	सननाई ६३
मुमापच द्र बोस २८३	

मन ना १७७
 मनापति २०१ २२२
 मन्नाथ मुनि १२५
 मन्त्र १७७ ३००
 मन्वाशन बन्नाजन २४५
 मन्वान १६८
 मन्वद अन्तरक ८३
 मन्वद दन्नाहीम २०८
 मन्व ताजीगाह १२६
 मन्व तुनाम नवा २४१
 मन्व मुहम्मद जौनपुरा ६४
 मन्व मुहम्मद ८२
 मन्व मुहम्मद बाका २४१
 मन्व राज ६२
 सामनाथ २४०, २४१
 सामप्रभ ४५ ४७
 सोनका जनता २०५
 सोनका दबी १५२
 साहनवाल द्विवदी २२२
 स्वयम् प्रकाश १६६
 स्वयम्बरगिरि २८५
 स्वरूपा ८०
 स्वामिनो मरण १७२
 स्वामी अग्रदास १४३
 स्वामी दयानन्द सरस्वती ७४ २६
 २१८
 स्वामी रामकृष्ण परमहंस २६२ ३१८
 स्वामी विवकानन्द २८२ ३१८
 स्वामी हरिदास १७७
 ह
 हर् ६४
 हृ ११५ ११६ ११८
 शृष कुमार विवाही ३८६
 हृषगवन ११२

हठावता ५२
 हजरत मुहम्मद ८१
 हजरत नूसा १२५
 हनुमान १२७ १ ६
 हनुमान दास १४८
 हनुमान प्रसाद १५५
 हनुमान मरण मधुरजती १६२
 हमदल ७४
 हम्मार २५८ २९८
 हरगाविन्द ७२ ७३
 हरनाथ ७५
 हरदयानु सिंह १२
 हरनारायण २८३
 हरमराय २०५
 हरराय ७२
 हरलाल साहब ८२ ८६
 हरि १४८
 हरिकवि १४८
 हरिकृष्ण प्रभो ३२२
 हरिचरणदास १६५
 हरिजन १६५
 हरिदास ७१ ८१ १४८ १४८ १५१
 १६६ १७७, १८५, २०६
 हरिनाथ तूबर १७७
 हरिदास रसिक १८२
 हरिनाथ सहाय १६५
 हरिधन १८५
 हरिनाथ २०३ २१४ २५१ २५२
 हरिनारायण १६२
 हरिनारायण भास २६७
 हरि पुरष ८१
 हरिबन्धु सिंह १६६
 हरिभद्र मूरि ४६
 हरिराय १८५

अनुरागलता लीला १७७	अथ क्यानक २०६
अनुराग वाटिका ३१२	अथ पञ्चक १५७
अनुराग विवधक रामायण ११८	अथ पत्रिका १५८
अनेकाथ नाममाला १०३	अज पत्नी १६०
अनेकाथ मजरी या अनेकाथ नाममाता या अनेकाथ भाषा १८६ १८७	अजकार गंगा २२७
अन्तर्नाद ३१२	अजकार चन्द्रोदय २११
अह्निक अष्ट्याम ११५	अजकार चिन्तामणि २४६
अ यावित कल्पद्रुम २८५	अजकार दण २४३ २१२ २८२
अयावित माला २८५	अजकार दीपक २१२ २७२
अपरा ३३३	अजकार ध्रम भजन २४८
अपरोक्ष सिद्धांत २५१	अलकार मणि मजरी २१२
अपवगदाष्टक २८३	अजकार माला २३६
अपवग पञ्चक २८३	अलकार रत्नाकर २११ २१२ "
अपेन सिद्धांत १६१	अलकार शिरोमणि २४५
अष्ट रामायण १३३	अनक शतक २१८
अभिनवराघव १३४	अनपनामा १०३
अभियान ३१५	अवधवासी परत्त्व २५७
अभिलाप बत्तीसी १८२	अवध विनास १६४ १६७
अभिपक नाटक १२४	अवध विनास रामायण १६६
अभ्यास प्रकाश १५७	अवध सिकार १६५
अमरकोष भाषा २२८	अवध विहार १५७
अमरकोष अथवा शब्दनाम प्रकाश १ ८	अवधी सागर १४८
अमर चंद्रिका २३६	अवधूत भूषण २४४ २४१
अमर प्रकाश २७१	अवतिका २७१
अमर रामायण १५२	अश्विनी कुमार बिन्दु १५६
अमिता १ ७ ३४८	अष्ट्याम २७१
अमीषूट ८५ २१४	अष्टद्व भाषा २१०
अमृत उपन्यस ८४	अष्ट्याम १४३ १४४ १४८, १६१ १८१ २३४
अमृत खण्ड १११	अष्ट्याम ककहरा ११८
अमृतासीति ३७	अष्ट्याम पदावती १५१
अयोध्या बिन्दु १५६	अष्ट्याम प्रबन्ध ११२
अयाध्या विशतिका ११७	अष्ट्याम वार्तिक १५२
अरित्नाहिताता २८०	अष्ट्याम समय प्रबन्ध १८१
अजन और विसृजत २०८	अष्ट्याम मवाविधि १११

बल सञ्जान का वाता १८१ १८२	बालन् रघुनन्दन नाटक १५१
बाल्याग रहस्य ११७	बालन् रामायण १३२
बाल्य सङ्कल्प २१३	जानन्वता ताता १७७
बसुहृत् १२३	जानन्द विनास २११
बहिन्या पूर्व प्रया १५१	जानदाश्व १ २
ब र अनघ र प्रश्न १४७	जानन्नाटक तीता १७७
जगर मातिका ८८	जान्नादन रन्ध्र त्रिपिका १५७
जगरातीति ब्रह्मन्त ११८	जारण्यक १२७
जगरमाता प्राप्य १५७	जाराजना ४४
बा	जाया रामायण १ ४
बाघ मित्रोता घन (अष्टक) १८०	जायावत १४
बागन क पार द्वार २१८	जायास्त्र ०७
बामू ३३१ ३२३	बाराम्य शिष्टान २०७
बाहुन जन्तर २७२	बातम के कविता ८८
बाशिरी कनाम ६२ ६४	बातम कवि ६८ २७८
बाग और पराग २७८	बातिजाह प्रकाश २४
बागम-पद्धति ७६	बा-हा उच्छ १७ १८
बाभक्या ३१२	बाह्या गमाया १६५
बातनबाघ राममन्त्र जाग ग्रंथ २२	बाह्य भाग्य २८१
बाभ सन्वद्य रूपण ११७	बाह्य गमाया २८६
बात-प्रक्रिया १८१	बाग अष्टक १-६
बाति उपर ८१	बागापत्र २७१
बाति ग्रंथ ६८	बागचय चूडामणि १२४
बाति रामायण १२३	बागवाजन २०७
बातिवाणा १६८	
बाहुनिक कवि पन्त ३७ ४ ३४७	इ
बाहुनिक कवि मशूरा ३४१	इगवता ११७
बाध्या म रामायण ३ १३७ १३६	इ-टा विरक २११
बाध्याम सन्त ७	इतरावत ६४
बात ७१	इतिहास क बाहू २७
बात ७ जप २२ २६७	इतिहास पुराण ८१
बात-प्राग विनास ताता १७७	इतराव ४८ ०
बात ८६१ १५७	इगमकविता १ ६
बा न इ नाप्य ६३	इतराव १५८
बा न ७ मगत २४२	इतराव २२२

इक्षकनामा १०८ २८४
 इक्षकमहोत्सव २६५ २६६
 इक्षकता २७८
 इक्षक नहर दरियाव २४८
 इक्षक विनोद १६२
 इष्टमिलन उत्कठा बेसी १८२

ई

ईश्वर पचीसी २४६

उ

उक्त अनूप ७७
 उच्छवास ३०८ ३३७
 उज्ज्वल उत्कठा विलास १५७
 उज्वल उपदेश यत्रिका १५७
 उज्वल नीलमणि १७१
 उलकनी अष्टक १४७
 उत्तम काय प्रकाश १५५
 उत्तरकांड चम्पू १३४
 उत्तरराघव १३४
 उत्तर रामचरित १३४
 उत्तर रामायण १३४
 उत्तर रामायण चम्पू १३४
 उत्तरा ३३७
 उत्तराद्ध नक्तमान २८३
 उत्तम शब्द १०३
 उत्थापन समय विनाम १८०
 उन्बोधन ३०४
 उत्तरचरित प्रश्नोत्तरी १५७
 उदार राघव १३४
 उदासी सन्त स्तोत्र १५६
 उमत्तराघव १३४
 उपदेश तरंगिणी ४८
 उपदेशाहा १३५
 उपदेश नीति शतक १५७
 उपदेशाटिका १६१

उपदेश रगायनरास २७ ४६
 उपनिषद् भाष्य ६३
 उपासनाशतक १५१
 उपाय प्रवाधन रामायण १५८
 उमरग्याम की श्वाभ्या ३१३
 उमापतिशतकत्रय १५७
 उदू रोमन रीडत १६२
 उवशी ने कहा ३८१

ऊ

ऊजड ग्राम ३०२

ए

एक तारा ३१३
 एनादशी महात्म्य १८७
 एकांतवासी योगी ३०२
 एकांत संगीत ३७६

ऐ

ऐतरेय ब्राह्मण १३३

श्र

श्रग्वेद १३३ २२२
 श्रतु तरंगिणी ३०१
 श्रतुपीपिका १५२
 श्रतुमुकुर ३०४
 श्रतुरग १५६
 श्रतुराज १६२
 श्रतुवर्णन १५७
 श्रतु विनोद ३०७
 श्रतुसहार २६८ २८५ ३०१

क

कचनता विनास १८०
 कठाभूषण २३८
 कवहरा २८८
 कवहरा जरिल्ल १५८
 कवहरा कुत्रिया १५८

- ककहरा चोपा १५८
 ककहरा चूना १५८
 ककरी कादम्बिका ५८७
 कक्रीनाई न विद्यायास २०७
 कया नवनावता ११०
 कया कुवरावत १०८ ११०
 कया जरभर पातगाह का १०३
 कया कनकावती १०२, १०८
 कया कनका १०३
 कया कनकाती १०३
 कया कलावता १०३ ११२
 कया कामराना १०३
 कया कामनता १०३ १०८
 कयाका ४७
 कया कौतूहला १०३
 कया खिखया गाहिना व दयलई का
 चोपाई १०२ ११३
 कया छविषार १०३
 कया छीता १०३ १०७
 कया चवलबी १०२
 कया नरभयता १०३ १११
 कया नयाम अगारी १०३
 कया निनन १०३
 कया पदुपवरिया १ ५
 कया पीतमयास १ २
 कया बनूकिया विरहा १०
 कया माहिनी १०३ ११
 कया रनावती १०३ १०४ १०
 कया रामायण १ ५
 कया रूपमयास १०२ ११२
 कया शानवता १०
 कया गतवता १०२
 कया सरित्तयागर ११४
 कया मुन १०२ का १०२
- कनकभवन महत्म्य १ ०
 ककर कना १०
 कनास गनाया १ ४
 ककिदूत १ ४
 ककिनमूत्रसागणा १५७
 कपातविग्हाणक २८५
 कपारचरित बाध ६४
 कपार वचनावती ४
 कपूतरनामा १०३
 कमहनीन या नानास २५१
 कम्पन ३१५
 कवन रामायण १२४
 करकडु चरित ४२
 करम छनासी २१०
 कणा कनकता १५७
 कणा (विद्वान्त) पद १८२
 कणावती १८१
 का ३१५
 कनक तथा पापक परीया ७८
 कन प्रकृति विधान २१०
 कनवीर २०४
 कनकनवीरक ८०
 कना जीर बूटा चा ३३७
 कनापना ३१५
 कलिङ्गा स्तुति १६२
 कनिचरित्रवता १८१
 कनिजुगरासा २१०
 कनिज कनवर ०३
 कनक कटु १५
 कपतक कवित १५८
 कम्पना १३
 कनाग मन्दिर ३०७
 कविन्यास ३१७
 क ररुवकनाभूषण ४०

- कविकुलकल्पतरु २२५
 कवि कीर्तन ३१२
 कवि जीवन २८६
 कविता कलाप ३०१
 कविताकज ३०३
 कविता कुमुद ३०७
 कवितादि प्रबन्ध ११०
 कवितावली १३१ १३८ १४१ १५२
 १६० १६१ २८६
 कवितावली की टीका १५८
 कवित्त २८०
 कवित्त आनन्द के ८८
 कवित्त ग्रन्थमाला २४८
 कवित्तग्राम १६६
 कवित्त पञ्चीसी १८२
 कवित्त प्रबन्ध १४४
 कवित्त रत्नाकर २२१
 कवित्त वण विनास १५६
 कवित्त सग्रह २०४
 कवित्त सवया का सग्रह २७६
 कवित्तबसन्त २४८
 कवि दण्ड २४८
 कवि प्रिया २१४ २१६ २१७ २३६
 कविमुखमन्त्र २६७
 कविराय गिरिधरराय कृत कुडसिया २८१
 कवि हृदय विनास २४८
 कश्मीर मुषमा २
 कहरनामा ६४
 काचनकुमुदाञ्जलि १६३
 काकती २७१
 काकम्बिनी ३११
 काकम्बरी २२२
 कानून ज्ञान अग्रजी ११६
 कानून स्टाम्प १५६
 कायकु ज अवला विलाप ३०१
 कायकु जावलीरतम ३०१
 कावा जोर कवला ३०६
 कामरूप १२६ ।
 कामायनी ३३२, ३३३
 कायम छा रासो १०२ १०३
 कायाबेनि ७५
 कार्तिक स्नान २६३
 काल चरित २१४
 काननिणय रामायण १३३
 कानस्वरूप ३७
 कानस्वरूपकुन्तम ४६
 कालिकाण्डक ११७
 कानिदासहजारा २६४
 काय कनाधर २६१
 काय कानानिधि २६२
 कायकल्पत्रय ११८
 काव्य निणय २३८
 काव्य प्रकाश २२५
 काव्य मञ्जूषा ३०१
 काय मधुकर दूत १६७
 काय रसायन पिङ्गल २३४
 काय विनोद २४८
 काय विवेक २२५
 काव्य विलास २४६
 काव्य सरोज २३७
 काव्य मुवाकर १५८
 काय सिद्धांत २३६
 काय शृंगार १४१
 कायानुशासन ४५
 काव्याभरण २४४
 काव्यानकार २१
 काव्योपवन ३०४
 काश्मीरी रामायण १३४

किसान ३०८
 कीर्तन ८०
 कीर्तनावली १८८
 कञ्जविलासनीला ८०
 कुञ्ज मुहाग पञ्चीसो १८२
 कडलिया अथवा हितोपदेश उपखण्ड
 वामनी १४४
 कुडलिया रामायण १३५
 कदमाला १ ४
 कुकुरमुत्ता ३३३ ३४८
 कुणान गीत १०८
 कुबचयमाता ४०
 कुञ्जाष्टक २४८
 कुमारपाल प्रतिबाध ४५
 कुमारमभव २६५ ३१३
 कुमारसभवसार ०१
 कुम्भनदास १८१
 कुणस्थली अष्टक १८२
 कुमुद कृञ्ज ३१२
 कृत्तिरास रामायण १३४
 कृत्या रावण १३४
 कृपा अभिनाय वली १८१
 कृपा उपाताष्टक १८१
 कृपानन्द २७८
 कृपा मनोरथ पत्रिका १८२
 कृष्णबाल्य २४४
 कृष्णकोमुनी २७८
 कृष्णपीतावली १३५
 कृष्ण-मालिना का मारा २६५
 कृष्णवर्षिका १४१ २८२
 कृष्णचरणोष्ठक १८२
 कृष्णपरिचर १८३
 कृष्ण नामक्य मन्त्र १११ १८२
 कृष्ण कावचपञ्चीसो १८१
 कृष्ण साता १४०

कल्यायन २८५
 कदारकल्प वल्कि १२०
 कहुलवमा रामायण १२४
 कश्मीरी प्रकाश २४४
 कचयी २१५
 काकिन सप्त १३४
 कौशलापय १६५
 कौशलाद्र रहस्य १५१
 कौशलविमार १५४, २१३
 कौपीतकी उपनिषद १३३
 कवासि २७२
 छ
 छटन छड ११८
 छजिनतुल जासकिया ६४
 छत्रमन बाइमी २१७
 छमोता विलास १८०
 छानछाना कृत बरव २०८
 छुमनिसां ११
 छर्बानामा ६४
 छतकौतुकजातिकम २०८
 छातानी रामायण १३१
 छ्यान तुलास साता १७७
 च
 चयपञ्चासो २०६
 चयपञ्चावली २०६
 चयरत्नावली २०६
 चया चहरा २४६ २०१
 चया शतक १५५
 चन्द्र पञ्चदाश १५८
 चणपति महात्म्य १६५
 चण्डाष्टक ११५
 चणसाष्टक ०४८
 चणसि दु १५६
 चरचरमा १२६

- गभरडारहस्य ३०३
 गर्वा गीत २००
 गिरिगाथा २७६
 गिरिधर कविराय २८१
 गिरिपूजन २७६
 गीतगोविन्द ६१ १५७ १६६ ५ १
 गीतगोविन्दानन्द २८३
 गीतगोविन्द की टीका २००
 गीत रामायण १६६
 गीता बारहवा अध्याय भाषा टीका १६१
 गीता भाषा १३५
 गीता भाष्य ६३
 गीता रघुनन्दन प्रमाणिक १५५
 गीता रघुनन्दन शतिका १५५
 गीता राघव १३४
 गीतावली १३५ १३८ ३०३
 गीतावली की टीका १५८
 गीतासार ३१३
 गीतिका ३३३ ३३४
 गीति रामायण १३५
 गीति सग्रह २८०
 ग्रीष्म ऋतु लीला १८
 गजन ३३७
 गुण रत्न रहस्य २३१
 गुणवत्त हम्मत ३ २
 गुप्त गीता १६२
 गुरुकुल ३०८
 गुरु तगबहादुर ३०८
 गुरु-परम्परा नामावली १८२
 गुरु प्रताप-आत्म १५१
 गुरुमुखी भक्तमान १४५
 गुरु महात्म्य १५८
 गुरु महिमा १४६ १५८
 गुरुराम रामा १६४
 गुप्तान चरित्र २८२
 गुह्यचाणिका २७१
 गुह्य ग्रन्थि १०३
 गेंदखल लीला १८०
 गोकुल गीत २७६
 गोकुलचरित्र २७८
 गोकुलविनोद २७६
 गोपने गुणाष्टक ३०२
 गोखने प्रशस्ति ३०२
 गोपपचीसी २४८
 गोपाल चम्पू १७१
 गोपिका गीत २०६ ३ २
 गोपीनाथ रामायण १३४
 गोवधन लीला १८७
 गोवधन सतसई २१३
 गोविन्द भाष्य १७१
 गोविन्द रामायण १५३
 गोसाई चरित २१
 गोविन्द सुखद बिहार २६७
 गोण रामायण १५३
 गोनीचार (नाडिलीलान जू को) १८२
 ग्रन्थ प्रभाकर १५८
 ग्रन्थ बारहमासा १०३
 ग्रन्थ बुद्धिसागर जयवा कथा मधुकर
 मानती १ ३ १०८
 ग्रन्थ विद्यागसागर १ ३
 ग्रन्थ विरहसत १ ३
 ग्रन्थ लला मजनू १०३ १११
 ग्रन्थि ७
 ग्राम्या ३३७ ३३८ ३४७ ३४८
 ग्वान पहेली १४५ २४८
 घ
 घूघटनामा १०३
 घट रामायण ७० ८५
 घनानन्द ग्रन्थावली २७८

धनावत ८४
 च
 चावतविलास १८०
 चढीचरित्र ७८
 चनुरा २८४
 चतुभुज कीर्तन सग्रह १८६
 चतु शता ६८
 चन्दन सतसङ् २४४
 चन्द मित्र १८१
 चण्डला भानुकुमार नाटक ३०६
 चण्डूत १,४
 चन्द्रवता लीला १८०
 चन्द्रसेन राजा मीननिधान की कथा
 चौपाई १ ३
 चण्डहास १०८
 चण्डावन ८८
 चण्डावत ८४
 चण्डू रामायण १,४
 चरणचरित्रका ८३ १८४
 चरणसिंह १,२१
 चरण प्रताप लाला १८०
 चरण अष्टक १८०
 चरित रामायण १३५
 चरित (चरिणी) ७ ४६
 चानुच विलास लीला १८०
 चाण्ड रामायण १ ४
 चित्रा ३५८
 चित्रामणि ८४
 चित्राचरित ३,१३
 चित्र-रत्न १५
 चित्र शम्भु २६५
 चित्ररत्न महात्म्य १२५ १६५ १३३
 चित्ररत्न-वर्णन २८५

चित्र चिन्तामणि १६२
 चित्रबन्ध रामायण १ ४
 चित्ररथा (चित्ररथा) ८२
 चित्रायण १,०७
 चिवावत ६४
 चित्रावती ६८ १०१
 चूमत चौपद १,०४ १,०५
 चूक विवक २४३
 चतुर्चरित्रका २६७
 चतननामा १०३
 चतन्य चानासा १,११
 चात्र चौपद ३०४ २ ५
 चौतास्यपद १५१
 चौहा अष्टयाम समय प्रबंध १८१
 चौपर खल लीला १८०
 चौरासी बण्णवन की बाता १८३ १८४
 १८६ १६३

छ

छच्छपना २५२
 छानिवाससार २३८
 छत्र प्रकाश २ ८
 छद्माला ११४ २१७
 छद्म विचार विमल २२५
 छत्रसार २ ०
 छदावनी रामायण १,२५
 छण्डक २,७६
 छण्डवा २८२
 छण्डोन्मुक्तस्य ४५
 छण्डावन १,७४
 छण्डाव्य विमल २,१८
 छत्तीसगड परिचय ३१८
 छामयानिनी-चरित्रका ३१२
 छामनाता १८१
 छाम पाठ्या १८२

छप्पन की विदाई २८७

छप्पय नीति २०४

छप्पय रामायण १३५ १२१

छबि चन्दावली नीला १८०

छबि नताविनास लीला १८०

छलित रामायण १३४

छवि के ब घन ३२५

छत्रप्रकाश २६६

छत्रसान ग्र यावती १४७

छत्रसानदशक २६

छान्दाभ्यापनिपद १३३

ज

जगनामा २६५

जजीराब्रह्म २६४

जगतप्रकाश ८६

जगतमाह्न २६५

जगत विनाद २४६

जगत सचाई सार ३०२

जगन्नाटक ३११

जग नाथ शतक १२५

जनक दमक दाहावती १६१

जनक पचीसा २५१

जनक पचीसी १६४

जननीका विनाम नीला १८

जफरनामा १ ३

जमुना प्रतीति-वती १८१

जमुना महिमा-वती १८१

जमुना स्तव अ क १८२

जयचन्द्रप्रकाश ५७

जयन्थ बंध ०८

जयन्त ०७

जय भारत ३ ६

जयमयक चंद्रिका ५७

जयमान मयत्र १५१

जयमुनि की कथा २१४

जयसिंह प्रकाश २४६

जया जयन्त ३०७

जरासव-बध २७४

जत्रविहार नीला १८१

जहागीर जम चंद्रिका २१४, २१७

जसहरचरित्र ४१

जागत रहा ३६१

जाति विनाम २३४

जाताय संगीत २८४

जानकी कारण भरण १५२

जानकी गीत १४८

जानकी गीता १३४

जानका जी का मंगलाचरण १६६

जानकी जू को याह २५१

जानकी पचीसी १६५

जानकी परिणय १३४

जानकी परिणाम १३४

जानकी बधाई १६१

जानकी बिन्दु १५६

जानकी मंगल १३१

जानकी रामचरित्र नाटक १६६

जानकी विनयनामादि १६१

जानकी सहस्रनाम १४६ १६६

जानकी स्तवराज की टीका १५८

जानकी स्तुति १६१

जानकी स्तान्न १५७

जानकी स्नेह हुनाम शतक १५७

जितीविषा ३२५

जिनसहस्रनाम २१०

जिनामा बाध ८४

जिनासा चक्र १२२

जीण जनपद २८७

जीवदगा-लीला १७७

जावनतरी २७७
 जीवन-मगीत ३१२
 जीवन रश्मि ३८१
 जीव प्रकार १७६
 जीव विज्ञान ३१३
 जुगल ध्यान-श्रीला १७७
 जुगल-नख शिखर १२१ २४६
 जुगल प्रीति प्रकाम पञ्चीसी १८१
 जुगल मानचरित्र १६३
 जुगल मनह-मलिका १८१
 जुबली २६७
 जन कुतूहल ८३
 जन रामायण १३३
 जमिनीय उपनिषद १३२
 जमिनीपुराण भाषा अथवा जयमुनि पुराण
 २८३
 जमिनि भागत १ ४
 जोग रामायण १६१
 जाग-श्रीला २११
 जागी शीता १८२
 जोहर १०३
 जोहरनि तरंग २८८
 ज्योतिष्मती १११
 बाला ११
 झ
 झकार ३०६
 झरना २ ३
 झीन धीर भाषा विज्ञान १८०
 झीन बानी ८२
 झुलन १११
 झुलन पञ्चीसी ११६
 झुलन पारधी दृश्य १५८
 झुलन शि-बन १५८

ट
 टिक्तराम प्रकाश २४१
 टीका नह प्रकाश १ ५
 टूटती सहरे १८४
 टूटती टूटनाए ५५
 टूवलर २०२
 ठ
 ठाकुरठमक २७४
 ड
 डाकाणब ६
 डिङरटड विनज ०२
 ण
 णाममुमारचरित्र ४१
 णमिणाह चरित्र ४२
 त
 तत्व उपनिषद १५७
 तत्व तरंगिणी ३०६
 तत्वनीय त्रिष १८३
 तरंग प्रकाश बदात १५८
 तरंगम यथ सिद्धान्त भाष्य १५५
 तत्वगता २४४
 तत्वत्रय की टीका ११८
 तत्वाथ टीका २७
 तत्वीय सवग्ध २६३
 तनमन की स्व-दत्ता १६२
 तमय शीता २८३
 तपन गीत १११
 तरंगिणी १२
 तारात्रय यानिष २७१
 तामिना रामायण १२५
 तामरबध ३१२
 तारंगिता २८ ३१८ ६२ १६३,
 ११ १६६, ३६७ ६६

तारो के गीत ३५५	दशमस्कंध धलीला १८७
ति बती रामायण १३५	दशरथ कथानकम् १३३
तिलशतक २१८	दशरथ जातक १३३
तिरुमाती मुदरी ०२	दशरथ राय १६४
तिलोत्तमा ३०६	दशरूपक २२२
तिसट्ठि महापुरिस गुणानन्दार ४०	दशशताकी १७०
तीर तरंग ३७५	दशावतार चरित १३४
तीवयात्रा १५१	दानघटा २७८
तुलसी चरित १५२ २१	दानविनोद नीला १८
तुलसी चिंतामणि १६५	दान लीला १५० १७७ १८१ १८८
तुलसी दशन ३१२	२३६ २६३
तुलसीदास ३३३ ३३४	दानलाम सवाद २८६
तुलसीदास जोर उनकी कविता ३ ७	दामदुनाई १६०
तुलसीदास जी की बानी १३५	दामिनीदूतिबा २६६
तुलसी भूषण १६६	दासनामा १ ३
तेरह काठिया २१	दासपत्रिका १८१
तेरहो अष्टयाम १८२	दास विलास नीना १८०
सत्तिरीय उपनिषद् १२३	द्विजयशतक १५७
तीरावे रामायण १३४	दिविहरिस १३४
त्रय्यताम १६६	दिल्ली ३५२
थ	दिवालीक ३७८
थनकीना खन लीला १८०	दि यदष्टात्त प्रकाशिका १५७
थूनिफद्माल ४८	दीक्षा निणय १५५
द	दीनदयालगिरि प्रभावली २८५
दगन खड २८६	दीपप्रकाश २५२
दडी रामायण १३५	दीपशिखा ३४१
दयान मजरी ०४५	दीवान १२३
दरिद्र मोचन १५८	दीवान सदल २४४
दशन शतक १५७	दुरत रामायण १३४
दमित कुमुम ३०७	दुर्गा भक्ति चंद्रिका २३१
दनन प्रकाश २४५	दुनारे गहावनी ३ ८
दसवा पातशाह का ग्र य ७४	दूतागद १३४
दशकुमारचरित २२२	दूरदूराय दोहावनी १६५
दशमस्कंध भाषा १६६, १६७	दूषण दण २४८
	दुग्धशतक २४८

- दसमुमत् कुलिया १५७
 दसमुमत् तरगिणी २८५
 दष्टा त वाधिक १५१
 दृग्गती तथा रात्रनतिक दोहा समूह
 १४७
 दृष्टि सागर ८४
 देवचरित २३४
 द्रव छातक २३४
 द्रव रामायण १३४
 देवी द्रमलीला २८३
 देवी द्रापणी ३ ६
 देवी स्तुति शतक ३०१
 दशमशा २८७
 दशवती १०३
 दशी नाममाला काश ४५
 देहरादून ३०२
 दरपवश ३१२
 दो सौ वपणवन की वार्ता २००
 दोहाकोश ३८
 दोहावली १३५ १३८ १५२, २०८
 २६५ २६८
 दाहावती रत्नावली १७७
 दोहावती राम यण १५४
 दाहा शृंगार २४८
 द्रापण २५१
 द्रौपती वचनशा १५८ १६०
 शपर ३०६
 द्विदलात राय ३०८
 द्विवती वाच्यमाता ३०१
 द्रुपद १५०
 द्रुपद ४५
 ध
 धनविद्य १०२
 धनुर्विद्या १५५
 धनुष्यज १४५ ११५
 धरती ३५५
 धरती और स्वयं ३८१
 धम विनास १५५
 धमराय की गीता १५५
 धमशास्त्र त्रिशतनाकी १५५
 धामचमत्कार २७६
 धाराधर धावन ३०५
 धधन चित्र ३१३
 धूप जीर धुजा ५५१
 धूप न धान ३६१
 ध्रुव चरित २०१
 ध्रुव चरित्र ७८ १६१
 ध्रुव प्रस्तावनी १३५
 ध्रुवनीला २२०
 ध्रुवात्क सतिलक १५५
 ध्यान वतीसी २१०
 ध्यान मजरी १४५
 ध्यान मजरी की टीका १५८
 ध्यान मजरी टीका १६१
 ध्यानयाग ७६
 न
 नई चेतना ३५५
 नग पत्त ३३३
 नद्यतिथ २१३ २३१ २५३ २३६
 २३६ २४४ २७१, २८८
 नद्यतिथ की टीका २४८
 नगरनाभा २०८
 नद्यवक्र ४३
 नद्यनवाया २५१
 तरसीत्री रा मद्रि २००
 नरद भूषण २६६
 नमदात्मक १५५
 नयमनामा २८६
 नयराज १७४
 नयराज ५१०

नवरसतरंग २५२
 नवीना ३७६
 नवन चरित्र १५८
 नवन जगन विनोद नीला १८०
 नवननाम चिंतामणि १५७
 नवल विनास नीला १८०
 नवनेखन के सञ्चम ३८७
 नन्दमयती १८७
 नसाब १२३
 नस्त्र १२३
 नहुष नाटक २७४
 नागरी ३०१
 नागनीला १८७
 नागरी प्रचारक ३ ७
 नाटक समय सार २१०
 नाट्यशास्त्र २२२
 नादिशिनकात ८१
 नानाराव प्रकाश २५२
 नापिनस्तोत्र २८६
 नाम गुरु महिमा ८४
 नाम तत्व सिद्धांत १६१
 नाम ललातवती १६१
 नामनिरूपण १५६
 नाम पचीसी १५६
 नामपरल्लु १५६
 नामपरल्लु सग्रह १५८
 नामपरत्व पचाशिसा १५७
 नाम प्रकाश २ ८
 नाम प्रताप ८४
 नाम प्रम प्रवर्द्धिनी १५७
 नाममय एका हर काग १५७
 नाम माधुरी २७६
 नाममाना २१ २४४
 नाममाना अनकार्यो काग १०३

नाम मुक्तावती १५६
 नामरत्नमाना कोश २६७
 नाम रहस्यत्रयी १६१
 नाम रामायण २८८
 नाम विनोद बसावन बरव १५८
 नाम बभव प्रकाश चात्रीसा १६१
 नाम गम्ब घ बहलरी १६१
 नाम शतक १५१
 नायिका भेद २६५
 नारी प्रकरण २८६
 नाव क पाव ३८४
 नाश और निर्माण ३६१
 निगमागम चिद्विज्ञा ३०७
 निजमन सिद्धांत सार १६५
 निजात्मबाध लक्षण १६१
 निजात्मात्मक ३७
 नित्य प्राप्ति १६१
 नित्य मुख १४७
 निबन्ध प्रकाश टीका १८४
 निमूढ नादान २८६
 निगन बानी ६२
 निणय ग्रंथ १८४
 निर्मात्म्य ३१३
 निर्बान ज्ञान ८१
 निशा निमंत्रण ३७६
 निशापहार ३०७
 नीद क बादन ३५३
 नीद बत्तीसी १५८
 नीति मजरी २ ३
 नीति विधान २७१
 नीम के पत्त ३५२
 नीरजा ३४१
 नीन कुमुम ३५२
 नीतम याति ३७७

नीहार ३४१
 नूरजहा २१४ २१२
 नखराधविमिनन कवितावली १५०
 नखविलास लीला १७७
 नसिंहचरित २७२
 नसिंहपचीसी २७१
 नेमिनाथ चतुष्पाटिका ४८
 नेह निवाहन २४८
 नेहप्रकाश १४५
 नेहमञ्जरी लीला १७७
 नेह सुन्दरी १५६
 नेत्र विलास लीला १८०
 ननावत ६४
 नपद्य २८२
 न्याय तरंगिणी १५७
 न्यासाङ्ग १८३
 ष
 षय पारफ्या २३८
 षयिनी ३७५
 षष्काश महिमा १५६
 षचदनी यत्र १५७
 षचपविधान २१०
 षच प्रभाव ७७
 षचमोचरिउ ३८
 षचबटी ३०६
 षचसस्कार १६१
 षच छतनी २२१
 षचाप्यायी २४०
 षचापुष्ट स्तौत्र १५८
 षधीकरण १६०
 ष इन्द्रिय चरित्र ७६
 षउमतिरिचरिउ ४४
 षउमाचरिउ ८
 षत्रनस षचासा २८६

षजनस प्रफास २८६
 षत्र ऋतु विभाग १५८
 षतजनि मूत्र उक्ति १५७
 षतित षत्रावनी १६२
 षधरान प्रतिरूप ३८५
 षधिक ३०७
 षधिवबोध २४४
 षदप्रमग मात्रा १८६
 षत्रयध रामायण १ ५
 षद मग्रह १८७
 षत्रावली ४८ ८० १५ १५१ १५५
 १५६ १६० १६६ १७८ २७८
 षदावनी सग्रह १६०
 षद्मपुराण १८
 षदमसागर ८४
 षत्रमावत ८३ ८४
 षत्रमानरण २४६
 षद्य प्रमाण १०४
 षद्य प्रमून १०४
 षद्रा यत्र १५८
 षर आर्ये नही भरा ३५२
 षरतीत परीक्षा १४५
 षरमत्तत्व १५५
 षरमधम निगद्य १७७
 षरम प्रवाध १५५
 षरमहेशावनी २७६
 षरमात्म प्रकाश १७
 षरमाध जयन्ता ८४
 षरमानन्दरासजी का षद १८१
 षरमात्राशासना ४ षत्र कालन मग्रह
 १६२
 षरमानन्दशागर १८२
 षरपुराण मवा १६६
 षराग १०७

परिचर्या विलास नीना १८०

परिमल ३३३ ३३४

पनासी का युद्ध ३०८

पलनव ३३७

पलनवनि ३३७

पवनदूत २६५

पवन पक्षीसी २७६ २७७

पहाडा १५६

पहुपावती ११२

पहेनी १६३

पलावनम्बन १८३

पलावनी ३०६

पाइयनच्छीनाममाना ४३

पातानी रामकथा १३५

पारस माग १५८

पावस ऋतु लीला १८०

पावस वणन १६०

पावस विनोद १५६

पावस विनास २३४

पावती मगन १३५

पाश्वपुराण ४७

पाहम परी ता १०३

पाहुन-दोहा ३७ ४२ ४३

पिगन १५१ २२५ २५० २८२

पिगन-का य भूपण २८८

पिगन छद विचार ०३३

पिगलवत्त विचार २३३

पिघनत पत्थर २५०

पीतम बीर विनास २४४

पायी ८१

पीपाजी की कथा ६६

पीपाजी की वाणी ६४

पुरर माया २५१

पुरपा की नामावली २१०

पुरुपोत्तम सहस्रनाम १८३

पुरातन प्रब ध सग्रह ३६

पुमीनामा ८४

पुंकर महात्म्य १८२

पूवपक्षीय १५७

पूव मीमासा भाष्य अथवा जमिनी सूत्र
भाष्य १८३

पूषण विचार २१३

पृथ्वीपुत्र ३ ८

पथ्वीराज प्रयाण २८७

पथ्वीराज रासो ५२ ५३ ५४, ५५
५६ ५७ ५६

पनी २१

प्रकट बानी ८०

प्रकरणनि १८३

प्रणय पत्रिका ३७६

प्रताप रत्नाकर १६६

प्रताप विनय १५६

प्रताप विलास २७७

प्रताप विसजन २८७

प्रताप सग्रह २८६

प्रतापसिंह विरुदावली २४६

प्रतिबिम्ब लीला १८०

प्रतिमा नाटक १३४

प्रथम ग्रन्थ ८५

प्रदक्षिणा ३०८

प्रदशनी स्वागत ३०६

प्रद्यम्न विजय २८७

प्रधान नीति १६५

प्रब ध कोश ३६

प्रबाध च द्वात्य नाटक २३६ २५१ २८३

प्रबाधपीपिका दोहावली १५७

प्रबाधपचासा २४६

प्रबाधिनी २८३

प्रमिता तर दीपिका २६५	पमनामा १०३
प्रमत्वन ३१२	प्रमपत्रिक १०
प्रमत्तयिका दाहावली १५७	प्रम-पद्धति २७८
प्रवासी क गीत २५०	प्रमपरस्वप्रमा दाहावली १५७
प्रसन्नराघव १३४	प्रम परिपत्र ३१२
प्रस्तार प्रकाश २४८	प्रमपरी ता १४५
प्रस्तावली १६२	प्रम पद्दती १४५ १८०, ०७६
प्रह्लाद पंचदशी १५८	प्रम पद्दती-तारतम्य ८०
प्राकृत पिंगव मूत्र ४८	प्रमपात्र ३१२
प्राकृतपगलम २६	प्रम पत्रिका २७८
प्राणप्यारी अथवा श्याम सगार्द १८७	प्रम पुष्पहार २०४
प्रात समीरन २६४	प्रमपुष्पावना २६६
प्रात स्मरण मंगलपाठ २८२	प्रम प्रकाश १५७ ।
प्रात स्मरणस्तोत्र २६२	प्रम-प्रकाश पांडली पत्र ४ १८१
प्रायना २१२	प्रम प्रकाश ७
प्रायनाप्रतक १४६	प्रमप्रधाना १ ५
प्रियप्रवास ३०४	प्रमप्रपत्र २०४
प्रियाश्री नामावली जीता १७७	प्रम प्रताप ६३
प्रिया प्रसाद २७६	प्रम फनवारी २६
प्रिया रूप-गव पच्चीसा १८१	प्रम वीचा २८
प्रिया-स्ताव जष्टक १८२	प्रम वात्रिका २०१
श्रीति चोवना जीता १७७	प्रमवाना ८६
श्रीति-पत्रिका १५८	प्रम मातुरी २८३
श्रीति पावस २ ६	प्रममात्रिना २८
प्रम ठमग ११७	प्रम रत्नाकर १६६ ६५
प्रम-पत्र ७६	प्रमरसरागि १८२
प्रमचंद्रिका १६ २३४	प्रमरता पत्रावली १ १
प्रम चिंतारी १-४	प्रमलता बागवती १ १
प्रमनग अथवा कुान बिनास २२४	प्रमताठ ८७
२-२	प्रम तता २८८
प्रम तत्र निरूपण १८३	प्रम नवनि लता २८५
प्रम तत्र २ ४	प्रम उगावर ८
प्रम ताना १७७	प्रम सागर १ ३
प्रम-पत्रिका ७ ४	प्रम तुसा ७७८

- प्रमशतक ३१२
 प्रम हजार २६५
 प्रमाजलि ३१२
 प्रमाम्बु प्रवाह ३०४
 प्रमाम्बु प्रश्रवण ३ ४
 प्रमाम्बुवारिधि ३०४
 प्रमानुवपण २८३
 प्रमावली लीला १७७
 प्रमावत्त १८३
फ
 फनह प्रकाश २४३
 फतेह भूषण २४३
 फन स्तुति सबक वाणी १८२
 फजिनअली प्रकाश २३३
 फारसी टुटफ तहजीवार चूनना १५७
 फारसी भक्तमान १४५
 फटकर पद २००
 फून रचना विलास १८०
 फूना का गुच्छा २८३
ब
 बदनानामा १०३
 बशीबीसा २४८
 बक सहार नीना ३०८
 बजरग बत्तीसी १५८
 बजरगबाण १३५
 बजरग विजय १६२
 बजरग सात्त्विका १३५
 बजरगा विजय १५८
 बन्नता युग ५५
 बनबिहारी नीना १७७
 बनारसा-पद्धति २१०
 बनारसी विनास २१०
 बरब नायिका भू २०८ २५२
 बरबय रामायण १२५
 बरवा १५४
 बननामा १०३
 बलवीर पचामा २८७
 बलभद्री याकरण २१३
 बनराम कथामत २७४
 बसत ऋतु लीला १८
 बसत होली २८४
 बागवहार २३८ २८५
 बागमनोहर २५२
 बाजनामा १०३
 बानर ३०७
 बानी ८१ १०५
 बारहखडी ७८ १५२
 बारहखडी भजनसार बनी १८१
 बारहमासा बिहार बली १८२
 बारहमासा महात्म्य १६१
 बारहमासी २२० २८० २८६
 बारहराशि सतवार १५७
 बारामासा २५१
 बाननाड रामायण १६५
 बानमुकु द ग्र बावनी ३०४
 बाल रामायण १३४
 बावनी २२१
 बावरी अहरी ३५६ ३६०
 बाहु यनिरास ४८
 बिरहसत १ ३
 बिरही क मनोरथ १ ३
 बिहारी सतसई की टीका २५१
 बिहारी सतसई की रत्नचंद्रिका टीका
 २४८
 बीज १५६
 बीजक टीका १५५
 बीस गिराहा का बाव ८०
 बीस गिराहा की हकीकत ८०

बोध यन्त्र १२७
 बुद्ध कथामत २७४
 बुद्ध वाणा ३१२
 बुद्धिदायक १०२
 बुद्धि दीप १०३
 बुद्धिसागर २७८
 बुध चानुरी विचार २४३
 बुध विनीद २६५
 बहूकान खड की टीका १५८
 बहूारप्यक उपनिषत् १०३
 बहस्पतिकान् १३२
 बला ३३३
 बतान पचीषी २२६ २८२
 बाला क दवता ७५
 ब्रजप्रसात् २७८
 ब्रजप्रसात्-बत्री पदवाम १८१
 ब्रज प्रमान-सागर ५८१
 ब्रज महात्म्य चरिका २३८
 ब्रज माधुरी सात् २१२
 ब्रजराज-गीतिका २८८
 ब्रजनीता १७७
 ब्रज विनाद बत्री १८१
 ब्रज विनास २८३
 ब्रजव्यवहार २७८
 ब्रजस्वरूप २७८
 ब्रह्मज्ञान ७८
 ब्रह्मज्ञानी ८०
 ब्रह्म-मगम १४८
 ब्रह्मायन ज्ञानमुठावला १२८
 ब्रह्मायन तब निष्पन्न १२८
 ब्रह्मायन-गार १२८
 ब्रह्मायन परमा-मवा १४८
 ब्रह्म यन पराभक्ति परतु १२८
 ब्रह्मायन विज्ञान उभाषी १२८

ब्रह्मायन शक्ति सुपुष्टि १५८
 ब्राह्मण १३३
 ब्राह्मण-नाइट २०१
 ब्राह्मण-स्वात २८२
 ब्याह ला १८७
 ब्याह विनाद-नीता १८०
 भ
 भट्टीवा सग्रह २४
 भक्त जा १८४
 भक्त उरवसी १४५
 भक्त नामावत्री १५७ १ २ १७७ १८६
 भक्त नामावत्री प्रवदास १४५
 भक्त नामावत्री लीला १७७
 भक्त प्रसाद बत्री पदवध १८१
 भक्त मनरजनी १६
 भक्तमान ६८ १४४ १५१ २३६
 भक्तमान की टाका १८६ १८ २१०
 भक्तमान छण्य १४५
 भक्तमान टिप्पणी १४५
 भक्त वा-छावता ७८
 भक्त विनक्ति सार १ ६
 भक्तविनात् १८ २२८
 भक्त मुजस बत्री १८१
 भक्त हनु १८४
 भक्ति क-प-म १४५
 भक्ति नामावता १६०
 भक्ति निजय १८४
 भक्ति प्रचार १८८
 भक्ति प्र ण तु १४५
 भक्ति प्राथना बत्री १८२
 भक्तिभारन बषवा भक्तभावन २४८
 भक्ति रमबाधता टाका १४५
 भक्ति विरह ७८
 भक्ति विनाम १२५ १६६

भक्ति सवरत्न २८३
 भक्तिसारामत मिथु १७१
 भक्तिसार सिन्धु १६६
 भक्तिपूत्र त्रय नी २८३
 भगत बन्धुवली ४२
 भगत गुण दर्पण १४८
 भगवत्प्राम मत वा विनी १६५
 भगवद्गीता ५८
 भजन कुडनिधा नीता १७७
 भजनपत्र हर जस १५६
 भजनमाता १४५
 भजन रत्नावली ६३
 भजन सत नीता १७७
 भजन सवरत्न १६२
 भजन गृहार सत नीता १७७
 भजनाष्टक नीता १७७
 भट्टिकाय जयवा रावण वध १३४
 भद्र खन विनाय नीता १८०
 भद्रमिताप १३५
 भवानी विनाय १३४
 भविष्यत्त कथा ४३
 भागवत १८७
 भागवत एवाङ्गशम्भु की टीका १५५
 भागवत टीका १८३
 भागवत भाषा १५५
 भागवत भाषा दशमस्कन्ध १८६
 भारत कथा २७७
 भारत गीत ३ २
 भारत बारहम सा २८७
 भारत वार्तिक २८६
 भारत शिक्षा २६४
 भारत भारती ३०८
 भारती भूषण २७४
 भारत वीरत्व २८४

भारत संगीत ३१३
 भाग्यीय गम्यति वा गौखामा वा
 यागदान ३१३
 भाव रत्नो १ ३
 भावना २१२
 भावना प्रकाश २७८
 भावनामत वाग्भिवनी १६५
 भावना शतक १४६
 भावप्राशिका २७६ २७७
 भावप्रकाश १८६
 भाव प्रकाशिका १५८
 भाव विनाय २३४
 भावसत १०३
 भावाथ रामायण १३५
 भाषा कोशल खड २८८
 भाषा प्रमदम १२६
 भाषा भरण २५२
 भाषा भूषण २५१ २६५
 भाषा भूषण की टीका २४६
 भाषा महिमा २६५
 भाषा राम रत्ना स्तोत्र १६१
 भाषा रामायण १६४
 भाषा सप्तशती २८६
 भाषा हितोपदेश २४६
 भाष्य रामायण १३४
 भाष्य टिप्पण १५७
 भीष्मा साह्य की वानी ८२
 भीष्म प्रतिज्ञा ३ ७
 भीष्मी रामायण १३३
 भू भार हरणाय प्राथमा २८६
 भूमि भाग ३०८
 भसा गाडी ३४८
 भाज प्रबंध ४८
 भारता विनाय नीता १८०

प्रमर-भात १११ १२० १२९ १६७
 २०६
 प्रमर-भात पत्रिका १०२
 प्रमरदून १ ४
 प्रमर सदन १२४
 धात पत्रिका १६०
 म
 माल धारी चंद्रन १०२
 मगत विनायक वती १०१
 मात्र विनायक ताता १००
 मगत गतक १५०
 मजु माद चौतीसी ११७
 मजुन रामायण १२४
 मजीर २६१
 मजिर प्रकाश ३१२
 मजुगा ६४
 मत्र रामायण १२३
 मकाराणि सङ्ग्रहनाम ११०
 मधुरावत ०४
 मान विनायक भीला १००
 मन्दावत ०४
 मणिमान १५७
 मन्त्रिराम सतसङ्ग २०० २२०
 मन्त्रा प्रतापलोक १०२
 मन्त्रा विष्णु १५२
 मन्त्रालोक २००
 मन्थानन कामरूपना ०७ ६०
 मन्थानन कामरूपना चरित्र ००
 मन्थानन कामरूपना घोसाई ६०
 मन्थानन प्रकाशनालय ६०
 मन्थर-भातनी १३०
 मन्त्रिणा २००
 मन्त्रावती ६० १००
 मजु मुकुट २०३

मजु मजु माता ११७
 मजुरालोक १००
 मजुरिमा ३११
 मन उपना वता पत्रिका १०१
 मन शी तहर ००
 मन ग्रन्थ ०४
 मन चतुर्वेद बाह्यनामा १०१
 मन नमोदित १२७
 मन परचावन वती १००
 मन प्रकाश वता १०१
 मनकाय गतक ११७
 मन विनती वीता १७६
 मन गि ता नामा १७७
 मन शृंगार वीता १७७
 मनामुक्तमाता ६४
 मनामय मजरी २७०
 मनाविनायक ०२
 मयक महिला २०७
 मयान रसाव ०
 मयन विवक १
 महानामा ६४
 महाराबाइसी ०४
 महातत्व प्रकाश १५७
 महान्तियात ००
 महात्वा का विवचनामक गण ३४१
 महान्तिया ७
 महान्तिया अथवा हनुमानटक १३४
 महाप्रकाश ७० ०४
 महान्तर १३ २०१ २०२ २२०
 २६७ २ ० ०६ २७७ २०३
 महाराजमाय १३३ १ ४ १६२
 महाराजा तब १ ४
 महाधर चरित्र १३४
 महान्तिया विन ० ११ १००

महिमा भाषा अथवा भावाय चन्द्रिका
२८६

महिम्नस्तोत्र २८६

मात बन्दना ३०७

मातृक प्याला ३१३

माधव मधुर रामायण १६६

माधव विनायक नाटक २४०

माधवानन्द कामकव्यता २८३

माधवी ३११

माधवी बसत २७१

माधुरी ३ ७ ३ ८

माधुरी लता विनायक लीला १८१

माधुयकेलि बालम्बिनी १४८

माधुय लहरी २८७

मान चरित्र २८८

मान मजरी अथवा नाम मजरी अथवा
नाममात्रा अथवा नाम चिन्तामणि
मात्रा १६६ १८७

मानव पशु ३४६

मानवी ३११

मान तीता १७७

मान विनीद १०३

मान विलास १८

मानस अभिप्राय-दीपिका १५२

मानस प्रश्न १५८

मानस भूषण १६६

मानस मथन ३१३

मानस मयक १५२

मानस माधुरी २१३

मानस में राम कथा ३१३

मानस विनायक २८६

मानस शक्रावनी १६६

मानसी ३०७

मानसी की १ सवति टीका १६६

मानसापाठन २६४

माया पुष्पन १३४

मागणा विधान २१०

मालती माधर २२२

मानूशाही ३८४

माया मुस्तावनी १५६

मिथिना छड १६५

मिथिना महात्म्य १६२ १६६

मिथिना विभूति प्रकाशिका १६१

मिरिला विनायक १४८ १५२

मिरावण चरित अथवा हनुमत विजय
१३४

मिलन ३०७

मीरा पदावली २००

मीराबाई का मलार २००

मह दिखावनी २६३

मुकहरानामा ८४

मुक्त मुक्तावली १५८

मुक्ति माग ३६५

मुक्ति मुक्ति-सदान द १५५

मुखरानामा ८४

मुत्तखनुसवारीख ८८

मुरतिका मोद २७८

मूक प्रश्न २८४

मून डोला २८६

मून रामायण १३३

मकडानन पुण्याजति २८७

मेघगीत ३७५

मघदूत २८५ ३०५

मधनायक ३०८ ३१२

महरनिगार १२३

मथरी रत्नायण १ ४

मथनी रहस्य पदावली १६७

म द रामायण १३४

परावण कलत्र १३४
 नाकाइनामा ८४
 मात्मुकुर १५६
 माल्ला रामायण १३४
 मास्तीनामा ६४
 माहनता का सीमा १८०
 माहरानामौ ६४
 माह विवक युद्ध २१०
 माहिनी-अष्टक १५६
 मगया नरक १५१
 मगावती ८६
 मच्छटिक २२२
 मणात्तिनी परिणय ३१३
 मन्तुजय १ ६
 मन्त्रा विनास ताता १८०
 य
 यमक-सुत्रसद २७७
 यमनाक-यात्रा २८६
 यमुना य २७६
 यमुना नहरी २४८
 यमुनाष्टक १७१ १७२
 यमानहरी २४६
 याथायथा २०८
 यात्रा रापवाय १३४
 यामप्य १३५
 यामा ३४१
 युग का गगा ५३
 युग की तरणिका २२१
 युगपथ १ ७
 युगतमजरी १६५
 युगतमातुरी प्रकाश १४६
 युगत रथ मातुरी ५०
 युगत-बन विनास १५७
 युगत-बन-विहार सीता १६२

युगत विनाद कवितावली १६२
 युगत विनाद-पदावली १८२
 युगत विहार-पदावली १६२
 युगत हितान-सीता १६३
 युगत सनह विनाद १६५
 युगत तटक १६६
 युगनात्कठप्रकाशिका १६३
 युगवाणा १ ७ ३४ २४७ ४८
 युगान्त २२७ २४७ ४८
 युद्ध २०६
 युवराज विनास ११५
 युमुफ युगया १२५ १२६ १२८
 याग चिन्तामणि ६
 याग वागिष्ठ रामायण १३
 याग सार २७
 याग सिन्धु तरंग ११७
 र
 रानाय गमायण १२४
 रणसधाइ ७८
 रा म नग २६६
 रग विनास ताता १७७
 रा बिहार सीता १७७
 रग दूतास ताता १७७
 रकारादि सहस्रनाम १५८
 रघुनाथपाठिका १५७
 रघुनाथना क कवित्त १५६
 रघुनाथ नाटक १८
 रघुनाथ विनास २६५
 रघुनाथ शिवार १६५
 रघुनाथ स्तोत्र १५७
 रघुनाथ मठक १६६
 रघुनाथ मठक १५२
 रघुनाथ मठक १५२
 रघुनाथ मठक १५२

रघुराज चन्द्रावली १५५	रसनिधि सागर २८०
रघुराज विलास १५५	रसनिवाम २५७
रघुवश १३४	रस पद्मावती १७५
रघुवश दीपक १६५	रसपीयूष निधि २४०
रघुवर गुण दण्ड १५७	रसपुत्र प्रव १६५
रघुवर स्नह लीला १५६	रस प्रबोध २४२
रघुविनास १३४	रसभूषण १२५
रणमन्त्र छन्द ५८ ५८	रसमञ्जरी १५१ १८६ १८७, २२५ २६५
रण यन्त्र १३५	रसमनाज १२३
रतनखान ७८	रसमलिनता १५१
रतनवामनी २१४ २१६ २१७	रसमाता २३६
रति मञ्जरी त्रीना १७७	रसमुक्तावती लीला १७७
रत्न करण ३०७	रसमल दोहावती १६०
रत्न मञ्जरी १२०	रसरग २४८
रत्न सागर ८५	रसरतन २१८
रत्नावती ७६ १०३ ३०८	रसरत्न माला २३६
रघिया ३१२	रसरत्नाकर २३३ २३६ ७ ८ २५१
रमातापिनी उपनिषद् के श्री हरिदास कृत	रसरत्नावती त्रीना १७७
भाष्य की टीका १५८	रसरहस्य १ १
रम्भाशुक्ल सवाद ३ ५ ३०६	रसराज २३०
रम्य पदावती १५७	रसराज की टीका २४८
रस कनक ३ ४, ३०५	रसवलित २१४
रस कलत्र २४४ २५२ २७२	रसवर्द्धिनी १८६
रस कवित्त ८८	रसविनोद २५२
रसकोश १०३	रस विनास २१३ २३४ २४६ २५१
रसकौमुदी १५६	रस विहार त्रीना १७७
रसखान शतक २८६	रस सागर २३७
रसगगाधर २२२	रस सागर प्र व १४७
रस ग्राहक चन्द्रिका २३६	रस साराश २३८
रसचन्द्रिका २४८	रस मुद्यानिधि १७१
रस चन्द्रिका २५१	रस हीरावती त्रीना १७७
रस-तरंगिणी १०२ २५२ २७७	रसानन्द तहरी २२४
रसनारायण ६१	रसानन्द त्रीना १७७
रसना हित उपनिषद् की १८१	रसानन्द यन्त्र २०८

रसिक गावि ३ २५०
 रसिक गावि गान गधन २५०
 रसिक पय चन्द्रिका १८१
 रसिक परिचयावली १८२
 रसिक प्रकार १५१
 रसिक प्रकार भक्तमाल १४५
 रसिक प्रकार भक्तमान की मुवाधनी
 टीका १६६
 रसिकप्रिया २१४ २१६, २११ २२६
 रसिक माह्न २६५ २६६
 रसिक रत्नी २८६
 रसिक रत्नान २५२
 रसिक-बन्धु प्रकाश १६०
 रसिक विनोद १६० २३१
 रसिक रहस्य २०४
 रसिकानन्द २४८
 रसिकमहावका १४५
 रसिम २४१
 रसिमबंध ३२३
 रहस्य ठाब भास्कर १६६
 रहस्य पचाध्यायी १५५
 रहस्य पचावली १४३
 रहस्य बावनी २८८
 रहस्य भवारी नाता १ ३
 रहस्य वना तीता १३३
 रहस्य-त्रय की टीका १५८
 रहस्यवाचस्य १४३
 रहिमन रसिका ०८
 रहिमन विन २०८
 रहिमन विनास ८ ८३
 रहिमन गतक २०८
 रहिमन बचन विनाउ नाता १८
 रहिम २०८
 रहिम बचिदावली ८

रहाम काव्य २ ८
 रहाम रत्नावली २०८
 राइ का पवत ०३
 राग कल्प म १८५
 राग गाविन्द २००
 राग चनावली १५६
 राग निपम २२८
 रागमाला १३४ २०२
 रागरत्नाकर १८५ २ ४
 रागरत्नावली १६५
 राग विहार २००
 राग विनास २४४
 राघव नपधाय १३४
 राघव पाडवाय १ ४
 राघव पाडव यादवाय १ ४
 राघव यादवाय १ ४
 राघव विनास १ ४
 राघवाभ्युत्थ १ ४
 राजभाता नाता १८०
 राजविनाद ८
 राजा प्रजा ०८
 रात बीता ३३
 राधा अष्टक २४८
 राधा कृष्ण पचाता १४३
 राधा-कृष्ण माण विनाउ बारहमासा १६३
 राधा कृष्ण विनास २६३
 राधा-मान पाठना १८१
 राधा र मा नव वनी १८१
 राधाका का नपधाय २४४
 राधा नपधाय ६३
 राधा-उत्त वनी १८१
 राधा नाम उ वनी १८१
 रा रामाधर विनन २४८, २६४
 राजा कन न म २ ४३ ३ १८३

राधा रूप प्रताप बनी १८२

राधा लाड सागर १८१

राधा बलनभी भाष्य १५५

राधा सुधा निधि १७२

राधिका विलास २३४

रानी छदमलीला २८३

रानेस देव लीला १६४

राम अनकृत मजरी २१४

राम अष्टयाम १५५

राम कठाभरण १६५

राम क्यामत १६५

राम-कर मुद्रिका १६०

राम कवित्त ८२

रामकनवा १६५

रामकल्पद्रम १३४

रामकियत १३५

राम कीतन १३५

राम कडनिया ८१ १६२

राम-कृष्ण विनोद का य १३४

राम कृष्ण सप्तक १५४

राम क लिंग १२५

राम गीत गावि द १३४

राम गीतमाता १६५

रामगीता १६६

राम गीता टीका १५५

राम गीताबली १५४

राम गुण सागर १५६

राम गुणाच्य १६५

रामचन्द्र की बारामासी १६६

रामचन्द्र चरित्र १६५

रामचन्द्र जू की सवारी १५५

रामचन्द्र नखानिध १६५ १६६

रामचन्द्र भूषण १५२

रामचन्द्र महिमा १५६

रामचन्द्र विलास १५४ १६५, २८८

रामचन्द्रिका १५३ २१४ २१५ २१६

२१७

रामचन्द्रिका हकतिनक १५५

रामचरित १३३ १३४, १६४

रामचरित चितामणि १५४ ३०६

रामचरितम १३४

रामचरित मानस १३५ १३६ १३८

१३८, २८३ २८५

रामचरितमानस की टीका १५१ १५८

१६५

रामचरित सग्रह १४४

रामचरित १६५

रामचरित दोहावनी १६६

रामचरित वत्त प्रकाश १६५

राम छटा १५६

रामजन्म १६६ १६७

राम जातक १३५

राम जातकम १३३

राम जानकी २८७

राम जानकी स्तौत १५७

राम तत्व प्रकाश १४८

राम तत्व बाधिनी १६६

राम तत्व सिद्धा त सग्रह १६२

रामतापनयापनिपद १५८

राम दोहावनी १६२

राम ध्वजाष्टक १४७

राम ध्यान मजरी १४४

राम नखनिध १६६

राम-नवरत्न १५८

राम नवरत्न की टीका १५८

राम नवरत्न विजय १६६

राम नवरत्न-सार सग्रह १५१

राम नाम तत्व बाधिनी १६६

राम नाम परत्व पदावली १५७	रामराज्य २१०
राम निवास रामायण १५४ १६३	राम रावण युद्ध १२५
राम पंचांग १५८	राम रावण विरोध ३०६
राम-पंचांगिका १६६	राम-स्तान १५६
राम-पत्र की टीका १५८	रामनारा नहदू १३५
राम पदावली १५१	रामलिंगामठ १३४
राम परत्व १५५	रामनीला १३४
राम पुराण १३३	रामनीला अमल १३४
राम प्रिया विलास १६७	रामनीला प्रकाश १ ६
राम प्रेम मुखसागर पत्रिका १५६	राम विजय १३५
राम-बाल चरित १३५	राम विनय १५४
राम बिलास १६६	राम विनास १ ४ १६५
राम भक्ति प्रकाशिका १६६	राम विवाह १२५
राम-भद्र रहस्य १६६	राम विवाह छंड १६५
राममंत्राय नियम टीका १५५	राम मंगीत १५७
राममाला १५०	राम-सतसई २८८
राममुक्तावली १३५	राम सतमया १५८
रामयानान १३५	राम सप्तशतिका २८८
रामरग १५६	राम-सहस्रनाम ८१, १४६ १५७
रामरजन १५५	राम सागराहिक १५५
रामरक्षास्तोत्र ६३	राम शिष्या १५८
राम रत्नमञ्जरी १६५	राम मुजसपचीशी १५८
राम रत्नाकर १६६	राम-मंत्रवराज १५४
राम रत्नावली १६६	राम मंत्रवराज क श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका १५८
राम रसायन १३४ ३५ १५४ १५८ २४६	राममंत्रवराज भाष्य १४८ ४८
राम रसायन बाण ८४	रामस्तुति १ ६
रामरसिकावली १४५ १५५	रामस्तान १५७
राम रहस्य १६५	राम स्वयंवर १५४ ५५
राम रहस्य अथवा रामचरित १ ४	रामस्वयंवाराहण १६५
रामरहस्य उत्तराखंड १६५	राम उतरक १२४
रामरहस्य टीका १५५	राम उर" ८१
रामरहस्य पूर्वार्ध १६५	राम हृदयम् १३३
रामरहस्य रामायण १६६	रामाष्टादश १३५

रामानन्ददेश ६३	रामाष्टक १६१ २४८
रामाभ्युदय १२४	रामाष्टयाम १४४
रामायण १२३ १३४ १३५ १६५	रावण ३१२
१६६ २२२ २२५ २७३	रावण वध १३४
२७५	रास मे पद १८२
रामायण आदिका य १३५	रास पचाध्यायी १८६ १८७
रामायण कवित्त १६६	रासराग ८२
रामायण काकावित्त २८६	रासलीला २३६
रामायण चम्पू १३४	रास्य पद्धति १५०
रामायण परिचर्या १५६	रिपनाष्टक २८४
रामायण तात्पर्य दीपिका १३३	रिटणमिचरित्त हरिवंश पुराण ३८
रामायण मजरी १३४	रविमणी मंगल १४६ १८६ १८७
रामायण मणिरत्न १३४	२०४ २८६
राम यण महात्म्य १६६	रविमणी परिणय १५५
रामायण मह नाटक १४७ १६४	रद्राष्टक १५७
रामायण मह माला १३४	रुवाइयत उमर खय्याम ३०६
रामायण रत्नावली १६६	रूप अरूप ३७५
रामायण रहस्य १३३	रूप मजरी १८६ १८७
रामायण रामानुरागावती १६६	रूपरसामत १४७
रामायण शतक १६६	रूपरसामत सिंधु १५०
रामायण सग्रह १३३	रूपरहस्य पदावली १५७
रामायण सार १ ३ १३५	रूपरहस्यानुभव १५७
रामायण मुमिरनी १६५ २८६	रूप विलास १८० २५२ २६८
रामायण मूचनिका १५३ १६५	रूपक रामायण १६५ २८६
रामायण मूचनिका अथवा ककहरा	रूपाम' ३४५ ३४६
रामायण २५०	रेआमर्ई १३५
रामायण शृंगार १६५	रेती क फूत ३५२
रामायणशतक १३४	रेणका ३५२
रामाराघनम ६३	रेनव स्ताल २८६
रामावतार कान निणय मूचिका १३३	रोशनी की जाधिया ३७२
रामावतार के कवित्त १४७	रोग पराजय १५८
रामावतार तीता ७८	स
रामाश्वमध १६५ १२६, २८५	नवानर अष्टक १५७
रामाश्वमध भाषा १६५	स एण शृंगार २३०

लम्भा गुरु १६५ २७१

रामो २०७

सखरावत ८४

नान पञ्चीमी १४२

सयभागवतामृत १७१

उपुष्पा वसिष्ठ १६४

सद्यमन चन्द्रिका २१०

सजा विनाय १८०

सहित नामावली १५४

सहित शृंगार शीपक १५२

सहित-नयाम २२०

सहिता प्रम कहानी १८२

सहिता-सता विलास १८०

सत्नावाङ्मय ६८

सहर २२१ २२३

सहरावत ६४

साह मागर १८१

साहिता की मँहूनी छवि उत्कल्प पोली

पञ्चघ १८१

साङ्गाम की चनावणी ८०

सान्त्वितता २५२

सावध्य प्रभा विनाय शीला १८०

शीला नार १८०

सोहायतन ७

सोहायित रम-नीमुखा २५२

सोहायित शतक २६२

सामग रामायण १२४

स

समी छवि १२

समी विनाय शीला १८०

समी शीला ४८

सपन विनाय १८०

सपनिका २७६ २७७

सप विन - अथवा वर-वन्दु विनाय

अथवा वार वध विनाय २८४

वन वि गम ०७

वन-वभव ०७ =

वन श्री १०

यनायक ०२

यग-मा १५७

यग निगय २ =

यग प्रति ज्ञानाय १२१ ८५

वणवाय १५७

वग माता १५७

वण रत्नाकर ८८

वग बिहार ११७

वग बिहार शाहा ११७

वण विद्वार मा' चौतीमा ११७

वया विनाय २६२

वर्षोत्सव पञ्चव १४ १५२

वचन विचय १८२

वत्तम सप्रणवी काशन मरहा म प

१६१ ६२

वचनय चव ८३

वक्षिण्याकर रामायण १ ४

वगत वियोग ०

वागा ७५ १ ६ ३ ७

वाणी शर ७ ८४

वाणी रूप २८८

वातु पुगण १ ३

वाचोवि दृग रामायण जगहा प्रकाश

२८७

वाचोवि रामायण १ १ ५

वाचोवि रामायण का शीला १४८

वाचोवि रामायण की भव प्रकाश

शाहा ११७ १३

वाचोवि रामायण भागा १९६

वाचना-वभव ३१३

- विफट भट ३ ८
 विक्रम विनाम २३७
 विक्रम सतसई २२८
 विक्रमादित्य ३१२
 विचारमाला २१
 विचार मार २७८
 विचित्र रामायण १३५ १५७
 विजय दोहावनी १३५
 विजय मुक्तावनी २६८
 विजय राघवखंड १६६
 विजय बल्नरी २८४
 विजय विनोद २४८
 विजयिनी २८७
 विजयिनी विजय पताका अथवा वजय ती
 २८४
 विद्याभास्कर ३ ७
 विद्विनास २५२
 विद्व मडन १८४
 विधवा विनाय २८६
 विनय-कुमुमाजलि की टीका १५८
 विनय नवचक्र १५४
 विनय पत्रिका १३५ १३८ १५५ १६०
 विनयपत्रिका टीका १५५
 विनय प्रकाश १५५
 विनय प्रम पचासा २८३
 विनयमान १५५
 विनय विनाय ३०१
 विनय विहार १५७
 विनय शतक २३६
 विनयामन १५६
 विनाय चिन्ता २५१
 विनयित विनाय १५८ १५८
 विनय विनूति ७८
 विभादरी ३७७
 विमन विनास लीला १८०
 विमुग्र उदारन बेली १८१
 वियाग वनि २७८
 वियोग सागर १ ३
 विरक्ति शतक १५७
 विरति शतक १५७
 विरह दिवाकर १५६
 विरह मजरी १८६ १६७
 विरह वारीश २८४
 विरह विलास १८०
 विरह शतक १५१
 विरहिणी ब्रजागना ३०६
 विनका रामायण १३५
 विवेक गुच्छा १६०
 विवेक दीपिका ७८
 विवेक पत्रिका १८१
 विवेक पत्रिका बेनी १८१
 विवेक मुक्तावनी १५६
 विवेक विनास २७१
 विवक शतक १५१
 विवेकसार ८५
 विवेकसार चंद्रिका १५२
 विशद वस्तु बोधावली १५७
 विशाल भारत ३४६
 विश्राम बोध ८४
 विश्वनाथ चरित १५५
 विश्वनाथ प्रकाश १५५
 विश्व घम ३१२
 विश्व विनास बीसिका १६१
 विश्व वरना ३०६
 विश्वास बोध ८४
 विष्णुपद २४
 विष्णु पद कीतन २८०
 विष्णुपुराण भाषा २३८

विष्णु प्रिया ३०८	बहू उपासना रहस्य १६१
विष्णु विलास २६६	बहू वाचन पूराण की भाषा-लाना १७७
विस्मरण सम्हार १५६	बहुतभागवतामृत १७१
विद्या ३७५	बहुत्कया १२४
विद्वान २५५	बहुत्कागत्रय १३४
विहार-वाटिका ३०१	बल्ल-महार २०६
विश्व विनास १५८	बद निगम पञ्चाशिका २१०
विज्ञप्ति १८४	बद विचार ७७
विज्ञप्ति सार १६६	बट-स्तुति टीका १५७
विज्ञान-मीमांसा २१४ २१७	बटातकल्पनिका १५७
विज्ञान मुक्तावली १५६	बटान्त पञ्चा १५८
विज्ञान भाष्कर २८८	बटात पारिजात सौरभ १७०
विज्ञान याग ७६	बदान्त रामायण १३२
वीणा ३२७	बदान्त विचार ६३
वीर चरित अथवा वीरसिंह देव चरित्र २१४ २१६ २१७	बदान्त सार शुभ दीपिका १५२
वीरबाता ३०७	ब दोना १२
वीरभावना २०७	बतात्रिक २०८
वीर-बाणी ३१२	बदिक मिथुनामा १०२
वार सतसई २१२	बद्यन चानरीला १७७
वीराणा २०७ २०६	बट्टी बनवास ०४ ०५
ब द सतसई ७६, २७७	बरसाभिचरित ४५
बग विनास २२४	बराग्य दिन २८५
बल तरंगिणी २८६	बराय प्रतीप ११६
बल तरंगिणी सतसई ७८८	बराग्य प्रवाद्यक बहारा १ १
बल प्रकाश १५७	बराय सतक १५१ १ ३१
बन्धन अभिलाष बली १८१	बराग्य स्यापना १३५
बन्धन जग प्रकाश बली १८१	बराय सार ७
बन्धनमुखा २७६	बराय महात्म्य ६
बन्धन रजधाना नाता १८०	बन्धनवाप्याति निगम १५८
बन्धनवास १८०	बन्धन-बन्धन-बाना १८
बन्धन सतसता १७७	बन्धन सुवस्व २८२
बन्धन शतक २७१	बन्धन सिद्धान्त टीका १५५
बुधनाशुभ मुपमा-ज्ञान २७६	ब्रह्मना ७८
	ब्रह्म प्रकाश १५५

- विफट भट ३०६
 विक्रम विनाम २३७
 विक्रम सतमई २२८
 विक्रमादित्य ३१२
 विचारमाना २१०
 विचार सार २७८
 विचित्र रामायण १३५ १५७
 विजय दाहावली १३५
 विजय मुक्तावती २६८
 विजय राघवखण्ड १६६
 विजय बलरौ २८४
 विजय विनोद २४८
 विजयिनी २६७
 विजयिनी विजय पताका अथवा वजयती
 २८४
 विद्याभास्वर ७
 विद्वन्विनास २५२
 विद्व मडन १८४
 विद्यवा विनाप २८६
 विनय-कमुमात्रलि की टीका १५८
 विनय नवाचक १५४
 विनय पत्रिका १३५ १३८ १५५ १६०
 विनयसलिका टीका १५५
 विनय प्रकाश १५५
 विनय प्रम पचासा २६३
 विनयमात्र १५५
 विनय विनाम ३०१
 विनय विहार १५७
 विनय शतक २३६
 विनयामन १५
 विनाम चरित्रा २५१
 विपरीत विनाम १५८ १५८
 विनय विरति ७८
 विभाबरी ३७७
 विमन विलास लीला १८०
 विमुग्ध उद्धारन बेली १८१
 वियोग बलि २७८
 वियोग सागर १०३
 विरक्ति शतक १५७
 विरति शतक १५७
 विरह दिवाकर १५६
 विरह मजरी १८६ १६७
 विरह वारीश २८४
 विरह विलास १८०
 विरह शतक १५१
 विरहिणी ब्रजागता ३०८
 विलका रामायण १३५
 विवेक गुच्छा १६०
 विवेक दीपिका ७८
 विवेक पत्रिका १८१
 विवेक पत्रिका वती १८१
 विवेक मुक्तावती १५६
 विवेक विनास २७१
 विवेक शतक १५१
 विवेकसार ८५
 विवेकसार चरित्रिका १५२
 विशद वस्तु बोधावली १५७
 विशाल भारत ३४६
 विश्राम बोध ८४
 विश्वनाथ चरित १५५
 विश्वनाथ प्रकाश १५५
 विश्व घम ३१२
 विश्व विनास बीसिका १६१
 विश्व वरना ३०६
 विश्वाम बाग ८४
 विष्णुपद २४५
 विष्णु पद कीर्तन २८०
 विष्णुपुराण भाषा २३८

विष्णु प्रिया ३०८
 विष्णु विलास २६६
 विस्मरण सम्हार १५६
 विहाग ३७५
 विहान ३५५
 विहार-वाटिका ३०१
 विगप विनास १५८
 विनक्ति १८४
 विज्ञप्ति सार १६६
 विज्ञान गीता २१४ २१७
 विज्ञान मुक्तावली १५६
 विज्ञान भाष्कर २८८
 विज्ञान याग ७६
 वीणा ३३७
 वीर चरित अथवा वीरसिंह देव चरित
 २१४ २१६ २१७
 वीरबाता ३०७
 वीरभावना ३०७
 वीर वाणी ३१२
 वीर सतसई ३१२
 वीरागना ३०७, ३०६
 व द सतसई २७६, २७७
 वृक्ष विनास २३४
 वत्त तरगिणी २८६
 वत्त तरगिणी सतसई २८८
 वृत्त प्रकाश १५७
 वल्गावन अभिलाष वती १८१
 वल्गावन जस प्रकाश वती १८१
 वल्गावनमुष्ठा २७६
 वल्गावन रजधानी नीता १८
 वृन्दावनवास १८०
 वृन्दावन सतसाता १७७
 वृन्दावन सतसई २७१
 वृषभानुपुर गुणमा बचन २७८

बहू उपासना रहस्य १६१
 बहू बावन पूराण की भाषा नीता १७७
 बहूतभागवतामृत १७१
 बहूत्कथा १३४
 बहूत्कोशलखड १३४
 बत्त संहार ३०६
 बद्द निणय पचाशिका २१०
 वेद विचार ७७
 वेत् स्तुति टीका १५७
 वत्तात्कल्पवतिका १५७
 वदान्त पचाग १५८
 वदात्त पारिजात सौरभ १७०
 वदान्त रामायण १३३
 वदान्त विचार ६३
 वदा त सार शुभ दीपिका १५२
 व दोना २१२
 वतालिक ३०८
 वदिक निपुनामा १०३
 वघन पाननीता १७७
 वदही वनवास ३०४ ३०५
 वरछामिचरित ४५
 वराम्य निनय २८५
 वराम्य प्रणीव १५६
 वराम्य प्रबाधन बहारी १६१
 वराम्य सतसई १५१ २०१ ३१३
 वराम्य मापना १३५
 वराम्य गार १७
 वराम्य महात्म्य १६५
 वराम्यवाप्यागि निनय १५८
 वराम्य वत्त वानी १५५
 वराम्य वरसव २८५
 वराम्य सिद्धा त टीका १५५
 वराम्यनीता ७८
 वराम्य प्रकाश १५५

यम्य विनोद ३१३
 यम्याथ कौमुदी अथवा विनाय कौमुदी
 २८४
 यम्याथ चंद्रिका १५५
 यान्य द्र धराधर १५७
 यापारशास्त्र ३ ७
 यासवाणी १७४
 श
 शकर त्रिभुजय ३१३
 शकर सतसई ३ ३
 शकर सराज ३०३
 शकर सबस्व ३ ३
 शकरानामा ८४
 शभगतक १५५
 शकतता ३ ८
 शकुतता नाटक २५१
 शक्ति ३०६
 शत पचाशिका १५१
 शतपथ ब्राह्मण १३३
 शत प्रनात्तरा २ ७
 शतमुख रावण चरित्रम १३४
 शतरज घन विनास १८
 शतरज शक्ति २३८
 श द ८४
 शब्द प्रकाश ७६ ८४
 शब्द सार ८१
 शब्द सागर ७८
 शब्दानीत वृत्त १५८
 शब्दानी ८५
 शब्दघराज १५७
 शब्द समय विलास १८०
 शब्द श्रुति गीता १८०
 शब्द पावन १६२
 शब्दानान्तरण्य १३५

शांति शनक १५५
 शानि हात्र २५१
 शिक्षापत्री की टीका १५८
 शिक्षा प्रताक १८३
 शिमा ३७५
 शिव चौपाई २५२
 शिवराज भूषण २६०, २६१
 शिव सुमिरनी १५८
 शिवावामनी २६०
 शिवाशिव अगस्त्य सुतीक्ष्ण सवाद १५७
 १५८
 शिवाष्टक २३४
 शिशिर सुपमा २६६
 शिष्य ग्रंथ १ ३
 शिष्य सागर १ ३
 शिवसहिता की टीका १५८
 शुक रभा मवाद २८६
 शुभ नीति २०३
 शुद्धबोध वेदान्त प्रहायन सार १५६
 शुद्धान्त सिद्धांत रहस्य ३ ७
 शब सबस्व २८६
 श्रुतता की कडियाँ ३४१
 श्रुतार कवित्त २४८ २५१
 श्रुतार चरित २४४ २४५
 श्रुतार चालीसी ५८
 श्रुतार तिनक १ ३
 श्रुतार निणय २३८
 श्रुतार प्रकाश २२२
 श्रुतार भूषण २५२
 श्रुतार मारी २२५ २४८
 श्रुतार रस मन्त्र १८४
 श्रुतार रस सागर अथवा अग्रसागर
 १४४
 श्रुतार रस रहस्य १५२

शृंगार लतिका २८०
 शृंगार विनास २४० २६६
 शृंगार शत १०३
 शृंगार मतक ३०१ ३१३
 शृंगार शिक्षा २७६, २७७
 शृंगार शिरामणि २४६ २५१
 शृंगार सतसई २२८ २८८
 शृंगार सागर २१४
 शृंगार सार २३६ २४४
 शृंगार सारठा २०८
 शृंगार सौरभ २५१
 शृंगाराष्टक १८२
 श्रद्धाकण २१२
 श्रवकाचार ३७
 श्रवण चित्रण २८६
 श्रवण रामायण १३४
 श्रावण पवित्र ३०२
 श्री अक्षय प्रकाश १६०
 श्री कबीर साहब जी की परिचयी ६४
 श्री कृष्ण गिरि पूजन बली १८१
 श्री कृष्ण चरण चिह्न प्रतापारण्य १८२
 श्री कृष्ण जी का नवनिघण्ट २४८
 श्री कृष्ण पञ्चरत्न पञ्चक १४४
 श्री कृष्ण प्रति यशुमति गि तावती १८१
 श्री कृष्ण विवाह उत्कटा बनी १८१
 श्री कृष्ण सगाई अभिवाप बनी १८१
 श्री श्रीकामर धर १८०
 श्री गणेशस्तोत्र २०
 श्री मुद्राचरना महात्म्य १४१
 श्री मुद्राचरना साहब ७० ७१ ७२ ७३
 श्री ज्ञानकी व्याखानी १६१
 श्री गङ्गा ज म परभी ७६
 श्रीधर दास १४७
 श्री नाथनृपि २८३

श्री नामा जी कृत भक्तमान की टीका
 १६१
 श्री पञ्चमी २८४
 श्री पीपाजी का बाना ६८
 श्री भक्ति प्रकाशिका १६२
 श्रीमदभागवत १८७ १८८ १८० १६७
 २२०
 श्रीमदभागवत दशमस्कंध की टीका १७१
 श्रीमदभागवत महात्म्य १५५
 श्रीमद्भिन्न स्तोत्र ३०१
 श्री गुमानज म बधाई १६१
 श्री राजकुमार गुभागमन बणन २८
 श्री राजकुमार गुरवागत पत्र २८४
 श्री राधा जन्माक्षय बनी १८१
 श्री राघवद्र रहस्य रत्नाकर १६०
 श्री रामचन्द्र विजय १५६
 श्री राम ज्ञानका विनास १६१
 श्री राम साकी विनास १६१
 श्री राम प्रम पञ्चरत्न १६१
 श्री राम प्रम परिचया १ १
 श्री रामराज दापिका १७२
 श्री रामलीला उवाच १ १
 श्री राम शयनना १६१
 श्री रामस्तोत्रराज टीका १८०
 श्री राम स्तोत्र १६५
 श्री रामानन्द गीता १६१
 श्री रामायण बारहूदरी १ १
 श्री रामायण पठनि ६८
 श्री रामायण १५४
 श्री राशि भा कु की नामावली १८०
 श्री रात्रि की नामावली १८०
 श्री राधावन महिमा बनी १८१
 श्री राधावनुश्रुति की नामावली न भ्याह
 मन्त्र बधा १८१

श्री बण्णव मत्ताज भास्कर ६३	सकट मोचन १३५, २८६
श्री सीताराम झूना विलास १६१	सग्राम सार २३१
श्री सीताराम नखशिख १५ १६१	सगीत पूरनमन २८६
श्री सीताराम नाममजरी १६१	सगीत मन नया २८८
श्री सीताराम प्रम पदावली १६१	सगीत रघुन दन १३४ १५५
श्री सीताराम भद्र-कलि कादम्बिनी १६२	सगीत सार २ ६
श्री सीताराम मानसी सेवा १६०	सघष ३७७
श्री सीताराम शाभावली १६१	सचिता ३११
श्री सीताराम सुख विलास १६१	सजम मजरी ३७ ४७
श्री सीताराम सिद्धात तरगिणी १२२	सजोग विलास १८०
श्री हनुमत् यश-तरगिणी १६	सत प्रसादी महात्म्य १६१
श्री हरिवंश सहस्रनाम १८१	सत बचनावली १५८
श्री हरिवंशाष्टक १७६	सत महिमा १६१
श्री हित हरिवंश सहस्रनाम १८१	सतरण ३२५
श्यामरग १५६	सत बचन विनासिका १५७
श्याम शतक ३१३	सत वाणी ३१२
श्याम सगई १८६	सतसुख प्रकाशिका १२७
श्याम सनही ८८	सत सुमिरनी १५८
श्याम मुधा १५६	सदेशरासक ४६
श्यामालता २८५	सध्या समय विलास १८०
श्यामा सराजिनी २८५	सव्योग पदावली १५८
शुभोकाथ प्रकाश १६४	सवत्त ३१५
श्वत नीन ३१५	सक्षिप्त उपासनाकाण्ड १६६
श्व	सक्षप रामायण १६५
षट ऋतु पवगम १ ३	सग्यरस दपण १६०
षट ऋतु वधा १०३	सह्यरस दोहा १६०
षट ऋतु नीना १८०	सह्यसरोज भास्कर १५७
षटऋतु वणन २४८	सह्यसि धु च द्रोदय १२०
षटऋतु विमन विहार १६१	सह्यसि धु चन्द्रादय की टीका १५८
षट सदन १७१	स-जाप्टक २८५
पाश प्र ४ १८२	सतगुरु पशाय प्रवाधिका १६१
पाश प्र ४ टीका १८४	सतनामा १०३
पाश भक्ति १६१	सतभवन उपदेश १३५
स	सतरगिनी ३७६
सकटनाशन स्तात्र १३४	सतरज विनाद १४८

- साहित्य विहार ३१२
 साहित्य सार २३
 साहित्य मुद्रा सागर १६५
 साहित्यानंद २४८
 सिंगार विनाम नीना १८०
 मिहासन बत्तीसी २२
 मिद्धराज ३ ८
 सिद्धांत चौनीसा १२२
 सिद्धान्त त वीपिका १४५
 सिद्धान्त तोहावली १७८
 सिद्धांत पचाय्यायी १८६
 सिद्धांत पटल ६३
 सिद्धांत पदावली १४७
 सिद्धांतबाध वेदांत १५८
 सिद्धांत मुक्तावली १५२
 सिद्धांत विचार १६६
 सिद्धांत विचारनीना १७७
 सिद्धान्त सार २५१
 सिद्धांत ३१४
 मिद्धि हेमचंद्र शब्दानुशासन ४५
 नियामक मुद्रिका १६
 नियाराम रममंत्ररी १५१
 नियाराम शरण चंद्रिका १६६
 नियानात समय १६६
 गियावरनाम मणिमाना १६०
 मिमिर श्रुतुनीना १८
 सीत बम न २४४
 सीतायन १४८ १५४
 सीताराम उत्सव प्रकाशिका १५७
 सीताराम गुणाणव १६५ २६७
 सीताराम नम जापक महात्म्य १६१
 सीताराम नाम प्रताप प्रकाश १५७
 सीताराम नाम रूप बणन १६१
 सीताराम रहस्य चंद्रिका १५१
 सीताराम रहस्य दपण १६१
 सीताराम विनाम वारहमासा १६३
 सीताराम विवाह सग्रह १६६
 सीताराम स्नेह सागर १५७
 सीता विजय १३४
 सीता विरह १३५
 सीता शतनाम १५७
 सीताष्टक १६२
 सीता स्वयंवर १६५ २८८
 सीता हरण १३५
 सुंदर कांड रामायण २८६
 सुंदर प्रधावली (दो भाग) ७७
 सुंदर विनास ७५ ७६
 सुंदर मणि सदाभ की टीका १५८
 सुंदर शतक १५५
 सुंदर शृंगार २२
 सुंदरी तिलक २७८, २८८
 सुंदरी सिद्धूर २३४
 मुक्या ३ ७
 मुकरावत ८४
 मुकुमारिता की सीमा १८०
 मुख मजरी लीला १७७
 मुखमनी ७१
 मुख समाधि ७७
 मुख नागर ७८
 मुख सागर तरंग २३४
 मुख सीमा दोहावली १५७
 मुजान चरित २७०
 मुजान रमखान २ १
 मुजान विनीद २३४
 मुजान विनास २४
 मुजान शतक २७८
 मुजान सागर २७८
 मुतांत विनास लीला १८०

मुत्तमा चरित १४८ २०१ ३००
 मुदामा चरित १८६ १८७
 मुत्तमा बारहखंडी की टीका १५८
 मुद्रम विनाम १५५
 मुधा ३०८
 मुधा निधि २३६
 मुधा मन्त्रिणी स्तत्र १५७
 मुद्रा शिषु १०३
 मुनीति प्रकाश २७८
 मुपामनाह चरित ४८
 मुद्रम रामायण १३४
 मुवुद्धि चिंतावन वली १८१
 मुबोधिनी १८३
 मुबोधिनी की पूर्ति और टिप्पणी १८४
 मुबद्रा ३०७
 मुभापिन तन्त्र २७
 मुमति पचीसी १५६
 मुमति प्रवाणिका १५७
 मुमन ३०१
 मुमनाजति २६३ ३१४
 मुमना ३११
 मुमाग की चोत्सना टीका १५५
 मुमाग-स्तत्र टीका १५५
 मुमिन विनाद २३४
 मुपण कदम्ब १५८
 मुरभी-पान लीला २८५
 मुरसरि पचरत्ता १५८
 मुद्रपा ३ ७
 मुमिडांतोतम १६५
 मुहापिन ३७७
 मुबज मुस्ताइनी २१०
 मुबिन मुस्ताइनी ३०६
 मुस्ताइनी का का पद १८७
 मूर पचबोगी १८७

मूर सामर १८७ १८६ १८७ १८६ १८०
 मूर सामर सार १८७
 मूर सारावली १८७
 मूय का स्वागत ३८८
 मूय पुराण १३५
 सतबध १ ४
 मवक जस विरगावली १८२
 मवक भक्ति परिव्यावली १८२
 मवक-वाणी १७३
 सवापन विवरण १८३
 सवा विधि १५१
 सवा विलास १८०
 सरत काड १३५
 सर धी २०६
 सोदृश्य टीका ३६
 सापान (अभिनव सापान) ३७६
 सारठ क पद २००
 सोहागरात ३०१
 सोदय लहरी २८६
 सोपल रामायण १२४
 सोरभ २६०
 सोरभ विनाम लीला १८०
 सोम्य रामायण १२४
 सोहाय रामायण १३४
 स्नान विनाम लीला १८०
 स्नह माता ०१
 स्त्र कविता ३०४
 स्त्र पद १८१
 स्त्रु वाणी १७२
 स्त्रु स्त्रात्र मया टीका १८४
 स्मति का रघा ३४१
 स्वामी कदम ३०६
 स्वधर्म पद्य १७४
 स्वप्न ३०७

स्वप्न दशानन १३४
 स्वप्न प्रबोध ७७
 स्वप्न तोला १८०
 स्वप्न वासवासव दत्ता ३०८
 स्वप्न विलास—गद्य वार्ता १७८
 स्वरूप चि तन २६३
 स्वरूपानन्द वेदा त १५६
 स्वर्गवासी श्री अलवरत वणन अत
 सर्पिका २६३
 स्वर्गीय वीणा ३ २
 स्वर्ण किरण ३३७ ३४८
 स्वर्ण धूनि ३३७ ३४८
 स्वर्णोदय ३१५
 स्वामिनी धरण प्रतापाष्टक १८२
 स्वामी जी चरणचि ह प्रतापाष्टक १८२
 स्वायम्भव रामायण १३४
 स्त्रादी १२३
 ह
 हस जवाहिर ११५
 हस सदश अथवा हसदूत १३४
 हनुनाटक १६५
 हनुमदाष्टक १५७
 हनुमत पचीसी २७३
 हनुमत पचासा २७३
 हनुमन्चरित १५५
 हनुमत नखशिख १६५
 हनुमत पचीसी १६५ २८६ २८७
 हनुमत बान चरित १६३
 हनुमत भूषण १६६
 हनुमत सहिता १३४
 हनुमनाटक १८८ १६४ २१३
 हनुमान चरित्र १६४
 हनुमान चालीसा १३५
 हनुमान जम तीता २१४

हनुमान जी की स्तुति १६५
 हनुमान नखशिख २७१
 हनुमान नाटक २५१
 हनुमानाष्टक १५४
 हनुमान पत्रक १३५ २७१
 हनुमान पचीसी २६५ २७१
 हनुमान पचीसी १४७
 हनुमान पत्र १६६
 हनुमान बाहुक १३५
 हनुमान स्तोत्र १ ५
 हम्मीर रासो २६८
 हम्मीरहठ २४८ २७१
 हरजस गायन १५६
 हरमिट २०२
 हरिकाना बेनी १८१
 हरिनाम सुमिरनी १६२
 हरिपुरुष जी की वाणी ८१
 हरि प्रताप बेनी १८१
 हरि भक्त प्रकाशिका १४५
 हरि भक्ति गीता १८२
 हरि भक्ति विनास २७१
 हरिवंश चौरासी १०२
 हरिवंश पुराण ४१ २६१
 हरी पास पर क्षण भर ३५६
 हफ प्रकाश १५७
 हास विनास १८०
 हिकायत सरिराम १३५
 हिडोरा नीला १८३
 हिडिम्बा ३०६
 हित कल्पतरु १८२
 हित कृपा विचार सार बली १८२
 हित चौरासी १०१ १०२
 हित तरंगिणी २१२
 हित प्रताप बेनी १८१

हित रूप चरित्र बली १८१	त्रिभंगिमा ३७६
हित गृगार लीला १७७	त्रिभंगी २७६
हितोपदेश मतक १६१	त्रिविध नामावली १८३
हितोपदेश सर्ग २७६ २७७	त्रसठशलाका २१०
हितोपदेशाष्टक २७७	न
हिन्दी साहित्य का मक्षिप्त इतिहास ३०७	नान मूलना ७७
हिन्दुत्व १३३	नान तिलक ६३
हिन्दू ३०६	नानदीप ११३ ११४
हिमन सहत की उम्दा तदवीरों १६२	नान दीपिका १३५
हिमच्छत्रु लीला १८०	नान पचासा १६१
हिम्मत बहादुर विह्वावली २४६ २७३	नान पञ्चीसी २१०
होरी १६०	नान परोधि ७८
हालिका विनोद १५२	नान प्रकाश ७६ ८५ २३३
होत्रिका विसजन १५७	नान प्रकाश बली १८१
हानी १५० २६३	नान बावनी २१०
हातीनामा ८४	नान बोध ७८
हाती विलास १६१	नान भूमिका १६०
हृदय अष्टक १८२	नान योग ७६
हृदय बोध ३१३	नान नीला ६३
हृदय हुलासिनी १५७	नान समुद्र ७५ ७६
त्रिपयगा १०८	